

महामति श्री प्राणनाथजी प्रणीत

# श्री किरन्तन



श्री राज श्यामाजी

प्रकाशक  
श्री ५ नवतनपुरीधाम  
जामनगर

निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराज

महामति श्री प्राणनाथजी महाराज

# श्री किरन्तन

राग श्री मारू

पेहेले आप पेहेचानो रे साधो, पेहेले आप पेहेचानो ।

बिना आप चीन्हें पार ब्रह्मको, कौन कहे मैं जानो ॥ १

महामति कहते हैं, हे साधुजन ! सर्व प्रथम स्वयं (आत्मा) को पहचानो, क्योंकि स्वयंको पहचाने बिना कौन कह सकता है कि मैंने परब्रह्म परमात्माको पहचान लिया है.

पीछे ढूँढो घर आपनों, तब कौन ठौर ठेहरानो ।

जब लग घर पावत नहीं अपनों, तोलों भटकत फिरत भरमानो ॥ २

यदि शरीर छोड़नेके पश्चात् अपने (आत्माके) मूल घरको ढूँढ़ने लगोगे, तब किस स्थानमें ठहर पाओगे ? क्योंकि जब तक आत्मा अपने मूल घरको प्राप्त नहीं कर लेती, तब तक भ्रममें पड़कर भवसागरमें ही भटकती रहती है.

पांच तत्व मिल मोहोल रच्यो है, सो अंगीख क्यों अटकानो ।

याके आसपास अटकाव नहीं, तुम जागके संसे भांनो ॥ ३

(पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश इन) पाँचों तत्वोंको मिलाकर इस

नश्वर ब्रह्माण्डरूपी महलकी रचना की गई है। यह अन्तरिक्षमें कैसे अटक रहा है ? इसके आसपास या ऊपर नीचे कोई सहारा तक नहीं है। हे सज्जन वृन्द ! स्वयं जागृत होकर इस संशयका निवारण करो।

**नींद उड़ाए जब चीन्हेंगे आपको, तब जानोगे मोहोल यों रचानो ।**

**तब आपै घर पाओगे अपनों, देखोगे अलख लखानो ॥ ४**

हे साधुजन ! अज्ञानरूपी निद्राको दूर कर जब स्वयंको पहचानोगे, तब ज्ञात होगा कि इस ब्रह्माण्डरूपी महलकी रचना किस प्रकार हुई है ? तब तुम्हें स्वयं अपने मूल घर परमधामकी प्राप्ति (अनुभूति) हो जाएगी तथा पूर्णब्रह्म परमात्मा श्रीराजजीके दर्शन भी होंगे।

**बोले चाले पर कोई न पेहेचाने, परखत नहीं परखानो ।**

**महामत कहें माहें पार खोजोगे, तब जाए आप ओलखानो ॥ ५**

अनेक लोगोंने परमात्माके विषयमें ज्ञानोपदेश दिया तथा अनेक लोगोंने परमात्माकी प्राप्तिके लिए साधनाएँ भी कीं किन्तु किसीने भी उन्हें नहीं पहचाना। इस प्रकार प्रयत्न करनेपर भी पहचान योग्य परब्रह्म परमात्मा पहचाने नहीं गए। महामति कहते हैं, अन्तर्मुख होकर जब परम तत्त्वको ढूँढ़ोगे, तब आत्मा और परमात्माकी स्वतः पहचान हो जाएगी।

**प्रकरण १ चौपाई ५**

**राग श्री मारू**

**बिंदमें सिंध समाया रे साधो, बिंदमें सिंध समाया ।**

**त्रिगुन सरूप खोजत भए विसमए, पर अलख न जाए लखाया ॥ १**

हे साधुजन ! इस बिन्दुरूपी झूठी मायामें विराट शक्तिशाली सिन्धुरूपी परमात्मा समाया हुआ प्रतीत होता है। सत रज और तम इन तीनों गुणोंके अधिष्ठाता देवता-ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी सिन्धुरूपी परमात्माको खोजते-खोजते चकित हो गए हैं तथापि वे अलख परमात्मा दृष्टिगोचर नहीं हुए।

वेद अगम कहे उलटे पीछे, नेत नेत कर गाया ।

खबर न परी बिंद उपज्या कहाँ थें, ताथें नाम निगम धराया ॥ २

वेद भी परब्रह्मकी खोज करनेके उपरान्त उसे अगम्य (पहुँचसे परे) कहकर 'नेति नेति' (अन्त नहीं, अन्त नहीं) कहते हुए उलटे पीछे लौट गये. यह बिन्दुरूपी माया कहाँसे उत्पन्न हुई है, इसकी जानकारी न होनेसे उसका नाम निगम पड़ा.

असत मंडलमें सब कोई भूल्या, पर अखंड किने न बताया ।

नींदका खेल खेलत सब नींदमें, जागके किने न देखाया ॥ ३

इस असत्य मण्डल (नश्वर ब्रह्माण्ड अर्थात् भवसागर) में सभी लोग अपना मार्ग भूल गए हैं. अखण्ड अविनाशी परमात्माकी बात कोई नहीं करता. यह संसार स्वप्नका खेल है और सभी लोग अज्ञानकी निद्रामें यहाँ विचरण कर रहे हैं, स्वयं जागृत होकर परमात्माके विषयमें किसीने भी मार्गदर्शन नहीं किया.

सुपनकी सृष्टि वैराट सुपनका, झूठे सांच ढंपाया ।

असत आपे सो क्यों सत को पेखे, इन पर पेड न पाया ॥ ४

यह विराट ब्रह्माण्ड स्वप्नका बना हुआ है और इसकी समग्र सृष्टि भी स्वप्नकी ही है. इसलिए असत्यके विस्तारसे सत्य ढक गया है. मायावी जीव स्वयं स्वप्नके होनेके कारण सत्य परमात्माको कैसे देख सकते ? इस प्रकार उन्हें परम तत्त्व भी नहीं मिल सका.

खोजी खोजें बाहेर भीतर, ओ अंतर बैठा आप ।

सत सुपने को पारथें पेखे, पर सुपना न देखे साख्यात ॥ ५

परमात्माको ढूँढ़नेवाले लोग इस विश्वमें पिण्ड-शरीरमें अथवा ब्रह्माण्ड (बाहर) में परमात्माको ढूँढ़ते हैं, परन्तु स्वयं परमात्मा तो आत्म स्वरूपसे अन्तरमें विराजमान हैं. सत्य आत्माएँ (ब्रह्मात्माएँ) पार परमधाममें रहकर इस स्वप्नरूपी झूठे संसारको देख रही हैं, परन्तु स्वप्नके जीव उन्हें देख नहीं पाते.

भरमकी बाजी रची विस्तारी, भरमसों भरम भरमाना ।

साध सोई तुम खोजो रे साधो, जिनका पार पयाना ॥ ६

यह संसारका खेल मात्र भ्रमका विस्तार है. (यहाँ पर) भ्रमके जीव इसी भ्रमरूपी खेलमें भ्रमित हो रहे हैं. इसलिए हे साधुजन ! ऐसे तत्त्वदर्शी सद्गुरुकी खोज करो, जिसने भ्रान्तियोंसे मुक्त होकर पारका मार्ग प्राप्त किया हो.

मृगजलसों जो त्रिषा भाजे, तो गुरु बिना जीव पार पावे ।

अनेक उपाए करे जो कोई, तो बिंदका बिंदमें समावे ॥ ७

यदि मृगजल द्वारा तृषा शान्त हो सकती हो, तो सद्गुरुके ज्ञानके बिना भी जीव पार पा सकता है (किन्तु यह तो सम्भव नहीं है). इसलिए कोई अनेक प्रयत्न ही क्यों न कर ले किन्तु बिन्दुरूप मायाके जीव मायामें ही समाहित हो जाते हैं.

देत देखाई बाहेर भीतर, ना भीतर बाहेर भी नाहीं ।

गुरु प्रसादे अंतर पेख्या, सो सोभा वरनी न जाई ॥ ८

ब्रह्माण्डमें चौदह लोकोंके अन्दर एवं बाहर जितने भी दृश्यमान पदार्थ हैं, उनमें परमात्मा नहीं है (मात्र परमात्माकी सत्ता है). सद्गुरुकी असीम कृपा द्वारा अन्तरमें उनके दर्शन हुए उनकी यह शोभा अवर्णनीय है.

सतगुरु सोई मिले जब सांचा, तब सिंध बिंद परचावे ।

प्रगट प्रकास करे पारब्रह्मसों, तब बिंद अनेक उडावे ॥ ९

ऐसे सच्चे सद्गुरु जब मिल जाते हैं, तब वे सिन्धुरूपी पूर्णब्रह्म परमात्मा और बिन्दुरूपी झूठी मायाकी पहचान करा देते हैं और पूर्णब्रह्म परमात्मा का साक्षात् अनुभव (दर्शन) करवाकर बिन्दुरूपी मायाके अनेक प्रपञ्चोंको उड़ा देते हैं.

महामत कहें बिंद बैठे ही उड्या, पाया सागर सुख सिंध ।

अक्षरातीत अखंड घर पाया, ए निध पूरव सनमंध ॥ १०

महामति कहते हैं, सद्गुरुकी कृपा द्वारा अनायास (सहज) ही बिन्दुरूपी झूठी

मायाके प्रपञ्च दूर हो गए हैं और सिन्धुरूप पूर्णब्रह्म परमात्माका अपार सुख प्राप्त हो गया. पूर्णब्रह्म परमात्मा अक्षरातीतके अखण्ड घर-परमधामकी प्राप्ति हो गई. यह अखण्ड निधि पूर्व सम्बन्धके कारण ही प्राप्त हुई.

प्रकरण २ चौपाई १५

राग केदारो

साधो भाई चीन्हो, सबद कोई चीन्हो ।

ऐसो उत्तम आकार तोको दीन्हों, जिन प्रगट प्रकास जो किन्हों ॥ १

हे साधुजन ! परमात्माकी पहचान करानेवाले शास्त्र वचनोंके रहस्यको समझो (इन शब्दोंका ज्ञान प्राप्त कर अपनी अन्तरात्माको पहचानो). धामधनीने तुम्हें ऐसा श्रेष्ठ शरीर (मनुष्य देह) दिया है, जिसके द्वारा परमात्माका साक्षात् अनुभव किया जा सकता है.

मानषे देह अखंड फल पाइए, सो क्यों पाएके वृथा गमाइए ।

ए तो अधखिनको अवसर, सो गमावत मांझ नींदर ॥ २

मनुष्य शरीरके द्वारा ही परब्रह्म परमात्मारूपी अखण्ड फल प्राप्त हो सकता है. ऐसे महामूल्यवान् मानव शरीरको प्राप्त कर उसे क्यों व्यर्थ गँवा रहे हो ? यह अवसर तो आधे क्षणके लिए प्राप्त हुआ है, इसे अज्ञानरूपी निद्रामें पड़कर व्यर्थ गँवा रहे हो.

सबदा कहे प्रगट परवान, सबदा सतगुरसों करावे पेहेचान ।

सतगुरु सोई जो अलख लखावे, अलख लखे बिन आग न जावे ॥ ३

धर्मशास्त्रोंके (शब्दोंके) द्वारा यथार्थ ज्ञान प्रकट होता है और वे धर्मशास्त्र ही सद्गुरुकी पहचान भी कराते हैं. जो पूर्णब्रह्म परमात्माकी वास्तविक परख करवाते हैं वे ही सद्गुरु कहलाते हैं. क्योंकि परमात्माकी पहचान हुए बिना अन्तर्दाह (त्रय ताप) नहीं मिटती है.

सास्त्र ले चले सतगुरु सोई, वानी सकलको एक अरथ होई ।

सब स्यानोंकी एक मत पाई, पर अजान देखे रे जुदाई ॥ ४

धर्मग्रन्थोंके प्रमाणभूत सिद्धान्तोंके अनुरूप चलने वाले ही सद्गुरु हो सकते

हैं. सब धर्मग्रन्थोंकी वाणी समान अर्थ धारण करती है (अर्थात् एक ही पूर्णब्रह्म परमात्माकी ओर संकेत करती है). वास्तवमें सब ज्ञानीजनोंका अभिप्राय भी एक है, किन्तु धर्मग्रन्थोंके सिद्धान्तोंको न समझने वाले अज्ञानीजन उनमें भिन्नता देखते हैं.

**शास्त्रोंमें सबे सुध पाइए, पर सतगुरु बिना क्यों लखाइए ।**

**सब सास्त्र सबद सीधा कहे, पर ज्यों मेर तिनके आडे रहे ॥ ५**

शास्त्रोंमें परमात्माकी सभी सुधि मिलती है, किन्तु बिना सद्गुरुके उसे किस प्रकार समझा जाए ? सर्वशास्त्रमें परमतत्त्वको समझनेके लिए सीधी और सरल बातें कही हैं परन्तु जिस प्रकार आँखके सामने केवल एक तिनका आ जानेसे पर्वत ढँक जाता है, उसी प्रकार मनमें व्याप्त भ्रान्तियोंसे सत्यज्ञान छिप जाता है.

**सो तिनका मिटे सतगुरुके संग, तब पारब्रह्म प्रकासे अखंड ।**

**सतगुरुजीके चरन पसाए, सबदों बडी मत समझाए ॥ ६**

सद्गुरुके समागम द्वारा जब यह भ्रान्तिरूपी तिनका दूर होगा, तभी परब्रह्मका अखण्ड प्रकाश दिखाई देगा. सद्गुरुके चरणोंके प्रताप (कृपा) से ही शास्त्रोंके शब्दोंमें निहित गूढ़ रहस्य समझा जा सकता है.

**तब खोज सबदको लीजे तत्व, तौल देखिए बडी केही मत ।**

**जासों पाइए प्रानको आधार, सो क्यों सोए गमावे रे गमार ॥ ७**

इसलिए हे सज्जन वृन्द ! शास्त्रोंमें निर्दिष्ट वचनोंका मन्थन कर उनके तत्त्वज्ञानको ग्रहण करो. विवेक पूर्वक तुलनात्मक दृष्टिसे देखो कि बड़ी बुद्धि (महामति) कौन हैं ? जिस मानव देह द्वारा प्राणाधार परमात्माकी प्राप्ति होती है, उसे अज्ञान निद्रामें सोकर मूढ़ोंकी भाँति क्यों गँवा रहे हो ?

**यामें बडी मतको लीजे सार, सतगुरु याहीं देखावें पार ।**

**इतहीं वैकुंठ इतहीं सुन, इतहीं प्रगट पूरन पारब्रह्म ॥ ८**

ऐसेमें विवेक बुद्धि द्वारा बड़ी मति वालोंके ज्ञानका सार ग्रहण करो. सद्गुरु

यहीं पर (इसी संसारमें) पूर्णब्रह्म परमात्माके धामका साक्षात्कार कराते हैं। आत्म-जागृति होने पर यहीं वैकुण्ठ तथा शून्यका अनुभव होगा और यहीं पर पूर्णब्रह्म परमात्माका साक्षात्कार भी होगा।

**ए वानी गरजत मांझ संसार, खोजी खोज मिटावे अंधार ।**

**मूढमति न जाने विचार, महामत कहे पुकार पुकार ॥ ९**

यह तारतम वाणी इस संसारमें गर्जना कर रही है। खोजनेवाले जिज्ञासु ही खोजकर अपने हृदयके अज्ञानरूप अन्धकारको दूर करते हैं। इसलिए महामति प्राणनाथजी पुकार-पुकार कर इसका रहस्य स्पष्ट कर रहे हैं। मूढ लोग इसका मूल्य न समझनेके कारण इस विषयमें विचार नहीं करते।

**प्रकरण ३ चौपाई २४**

**राग गौरी**

**साधो हम देख्या बडा तमासा ।**

**विस्व देख भया मैं बिसमय, देख देख आवत मोहे हांसा ॥ १**

हे साधुजन ! मैंने इस संसारमें एक बड़ा खेल देखा। लोगोंकी गतिविधि देखकर मैं आश्चर्यचकित हो गया। यह सब देख-देखकर मुझे तो हँसी आती है।

**मेरी मेरी करते दुनी जात है, बोझ ब्रह्मांड सिर लेवे ।**

**पाउ पलक का नहीं भरोसा, तो भी सिर सरजनको न देवे ॥ २**

“यह मेरा है, वह मेरा है” इस प्रकार कहते हुए पूरे संसारका भार अपने सिरपर लेकर लोग व्यर्थ ही भटक रहे हैं। किन्तु इस क्षणभङ्गुर देहका पलमात्रका भी भरोसा नहीं है तथापि सर्जनहार परमात्माके समक्ष आत्म-समर्पण नहीं करते।

**सिर ले काम करे माया को, निसंक पछाडे आप अंग ।**

**न करे भजन दोस देवे साईं को, कहे दया बिना न होवे साध संग ॥ ३**

ऐसे लोग मायाके कार्यों (बोझ) को अपने सिर पर लेते हैं और उसीके लिए



अपने शरीरको भी समर्पित कर देते हैं. वे स्वयं प्रभु स्मरण तो करते ही नहीं उलटा परमात्माको दोष देकर कहते हैं कि उनकी दयाके बिना सन्तोंका सङ्ग प्राप्त नहीं होता.

**बांधत बंध आपको आपे, न समझे माया को मरम ।**

**अपनों कियो न देखें अंधे, पीछे रोवें दोस दे दे करम ॥ ४**

संसारके लोग मायाके मर्मको समझे बिना अपने द्वारा बनाए गए मायाके बन्धनोंमें स्वयं बँध जाते हैं. ऐसे अन्धे-अज्ञानी लोग अपने किए हुए कर्मोंको देख नहीं सकते और अपने भाग्य (कर्म) को दोषी मानकर रोते फिरते हैं.

**समझे साध कहावें दुनी में, बाहेर देखावें आनंद ।**

**भीतर आग जले भरम की, कोई छूट न सके या फंद ॥ ५**

जो लोग संसारमें बुद्धिमान साधुके रूपमें पहचाने जाते हैं, वे भी बाहरसे ही आनन्दित दिखाई देते हैं किन्तु उनके अन्तरमें भ्रम (अज्ञान) की ज्वाला जलती रहती है. ऐसा कोई भी व्यक्ति मायाके इन बन्धनोंसे छूट नहीं सकता.

**परत नहीं पेहेचान पिंड की, सुध न अपनों घर ।**

**मुखथें कहे मोहे संसे मिट्या, मैं देखे साध केते या पर ॥ ६**

मैंने ऐसे भी अनेक साधु देखे हैं जिनको अपने पिण्ड (शरीर) का भी ज्ञान नहीं होता और अपने मूलघरकी सुधि भी नहीं होती तथापि अपने मुखसे कहते रहते हैं कि हमारी तो सभी शङ्काएँ मिट गई हैं.

**साध सुने मैं देखे केते, अगम कर कर गावें ।**

**नेहेचे जाए करें निराकार, या ठौर चित ठेहेरावें ॥ ७**

मैंने ऐसे अनेक साधुओंके सम्बन्धमें सुना और उन्हें देखा भी जो परमात्माको अगम्य कहते रहते हैं और अन्तमें यह निश्चय करते हैं कि परमात्मा निराकार है, फिर निराकारमें ही चितको स्थिर करनेका प्रयत्न करते हैं.

जो ना कछू गाम नाम ना ठाम, सो सत साईं निराकार ।

भरम को पिंड असत जो आपे, सो आप होत आकार ॥ ८

अज्ञानीजन सत्य परमात्माको निराकार कहते हैं जिनका न कोई गाँव, नाम तथा ठिकाना ही है। ऐसे लोग भ्रान्तिवश (देहाध्यासके कारण) नश्वर शरीरको ही अपना मान कर स्वयंको साकार मानते हैं।

जिन मंडल ए मांडे मंडप, थोभ न थंभ न बंध ।

वाको नाहीं कहत क्यों साधो, ए रच्यो किन कौन सनंध ॥ ९

जिसने इस खेलका मण्डप बनाया है, उसने इसके लिए कोई आधार-स्तम्भ या बन्धन भी नहीं रखा। हे साधुजन ! ऐसे सर्जनहार परमात्माको तुम नहीं (निराकार) क्यों कहते हो ? यदि परमात्मा निराकार होता, तो इस संसाररूपी मंडपको किसने और किस लिए बनाया ?

जिन साएर खनाए पहाड चुनाए, रवि ससि नखत्र फिराए ।

फिरत अहेनिस रंग रूत फिरती, ऐसे अनेक वैराट बनाए ॥ १०

जिसने गहरे सागरोंको खोदा, ऊँचे-ऊँचे पर्वतोंका निर्माण किया और सूर्य, चन्द्र तथा नक्षत्रोंको नियमित रूपसे परिभ्रमित किया, जिसके सङ्केत मात्रसे ऋतुएँ अपना रङ्ग बदलती रहती हैं, उस परमात्माने ऐसे अनेक ब्रह्माण्डोंकी रचना की है।

जिन खिनमें तत्व पांच समारे, नास करे खिन माहिं ।

ए कहां से उपाए कहां ले समाए, ए विचारत क्यों नाहिं ॥ ११

जो क्षण मात्रमें पाँच तत्वोंको एकत्रित कर सृष्टिकी रचना करते हैं और क्षण मात्रमें ही उसका नाश भी कर देते हैं, वे परमात्मा सृष्टिके समय इन पाँच तत्वोंको कहाँसे उत्पन्न करते हैं और महाप्रलयके समय सबको कहाँ समाहित कर लेते हैं, इसपर विचार क्यों नहीं करते ?

सतगुरु साधो वाको कहिए, जो अगमकी देवे गम ।

हद बेहद सब समझावे, भांने मनको भरम ॥ १२

हे साधुजन ! वास्तवमें सद्गुरु वही कहलाता है जो अगम्य परमात्माका वास्तविक परिचय करा दे तथा हद-सीमित (क्षर ब्रह्माण्ड) और बेहद-

असीम अविनाशी भूमिकाका सम्पूर्ण ज्ञान करवाकर मनके सभी संशयोंको मिटा दे.

**महामत कहे गुरु सोई कीजे, जो अलख की देवे लख ।**

**इन उलटीसे उलटाएके, पिया प्रेमे करे सनमुख ॥ १३**

महामति कहते हैं, ऐसे व्यक्तिको सद्गुरु बनाइए, जो अगोचर परमात्माकी पहचान (प्रत्यक्ष अनुभव) करा दे और इस उलटी मायासे आपकी सुरताको उलटाकर धामधनीके प्रेमके प्रति उन्मुख कर दे.

**प्रकरण ४ चौपाई ३७**

**राग श्री केदारो**

**सुनो रे सतके बनजारे, एक बात कहूँ समझाई ।**

**या फंद बाजी रची मायाकी, तामें सब कोई रह्या उरझाई ॥ १**

महामति प्राणनाथजी सन्त चिन्तामणिको निमित्त बनाकर मानवमात्रको उपदेश देते हैं, हे सत्यके व्यापारीजन ! सुनो, मैं तुम्हें एक बात समझाता हूँ. यह संसार बाजीगरके खेलकी भाँति रचा गया मायावी फन्दा है, जिसमें सब कोई उलझे हुए हैं.

**आंटी आन के फांसी लगाई, वे भी उलटिएं दई उलटाई ।**

**बंध पर बंध दिए विध विधके, सो खोली किनहूँ न जाई ॥ २**

परमधाममें हुई प्रेम सम्वादके कारण मायाजन्य खेल देखनेकी इच्छा लेकर ब्रह्मात्माएँ संसारमें आई और शरीररूपी फन्देमें फँस गई. अपने धामधनीसे विमुख करवाने वाली इन्द्रियोंके द्वारा विभिन्न विषयोंकी ओर आकृष्ट होती हुई वे संसारमें प्रचलित विभिन्न मत-मतान्तरोंके बन्धनमें इस प्रकार उलझती गई कि उन बन्धनोंको कोई खोल नहीं सका.

**चौदे भवन लग एही अंधेरी, झूठेको खेल झुठाई ।**

**प्रगट नास व्यास पुकारे, सुकदेव साख पुराई ॥ ३**

चौदह लोकमें मायाका अन्धेरा (अज्ञान) छाया हुआ है. यह माया स्वयं झूठी

होनेसे इसका खेल भी झूठा ही है। वेद व्यासजीने अपने ग्रन्थमें स्पष्टरूपसे कहा है कि यह दृश्यमान संसार महाप्रलयमें नाश होने वाला है। शुकदेव मुनिने भी इसकी साक्षी दी है।

**लोक लाज मरजादा छोड़ी, तब ग्यान पदवी पाई ।**

**एक आग ज्यों छोटी बुझाई, त्यों दूजी मोटी लगाई ॥ ४**

संसारकी झूठी लोक-लाज, मान-मर्यादा इत्यादिको छोड़कर ही ज्ञानीकी पदवी प्राप्त की जा सकती है। किन्तु हे चिन्तामणि ! तुम्हारे विषयमें तो ऐसा प्रतीत होता है कि एक छोटी-सी चिनगारीको बुझाकर बड़ी आग लगाई जा रही है अर्थात् सांसारिक झंझटोंसे मुक्त होकर धर्मके कार्यमें लग जानेके पश्चात् भी तुम मान-मर्यादा त्याग नहीं सके, जिससे अहङ्कारकी अग्नि धधकने लगी है।

**कोट सेवक करो नाम निकालो, इस्ट चलाओ बडाई ।**

**सेवा कराओ सतगुरु केहेलाओ, पर अलख न देवे लखाई ॥ ५**

चाहे करोड़ों सेवक बनाकर यश (नाम) कमा लो, अपना पन्थ स्थापित कर प्रतिष्ठा जमा लो, सेवकोंसे सेवा करवाकर स्वयं सद्गुरु कहलाओ परन्तु इससे परमात्मा प्रत्यक्ष नहीं होंगे।

**अब छोड़ो रे मान गुमान ग्यान को, एही खाड बडी भाई ।**

**एक डारी त्यों दूजी भी डारो, जलाए देओ चतुराई ॥ ६**

इसलिए अब मान, अपमान और मिथ्याज्ञानके अहङ्कारको छोड़ दो। परमात्मा प्राप्तिके मार्गमें ये सब गहरी खाइयोंके समान हैं। जिस प्रकार एक वस्तुको छोड़ दिया अर्थात् गृहस्थके लोकाचार तथा मान-मर्यादाके बन्धन तोड़कर साधक बने, उसी प्रकार मिथ्याज्ञानके अहङ्कारको भी छोड़ दो। इस झूठी चतुराईको जला डालो।

**सास्त्र पुरान भेष पंथ खोजो, इन पैडों में पाइए नहीं ।**

**सतगुरु न्यारा रहत सकल थें, कोई एक कुलीमें कांही ॥ ७**

शास्त्रों, पुराणों तथा विभिन्न प्रकारके वेशधारी साधुओंके विभिन्न सम्प्रदायोंमें

ढूँढ़ने पर भी परमात्माका वास्तविक परिचय करवाने वाले सच्चे सद्गुरु नहीं मिलते हैं. वे तो इन सबसे परे हैं. इस कलियुगमें ऐसे सद्गुरु बिरले ही कहीं मिलते हैं.

**सत चाहो सो सबदा चीन्हो, ओ आप न देवे देखाई ।**

**जिन पाया तिन माहें समाया, राखत जोर छिपाई ॥ ८**

यदि तुम पूर्णब्रह्मकी प्राप्ति चाहते हो तो धर्म ग्रन्थोंके रहस्यों (शब्दों) को समझो. परमात्मा स्वयं तो प्रत्यक्षरूपसे दिखाई नहीं देते. जिन भक्तोंने ज्ञान, ध्यान और तपश्चर्या द्वारा उन्हें प्राप्त किया है, उन्होंने उनको अपनी अन्तरात्मामें ही स्थापित किया है. वे परमात्माको अपने हृदयमें छिपाकर रखते हैं, बाह्याडम्बर नहीं दिखाते.

**सुध सबे पाइए सबदों से, जो होवे मूल सगाई ।**

**खिन एक विलम न कीजे तब तो, लीजे जीव जगाई ॥ ९**

यदि मूलघर-परमधामका सम्बन्ध हो तो धर्मग्रन्थोंके शब्दों द्वारा पूर्णब्रह्म परमात्माका सम्पूर्ण परिचय प्राप्त हो सकता है. इसलिए अब एक क्षणका भी विलम्ब किए बिना अपनी आत्माको जागृत कर लो.

**पर मनुआ दिए बिन हाथ न आवे, सतकी बडी ठकुराई ।**

**और उपाए याको कोई नहीं, जिन देवें आप बडाई ॥ १०**

परन्तु मनको समर्पित (एकाग्र) किए बिना परमात्माकी प्राप्ति सम्भव नहीं है. सत्यकी महिमा अगाध है. इसके अतिरिक्त परमात्मा प्राप्तिका अन्य उपाय भी नहीं है. इसलिए अपने बड़प्पनको भूल जाओ.

**महामत कहे सावचेत होइयो, मिल्या है अंकूरों आई ।**

**झूठी छूटे सांची पाइए, सतगुरु लीजे रिझाई ॥ ११**

महामति कहते हैं, सावधान हो जाओ ! परमधामका सम्बन्ध अब अङ्कुरित हो गया है. झूठी मायाके छूटने पर सत्य परमात्माकी प्राप्ति होगी इसलिए सद्गुरुको प्रसन्न कर लो.

**प्रकरण ५ चौपाई ४८**

भाई रे बेहद के बनजारे, तुम देखो रे मनुएका खेल ।

ए सब आग बिना दीया जले, याको रूई न बाती तेल ॥ १

हे बेहदके व्यापारीजन ! तुम मनके इस खेलको देखो ! संसारके इस खेलमें आगके बिना ही दीपक जल रहे हैं (बिना कारण ही काम, क्रोधादि धधक रहे हैं), इसके लिए रूई, बत्ती या तेल किसीकी भी आवश्यकता नहीं है।

चारों तरफों चौदे लोकों, वैकुण्ठ लग पाताल ।

फूल पात फल नहीं या दरखत को, काष्ठ तुचा मूल न डाल ॥ २

चौदह लोकमें चारों ओर वैकुण्ठसे लेकर पाताल तक फैले हुए संसाररूपी इस वृक्षके फूल, पत्ते, फल, तना, छिलका, मूल और शाखाएँ कुछ भी नहीं हैं मात्र रूपकके लिए यह वृक्ष है।

देत देखाई तत्त्व पाँचों, मिल रचियो ब्रह्मांड ।

जिनसे उपजे सो कछुए नाही, आप न पोते पिंड ॥ ३

इन दृश्यमान पाँचों तत्त्वोंसे इस झूठे ब्रह्माण्डकी रचना हुई है। परन्तु ये पाँच तत्त्व जिससे उत्पन्न हुए हैं, वह माया स्वयं अस्तित्व रहित है, उसका अपना कोई आकार भी नहीं है।

नहीं पिंड पोते हाथ पांड भी नाही, नाटक नाच देखावे ।

मुख ना जुबां कछू नहीं याको, और वानी विविध पेरे गावे ॥ ४

उस मायाका अपना शरीर या हाथ-पाँव कुछ भी नहीं है तथापि वह संसारमें प्रत्यक्ष रूपसे नाटक दिखाती है। उसका मुँह और जिह्वा भी नहीं है फिर भी विभिन्न प्रकारसे वाणीका गायन हो रहा है।

आतम नारायन नाचत बुध ब्रह्मा, निस दिन फिरे नारद मन ।

वैराट नटवा नाचत विध विधसों, नचवत व्यास करम ॥ ५

नारायणकी आत्मा, ब्रह्माजीकी बुद्धि, रात-दिन भ्रमण करने वाले नारदजीका मन, ये सब इस विराट ब्रह्माण्डमें नर्तककी भाँति विभिन्न प्रकारसे नाचते हैं और व्यासजी द्वारा निर्मित कर्मके नियम पूरे ब्रह्माण्डको ही नचा रहे हैं।

[इस चौपाईमें संसारके सामान्य जीवोंका चित्रण किया है. जिस प्रकार भगवान नारायण मोहजलमें तैरते हुए अण्डेसे प्रकट हुए हैं, उसी प्रकार इन जीवोंकी उत्पत्ति भी मोहसे हुई है. ब्रह्माजी रजोगुणी कहलाते हैं इसलिए ऐसे जीवोंकी बुद्धि पर रजोगुणका प्रभाव है. नारद कभी एक स्थान पर नहीं रहते इसलिए ऐसे लोगोंका मन भी सदैव अस्थिर ही रहता है. इस प्रकार सदैव कर्मकाण्डमें ही फँसे हुए ये जीव नर्तककी भाँति नृत्य करते रहते हैं अर्थात् सांसारिक सुख-दुःखमें (कर्मबन्धनोंमें) डूबे रहते हैं.]

**ए मनुएकी बाजी बाजीमें मनुआ, जुदे जुदे खेल खेलावे ।**

**वरनावरन खेलत सब ऐसे, नए नए स्वांग बनावे ॥ ६**

यह संसार अक्षरब्रह्मरूपी जादूगरके मनका ही खेल है. इस खेलमें भी उनका मन स्वयं ही विभिन्न प्रकारके रूप धारण कर भिन्न-भिन्न प्रकारसे खेल खेला रहा है. वर्ण अवर्ण-वर्ण व्यवस्थाको मानने वाले तथा न मानने वाले अथवा गृहस्थ तथा सन्तजन सब नए-नए रूप धारण कर (स्वाङ्ग बनाकर) यहाँ खेल करते हैं.

**पारब्रह्म तो पूरन एक है, ए तो अनेक परमेस्वर कहावें ।**

**अनेक पंथ सबद सब जुदे जुदे, और सब कोई सास्त्र बोलावें ॥ ७**

पूर्णब्रह्म परमात्मा तो एक ही हैं तथापि संसारके लोग अनेक परमेश्वर होनेकी बात करते हैं. इस जगतमें अनेक धर्म-सम्प्रदाय अपने-अपने अलग-अलग सिद्धान्तोंकी चर्चा करते हैं और उसे सिद्ध करनेके लिए शास्त्रोंके पृथक्-पृथक् प्रमाण भी देते हैं.

**रबद करें औरन को निंदें, आपको आप बढावें ।**

**ग्यान कथें गुन गाए आपके, हो हो कार मचावें ॥ ८**

इस प्रकार अलग-अलग सम्प्रदायके लोग परस्पर वादविवाद करते हुए एक दूसरेकी निन्दा करते हैं और अपने सम्प्रदायको अन्य सम्प्रदायोंसे अधिक श्रेष्ठ भी कहते हैं. अपने सम्प्रदायके सिद्धान्तोंकी चर्चा कर सम्प्रदायके गुणोंकी प्रशंसा करते हुए हो-हल्ला भी मचाते हैं.

**दुबिधा दिलमें अवगुन ढूँढे, गुन चितसों न लगावे ।**

**भटकत फिरें भ्रममें भूलें, अंगमें आग धखावे ॥ ९**

इस प्रकार दिलमें संशय लेकर चलने वाले दूसरोंके अवगुण ही ढूँढते रहते हैं किन्तु उनके गुणोंकी ओर ध्यान ही नहीं देते. ऐसे भ्रममें फँसे हुए लोग भवसागरमें ही भटकते रहते हैं. उनके अङ्गोंमें भ्रमरूपी आग धधकती रहती है.

**केते आप कहावें परमेस्वर, केते करत हैं पूजा ।**

**साध सेवक होए आगे बैठे, कहें या बिन नहीं कोई दूजा ॥ १०**

कई लोग स्वयंको परमेश्वर मान कर बैठते हैं, कई लोग उनकी पूजा भी करते हैं. कई साधक सेवक बनकर अग्रिम पंक्तिमें बैठकर उनकी कथा सुनते हैं और कहते हैं कि ये ही हमारे परमात्मा हैं, इनके अतिरिक्त और कोई है ही नहीं.

**सास्त्र सबदको अरथ न सूझे, मत लिए चलत अहंकार ।**

**आप न चीन्हें घर न सूझे, यों खेलत मांझ अंधार ॥ ११**

ऐसे लोगोंको शास्त्रोंके वचनोंका अर्थ ही नहीं सूझता, वे मात्र अहंकार बुद्धिको लेकर ही चलते हैं. उन्हें न स्वयंकी पहचान है और न ही अपना घर-परमधामकी सुधि है. इस प्रकार वे अज्ञानके अन्धकारमें फँसे हुए मिथ्या खेल खेल रहे हैं.

**बाजी एक देखाऊं दूजी, जो खेलत हैं उजियारे ।**

**भेष बनाएके नाचत सनमुख, एक ठाट लिए चारे ॥ १२**

अब मैं दूसरा खेल ऐसे लोगोंका दिखाऊँ जो उजाले अर्थात् ज्ञानी-ध्यानी कहलाते हुए खेल रहे हैं. चारों वर्णोंके लोग पृथक्-पृथक् वेश (अलग-अलग पन्थका रूप) धारण कर एक ही प्रकारका ठाट जमाते हैं अर्थात् सभी अज्ञानताके अन्दर ही खेल रहे हैं.



**आतम विष्णु नाचत बुध सनतजी, गोकल ग्रहो सिव मन ।**

**करम सुकदेव नाचत नचवत, गावत प्रगट वचन ॥ १३**

ऐसे तथाकथित ज्ञानियोंमें-भगवान विष्णुकी आत्मा है (अर्थात् वे स्वयंको सतोगुणी मानते हैं), सनकादिकी बुद्धि है (सनकादि ज्ञानके अवतार कहे जाते हैं. ज्ञान निर्मल होनेके कारण ऐसे तथाकथित ज्ञानी अपने आपको निर्मल बुद्धियुक्त कहलाते हैं) और गोकुल लीलाको ग्रहण करने वाले शिवजीका मन है (शिवजी सदैव ध्यान मग्न रहते हैं, उनका मन भी स्थिर रहता है, गोकुल लीलाका ध्यान करनेके कारण उनका मन पूर्णरूपेण एकाग्र है, इसी प्रकार तथाकथित ज्ञानीजन स्वयंको स्थिरमति समझते हैं). ऐसे लोग शुकदेवजीके कर्म (ज्ञान चर्चा) पर स्वयं नाचते हैं तथा दूसरोंको भी नचाते हैं अर्थात् बाह्य ज्ञानोपदेशमें ही व्यस्त रहते हैं और शास्त्रोंके वचनोंका भी अपनी मति अनुसार स्पष्टीकरण करते हैं.

**ए सब खेल करत है मनुआ, भांत भांत रिझावे ।**

**ब्रह्मवासना कोई पारथें पेखें, सो भी दृष्ट मुरछावे ॥ १४**

अक्षरब्रह्मका मन ऐसे विभिन्न प्रकारके खेल रचाकर जीवोंको रिझाता है. ब्रह्मात्माएँ परमधाम (मूलमिलावा) में ही बैठकर इस खेलको देख रही हैं किन्तु देखते ही मूर्च्छित होकर अपने मूल स्वरूपको भूल गई हैं.

**इस मनुएको कोई न पेहेचाने, जो तुम सकल मिलो संसार ।**

**सब कोई देखे यामें मनुआ, या मनुआमें सब विस्तार ॥ १५**

संसारके सभी जीव एकत्रित होकर प्रयत्न करें तो भी ऐसे शक्तिशाली मनको कोई पहचान नहीं सकता. सब लोग संसारमें इसी मनको व्याप्त देख रहे हैं और इसी मनमें ही समग्र सृष्टिका विस्तार हुआ है.

**बोहोत पुकार करूं किस खातर, ए सब सुपन सरूप ।**

**बेहद बनज का होएगा साथी, सो एक लवें होसी टूक टूक ॥ १६**

इसलिए हे सुन्दरसाथजी ! अब मैं किसके लिए अधिक पुकार करूँ ? संसारके जीव तो सब स्वप्नके ही स्वरूप हैं. इस संसारमें यदि कोई बेहद

भूमिकाकी सुरता होगी, तो वह परमधामकी वास्तविकताका मात्र एक शब्द सुनकर भी घायल हो जाएगी अर्थात् स्वयंको प्रियतमके चरणोंमें समर्पित कर देगी.

**महामत ए सनमंधे पाइए, ऐसा अखंड सुख अपार ।**

**गुरु प्रसादें नाटक पेख्या, पाया मन मनका प्रकार ॥ १७**

महामति कहते हैं, मूल सम्बन्धोंके कारण ही अक्षरातीत परमधामके ऐसे अपार अखण्ड सुख प्राप्त हो सकते हैं. सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजकी कृपासे ही मैं इस संसाररूपी नाटकको देख पाया और वास्तविक मन तथा संसारमें रत रहने वाले मनका रहस्य समझ पाया.

**प्रकरण ६ चौपाई ६५**

**राग मारु**

**हो मेरी वासना, तुम चलो अगमके पार ॥ टेक ॥**

**अगम पार अपार पार, तहां है तेरो करार ।**

**तूं देख निज दरबार अपनो, सुरत एही संभार ॥ १**

हे मेरी वासना (पवित्र आत्मा) ! तुम अगमसे परे मूल स्थान परमधाम चलो. बेहद भूमिसे परे अक्षरके भी पार अपना मूल घर परमधाम है. वहीं पर तुम्हें शान्ति मिलेगी. तुम अपने मूल घरको देखो और वहीं अपनी सुरता (ध्यान) को स्थिर करो.

**तूं कहा देखे इन खेलमें, ए तो पड्यो सब प्रतिबिंब ।**

**प्रपंच पांचों तत्व मिल, सब खेलत सुरतके संग ॥ २**

तुम इस स्वप्नमय संसारके खेलमें क्या देख रही हो ? यह संसार तो अक्षरब्रह्मकी कल्पनाकी मात्र परछाई है. पाँच तत्वोंसे रचित यह संसार झूठा प्रपञ्च मात्र है, इनके साथ मिलकर ब्रह्मात्माओंकी सुरता खेल रही हैं.

**यामें गुनी ग्यानी मुनी महंत, अगम कर कर गावें ।**

**सुनें सीखें पढ़ें पंडित, पार कोई न पावें ॥ ३**

यहाँ पर गुणवान् ज्ञानी, मुनि और महन्त भी इसे अगम्य कहते हैं. पढ़े-

लिखे पण्डितजन सुनकर, सीखकर और शास्त्रोंका अभ्यास करने पर भी इस संसारसे परे (पार स्थित) परमधामका रहस्य समझ नहीं पाए हैं।

तू देख दरसन पंथ पैंडे, करें किव सिध साध ।

चढी चौदे सुन समावें, तहां आडी अगम अगाध ॥ ४

तुम विभिन्न सम्प्रदायोंके सिद्धान्त (दर्शन) का अध्ययन करो। कई सिद्धपुरुषों तथा साधकोंने अपने ढङ्गसे कविताएँ भी रची हैं तथापि उनके सिद्धान्त चौदह लोकोंसे परे जाकर शून्य-निराकारमें खो जाते हैं। वहाँ पर मोहतत्त्वका अथाह अन्धकार व्यवधान बनकर खड़ा है।

ए भरम बाजी रची रामत, बहु विधैं संसार ।

ए जो नैन देखे श्रवन सुनें, सब मूल बिना विस्तार ॥ ५

इस संसारमें विभिन्न प्रकारके भ्रमपूर्ण खेल रचे गए हैं। इसमें जितना आँखोंसे दिखाई देता है और कानोंसे सुनाई देता है, वह सब बिना आधार (मूल) का ही विस्तार है।

वैराट सब मैं देखिया, वैकुण्ठ विष्णु सेषसाई ।

सुनथें जैसे जल बतासा, सो सुन माझ समाई ॥ ६

पातालमें स्थित शेषशायी भगवानसे लेकर वैकुण्ठ धामके भगवान विष्णु पर्यन्त समग्र विराट ब्रह्माण्डको मैंने देख लिया है। पानीके बुलबुलेके समान यह क्षणभङ्गुर संसार शून्यसे उत्पन्न होकर शून्यमें ही समा जाता है।

ए तू देख नाटक निमखको, अब करे कहा विचार ।

पाउ पलमें उलंघ ले, ब्रह्मांड सुन निराकार ॥ ७

इस क्षण मात्रके मिथ्या नाटकको देखकर अब तुम क्या विचार कर रही हो ? मात्र पलके चतुर्थ अंश जितने समयमें तुम शून्य निराकार सहित समग्र ब्रह्माण्डको पार कर लो।

तेरे बीच बाट घाट न तत्व कोई, तू करे पाउ बिना पंथ ।

निरंजनके परे न्यारा, तहां है हमारा कंथ ॥ ८

हे आत्मा ! अपने प्रियतम परमात्माके पास पहुँचनेमें अब तेरे लिए मार्ग

अथवा घाटकी आवश्यकता नहीं है, तुम्हें तो पैदल चले बिना ही विहङ्गम मार्गसे जाना है. निराकारसे परे अखण्ड परमधाममें अपने प्राणाधार प्रियतम हैं.

**अब पार सुख क्यों प्रकासिए, ए है अपनों विलास ।**

**महामत मनसा मिट गई, सब सुपन केरी आस ॥ ९**

महामति कहते हैं, अब परमधामके अखण्ड सुखोंका वर्णन इन शब्दों द्वारा कैसे करूँ ? यह तो अपना विलास है. अब तो स्वप्नवत् संसारकी मेरी सभी मनोकामनाएँ मिट गई हैं.

**प्रकरण ७ चौपाई ७४**

**राग प्रभाती**

**हो भाई मेरे वैस्नव कहिए वाको, निरमल जाकी आतम ।**

**नीच करमके निकट न जावे, जाए पेहेचान भई पारब्रह्म ॥ १**

हे मेरे भाइओ ! वास्तवमें वैष्णवजन तो उन्हें ही कहना चाहिए जिनकी आत्मा निर्मल हो, जो निन्दनीय कार्य कभी न करते हों और जिन्हें पूर्णब्रह्म परमात्माका परिचय प्राप्त हो गया हो.

**इसक लगाए पिआसों पूरा, खेले अबला होए अहेनिस ।**

**ओ अंधे अग्यानी भरममें भूले, पर या ठौर प्रेमको रस ॥ २**

ऐसे वैष्णवजन तो पूर्णरूपेण समर्पित होकर पूर्णब्रह्म परमात्मासे प्रेम करते हैं तथा दिन-रात सखीभावसे भक्ति करते हैं. किन्तु विवेकरूपी दृष्टिसे रहित अज्ञानीजन ही भ्रममें डूबे रहते हैं, परमात्माका धाम तो प्रेम रससे परिपूर्ण है.

**जब आतम द्रष्टि जुडी पर आतम, तब भयो आतम निवेद ।**

**या विध लोक लखे नहीं कोई, कोई भागवंती जाने ए भेद ॥ ३**

जब आत्म-दृष्टि मूल स्वरूप परमात्माके साथ जुड़ जाती है, तब परमात्माके प्रति आत्मा समर्पित हो जाती है. इस प्रकारके प्रेमका ज्ञान संसारके लोगोंको नहीं है. मात्र परमधामकी भाग्यशाली आत्माएँ ही इस रहस्य (भेद) को जानती हैं.

जब वैष्णव अंग किएरी अप्रस, और कैसी अप्रसाई ।

परस भयो जाको पुरुषोत्तमसों, सो बाहेर न देवे देखाई ॥ ४

सच्चे वैष्णवने ब्रह्मज्ञानसे अपने हृदय (अंग)को पवित्र कर लिया हो तो उसे अन्य किसी प्रकारकी पवित्रताकी आवश्यकता नहीं रहती. जिनका सम्बन्ध पुरुषोत्तम परमात्माके साथ हो गया होता है, वे बाह्य दिखावा नहीं करते.

अहेनिस आवेस हुआ अंग में, जैसे मद चढ्यो महामत ।

वाको आसा और न उपजे त्रसना, वह एकैसों एक चित ॥ ५

ऐसे वैष्णवोंके अङ्गोंमें मदमस्त बने हुए मनुष्योंकी भाँति दिन-रात प्रभुके प्रेमका आवेश भरा रहता है. उनके मनमें संसारकी किसी भी प्रकारकी आशा या तृष्णा उत्पन्न नहीं होती. वे तो एकाग्र चित्त होकर मात्र परब्रह्म परमात्माके प्रेममें मग्न होते हैं.

उतपन प्रेम पारब्रह्म संग, वाको सुपन हो गयो संसार ।

प्रेम बिना सुख पारको नाही, जो तुम अनेक करो आचार ॥ ६

जिनके हृदयमें पूर्णब्रह्म परमात्माके प्रति प्रेम उत्पन्न हो गया, उनके लिए यह संसार स्वप्नवत् बन जाता है. आचार-विचारके अनेक स्वाङ्ग रचने पर भी प्रेमके बिना पारका सुख प्राप्त नहीं होता.

सांचारी साहेब सांचसों पाइए, सांचको सांच है प्यारा ।

या वैष्णवकी गत देखो रे वैष्णवो, महामत इनसे भी न्यारा ॥ ७

सत्य स्वरूप पूर्णब्रह्म परमात्मा हृदयके सच्चे प्रेम द्वारा ही प्राप्त होते हैं, क्योंकि सत्य परमात्माको हार्दिक प्रेम ही प्रिय लगता है. इसलिए हे भक्तजनो ! वैष्णवकी इस पद्धति (गतिविधि) को तुम देखो, महामति तो इससे भी आगे हैं.

प्रकरण ८ चौपाई ८१

कहा भयो जो मुखथें कह्यो, जब लग चोट न निकसी फूट ।

प्रेम बान तो ऐसे लगत हैं, अंग होत हैं टूक टूक ॥ १

मात्र मुखसे कहने से क्या होगा, जब तक परमात्माके प्रेमकी वाणी हृदयको बँध न ले; प्रेम (वचनों) के बाण इस प्रकार चुभते हैं कि सारे अङ्ग टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं (ऐसे प्रेमी ही परमात्माको समर्पित हो सकते हैं)।

मुखके सबद मैं बोहोत सुने, इन भी कोई दिन किया पुकार ।

पर घायल भई सो तो कोइक कुलीमें, सो रहत भवसागर पार ॥ २

मैंने साधु सन्तोंके मुखसे परमात्माकी प्रशंसा (वाणी) वारंवार सुनी है। वे बाह्यरूपसे परब्रह्म परमात्माको याद करते हैं। परन्तु हृदयस्पर्शी वचनोंसे घायल होनेका सद्भाग्य इस कलियुगमें किसी भाग्यशालीको ही प्राप्त होता है। ऐसे भक्तजन इस झूठे भवसागरमें रहते हुए भी इससे परे (मायासे अलिप्त) रहते हैं।

वाको आग खाग बाघ नाग न डरावे, गुन अंग इंद्रीसे होत रहीत ।

डर सकल सांमी इनसे डरपत, या विध पाइए प्रेम परतीत ॥ ३

ऐसे भक्तोंको अग्नि, हिंसक जीव-जन्तु, बाघ या नाग, कोई भी डरा नहीं सकते। वे तो अपने गुण, अङ्ग, इन्द्रियोंके प्रभावसे ऊपर उठे हुए होते हैं। इसलिए भय पैदा करने वाली सभी शक्तियाँ इनसे डरती हैं। इस प्रकार उनके प्रेमकी पहचान होती है।

लगी वाली और कछू न देखे, पिंड ब्रह्मांड वाके है री नहीं ।

ओ खेलत प्रेमे पार पियासों, देखनको तन सागर माहीं ॥ ४

जिनको धामधनीके प्रेमकी लगन लग जाती है, ऐसी आत्माएँ और कुछ देखती ही नहीं हैं। उनके लिए पिण्ड (शरीर) तथा ब्रह्माण्डका मानों अस्तित्व ही नहीं है। वे संसारमें रहती हुई भी सदैव अपने प्रियतमके प्रेममें रमण करती हैं, देखने मात्रके लिए उनका शरीर संसार सागरमें होता है।

जो कोई ऐसे मगन होए खेले प्रेममें, तो या विध हमको है री सेहेल ।

पर पीवना प्रेम और मगन न होना, ए सुख औरों है मुस्किल ॥ ५

यदि कोई इस प्रकार अपने प्रियतमके साथ प्रेममें मस्त होकर खेले, यह तो हम ब्रह्मात्माओंके लिए अत्यन्त सरल है. किन्तु प्रेम रसका आस्वादन करते हुए भी उसमें मगन न होना अर्थात् होशमें रहना, यह सुख दूसरोंके लिए कठिन होता है.

ए जिन कारन किया है कारज, सो ढूँढों सैयां जो पियाने कही ।

ना तो अबहीं मगन होए खेलों प्रेममें, तब तो देखन केहेन सुनन ते रही ॥ ६

इस ब्रह्माण्डकी रचना जिन ब्रह्माङ्गनाओंके लिए की गई है वे सभी इस ब्रह्माण्डमें आकर मायामें भूल गई हैं. 'उन्हें ढूँढ़ कर (जगाकर) परमधाममें ले आओ' ऐसी सद्गुरुकी आज्ञा है अन्यथा अभी से प्रेममें मगन होकर मैं भी मात्र खेलने लग जाऊँ, तो ब्रह्मात्माएँ जगी अथवा नहीं यह देखना, उन्हें प्रबोधित करना तथा उनकी बातें सुनना, इन सबकी आवश्यकता ही नहीं रहती.

देखन को हम आएरी दुनियां, हमहीं कारन कियो ए संच ।

पार हमारे न्यारा नहीं, हम पारमें बैठे देखें परपंच ॥ ७

हे सुन्दरसाथजी ! यद्यपि हम सब इस झूठी मायाके खेलको देखनेके लिए यहाँ आए हैं, हमारे लिए ही इस स्वप्नवत् संसारकी रचना की गई है, तथापि परमधाम हमसे दूर नहीं है. हम तो परमधाममें ही बैठकर इस झूठे संसारके प्रपञ्चको स्वप्नकी भाँति देख रहे हैं.

जिन बांधे हैं भवन चौदे, सो नार हमसे रेहेत है न्यारी ।

दुखमें बैठी सुख लेवे महामति, पारके पार पियाकी प्यारी ॥ ८

जिस (माया) ने इन चौदह लोकोंको अपने मोहजालमें फँसाया है, वह माया हमसे अलग रहती है. महामति दुःखपूर्ण संसारमें रहकर भी धनीजीके अखण्ड सुखका अनुभव कर रही है क्योंकि महामति ब्रह्माण्डसे भी परे अखण्ड परमधामके धामधनीकी प्यारी अर्धाङ्गिनी है.

प्रकरण ९ चौपाई ८९

सुनो भाई संतो कहूं रे महंतो, तुम अखंड मंडल जान पाया ।

वैस्नव वानी पूछें गुरु ग्यानी, ऐसा अंधेर धंधा क्यों ल्याया ॥ १

हे सन्तो महन्तो ! मैं तुम्हें जो कहता हूँ उसे ध्यान पूर्वक सुनो. क्या तुमने अखण्ड मण्डल (ब्रह्मधाम) को जान लिया है ? तुम वैष्णवीय सिद्धान्तोंको ठीकसे समझो और अपने ज्ञानी गुरुजनोंसे पूछ लो. तुम व्यर्थमें ऐसे अज्ञानरूप अन्धकारपूर्ण व्यवहार क्यों कर रहे हो ?

जिन गोकुलको तुम अखंड कहत हो, सो तुमारी द्रष्टे न आया ।

सुकजीके वचनमें प्रगट लिखा है, पर तुमको किने न बताया ॥ २

जिस गोकुल लीलाको तुम अखण्ड कहते हो और उसे इस भूमण्डलमें ही दिखाते हो, वह तुम्हारी दृष्टि (समझ) में नहीं आई है. शुकदेवजीने श्रीमद्भागवतमें स्पष्ट कहा है किन्तु आज तक तुम्हें किसीने नहीं समझाया है.

जाको तुम सतगुरु कर सेवो, ताको इतनी पूछे खबर ।

ए संसार छोड चलेंगे आपन, तब कहाँ है अपनों घर ॥ ३

जिनको तुम सद्गुरु मानकर सेवा करते हो, उनसे इतना तो पूछो कि मृत्युके बाद इस संसारको छोड़कर हम कहाँ जाएँगे ? हमारी आत्माका मूलघर (अखण्ड धाम) कहाँ है ?

सबदकी वस्तु सो तो महाप्रले लीनी, और ठौर बताओ मोही ।

जाको सुध न आप और घर की, क्यों पार पावेगा सोई ॥ ४

हे साधुजन ! जिस स्थानका वर्णन अपरा वाणीके शब्दों द्वारा होता है, वह तो महाप्रलयमें नाश हो जाएगा. फिर निराकारके पार यदि कोई दूसरा सर्वोच्च (अखण्ड) स्थान हो तो उसे दिखाओ. जिन्हें अपनी आत्मा तथा उसके मूलघर (परमधाम) की पहचान नहीं है, ऐसे लोग इस भवसागरको कैसे पार कर सकेंगे ?



कोई आप बड़ाई अपने मुखथें, करो सो लाख हजार ।

परमेश्वर होएके आप पुजाओ, पर पाओ नहीं भव पार ॥ ५

कोई अपने मुँहसे अपनी प्रशंसा हजारों या लाखों गुना भी कर ले एवं स्वयंको परमेश्वर घोषित कर अपनी पूजा भी करवाने लगे, तथापि वह आत्म-ज्ञानके अभावमें भवसागरसे पार नहीं हो सकता.

कोई सुध न पावे याकी, ऐसी माया सपरानी ।

आपे प्रभु आपे सेवक, मांझे मांझ उरझानी ॥ ६

सत्य वस्तुकी सुधि किसीको भी सरलतासे नहीं होती, क्योंकि यह माया अज्ञानरूप अन्धकारमें फँसानेवाली है. यह स्वयं कभी स्वामी तो कभी सेवक बनकर लोगोंके मनको भ्रमित कर देती है.

बाहर भेष देख भुलाने, तुम भीतर खोज न कीनी ।

भागवत वचन वल्लभी टीका, तुम याकी सुध न लीनी ॥ ७

हे सज्जनो ! तुम बाह्य वेश-भूषा देखकर भ्रमित हो रहे हो अर्थात् बाह्य ज्ञानसे प्रभावित हो गए हो. तुमने उसके आन्तरिक तत्त्वज्ञानको समझनेका प्रयत्न नहीं किया. तुमने श्रीमद्भागवतकी वल्लभी (सुबोधिनी) टीकाका अर्थ समझनेका प्रयत्न ही नहीं किया.

ए तो हाथमें वस्त कहूँ दूर न देखाऊँ, तुम देखो खोज विचारी ।

सांच झूठको प्रगट पारखो, कोई निकसो इन अंधारी ॥ ८

हे सज्जनो ! मैं दूरकी बात नहीं कर रहा हूँ अपितु तुम्हारे हाथोंमें पड़ी हुई वस्तु (टीका) की चर्चा कर रहा हूँ, तुम उसका गहन अध्ययन करो और उसमें वर्णित सत्य-असत्यकी परख कर इस अज्ञानके अन्धकारसे बाहर निकलो.

भवसागर और भागवत, याकी कुंजी एक समारी ।

ए दोऊ ताले दोऊ दरवाजे, कोई खोल न सके संसारी ॥ ९

इस भवसागरके और श्रीमद्भागवतके रहस्योंको समझनेकी तारतम ज्ञानरूपी

एक ही कुञ्जी है. इस कुञ्जीके बिना भवसागर और भागवत जैसे दोनों बड़े द्वारों पर लगे तालोंको कोई मायावी जीव खोल नहीं सकता.

**ए संसार बड़ा है कोहेडा, और कोहेडा भागवत ।**

**ए दोऊ एक कुंजीसे खोलूं, जो कोई देखों आगे संत ॥ १०**

यह संसार भी एक बड़ी पहेली (रहस्यपूर्ण प्रश्न) है और श्रीमद्भागवत भी रहस्यपूर्ण ग्रन्थ है. यदि कोई जिज्ञासु सन्तजन मिलें, तो इन दोनोंका रहस्य मैं एक ही कुञ्जी (तारतम ज्ञान) से खोलकर स्पष्ट कर दूँ.

**जो कोई खप करे या निधकी, सो नाखे आप निघात ।**

**महामत कहे ताए अखंड सुख दीजे, टालिए संसारी ताप ॥ ११**

महामति कहते हैं, जिन किन्हींमें भी इस अखण्ड ज्ञानकी प्राप्तिके लिए जिज्ञासा हो, तो वे अपने अहंको त्यागकर स्वयंको समर्पित करें, ऐसे लोगोंको ही अखण्ड सुख देकर मैं उनके सांसारिक तापको मिटा दूँ.

**प्रकरण १० चौपाई १००**

**राग नट**

**रे हूं नाहीं रे हूं नाहीं सिध साध संतरी भगत, ना हूं वैस्नव अप्रस आचार ।**

**जात कुटुम कुल नीच ना ऊंचमें, ना हूं वरन अठार ॥ १**

श्री प्राणनाथजी पाँच तत्त्वोंसे ऊपर उठकर ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवतिके अनुसार आत्मभावसे कहते हैं, हे सज्जनो ! मैं सिद्ध, साधु, सन्त या भक्तोंमेंसे नहीं हूँ. वैष्णवोंके शुद्ध आचार-विचारमें भी नहीं हूँ. जाति, कुटुम्ब, कुल, ऊँच-नीच तथा अठारह वर्णोंमें भी नहीं हूँ.

**रे हूं नाहीं व्रत दया संझा न अगिन कुंड, ना हूं जीव जगन ।**

**तंत्र न मंत्र भेष न पंथ, ना हूं तीरथ तरपन ॥ २**

मैं व्रत करनेमें, दान-दयामें, सन्ध्या-स्मरणमें, अग्निकुण्डके होम-हवन, पशुबलि आदिमें नहीं हूँ. तन्त्र, मन्त्र, भेष, पन्थ तथा तीर्थ और तर्पणमें भी नहीं हूँ.

रे हूं नहीं करामात मत अगम निगम, धरम न करम उनमान ।

सुपन सुषोपत जाग्रत न तुरिया, तप न जप न ध्यान ॥ ३

मैं चमत्कारोंमें तथा अगम-निगम जैसे मत और धर्म-कर्मके काल्पनिक सिद्धान्तोंमें नहीं हूँ। इस झूठे संसारकी जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति तथा तुरिया इन चारों अवस्थाओंमें भी नहीं हूँ और तप, जप तथा दानमें भी नहीं हूँ।

रे हूं नहीं अंग इंद्री ग्यान ब्रह्मचारी, ब्रह्मांड न लगत बचन ।

रूप रंग रस धातमें नहीं, गुन पख दिवस ना रैन ॥ ४

मैं इस झूठे शरीरके गुण, अङ्ग, इन्द्रियोंके ज्ञानमें तथा ब्रह्मचर्यमें नहीं हूँ। ब्रह्माण्डके शब्द भी मुझे व्यक्त करनेमें असमर्थ हैं। मैं रूप, रस, रङ्ग, धातु तीनों गुणोंमें, शुक्ल कृष्ण दोनों पक्षोंमें तथा सांसारिक रात और दिवसमें भी नहीं हूँ।

रे हूं नहीं सबद सोहं जो तत्व पांचमें, ना षट चक्र सिर पवन ।

त्रिकुटी त्रिबेनी तीनोंही कालमें, ना अनहद अजपा आसन ॥ ५

मैं न तो 'सोऽहं' शब्दमें हूँ और न ही पाँच तत्त्वोंमें। शरीरमें स्थित छः चक्रोंमें, ऊर्ध्ववृत्ति तथा प्राणायाम जैसी क्रियाओंमें भी मैं नहीं हूँ। त्रिकुटी (ईडा, पिङ्गला, सुषुम्ना नाडियाँ) एवं त्रिवेणी सङ्गममें तथा तीनों कालमें भी मैं नहीं हूँ। अनहद नाद, अजपा जाप और चौरासी प्रकारके योगासनसे भी मैं परे हूँ।

रे हूं नहीं नवधा में मुक्ति में भी नहीं, ना हूं आवागमन ।

वेद कतेब हिसाब में नहीं, ना माहें बाहेर ना सुन ॥ ६

नवधा भक्ति और (वैकुण्ठकी) चार प्रकारकी मुक्तिमें मैं नहीं हूँ। जन्म और मृत्युके चक्रमें भी मैं नहीं हूँ। वेद, कतेबके हिसाबमें मैं नहीं आता। पाँच तत्त्वके बने हुए पिण्डके अन्दर तथा इसके बाहर चौदह लोक ब्रह्माण्डमें तथा शून्य मण्डलमें भी मैं नहीं हूँ।

रे हूं नहीं न्यारा जहां हूं तहां नजीकमें, ना हूं उनमुनी आकार ।

ना हूं द्रष्टे किन सुनिया, सृष्टे ना हूं निराकार ॥ ७

इन सबमें न होने पर भी मैं तुमसे अलग नहीं हूँ। जहाँ हूँ वहाँ तुमसे अधिक

निकट हूँ, मैं उन्मुनी शक्ति अथवा किसी आकारमें भी नहीं हूँ, मुझे कोई देख या सुन नहीं सकता किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि मैं निराकार हूँ,

तुम सांचे सिध साध भगत तुमको वैस्नवो, सांच सकल संसार ।

भनत महामत तुम अमर होउ याही में, मैं ना कछु यामें निरधार ॥ ८

महामति कहते हैं, हे वैष्णवो ! तुम स्वयंको सच्चे, सिद्ध, साधु और भक्त मानते हो और इस संसारको सत्य मानते हो तो तुम इसीमें अमर रहो, परन्तु मैं तो निश्चित ही इन सबमें नहीं हूँ.

प्रकरण ११ चौपाई १०८

राग गौरी

वचन विचारो रे मीठडी, वल्लभाचारज वानी ।

अरथ लिए बिना ए रे अंधेरी, करत सबों को फानी ॥ १

हे सज्जनो ! श्रीवल्लभाचार्यजीने श्रीमद्भागवतके अर्थघटन द्वारा धर्म और तत्त्वज्ञानके सिद्धान्तोंका मधुर वर्णन किया है. उनकी इस मधुरवाणीको समझो और विचारो. उनके रहस्योंको समझे बिना यह अज्ञानता सबको असत्यकी ओर धकेल रही है.

वानी गाऊं श्री वल्लभाचारज, ज्यों वैस्नवको सुख होए ।

सत वचन तो बोहोत न कहूँ, जानों दुख पावे दुष्ट कोए ॥ २

इसलिए सच्चे वैष्णवोंको सुख प्राप्त हो, इस आशयसे मैं वल्लभाचार्यजीके दर्शाए हुए यथार्थ सिद्धान्तोंका निरूपण करता हूँ. (सत्य तो कटु होता है, इसलिए) सत्य वचनोंको अधिक नहीं कहूँगा, क्योंकि मात्र बाह्यार्थ समझनेवाले दुर्जन इन सत्य वचनोंसे अधिक दुःखी होंगे.

ए वानीको टेढा कहावो, ए कौन तुमारा धरम ।

वैस्नव कहाए के उलटे चलिए, ए नहीं तिनके करम ॥ ३

श्रीवल्लभाचार्यजीकी वाणीका यथार्थ अर्थघटन न कर उलटा अर्थ बताना यह तुम्हारी कौन-सी नीति है ? क्योंकि वैष्णव कहलाना और वैष्णव धर्मके सिद्धान्तोंसे विपरीत काम करना, यह सच्चे वैष्णवके लिए शोभास्पद नहीं है.

देखीते वैस्नव अति सुन्दर, नीके बनावत भेख ।

माला तिलक धोए धोती पेहेरे, एक दूजे के देख ॥ ४

बाह्यदृष्टिसे तो ऐसे वैष्णवजन अति सुन्दर लगते हैं, वेष-भूषा भी सुन्दर धारण करते हैं। धुली हुई स्वच्छ धोती, हाथमें माला, भाल पर तिलक, ये सभी एक दूसरेके अनुकरणमें ही धारण की जाती है।

कौन तुम और कहां तैं आए, और कहां है तुमारा घर ।

ए कौन भोम कहां श्री कृष्णजी, पाओगे कौन तर ॥ ५

परन्तु तुम कौन हो, इस संसारमें कहाँसे आए हो, तुम्हारा मूल घर कहाँ है, यह संसार क्या है, श्री कृष्णजी कहाँ हैं और उन्हें किस प्रकार प्राप्त कर सकोगे ? इन प्रश्नों पर विचार तो करो।

उत्तम भेष धरो वैस्नव के, और वैस्नव आप कहाओ ।

जो वैस्नव वस करे नव अंग, सो वैस्नव क्यों न जगाओ ॥ ६

वैष्णवकी उत्तम वेष-भूषा धारण कर स्वयंको सच्चा वैष्णव कहला रहे हो, किन्तु जो साधना द्वारा शरीरके नौ अङ्गोंको वशमें रखे, वही सच्चा वैष्णव है। इसलिए तुम नवों इन्द्रियोंको वशमें रखकर अपने आपमें स्थित सच्चे वैष्णवत्वको जाग्रत क्यों नहीं करते ?

तुम पांचके बांधे पांच देखत हो, पांचके चौदे भवन ।

ए पांचों प्रले हो जासी, पीछे कब ढूँढोगे अपना वतन ॥ ७

हे वैष्णवो ! पञ्च महाभूतोंसे बने हुए इस शरीरमें बँधकर तुम मात्र पाँच तत्त्वको ही महत्त्वपूर्ण मानते हो। इन्हीं पाँच तत्त्वोंके द्वारा चौदह लोकोंका भी सर्जन हुआ है। किन्तु महाप्रलयके समय इन पाँचों तत्त्वोंका नाश हो जाएगा, फिर तुम अपने मूल घरको कब ढूँढोगे ?

ए वानी तो अप्रस करे आतम, तुम अप्रस करो बाहेर अंग ।

आकार अप्रस किए कहा होए, इन आतम सों कैसो सनमंध ॥ ८

वल्लभाचार्यजीकी यह वाणी (यदि गहराईसे समझोगे) तो आत्माको शुद्ध

(पवित्र) बना देगी अर्थात् इससे आत्माकी पहचान भी हो जाएगी. परन्तु तुम तो इस वाणीका मात्र बाह्यार्थ लगाकर बाह्यअङ्गोंका ही शुद्धिकरण करते हो. मात्र शरीरको शुद्ध बनानेसे क्या होगा ? इसका आत्माके साथ क्या सम्बन्ध है ?

**तुम झूठको साजो समारो, जो झूठा हो जासी ।**

**सांचे सुख देवे जो सांचा, सो कबे ओलखासी ॥ ९**

तुम पाँच तत्त्वोंसे बने हुए इस झूठे (नश्वर) शरीरको सजानेमें ही रत हो, यह तो एक दिन नाश हो जाएगा, परन्तु अखण्ड सुख प्रदान करने वाले परमात्माकी पहचान कब करोगे ?

**माहें अंधेर और वैस्नव कहावो, ए तो बातें सब फोक ।**

**ज्यों धूरत नाम धरावे धनवंत, पासे नहीं दमडी रोक ॥ १०**

अन्तःकरणमें अज्ञानका अन्धकार छाया हुआ है और तुम स्वयंको वैष्णव कहलाते हो, ये सब बातें निरर्थक हैं. जैसे कोई धूर्त अपना नाम धनपति रखे, परन्तु उसके पास फूटी कौड़ी भी न हो (इसी प्रकारकी तुम्हारी स्थिति है).

**विध न लहो विवाद करो, ना देखो वचन विचारी ।**

**वल्लभ वानी समझे बिना, खोवत निध तुमारी ॥ ११**

तुम वैष्णवोंकी रीतिको समझते नहीं हो और निरर्थक विवाद करते हो. वल्लभाचार्यजीके वचनोंको समझे बिना तुम अपनी अमूल्य सम्पत्ति (मानव जीवन) को व्यर्थ गँवा रहे हो.

**अहंकारें कै जुलम करो, ना त्रास सील संतोष ।**

**गुन अंग इन्द्रीके वस परे, ना देखो नजरों दोष ॥ १२**

अहङ्कारी बनकर तुम दूसरों पर अत्याचार करते हो. मनमें किसी भी प्रकारका भय, शील तथा सन्तोष नहीं रखते. गुण, अङ्ग, इन्द्रियोंके दास बनकर अपने दोषोंको भी नहीं देख रहे हो.

**धूरत करके ल्याओ धन, खरचो मुख करो उनमाद ।**

**मेले मेलो मुख भाखो उछव, पातलिएं डालो प्रसाद ॥ १३**

कपटपूर्ण कार्यो द्वारा धन एकत्रित करते हो. उसका खर्च व्यर्थ कार्योमें करके अभिमानमें मग्न रहते हो. दिखावेके लिए उत्सवोंका आयोजन करके अपने मुँह बड़प्पन हाँकते हो और श्री कृष्णजीके प्रसादको पत्तलमें डालकर वितरण करते हो.

**एक सीत जूठको ब्रह्मा जैसा, जलमें मीन होए आया ।**

**ए जूठको महातम वानी देखावे, ग्वाल्लोको चल्लू न कराया ॥ १४**

श्री कृष्णजीके प्रसादका मात्र एक कण प्राप्त करनेके लिए ब्रह्माजी भी यमुनाजीके जलमें मछली बन कर आए थे (तथापि उन्हें प्रसाद नहीं मिला था). इस प्रसादका महत्त्व वल्लभाचार्यजीकी वाणी दर्शाती है. उस समय श्रीकृष्णजीने जमुनाजीके जलमें ग्वाल्लोको आचवन भी करने नहीं दिया था. (तात्पर्य यह है कि श्री कृष्णजीने ब्रह्माजीको भी प्रसादके लिये योग्य नहीं समझा था किन्तु इसी प्रसादको तुम पत्तलोंमें डालकर वितरण करते हुए अनर्थ कर रहो हो).

**ओ हांसी ठठोली करे हरामी, ताए ले बैठो मंडली मुख ।**

**ए नीच करम डबोवे नरकमें, पीछे छूट पाओगे कब सुख ॥ १५**

निन्दनीय तर्क-वितर्क, हँसी-मजाक जैसे हलके कर्म करने वाले अधम व्यक्तिको मण्डलीका प्रमुख बना देते हो. परन्तु ये नीच कर्म तो नरकमें डूबाएँगे, फिर इससे मुक्त होकर अखण्ड सुख कब पाओगे ?

**ए वानी उत्तम चढावे ऊंचे, ए उलटे अधम स्वादे ।**

**कठिन पंथ चढाए नहीं ऊंचे, पीछे नीचे दौडे नीच वादे ॥ १६**

श्रीवल्लभाचार्यजीकी वाणी तो उत्तम है जो जीवोंको ऊपर चढ़नेका मार्ग दिखाती है, परन्तु अधम लोग इसका विपरीत अर्थ कर इन्द्रियोंके विषय सुखके स्वादमें नीच मार्ग पर चलते हैं. ऊँचाई पर चढ़नेका मार्ग कठिन होनेके कारण वहाँ सरलतासे पहुँचा नहीं जाता. इसलिए वाद-विवाद करने

वाले नीच लोग उस मार्गको छोड़कर पतनके सरल मार्ग पर दौड़ते हैं।

**कुकरम करो कुटिल गत चालो, आगे पीछे चींटी हार ।**

**वल्लभ कुंअर कितनेको बरजे, कै उलटे सेवक संसार ॥ १७**

कुटिल चाल चलकर अधम कार्य करते हुए चींटियोंकी पंक्तिकी भाँति एक दूसरेकी देखा-देखीमें भटकते रहोगे तो वल्लभाचार्यजीके पुत्र विठ्ठलाचार्यजी कितने लोगोंको समझाकर रोक पाएँगे, क्योंकि इस संसारमें विपरीत मार्ग पर चलने वाले शिष्य तो अनेक होते हैं।

**दोस नहीं इन वानी केरो, ए तो दुष्ट दासीकी कमाई ।**

**अधम सिष्य गुरुको बुरा कहावे, पर सोने न लगत स्याही ॥ १८**

इसमें श्रीवल्लभाचार्यजीकी वाणीका कोई दोष नहीं है। यह तो दुष्ट मायाका ही कार्य है जो वास्तविकताको समझने ही नहीं देती। अधम शिष्य अज्ञानतावश अपने गुरुका नाम कलंकित करते हैं परन्तु सोनेको स्याहीका काला दाग नहीं लग पाता अर्थात् अधम शिष्योंके व्यवहारसे गुरु कलंकित नहीं होते।

**ए वानी तुम नाही पेहेचानी, यामें विध विधके प्रकास ।**

**इन प्रकासमें खेलें श्रीकृष्णजी, रमें अखंड लीला रास ॥ १९**

वास्तवमें तुम वल्लभाचार्यजीकी इस पवित्र वाणीको समझ नहीं पाए हो। इसमें तो अनेक रहस्यमयी बातोंकी स्पष्टता है। इसमें श्रीकृष्णजी द्वारा रची गई अखण्ड रासलीलाका रहस्य भी स्पष्ट किया गया है।

**तुम पनधारी आतम निवेदी, वानी न देखो विचारी ।**

**अजूं न मानो तो इत आओ, मैं देखाऊं लीला तुमारी ॥ २०**

तुम स्वयं बाह्य स्वच्छताके नियमोंका पालन करने वाले समर्पण भावसे आत्म निवेदी कहलाते हो परन्तु वल्लभाचार्यजीकी पवित्र वाणीका विचार भी नहीं करते। अभी भी तुम्हें यदि विश्वास न हो तो मेरे पास आओ। मैं वल्लभाचार्यजी द्वारा वर्णित रासलीलाकी वास्तविकता तुम्हें समझाऊँ।



वैस्नव होए सो वचन मानसी, और जो वल्लभ वानीसे टलिया ।

महामत कहे सो काहेको जनम्या, गर्भ माहें क्यों न गलिया ॥ २१

महामति कहते हैं, जो सच्चे वैष्णव होंगे वे ही वल्लभाचार्यजीकी वाणीको ग्रहण करेंगे अन्यथा इस वाणीसे विपरीत चलने वालोंने तो जन्म ही क्यों लिया, वे गर्भमें ही क्यों नष्ट नहीं हुए ?

प्रकरण १२ चौपाई १२९

राग श्री

आज सांच केहेना सो तो काहूं ना रुचे, तो भी कछुक प्रकासूं सत ।

सतके साथीको सतके वान चूभसी, दुष्ट दुखासी दुरमत ।

अखंड सुख लागियो ॥ १

आजके युगमें परिस्थिति ऐसी हो गई है कि सत्य बात कहे जाने पर किसीको सुहाती नहीं, तथापि कुछ सत्य बातें मैं कहूँगा. सत्यके साथी ब्रह्मसृष्टिको तो यह सत्य भाएगा, परन्तु इसके विपरीत चलने वालोंको अवश्य ठेस पहुँचेगी. चलो, अखण्ड सुखकी ओर बढ़ें.

वेदने पुरान सास्त्र सब उपजे, पीछे भारत परव अठार ।

दाझ न मिटी तिन व्यासकी, पीछे उदयो भागवत सार ॥ २

वेद व्यासजीने चारों वेदोंका वर्गीकरण किया और कथानक शैली द्वारा उनका अर्थ समझानेके लिए पुराणोंकी रचना की. अन्तमें अठारह पर्व वाले महाभारतकी रचना की, तथापि उनकी दाह शान्त नहीं हुई और अन्तमें नारदमुनिकी प्रेरणासे सबके साररूप श्रीमद्भागवतकी रचना की.

ए सुखकी सागर सत वानी प्रगटी, सो लई साधों बिचार ।

अधिक अमृत सुकें सींचिया, तिन देखाए दरवाजे पार ॥ ३

सुखके सागरके समान यह अमृतवाणी प्रकट हुई. इस वाणीको साधु सन्तोंने विवेक पूर्वक ग्रहण किया. श्रीशुकदेवजीने इसमें प्रेमरसका अमृत सींचा और इसके द्वारा निराकारके पारके द्वार खोल दिए.

भले या जुगमें आचारज प्रगटे, जिन चरची सुकजीकी वान ।

धन धन टीका श्री वल्लभी, इन प्रेम प्रकास्यो प्रमान ॥ ४

इस कलियुगमें विभिन्न आचार्य प्रकट हुए, जिन्होंने शुकदेवजीकी वाणी श्रीमद्भागवतके सिद्धान्तोंको समझानेके लिए टीकाओंकी रचना की. उन टीकाओंमें वल्लभाचार्यजीकी सुबोधिनी टीका धन्य है, जिसमें उन्होंने दृष्टान्त और प्रमाण देकर परब्रह्मके प्रेमका निरूपण किया है.

आए मिलो रे वैष्णव पारखी, तुम देखियो विचारी सब अंग ।

टीका वल्लभी वानी सुकदेवकी, ताके एक अक्षरको न कीजे भंग ॥ ५

हे विवेकी वैष्णवजन ! तुम सब मिलकर यहाँ आओ और इस वाणीके सभी विषयों पर विचार करो. शुकदेवजीकी वाणी श्रीमद्भागवत तथा उस पर वल्लभाचार्यजी द्वारा रचित टीकाके एक अक्षरको भी भङ्ग मत करना.

इत वृन्दावन रासलीला रातडी अखंड, खेलें पीउ गोपी जन ।

तो उधव संदेसे किन पर ल्याइया, कहो किनने किए रुदन ॥ ६

वल्लभाचार्यजीने स्पष्ट कहा है कि वृन्दावनमें महारात्रिमें अखण्ड रासलीला चल रही है, श्रीकृष्णजी गोपियोंके साथ रास खेल रहे हैं. अब तुम बताओ कि उद्धवजी श्रीकृष्णजीका सन्देश लेकर किन गोपियोंके पास गए ? किन्होंने श्रीकृष्णजीके वियोगमें रुदन किया ? (रास लीला अखण्ड होनेसे मूल गोपियाँ तो रास खेल रही हैं फिर वे गोपियाँ कौन हैं, जिनके पास उद्धव सन्देश लेकर गए हैं.)

इत रात अखंड सो तो टाली न टले, भी कहा आगे ऊग्या रे दिन ।

सखियां पीउ उठे सब घरसे, ए घर कौन रे उतपन ॥ ७

वृन्दावनकी रास लीलाकी वह रात्रि तो अखण्ड है, उसका नाश करना चाहें तो भी नहीं हो सकता. वल्लभाचार्यजीने श्रीमद्भागवतकी टीकामें उल्लेख किया है कि जब रात्रिके बाद पुनः दिन हुआ तो सखियाँ और श्रीकृष्ण अपने-अपने घरमें उठे (जागृत हुए). हे वैष्णवजन ! वह घर कौन-सा है और उस घरको किसने उत्पन्न किया ?

व्रज अखंड ब्रह्मांडमें हुआ, बिचार देखो रे बुधवंत ।

एक रंचक न राखी चौदे लोककी, महाप्रले कह्यो ऐसो अंत ॥ ८

हे बुद्धिमानो ! विचार करो कि व्रजलीला अखण्ड ब्रह्माण्डमें हुई (फिर तो यह ब्रह्माण्ड ही नाश नहीं हुआ होगा क्योंकि) महाप्रलयमें तो चौदह लोकोंकी रजमात्र भी शेष नहीं रहती, सब समाप्त हो जाता है.

व्रज ने रास अखंड कहे प्रगट, सो तो नित नित नवले रंग ।

एक रंचक रहे जो ब्रह्मांडकी, तो टीका को होवे रे भंग ॥ ९

वल्लभाचार्यजीने श्रीमद्भागवतकी टीकामें व्रज और रासके ब्रह्माण्डकी लीलाको स्पष्टरूपसे अखण्ड कहा है और वहाँ प्रतिदिन नई-नई लीलाएँ होती हैं. यदि महाप्रलयके समय ब्रह्माण्डका अंश मात्र भी शेष रह जाए तो वल्लभाचार्यजी रचित भागवतकी टीका असत्य हो जाएगी.

रात दिन अखंड कहे व्रजमें, दिन नहीं वृन्दावन रास ।

रात अखंड लीला खेलहीं, दोऊ कैसे अखंड विलास ॥ १०

व्रजके रात और दिन दोनों अखण्ड कहे गए हैं और वृन्दावनकी अखण्ड रासलीलामें तो दिवस की बात ही नहीं है. रात्रिको ही अखण्ड रास लीला हुई है तो व्रज और रास इन दोनों लीलाओंको किस प्रकार अखण्ड कहा जाए ? (यदि रात अखण्ड होती तो दिन नहीं होता और दिन अखण्ड होता तो रात नहीं होती.)

व्रज रास लीला दोऊ नित कही, खेलें दोऊ लीला बाल किसोर ।

तो मथुरा आए कंस किनने मार्या, ए कौन भई तीसरी लीला और ॥ ११

व्रज और रास दोनों लीलाओंको अखण्ड कहा है. व्रजमें श्रीकृष्णजीके बाल स्वरूपकी लीला है, जब कि रासमें उन्होंने किशोर लीला की है. तो प्रश्न यह उपस्थित होता है कि बाल और किशोर कृष्ण दोनों व्रज और रासमें नित्य लीला कर रहे हैं, तो फिर मथुरा जाकर कंसको किसने मारा ? यह तीसरी लीला कौन-सी है ?

कहो के भूल्या टीका करता, के भूले तुम अरथ ।

सो जुबां काटिए जो टीकाको टेढा कहे, तुम भूले करत अनरथ ॥ १२

या तो तुम कहो कि श्री वल्लभाचार्यजीने भागवतकी टीका लिखनेमें कहीं भूल की है, या तुम लोग इस टीकाका अर्थ ठीकसे समझ नहीं रहे हो. टीकाकी भूल कहनेवालेकी जिह्वा ही कट जाएगी. तुम लोग ही भूल कर टीकाका विपरीत अर्थ करते हो.

तुम आंकडी न पाई इत अखंड कहा, तो ए न खुले रे द्वार ।

तुम समझे नहीं वानी सुकदेवकी, तो हिरदे रह्यो रे अंधकार ॥ १३

तुम यह रहस्य समझ ही नहीं पाए हो कि ब्रज और रासकी लीलाको क्यों अखण्ड कहा है ? तुम्हारे मनके द्वार अभी तक नहीं खुले हैं. क्योंकि तुमने शुकदेवजीकी वाणी (भागवत) को यथार्थ रूपसे समझा नहीं है, इसीलिए तुम्हारे हृदयमें अज्ञानका अन्धकार छाया हुआ है.

अरथ टीका का जो तुम पाया होता, तो अंधेर को होत नास ।

अनेक ब्रह्मांड जाके पलथें उपजे, ताको देखत इत उजास ॥ १४

यदि तुम श्रीमद्भागवतकी वल्लभी टीकाका योग्य सन्दर्भमें अर्थ समझ गए होते, तो तुम्हारे मनमें फैला हुआ अज्ञानका अन्धकार नष्ट हो जाता (और ज्ञानका दिव्य प्रकाश फैल जाता). तब इसी ज्ञानके प्रकाशसे अनेक ब्रह्माण्डोंको पलमात्रमें उत्पन्न करने वाले ब्रह्मको देख सकते.

तुमको वल जो खुल्या होता इन वानीका, तो भटकत नहीं रे भ्रम ।

इतथें देखो अखंड लीला प्रगट, तब समझत मायाको मरम ॥ १५

यदि तुम्हें वल्लभाचार्यजीकी वाणीके रहस्य खुल गए होते, तो तुम भ्रममें भटकते ही नहीं. जब इस ज्ञानके प्रतापसे इसी जगतमें बैठे-बैठे अखण्ड ब्रज और अखण्ड रास लीलाकी समझ प्राप्त हो जाएगी, तब इस झूठी मायाका भेद भी समझ जाओगे.

तुम सब मिल दौड़े अखंड सुखको, सुन प्रेम टीका के वचन ।

अरथ पाए बिना प्रेमें ले पटके, कहूं उलटाए दिए रे अगिन ॥ १६

वल्लभाचार्यजी रचित टीकामें वर्णित प्रेमको सुनकर अखण्ड सुख प्राप्त करनेके लिए तुम सब मिलकर दौड़ पड़े हो, किन्तु उस वाणीके रहस्यमय

अर्थको समझे बिना सच्चे प्रेमके बदले झूठे और मायावी प्रेममें पड़ गए. किसीने तुम्हारे हृदयमें प्रेमका विपरीत अर्थ अङ्कित कर अहङ्कार और मोहकी अग्नि प्रज्वलित कर दी है.

इन ब्रज रैनको ब्रह्मा बोहोत तलफ़्या, पर पाई नहीं रे निरवान ।

सो सुखें तुम कैसे पाओगे, देखो अपनी चालके निसान ॥ १७

इस अखण्ड ब्रजकी रजमात्रको प्राप्त करनेके लिए ब्रह्माजी बहुत व्याकुल हुए थे तथापि न पा सके. ऐसे अखण्ड ब्रजका सुख तुम अनायास कैसे पा सकोगे ? अपनी चाल (आचरण) को तो देखो.

ए झूठा भवजल अथाह कहा, ताको पार न पायो किन क्याहें ।

याको गौपद बछ कर गोपी निकसी, सो पार जाए मिली अखंड माहें ॥ १८

यह झूठा भवसागर अथाह (अत्यन्त गहन) है. कोई भी उसका पार नहीं पा सका. ऐसे भवसागरको ब्रजकी गोपियाँ बछड़ेके खुरसे बने हुए छोटे-से गड्डेमें भरे हुए पानीके समान सरलतासे पार कर गईं और अखण्डमें पहुँच गईं (श्रीकृष्णकी प्रेममयी वंशीकी ध्वनि सुनते ही कुटुम्ब-परिवारको छोड़कर गोपियाँ श्री कृष्णजीके पास पहुँच गईं).

अब केता कहूं तुमको जाहेर, ए अर्थ प्रगट कहाँ न जाए ।

निघात डारे छोड लज्या अहंकार, नेहेचल सुख दीजे रे ताए ॥ १९

अभी तुम्हें और कितना समझाऊँ ? यह गहन रहस्य स्पष्ट रूपसे प्रकट नहीं किया जा सकता. इसलिए जो व्यक्ति झूठी मर्यादाएँ और अहंकार छोड़कर समर्पित हो जाए, उसीको परमधामका अखण्ड सुख अनुभव करवाया जा सकता है.

ए प्रकास विचार तुम देख्या नहीं, तुम वैभवें लगे रे विलास ।

अब महामत कहे जोत उदोत भई, ताको इत आए देखो रे उजास ॥ २०

श्रीवल्लभाचार्यजीके ज्ञानके प्रकाशको तुमने विचारपूर्वक नहीं देखा और मिथ्या वैभवके विलासमें पड़ गए. महामति कहते हैं, अब यह ज्ञानकी ज्योति प्रखरित हुई है, उसके तेजोमय प्रकाशको यहाँ आकर देखो.

प्रकरण १३ चौपाई १४९

धनी न जाए किनको धूत्यो, जो कीजे अनेक धुतार ।

तुम चेहेन ऊपरके कै करो, पर छूटे न क्योंए विकार ॥ १

परमात्मा किसी भी प्रकारकी धूर्तता या चतुराईसे ठगे नहीं जा सकते, चाहे ऐसे प्रयत्न अनेक क्यों न हों. तुम बाह्य आचरण कितने भी कर लो परन्तु इनसे मनके विकार छूट नहीं सकते.

कोई बढाओ कोई मुडाओ, कोई खँच काढो केस ।

जोलों आतम न ओलखी, कहा होए धरे बहु भेस ॥ २

कोई जटा बढ़ा ले, कोई मुण्डन कराए अथवा कोई अपने केशको नोंच-नोंचकर उखाड़ डाले, परन्तु जब तक आत्माकी पहचान नहीं होती, तब तक ये सब वेश धारण करनेसे कुछ भी प्राप्त नहीं होता.

चार बेर चौका देओ, लकडी जलाओ धोए जल ।

अप्रस करो बाहेर अंग को, पर मन ना होए निरमल ॥ ३

चाहे चार बार रसोईके चौकेको साफ करो और लकड़ीको भी धोकर जलाओ. शरीरके बाह्य अङ्गोंको चाहे जितना भी स्वच्छ रख लो तथापि इससे मन निर्मल (पवित्र) नहीं बनता.

सात बेर अस्नान करो, पेहेनो ऊन उत्तम कामल ।

उपजो उत्तम जातमें, पर जीवडा न छोडे वल ॥ ४

चाहे दिनमें सात बार स्नान करो और उत्तम प्रकारके ऊनी कम्बल या वस्त्र धारण करो, चाहे उत्तम कुलमें जन्म लेनेका गर्व रखो तथापि यह जीव मायाके बन्धनोंसे मुक्त नहीं हो सकता.

सौ माला बाओ गलेमें, द्वादस करो दस बेर ।

जोलों प्रेम न उपजे पीउसों, तोलों मन न छोडे फेर ॥ ५

दिखानेके लिए चाहे सौ मालाएँ गलेमें धारण करो और दसों बार द्वादश तिलक (शरीरके बारह अंगों पर चन्दनका लेप) करते रहो, परन्तु जब तक

परब्रह्म परमात्माके प्रति सच्चा प्रेम हृदयमें प्रकट न होगा, तब तक मनका फेरा नहीं छूटेगा.

**तान मान कै रंग करो, अलापी करो किरंतन ।**

**आप रीझो औरों रिझाओ, पर वस न होए क्यों मन ॥ ६**

चाहे भक्तिभाव दिखानेके लिए स्वर-तानके साथ रागका आलाप करते हुए कीर्तन करो और इससे स्वयं प्रसन्न रहो तथा दूसरोंको भी प्रसन्न करो तथापि तुम्हारा मन संयमित नहीं रहेगा.

**उछव करो अनकूट का, विविध करो प्रसाद ।**

**पर निकट न आवें नाथजी, पीछे सब मिल करो स्वाद ॥ ७**

चाहे अन्नकूटका उत्सव कर विभिन्न प्रकारके व्यञ्जनोंका भोग लगाओ पश्चात् सब मिलकर प्रसादका आनन्द लो, तथापि श्रीनाथजी (भगवान) निकट नहीं आएँगे.

**सीखो सबे संस्कृत, और पढो सो वेद पुरान ।**

**अर्थ करो द्वादस के, पर आप न होए पेहेचान ॥ ८**

चाहे तुम सब संस्कृत भाषा सीख कर वेद, पुराण आदि धर्मग्रन्थोंका अध्ययन कर लो और बारह मात्राओंको अलग-अलग कर उनका अर्थ भी लगा लो, परन्तु इन सब प्रयत्नोंके बाद भी अपनी आत्माकी पहचान न हो पाएगी.

**साधो सबे जोगारंभ, अनहद अजपा आसन ।**

**उडो गडो चढो पांचमें, आखर सुंन न छोडी किन ॥ ९**

चाहे तुम योगकी साधना करो, अनहद नादका श्रवण करो, अजपा जाप करो अथवा चौरासी आसनोंका प्रयोग करो, साधना द्वारा आकाशमें उड़ने लगे अथवा भूमिके अन्दर समाधि लगा लो तथा पञ्चमहाभूतोंसे बने इस ब्रह्माण्डमें जितनी भी प्रगति करो, तथापि अन्तमें शून्य निराकारको छोड़कर उससे आगे कोई भी नहीं बढ़ सका.

आगम भाखो मनकी परखो, सूझे चौदे भवन ।

मृतक को जीवित करो, पर घरकी न होवे गम ॥ १०

चाहे ज्योतिषका अभ्यास कर भविष्यवक्ता बनो, दूसरोंके मनको परख लो.  
चाहे तुम्हें चौदह लोकोंके ज्ञानकी भी समझ आने लगे. चाहे जप अथवा  
चमत्कार द्वारा मृतको जीवित भी कर लो, परन्तु इन सबके करने पर भी  
तुम्हें अपने मूल घर (परमधाम) की सुधि प्राप्त नहीं हो सकेगी.

सतगुरु सोई जो आप चिन्हावें, माया धनी और घर ।

सब चीन्ह परे आखर की, ज्यों भूलिए नहीं अवसर ॥ ११

वे ही सद्गुरु कहलाते हैं जो आत्माकी पहचान करवा दें, मायाकी सूझ देकर  
आत्माके स्वामी (धनी) परमात्मा तथा परमधामकी पहचान भी करवा दें.  
ऐसे सद्गुरुके मिलने पर आत्म-जागृतिका मार्ग प्रशस्त होगा. इसलिए ऐसे  
अवसरको हाथसे जाने मत दो.

ए पेहेचाने सुख उपजे, सनमंध धनी अंकूर ।

महामत सो गुरु कीजिए, जो यों बरसावे नूर ॥ १२

इस प्रकारकी पहचान होने पर आत्माको अखण्ड सुखका अनुभव होता है  
और अपने धनीके साथ मूल सम्बन्धकी भी पहचान होती है. महामति कहते  
हैं, इस प्रकार जो अखण्ड ज्ञानके तेजकी वर्षा करते हैं, ऐसे व्यक्तिको ही  
अपना सद्गुरु बनाना चाहिए.

प्रकरण १४ चौपाई १६१

राग श्री

पतित सिरोमन यों कहे ।

जो मैं किए हैं बज्रलेप, मेरे साहेब सों द्वेष ॥ १ ॥ टेक ॥

पतित मेरे आगे कौन कहावे, मैं कोई न देख्या रे पतीत ।

ए सब कोई साध चलत हैं सीधे, जो देखिए अपनी रीत ॥२

संसारमें स्वयंको पतित शिरोमणि कहलाने वाले भक्तजन ऐसा कहते हैं “मैंने  
अपने धनीसे द्वेष करके वज्र लेपके समान (कभी न मिटने वाला) अपराध



किया है।” परन्तु मेरेसे बढ़कर अन्य कौन अधिक पतित हो सकता है। मैंने तो किसीको भी पतित नहीं देखा। विचारपूर्वक देखें तो ज्ञात होता है कि ये सभी साधक सीधे (स्वर्ग वैकुण्ठादिके) मार्ग पर ही चल रहे हैं।

**दुनियां सकल चलत हैं पैडे, जो साध बड़ोने बताया ।**

**उलटा कोई नहीं रे यामें, पतित किने न केहेलाया ॥ ३**

इस संसारके सभी लोग अपने गुरुजनों द्वारा दिखाए गए मार्ग पर ही चलते हैं। उनके विपरीत कोई भी नहीं जा रहा है। इसलिए संसारमें कोई भी पतित नहीं कहलाता।

**उलटा एक चलत हों यामें, मैं छोड़ी दुनियांकी राह ।**

**तोड़ी मरजाद बिगड्या विस्वथें, मैं तो पतितनको पातसाह ॥ ४**

संसारके लोग जिसका अनुसरण करते हैं, धर्मके उन बाह्य सिद्धान्तोंको छोड़कर उनके विपरीत मैं अकेला ही चल रहा हूँ। मैंने संसारकी परम्परागत मर्यादा छोड़ दी है, इसलिए मैं संसारके लोगोंकी दृष्टिमें बिगड़ गया हूँ और पतितोंका भी सम्राट बन गया हूँ।

**सूर जैसे पतित कहावे, और की सोभा आपको देवे ।**

**ओ अंधा रांक गरीब साध जो, सो क्या रे पतीती लेवे ॥ ५**

सूरदासजी जैसे सन्तने स्वयंको पतित कहकर दूसरेकी शोभा अपने सिर पर ले ली। सूरदास स्वयं नेत्रहीन थे ऐसे बेचारे गरीब साधु कैसे पतित कहला सकते हैं ?

**नामधारी पतित जो हुते, जिन जुध जगपतसों किए ।**

**जगपत जगमें बडा जोरावर, तिन मार चरन तले लिए ॥ ६**

संसारमें अनेक नामधारी पतित हुए हैं जिन्होंने जगत्पति (विष्णु) के साथ टक्कर ली। किन्तु भगवान विष्णु इतने शक्तिशाली हैं कि उन्होंने ऐसे सभी नामधारी पतितोंको अपने अधीन कर लिया अर्थात् अपनी ही भक्ति प्रदान की।

या जगमें ए क्या रे पतिती, कोई न पोहोंच्या पार ।  
बोहोत दौडे सो सुंन तोडी, आडी पडी निराकार ॥ ७

इस संसारमें यह कौन सा पतितपन है जिससे संसारसे विपरीत चलकर कोई पार भी नहीं पहुँच पाया (अर्थात् कोई भी भवसागर पार नहीं कर सका, सभी जगतगामी ही रह गए). अनेक लोगोंने संसारसे आगे जानेके लिए दौड़ लगाई और शून्य तक पहुँच भी गए किन्तु निराकारका व्यवधान (बाधा) आ जानेसे वे इससे आगे न जा सके.

मैं उलटाए आतम जुगतें जगाई, पार की तरफ फिराई ।  
सुंन निराकार पार पर आतम, मैं ता पर द्रष्टि चढाई ॥ ८

मैंने तो संसारके लोगोंसे विपरीत चलकर अपनी आत्माको जागृत किया और पार (परमधाम) की ओर लगा दिया. शून्य, निराकारसे परे परमधाममें स्थित पर-आत्मामें अपनी दृष्टिको केन्द्रित किया.

अगमके पार जो अलख कहावे, मैं तिनसों जाए जुध लिया ।

इहां लग और सबद नहीं सीधा, सो प्रगट पकडके किया ॥ ९

वेदोंमें जिसे अगम्य कहा गया है, उस निराकारके परे दृष्टिकी मर्यादासे भी बाहर जो अलभ्य (अलख) अक्षरब्रह्म हैं, मैं वहाँ जाकर टकराया. जिस अक्षरब्रह्मके विषयमें शास्त्र वचनोंने भी स्पष्टता नहीं की अर्थात् मात्र संकेत ही किया है, उसका निरूपण कर मैंने सबके लिए मार्ग प्रशस्त किया.

इन आतम को घर एही अक्षर है, ए तो पारब्रह्म परखाया ।

ए जुध जीत्या मैं सेहेजे, सतगुरुजी की दया ॥ १०

इन सभी आत्माओंका घर अक्षरधाम है. इन्हीं अक्षरब्रह्मको लोग परब्रह्म परमात्मा कहते हैं. सद्गुरुकी परम कृपा प्राप्त कर मैं अनायास ही उनसे भी आगे बढ़ पाया.

अब अक्षरके पार मैं जुध बनाऊं, सकल आउध अंग साजूं ।

प्रेमकी सेन्या प्रगट चलाऊं, कंठ अक्षरातीत मिलाऊं ॥ ११

अब मैं अक्षर ब्रह्मसे भी परे जानेके लिए तैयारी करता हूँ. इसके लिए काम,

क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर (ईर्ष्या) आदि षड्रिपुओं (छः शत्रुओं) पर विजय प्राप्त कर प्रेमकी सेना- शील, सन्तोष, करुणा आदिके साथ आगे बढ़कर अक्षरातीत पूर्णब्रह्म परमात्मासे जा मिलूँ.

पतित ऐसी पुकार न कीजे, पर मोकों इन चोटें अगिन लगाई ।

बोहोत बरस मैं राखी अंदर, अब तो ढांपी न जाई ॥ १२

पतित कहलाने वाले लोग इस प्रकार अपनी प्रशंसा नहीं करते हैं, किन्तु इस (सूरदासजीके वचनोंकी) चोटने मुझे आहत कर उत्तेजित किया है. इस उत्तेजनाको मैंने कई वर्षों तक अन्तरमें दबाकर रखा था, किन्तु अब इसे छिपाकर रखा नहीं जा सकता.

पारके पार पार जाए पोहोंच्या, जीवत अखंड सुख पाया ।

पतितनके सिर महामत मुकट मनि, जिन ए जुध जगमें लखाया ॥ १३

चौदह लोकोंके पार शून्य निराकार, इसके भी पार अक्षरधाम और अक्षरधामसे भी परे अक्षरातीत परमधामका ज्ञान मुझे अब प्राप्त हुआ है. इसके कारण मैंने इसी जीवनमें अक्षरातीत परमात्माका अखण्ड सुख प्राप्त किया. इस प्रकार महामति पतितोंके भी शिरोमणि मुकुटमणि कहलाए, जिन्होंने यह अद्वितीय युद्ध (क्षर जगत् एवं अक्षर भूमिकासे भी परेकी कूच) इस संसारमें आरम्भ किया है.

प्रकरण १५ चौपाई १७४

राग श्री

दुख रे प्यारो मेरे प्रानको ।

सो मैं छोड्यो क्योंकर जाए, जो मैं लियो है बुलाए ॥ १ ॥ टेक ॥

संसारके दुःख मुझे प्राणप्रिय लगते हैं, उन्हें मैं कैसे छोड़ सकता हूँ ? उन दुःखोंको तो मैंने ही बुलाया है.

इन अवसर दुख पाइए, और कहा चाहिएत है तोहे ।

दुख बिना चरनकमलको, सखी कबहूँ न मिलिया कोए ॥ २

यदि इस जीवनमें (धामधनीकी स्मृति दिलाने वाले) दुःख प्राप्त हो जाएँ,

तो फिर इसके अतिरिक्त तुझे और क्या चाहिए ? हे सखी ! दुःखका अनुभव किए बिना किसीको भी धामधनीके चरणकमल प्राप्त नहीं हुए हैं.

**जिन सुख पीउजी ना मिले, सो सुख देऊं रे जलाए ।**

**जिन दुख मेरा पीउ मिले, मैं सो दुख लेऊं बुलाए ॥ ३**

संसारके जिन सुखोंके भोगनेसे धामधनीका मिलन न हो सके, उन मायावी सुखोंको मैं जला दूँ. परन्तु जिन सांसारिक दुःखोंको सहन करने पर मेरे प्रियतमका मिलन हो सके, ऐसे सब दुःखोंको मैं बुला कर उन्हें स्वीकार लूँ.

**दुख तो हमारो आहार है, औरन को दुख खाए ।**

**दुखके भागे सब फिरे, कोई बिरला साध निबाहे ॥ ४**

ऐसे दुःख तो हमारी आत्माके आहारके समान ग्राह्य हैं, जबकि अन्य लोगोंके लिए ये दुःख खानेको दौड़ते हैं. इसलिए इन सांसारिक दुःखोंसे सब लोग भागते फिरते हैं. कोई बिरला साधु पुरुष ही इन दुःखोंको सहन कर पाता है.

**दुखको निबाहू ना मिले, और सुखको तो सब ब्रह्मांड ।**

**इन झूठे दुखथें भाग के, खोवत सुख अखंड ॥ ५**

दुःखका निर्वहन करने (निभाने-सहने) वाले संसारमें नहीं मिलते और सुखोंका तो पूरा ब्रह्माण्ड ही चाहक है. किन्तु ऐसे अल्पज्ञ लोग इन झूठे दुःखोंसे (दूर) भाग कर अखण्ड सुखोंको भी खो देते हैं.

**दुखकी प्यारी प्यारी पीउकी, तुम पूछो वेद पुरान ।**

**ए दुख मोहीको भला, जो देत हैं अपनी जान ॥ ६**

इस संसारके स्वार्थमय सुखोंको छोड़कर उसके द्वारा उत्पन्न होने वाले दुःखोंका प्रेमसे स्वागत करनेवाली ब्रह्मसृष्टि अपने प्रियतमकी प्यारी है. वेद, पुराण एवं धर्मग्रन्थ भी इसके साक्षी हैं. इसलिए संसारके ये दुःख मुझे प्रिय लगते हैं क्योंकि प्रियतम धनी मुझे अपनी जानकर ऐसे दुःख देते हैं.

ता कारन दुख देत हैं, दुख बिना नींद न जाए ।

जिन अवसर मेरा पीउ मिले, सो अवसर नींद गमाए ॥ ७

इसलिए प्रियतम धनी अपनी प्रिय आत्माओंको दुःख देते हैं. क्योंकि संसारिक दुःखोंका अनुभव किए बिना अज्ञानरूपी निद्रा दूर नहीं होती. जिन दुःखोंके द्वारा इसी जीवनमें प्रियतमका मिलन होता है, ऐसे अवसरको हम अज्ञानरूपी निद्राके कारण गँवा देते हैं.

नींद बुरी या भ्रम की, भ्रम तो भई आडी पाल ।

वह दुख देत जलाए के, जो आडी भई अपने लाल ॥ ८

अज्ञानरूपी भ्रमकी नींद तो बड़ी बुरी है, क्योंकि यह नींद धनीको प्राप्त करनेमें व्यवधान बनी हुई है. जो भ्रान्ति (नींद) प्रिय मिलनके लिए अवरोधक सिद्ध होती है, उसको विरहका दुःख जलाकर राख कर देता है.

नींद निगोडी ना उडी, जो गई जीवको खाए ।

रात दिन अग्नी जले, तब जाए नींद उडाए ॥ ९

यह दुष्ट (निगोडी) नींद टलती नहीं है. यह तो जीव (पूरे जीवन) को ही निगल गई है (पूरा जीवन इसी नींदमें व्यर्थ व्यतीत हो रहा है). जब रात-दिन विरहकी अग्नि जलेगी, तभी यह नींद उड़ जाएगी.

इन सुपने के दुखसे जिन डरो, दुख बदले सत सुख ।

अपने मासूकसों नेहडा, तोकों देयगो बनाएके दुख ॥ १०

इसलिए इस स्वप्नवत् संसारके झूठे दुःखोंसे डरो नहीं, क्योंकि इन्हीं दुःखोंके द्वारा धामधनीका अखण्ड सुख प्राप्त होगा. अपने प्रियतम धनीका अखण्ड प्रेम तुम्हें दुःखके माध्यमसे ही तो प्राप्त होगा.

ता सुखको कहा कीजिए, जो देखलावे धरमराए ।

मैं वह दुख मांगूं पीउपैं, जो पीउसों पल पल रंग चढाए ॥ ११

संसारके इन मायावी झूठे सुखोंको लेकर क्या करना जो धर्मराज (यमलोक) का मार्ग दिखाते हैं. इसलिए मैं तो प्रियतमसे इस प्रकारके दुःख माँगूँ, जिनके द्वारा प्रियतमके प्रेममें हर क्षण वृद्धि होती रहे.

दुख सब सुपनो होए गयो, अखंड सुख भोर भयो ।

महामत खेलें अपने लालसों, जो अक्षरातीत कह्यो ॥ १२

अब तो सबके सब दुःख स्वप्नके समान मिट गए हैं. अखण्ड सुखका प्रभात उदय हुआ है. इसलिए महामति अपने धामधनी (लाल) अक्षरातीतके साथ लीला विलास करते हैं.

प्रकरण १६ चौपाई १८६

राग श्री

सखी री आतम रोग बुरो लग्यो, याको दारू न मिले तबीब ।

चौदे भवनमें न पाइए, सो हुआ हाथ हबीब ॥ १

हे ब्रह्मप्रियाओ ! आत्मरोग बड़ा ही दारुण लगा हुआ है. इसके निवारणके लिए औषधि एवं वैद्य नहीं मिलते. यहाँ तक कि चौदह लोकोंमें इसका उपचार नहीं है. एक मात्र परमात्माके हाथमें इसका उपचार है.

आतम रोग कासों कहिए, जिन पीठ दर्द परआतम ।

ए रोग क्यों ना मिटे, जोलों देखे ना मुख ब्रह्म ॥ २

आत्म रोग किसको कहा जाए ? यह आत्मा अपने मूल स्वरूप पर-आत्मासे विमुख होकर संसारकी ओर उन्मुख हुई है (यही तो आत्मरोग है). यह रोग तब तक नहीं मिट सकता, जब तक जागृत होकर परब्रह्मको सम्मुख न देखा जाए अर्थात् परब्रह्म परमात्माके साक्षात्कार न हो जाए.

सो हबीब क्यों पाइए, कै कर कर थके उपाए ।

सास्त्र देखें सब सबद, तिन दुख दिया बताए ॥ ३

वे पूर्णब्रह्म परमात्मा कैसे प्राप्त होंगे ? इसके लिए कई लोग उपाय करते-करते थक गए. मैंने शास्त्रोंका अध्ययन कर उनके सिद्धान्तों पर भी विचार किया. तब ज्ञात हुआ कि पूर्णब्रह्म परमात्माकी प्राप्ति मुख्य साधन दुःख ही है.

सखी री ताथें दुख प्यारो लग्यो, अंदर देखो विचार ।

सो दुख कैसे छोडिए, जासों पाइए पीउ मनुहार ॥ ४

हे ब्रह्मात्माओ ! इसीलिए मुझे यह दुःख अति प्यारा लगा है, तुम भी अन्तर्दृष्टि द्वारा विचार करके देखो. ऐसे दुःखको कैसे त्यागें, जिससे पूर्णब्रह्म परमात्माका लाड़-प्यार प्राप्त होता हो.

दुनीके सुख दिए मैं तिनको, जो कोई चाहे सुख ।

जिनसे मेरा पीउ मिले, मैं चाहूं सोई दुख ॥ ५

इसलिए मैंने मायाके सभी सुख उन लोगोंको बाँट दिए हैं, जो इन सुखोंके इच्छुक हैं. जिन दुःखोंके द्वारा मुझे मेरे प्रियतम धनी मिले हैं, मैं सर्वदा उन्हीं दुःखोंकी चाहना रखता हूँ.

दुख प्यारो है मुझको, जासों होए पीउ मिलन ।

कहा करूं मैं तिन सुखको, आखर जित जलन ॥ ६

इसलिए मुझे वे ही दुःख प्रिय लगते हैं, जिनके द्वारा प्रियतमका मिलन होता है. मायाके झूठे सुखोंको लेकर मैं क्या करूँ, जिनके कारण अन्तमें चिन्ता और संतापकी अग्निमें ही जलना पड़े.

बडीमत के जो धनी कहे, होए गए जो आगे ।

तिन भी धनी मिलनको, दुख धनीपें मागे ॥ ७

इससे पूर्व भी अनेक बुद्धिशाली सन्त-महापुरुष हो चुके हैं. उन्होंने भी पूर्णब्रह्म परमात्माके मिलनके लिए उनसे दुःख ही माँगा है.

जब बिछोहा धनी का, तब दुखमें धनीको विलास ।

उन दुखके विलासमें, पोहोंचाए देत धनी आस ॥ ८

जब धामधनीका वियोग होता है, उस वियोगजन्य दुःखमें (धामधनीका निरन्तर चिन्तन होनेके कारण) उनके साथके विलासका-सा आनन्द प्राप्त होता है. इस दुःखके विलासमें धामधनी सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण कर देते हैं.

कहा करूं तिन सुखको, जिनसे होइए निरास ।

ए झूठा सुख है छलका, सो देत मायाकी फांस ॥ ९

उन सांसारिक झूठे सुखोंका क्या करना जिनसे अन्तमें निराशा ही हाथ लगे। ये मायाके सुख तो मात्र भ्रम हैं, अन्तमें ये मायाके जालमें ही फँसा देते हैं।

दुखसे पीउजी मिलसी, सुखें न मिलिया कोए ।

अपने धनीका मिलना, सो दुखै से होए ॥ १०

दुःखके द्वारा प्रियतमसे मिलन होता है। झूठे सुखोंके द्वारा किसीकी भी प्रियतमसे मिलन नहीं हुआ है। इस प्रकार अपने धनीसे मिलन तो दुःखोंसे ही होता है।

दुख बडो पदारथ, जो कोई जाने ए ।

ताथें सुखको छोड के, दुख ले सके सो ले ॥ ११

यह दुःख महत्त्वपूर्ण पदार्थ है। समझदार व्यक्ति ही इसके महत्त्वको समझते हैं। इसलिए वे संसारके झूठे सुखोंको छोड़कर यथासम्भव दुःखोंको ही सहर्ष स्वीकार करते हैं।

रात दिन दुख लीजिए, खाते पीते दुख ।

उठते बैठते दुख चाहिए, यों पीउसों होइए सनमुख ॥ १२

रात-दिन, खाते-पीते, उठते-बैठते प्रियतमके विरहके दुःखका ही अनुभव करो। ऐसा करने पर ही धामधनीके सन्मुख (दर्शन) का सुख प्राप्त होगा।

इन दुखसे कोई जिन डरो, इन दुखमें पीउको सुख ।

जो चाहत है सुख को, आखर तिनमें दुख ॥ १३

संसारके इन दुःखोंसे कोई भी न डरे, क्योंकि इन दुःखोंको सहन करने पर ही धामधनीके अखण्ड सुखोंका अनुभव होगा। परन्तु जो लोग संसारके मायावी सुखोंकी ही इच्छा रखते हैं, अन्ततः उन्हें दुःख ही भोगने पड़ते हैं।

दुख बिना न होवे जागनी, जो करे कोट उपाए ।

धनी जगाए जागहीं, ना तो दुख बिना क्योंए न जगाए ॥ १४

करोड़ों यत्न करने पर भी दुःखके बिना आत्म-जागृति नहीं हो सकती।



धामधनीकी कृपासे ही आत्म-जागृति हो सकती है अन्यथा दुःख सहन किए बिना अज्ञानरूपी निद्रासे जागृत नहीं हो सकते.

दुख खाना दुख पीवना, दुखै हमारो आहार ।

दुनियां को दुख खात है, तो दुखथें भागत संसार ॥ १५

हम ब्रह्मात्माओंके लिए खाना-पीना तथा हमारा सम्पूर्ण आहार ही दुःख है. संसारके लोगोंको यह दुःख खाने लगता है, इसलिए पूरा संसार ही दुःखसे दूर भाग रहा है.

दुखतें विरहा उपजे, विरहे प्रेम इसक ।

इसक प्रेम जब आइया, तब नेहेचे मिलिए हक ॥ १६

दुःखसे विरह उत्पन्न होता है. विरहसे प्रेम पैदा होता है. जब उत्कृष्ट प्रेम उदय होता है, तब उस अलौकिक प्रेमके द्वारा ही निश्चित रूपसे धामधनीका मिलन होता है.

दुख सोभा दुख सिनगार, दुखही को सब साज ।

दुख ले जाए धनीपें, इन सुखतें होत अकाज ॥ १७

दुःख ही हमारी शोभा है, दुःख ही हमारा शृङ्गार है. प्रिय मिलनकी सारी सामग्रियाँ दुःखकी ही हैं. ये ही दुःख धामधनी तक पहुँचाते हैं, सुखसे तो बड़ा अनर्थ होता है.

तो दुख सारोंने मांगिया, बडी बुधवालोंने जाग ।

दुखसे अपने पीउका, आवत विरह वैराग ॥ १८

इसलिए सभी बुद्धिमान सन्त-महात्माओंने ज्ञानद्वारा जागृत होकर प्रभुसे दुःखको ही माँगा है, क्योंकि इस दुःखसे ही प्रियतम धनीका विरह पैदा होता है और संसारके प्रति वैराग्य उत्पन्न होता है.

दुख वस्तर दुख भूषन, दुखथें निरमल देह ।

जो दुख प्यारो जीवको लगे, तो उपजे सत सनेह ॥ १९

साधकोंके लिए दुःख ही वस्त्र तथा आभूषण है. दुःखसे ही देह निर्मल बनती

है. जब जीवको दुःख प्यारा लगने लगेगा, तभी परमात्माके प्रति सच्चा प्रेम उत्पन्न होगा.

**दुख दावानल काटत, और काटत सकल विकार ।**

**दुख काटत मूल मायाको, बढे नहीं विस्तार ॥ २०**

दुःख ही चिन्ता और सन्ताप रूप दावानलको शान्त कर काम, क्रोध, लोभ जैसे विकारोंको नष्ट कर देता है. दुःख ही मायाकी जड़ोंको काट डालता है जिससे उन विकारोंका अधिक विस्तार नहीं हो सकता.

**दुख दसों द्वार भेदिया, और दुख भेद्यो रोम रोम ।**

**यों नख सिख दुख प्यारो लगे, तो कहा करे छल भोम ॥ २१**

इस दुःखने मेरे शरीरके दसों द्वारोंको बाँधकर मेरे रोम-रोमको भी बाँध डाला है. इसलिए नखसे लेकर शिखा तक मुझे दुःख ही प्रिय लगता है. संसारके छल-कपट आदि मुझ पर क्या प्रभाव डाल सकेंगे ?

**सुख मायाको मूल है, सो चाहे बढ्यो विस्तार ।**

**तिन साधों सुख तजिया, वास्ते अपने करतार ॥ २२**

सांसारिक झूठे सुख ही मायाकी जड़ें हैं. इन झूठे सुखोंको चाहनेसे मायाका विस्तार बढ़ता है. सुज्ञ साधकोंने अपने इष्टकी प्राप्तिके लिए ऐसे सुखोंका परित्याग किया है.

**बारीक बातें दुखकी, जो कदी लगे मिठास ।**

**तो टूट जात है ए सुख, होत मायाको नास ॥ २३**

सांसारिक दुःखोंकी बातें बड़ी सूक्ष्म हैं. यदि इन दुःखोंकी मिठास भाने लगे, तो संसारके झूठे सुख प्राप्त करनेकी इच्छा स्वतः टूट जाएगी और इस प्रकार मायाका भी नाश हो जाएगा.

**ए दुख बातें सोई जानहीं, जाको आई वतन खुसबोए ।**

**ए दुख जानें अरस अंकूरी, माया जीव न जाने कोए ॥ २४**

दुःखोंकी ये सूक्ष्म बातें वे ही समझ पाएँगे, जिन्हें अखण्ड परमधाम (मूल

वतन) की सुगन्ध प्राप्त हुई है। इन दुःखोंकी मिठासका आनन्द परमधामकी मूल सम्बन्धी ब्रह्मसृष्टियाँ ही ले सकती हैं। मायाके जीव इस रहस्यको समझ ही नहीं सकते।

जो माया मोहथें उपजे, सो क्या जाने दुखके सुख ।

जो मायाको सुख जानहीं, तार्थें हुए बेमुख ॥ २५

माया और मोहसे उत्पन्न जीव इन दुःखोंसे प्राप्त सुख कैसे जान पाएँगे ? जिन्हें मायाके झूठे सुख ही पसन्द हैं, वे तो दुःखसे सर्वथा विमुख हो जाते हैं।

कुरान पुरान मैं देखिया, कही दुखकी बडाई ।

साध बडों बडाई दुखकी, लडाए लडाएके गाई ॥ २६

कुरान-पुराण आदि धर्म ग्रन्थोंको मैंने देखा है। उनमें वर्णित कथानकोंमें भी दुःखकी ही महिमा है। साधु-सन्तोंने भी भजन-कीर्तन द्वारा दुःखोंकी ही महिमा बढ़ा-चढ़ाकर गाई है।

मोल तोल ना दुखको, कोई नाहीं इन बराबर ।

जिन दुखथें धनी पाइए, ताको मोल होवे क्योंकर ॥ २७

इसलिए इन दुःखोंका कोई मूल्याङ्कन ही नहीं हो सकता, इनके समान कोई भी वस्तु मूल्यवान नहीं है। जिन दुःखोंके द्वारा परब्रह्मकी प्राप्ति होती है, उन दुःखोंका मूल्य कैसे आँका जा सकता है ?

दुख तो महंगे मोलको, मैं देख्या दिल ल्याए ।

दुनियां सब भागी फिरे, कोई न सके उचाए ॥ २८

मैंने विचार पूर्वक देखा कि दुःख तो अमूल्य वस्तु है, किन्तु संसारके सभी लोग इससे डरकर भागते हैं। कोई भी इसका पार नहीं पा सकता।

मैं तो चाह्या सुखको, पर धनीकी मुझ पर मेहेर ।

तार्थें दुख फेर फेर लिया, अब सुख लागत है जेहेर ॥ २९

मैंने भी उन सांसारिक सुखोंकी ही चाहना रखी थी, परन्तु धामधनीकी मुझ

पर परम कृपा हुई, जिससे मैंने वारंवार दुःखोंको स्वीकारा है. अतः अब मुझे संसारके सुख विषतुल्य लगने लगे हैं.

**जो साहेब सनकूल होवहीं, तो दुख आवे तिन ।**

**इन दुनियां में चाह कर, दुख ना लिया किन ॥ ३०**

वस्तुतः धामधनी जिन पर प्रसन्न होते हैं, उन लोगोंको ही दुःखकी प्राप्ति होती है, अन्यथा इस संसारमें अपनी इच्छासे तो किसीने भी दुःखोंको नहीं स्वीकारा.

**दुख देवे दिवानगी, स्यानप देवे उडाए ।**

**ताथें दुख कोई ना लेवहीं, सब सुख स्यानप चाहे ॥ ३१**

दुःख हमें धामधनीके प्रति दीवाना बना देते हैं और संसारकी सभी चतुराइयोंको भी नष्ट कर देते हैं. इसलिए संसारके लोग इस प्रकारके दुःख नहीं चाहते. सबको संसारके सुख और चतुराई ही अच्छी लगती है.

**चाहन वाले दुख के, दुनियामें ढूँढ देख ।**

**ब्रह्मांड यार है सुखको, दुख दोस्त हुआ कोई एक ॥ ३२**

यदि संसारमें ढूँढ़ने निकलें तो दुःखको चाहने वाले बिरले ही मिलेंगे, क्योंकि ब्रह्माण्डके सभी लोग मायावी सुखोंसे मित्रता करते हैं. दुःखोंके साथ प्रेम करने वाले एकाध साधु-महात्मा ही मिलेंगे.

**जाको स्वाद लग्यो कछू दुखको, सो सुख कबू न चाहे ।**

**वाको सो दुख फेर फेर, हिरदे चढ चढ आए ॥ ३३**

जिसने दुःखोंका स्वाद चख लिया है, वह कदापि मायाके सुखोंको नहीं चाहेगा. उसके हृदयमें तो वारंवार वे दुःख ही उभरते रहेंगे.

**महामत कहें इन दुखको, मोल न कियो जाए ।**

**लाख बेर सिर दीजिए, तो भी सरभर न आवे ताए ॥ ३४**

इसलिए महामति कहते हैं कि ऐसे दुःखोंका तो मूल्य आँका ही नहीं जा सकता. इनके बदले लाखों बार सिर देने पर भी इनकी समानता नहीं हो पाएगी.

**प्रकरण १७ चौपाई २२०**

मैं तो बिगड्या विस्वथें बिछुड्या, बाबा मेरे ढिग आओ मत कोई ।

बेर बेर बरजत हों रे बाबा, ना तो हम ज्यों बिगडेगा सोई ॥ १

हे सज्जनो ! विश्वकी दृष्टिमें मैं बिगड़ चुका हूँ और संसारसे अलग हो गया हूँ. इसलिए मेरे पास कोई मत आना. मैं बार-बार मना करता हूँ क्योंकि यदि मेरे पास आओगे, तो तुम भी मेरी भाँति बिगड़ जाओगे.

मैं लाज मत पत दर्ई रे दुनीको, निलज होए भया न्यारा ।

जो राखे कुल वेद मरजादा, सो जिन संग करो हमारा ॥ २

मैंने झूठी लोक-लज्जा, मर्यादा, चतुराई आदि सब संसारके लोगोंको सौंप दी है. मैं निडर और निर्लज्ज होकर संसारसे निराला बन गया हूँ. जिन्हें कुटुम्बकी, वैदिक कर्मकाण्डोंकी झूठी मर्यादा रखनी हो, वे मेरी सङ्गत न करें.

लोक सकल दौडत दुनियांको, सो मैं जानके खोई ।

मैं डारया घर जारया हंसते, सो लोक राखत घर रोई ॥ ३

सभी लोग अपने स्वार्थके लिए संसारके झूठे आकर्षणोंके पीछे दौड़ते हैं. मैंने तो जानबूझकर ऐसे झूठे आकर्षण छोड़ दिए हैं. मैंने जिस घरको हंसते-हंसते जला डाला है, ऐसे झूठे घरको लोग सच्चा मानकर रो-रोकर सँभाले हुए हैं.

देत देखाई सो मैं चाहत नाही, जा रंग राची लोकाई ।

मैं सब देखत हों ए भरमना, सो इनों सत कर पाई ॥ ४

बाहरसे अच्छी दिखाई देने वाली वस्तुकी चाहना मुझे नहीं है किन्तु संसारके लोग इन्हीं बाह्य आकर्षण (रङ्ग) में निमग्न रहते हैं. मुझे तो ये सब आकर्षण मृगजलकी भाँति झूठे और भ्रम पैदा करने वाले दिखाई देते हैं, किन्तु लोग इन्हें सत्य मानकर इनको ही प्राप्त करनेके लिए प्रयत्नशील रहते हैं.

मैं कहूं दुनियां भई बावरी, ओ कहे बावरा मोही ।

अब एक मेरे केहे कौन पतीजे, ए बोहोत झूठे क्यों होई ॥ ५

मैं कहता हूँ कि दुनियाँ (मायाकी ओर आकृष्ट होकर) पागल हो गई है किन्तु

वे कहते हैं कि मैं पागल हो गया हूँ, मेरे एकके कहने पर कौन विश्वास करेगा और अनेक लोग झूठे कैसे हो सकते हैं ?

**चित्तमें चेतन अंतरगत आपे, सकलमें रह्या समाई ।**

अलखको घर याको कोई न लखे, जो ए बोहोत करे चतुराई ॥ ६

सबके हृदयमें चैतन्यरूपसे परमात्मा विराजमान हैं तथापि संसारके लोग चाहे कितनी ही चतुराई करें, उन्हें पूर्णब्रह्म परमात्माके मूल घर अखण्ड परमधामकी जानकारी प्राप्त नहीं होती.

**सतगुरु संगे मैं ए घर पाया, दिया पारब्रह्म देखाई ।**

**महामत कहें मैं या विध बिगड्या, तुम जिन बिगडो भाई ॥ ७**

महामति कहते हैं, सद्गुरुका सङ्ग प्राप्त कर मुझे इस घर (पूर्णब्रह्म परमात्माके अखण्ड परमधाम) की प्राप्ति हुई और परमात्माके दर्शन भी हुए. हे भाइयो ! इस प्रकार मैं सांसारिक दृष्टिमें बिगड़ा हुआ हूँ किन्तु तुम इस प्रकार मेरी भाँति मत बिगड़ना.

**प्रकरण १८ चौपाई २२७**

**राग श्री**

**तुम समझके संगत कीजो रे बाबा, मुझ जैसा दिवाना न कोई ।**

**जाहीसों लोक लज्या पावें, सो तो मोहे बडाई ॥ १**

हे साधुजन ! तुम समझ-बूझकर मेरा सङ्ग करना क्योंकि संसारके सुखोंको छोड़कर धामधनीके प्रेममें दीवाना बननेवाला मेरे समान अन्य कोई नहीं है. लोग जिन कार्योको (परमात्माके प्रति प्रेम) करनेमें लज्जाका अनुभव करते हैं, मुझे उसीमें बड़प्पन लगता है.

**मैं तो बात करूं रे दिवानी, दुनियां तो स्यानी सुजान ।**

**स्याने दिवाने संग क्यों कर होवें, तुम मिलियो मोहे पेहेचान ॥ २**

मैं तो दीवाना (परमात्माके प्रेममें मस्त) पनकी बात करता हूँ किन्तु संसारके लोग तो सांसारिक वस्तुओंको प्राप्त करनेमें चतुर हैं. ऐसे चतुर लोग मेरे जैसे दीवानेका सङ्ग किस प्रकार कर सकेंगे ? इसलिए तुम मुझे पहचान

कर ही मेरा सङ्ग करना.

**मैं त्रैलोकी अग्नि कर देखी, दुनियां को सो सुख ।**

**दुनियां को अमृत होए लागी, मोहे लागत है विष ॥ ३**

मैंने तो तीनों लोकोंके सुखोंको अग्निके समान सन्ताप और दुःख देनेवाला समझा है, जब कि संसारके लोगोंको वे ही सुखदायी लगते हैं. वस्तुतः जो सुख संसारके लोगोंको अमृततुल्य लगते हैं, वे ही मेरे लिए विषतुल्य हैं.

**जब मैं मरम पायो मोहजल को, तब मैं भाग्या रोई ।**

**डर के उबट चल्या उबाटें, बाट बडी मैं खोई ॥ ४**

मुझे जबसे मोहजल (भवसागर) का रहस्य ज्ञात हुआ, तबसे मैं रोते हुए इसे छोड़कर दूर भाग गया हूँ. मैं इस मायासे डरकर संसारके लोगोंसे विपरीत विषम मार्ग (लोगोंके लिए कठिन किन्तु मेरे लिए सुगम-अध्यात्ममार्ग) पर चल पड़ा हूँ, मैंने बड़े मार्ग (जिस पर संसारके अधिकांश लोग चल रहे हैं) को छोड़ दिया है.

**अहेनिस डर आया मेरे अंगमें, फिर्या दिलडा भया दिवाना ।**

**भली बुरी कहे सो मैं कछू न देखों, भागवे को मैं स्याना ॥ ५**

मेरे हृदय (रोम-रोम) में दिन-रात (प्रति-पल) मायाका भय व्याप्त हो गया जिससे मेरा मन मायासे भागकर धामधनीके अखण्ड प्रेमका दीवाना बन गया. अब मेरी इस स्थितिको देखकर लोग मुझे खरा खोटा कुछ भी कहें, इसकी मुझे तनिक भी परवाह नहीं है. इस मायावी संसारसे दूर भागनेमें ही मैं प्रवीण हो गया हूँ.

**मैं छोडे कुटम सगे सब छोडे, छोडी मत स्वांत सरम ।**

**लोक वेद मरजादा छोडी, भाग्या छोड सब धरम ॥ ६**

मैंने कुटुम्ब-परिवार, सगे-सम्बन्धी सबको छोड़ दिया तथा सांसारिक बुद्धि, सुख-चैन और लज्जाको भी छोड़ दिया झूठी मर्यादाएँ एवं वैदिक कर्मकाण्डको भी छोड़ दिया इतना ही नहीं सभी सांसारिक धर्मोंको छोड़ कर मैं भाग खड़ा हुआ.

ए सूरें पांऊं धरें क्यों पीछे, इनको तो लज्जा लागे ।

देवें सीस सकल सुख खोवें, पर भाइयों को छोड़ न भागे ॥ ७

सांसारिक स्वार्थ सिद्धिमें मग्न, तथाकथित शूर-वीर अपने मार्गसे पीछे कैसे हट सकेंगे ? उन्हें तो ये सब छोड़नेमें लज्जाका अनुभव होता है. वे मायामें फँसकर अपना मस्तक भी मायाके कार्योंमें ही समर्पित करते हैं और अखण्ड सुखोंको खो देते हैं, किन्तु कुटुम्ब-परिवारको छोड़कर परमात्माकी ओर जाना नहीं चाहते.

ए मिलके मरद चलें ज्यों महीपत, जानो पडता अंबर पकडसी ।

मोहे अचंभा ए डरें नहीं किनसों, पर ए खेल केते दिन रहेसी ॥ ८

ऐसे तथाकथित शूर-वीर अपना-अपना समूह लेकर पृथ्वीपतिकी भाँति इस प्रकार चलते हैं, मानों वे गिरते हुए आकाशको भी पकड़ लेंगे. मुझे आश्चर्य होता है कि वे लोग किसीसे भी नहीं डरते, किन्तु उनका यह प्रपञ्च कितने दिनों तक चलेगा ?

देखत काल पछाडत पलमें, तो भी आंख ना खोलें ।

आप जैसा और कोई न देखें, मद छाके मुख बोलें ॥ ९

अपने देखते-देखते ही काल सब लोगोंको अपना ग्रास बना रहा है तथापि उन लोगोंकी आँख नहीं खुलती. उनको तो अपने समकक्ष कोई दिखाई ही नहीं देता. वे सदैव अहङ्कारके मदमें चूर होकर बड़ी-बड़ी बातें करते हैं.

इनमें से नाठ्या मैं निसंक काएर होए, फेर न देख्या ब्रह्मांड ।

सुंन निरंजन छोड़ मैं न्यारा, जाए पड्या पार अखंड ॥ १०

ऐसे स्वार्थी, अज्ञानी लोगोंके बीचमें-से मैं निःसङ्कोच होकर उनकी दृष्टिमें कायर बनकर ऐसे भाग निकला कि फिर पीछे मुड़कर मैंने ब्रह्माण्डकी ओर देखा तक नहीं. इतना ही नहीं सद्गुरुकी कृपा द्वारा शून्य, निरञ्जन, निराकारके पारका ज्ञान प्राप्त कर मैं उनसे अलग हुआ और अखण्ड अविनाशी पूर्णब्रह्म परमात्माके चरणोंमें पहुँच गया.



अब तो कछुए न देखत मदमें, पर ए मद है पल मात्र ।

महामत दिवाने को कह्यो न माने, सो पीछे करसी पछताप ॥ ११

संसारके ये लोग तो झूठे अभिमानमें मस्त होकर सत्य या असत्यकी ओर कुछ भी नहीं देखते, किन्तु इन झूठे सुखोंका मद तो पल मात्रका है। महामति कहते हैं, संसारसे विरक्त होकर धामधनीके प्रेममें पागल बने हुए मेरे जैसे व्यक्तिकी बात जो नहीं मानते हैं, वे बादमें अवश्य पछताएंगे।

प्रकरण ११ चौपाई २३८

राग आसावरी

साधो या जुगकी ए बुध ।

दुनियां मोह मदकी छकी, चली जात बेसुध ॥ १

हे साधुजन ! इस युगकी बुद्धि ही ऐसी तुच्छ हो गई है कि लोग मोह (स्वार्थ) और मद (अभिमान) में मस्त होकर बेसुध बने हुए चले जाते हैं।

दुनी दुनीपें चाहे दुनियां, ताथें करामात ढूँढे ।

पीछे दोऊ बराबर संगी, तब दे सिछा और मूडे ॥ २

संसारके लोग इस झूठे विश्वमें सांसारिक झूठी वस्तुको ही प्राप्त करना चाहते हैं। इसलिए वे चमत्कारी गुरुओंको ढूँढते हैं। फिर ऐसे गुरु और शिष्य दोनों एक जैसे ही हो जाएंगे और एक-दूसरेको शिक्षा देते हुए दूसरोंको अपनी ओर मोड़ने लगेंगे।

साधो केहेर कही करामात, ए दुनियां तित रांचे ।

झूठी द्रष्टि जो बांधी झूठसों, ताथें दिल ना लगत क्योंए सांचे ॥ ३

इसलिए हे साधुजन ! महापुरुषोंने चमत्कारको कहर (साधना मार्गमें भयंकर आपत्ति) माना है। किन्तु संसारके लोग उसके प्रति आकर्षित होकर उसी झूठे भ्रममें डूबे रहते हैं। लोगोंकी दृष्टि झूठे चमत्कारोंके भ्रममें फँस गई है। इसलिए सत्यज्ञानके प्रति उनका मन नहीं लगता।

कौन मैं कहाको कहाथें बिछुरयो, कौन भोम ए छल ।

गुरु सिष्य ग्यान कथें पंथ पैडे, पर एती न काहूँ अकल ॥ ४

मैं कौन हूँ, मेरा मूल घर कहाँ है, मैं कहाँसे बिछुड़कर यहाँ आया हूँ और

यह भुलवनीकी भूमि कौन-सी है ? विभिन्न सम्प्रदायोंके ऐसे गुरु-शिष्य दोनों ही ज्ञान चर्चा करते हैं, किन्तु इन मूल प्रश्नोंका ज्ञान प्राप्त करनेकी बुद्धि उनमें नहीं होती.

**या घरमें या वनमें रहे, पर कहा करे बिना सतगुरु ।**

**तोलों मकसूद क्यों कर होवे, जोलों पाइए ना अखंड घर ॥ ५**

चाहे गृहस्थ बनकर घरमें रहें अथवा सन्यासी बनकर वनमें जाकर तप करें परन्तु सद्गुरुके बिना वे सत्यमार्गका दर्शन नहीं कर सकते. जब तक सद्गुरुके द्वारा अखण्ड घरकी प्राप्ति नहीं होती, तब तक मनुष्य जीवनका उद्देश्य कैसे पूर्ण हो सकता है ?

**सतगुरु सोई जो वतन बतावे, मोह माया और आप ।**

**पार पुरुष जो परखावे, महामत तासों कीजे मिलाप ॥ ६**

सद्गुरु वही है जो मूलघर परमधामकी वास्तविकताका ज्ञान दे एवं मोह-माया तथा आत्माका परिचय करवा कर क्षर, अक्षरसे परे पूर्णब्रह्म परमात्माकी पहचान करा दे. महामति कहते हैं, ऐसे सद्गुरुसे मिलाप करना चाहिए.

**प्रकरण २० चौपाई २४४**

**राग सारंग**

**चल्यो जुग जाए री सुध बिना ।**

**सुध बिना सुध बिना सुध बिना, चल्यो जुग जाए री सुध बिना ॥ १**

यह युग आत्मा और परमात्माकी पहचानके बिना ही चला जा रहा है. सारी दुनियाँ बेसुध हो चली जा रही है.

**मूल प्रकृति मोह अहं थें, उपजे तीनों गुन ।**

**सो पांचोंमें पसरे, हुई अंधेरी चौदे भवन ॥ २**

अक्षरब्रह्मकी इच्छा-मूल प्रकृति तथा मोह और अहङ्कारसे ही सत, रज और तम तीनों गुण उत्पन्न होते हैं. इनका विस्तरण पाँच तत्त्वोंमें हुआ है. इस प्रकार चौदह लोकोंमें अज्ञानका अन्धकार फैल गया है.

प्रले प्रकृति जब भई, तब पांचों चौदे पतन ।

मोह अहं सबे उडे, रहे सरगुन ना निरगुन ॥ ३

जब प्रकृति ही लय हो जाएगी तब पाँचों तत्त्व तथा उनसे उत्पन्न चौदह लोकोंका भी नाश हो जाएगा. मोह, अहङ्कार भी उड़ जाएँगे. तब सगुण या निर्गुण कुछ भी शेष नहीं रहेगा.

तब जीवको घर कहां रह्यो, कहां खसम वतन ।

गुरु सिष्य नाम बोहोतों धरें, पर ए सुध परी न किन ॥ ४

जब यह सम्पूर्ण सृष्टि ही समाप्त हो जाएगी, तब आत्माका घर तथा परमात्माका धाम कहाँ रहेगा ? गुरु और शिष्य तो अनेक कहलाए किन्तु इस रहस्यकी जानकारी किसीको नहीं हुई.

ऊपर तले माहें बाहेर, खोज्या कैयों जन ।

नेहेचल न्यारा सबनसे, ए ठौर न पाई किन ॥ ५

स्वर्ग आदि ऊपरके लोकोंसे लेकर पातालादि नीचेके लोक पर्यन्त तथा भीतर-पिण्डमें और बाहर-ब्रह्माण्डमें कई लोगोंने परमात्माको ढूँढ़ा, परन्तु परमात्मा तो इन सबसे परे परमधाममें रहते हैं. उस अखण्ड धामको कोई प्राप्त नहीं कर सका.

निराकार कासों कहिए, कासों कहिए निरंजन ।

क्यों व्यापक क्यों होसी फना, एता न कहा किन ॥ ६

निराकार किसे कहते हैं और निरञ्जन (दृष्टिसे ओझल) क्या है ? परमात्मा कैसे (सत्ताके द्वारा) सर्वत्र व्यापक हैं ? फिर भी इस संसारका नाश क्यों होता है ? इन बातोंकी स्पष्टता किसीने नहीं की.

क्यों सरूप है प्रकृति को, क्यों मोह क्यों सुन ।

क्यों सरूप जो काल को, ए नेहेचे करी न किन ॥ ७

मूल प्रकृतिका स्वरूप क्या है ? मोह तत्त्व क्या है ? शून्यके आवरणका अर्थ क्या है ? कालका स्वरूप क्या है ? इन बातोंको निश्चित रूपसे किसीने नहीं समझाया.

पंथ पैडे सब चलहीं, कै दीन दरसन ।

ना सुध आप ना पारकी, ए सुध परी न किन ॥ ८

संसारमें अनेक धर्म-सम्प्रदायों आदिके दर्शन प्रचलित हैं, परन्तु किसीको भी आत्माकी तथा पूर्णब्रह्म परमात्माकी पहचान नहीं हुई है। इस प्रकार वास्तविकताको कोई भी प्राप्त नहीं कर सका।

कौन सरूप है आतमा, परआतम कहा क्यो भिन्न ।

सुध ठौर ना सरूप की, ए संसे भान्यो न किन ॥ ९

आत्माका स्वरूप क्या है एवं पर-आत्माको आत्मासे भिन्न (अलग) क्यों कहा है ? अपने मूल स्वरूप तथा मूलस्थान (परमधाम) की सुधि किसीको नहीं है। इन संशयोंका निवारण आज तक किसीने नहीं किया।

महामत सो गुरु पाइया, जो करसी साफ सबन ।

देसी सुख नेहेचल, ऐसी कबहूं ना करी किन ॥ १०

महामतिको ऐसे सद्गुरु प्राप्त हुए हैं जो इन सभी शङ्काओंका निवारण कर अखण्ड सुख प्रदान करेंगे। सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजके अतिरिक्त किसीने भी आज तक ऐसा कार्य नहीं किया है।

प्रकरण २१ चौपाई २५४

राग श्री

रे हो दुनियां बावरी, खोवत जनम गमार ।

मदमाती मायाकी छाकी, सुनत नहीं पुकार ॥ १

अरे देखो ! संसारके लोग पागलोंकी भाँति अपना अमूल्य (मानव) जीवन गँवा रहे हैं। वे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहङ्कार, स्वार्थ आदि मायाके नशेमें ऐसे डूबे हुए हैं इसलिए सत्य धर्मकी बात ही नहीं सुनते।

अपनी छायासों आप बिगुती, बल खोए चली हार ।

आग बिना जलत अंगमें, जल बल होत अंगार ॥ २

ऐसे लोग अपने ही प्रतिबिम्ब (पुत्र-परिवार) में स्वयंको फँसा रहे हैं और

अपनी आत्म-शक्तिको गँवाकर हताश हो रहे हैं। इस प्रकार ये लोग बिना आगके ही काम, क्रोध तथा ईर्ष्याकी अग्निमें जलकर राख हो रहे हैं।

**सत सबद को कोई न चीन्हें, सूने हिरदें नहीं संभार ।**

**समझे साध जो आपको देखें, तामें बडी अंधार ॥ ३**

सत्य वचनोंको कोई समझता ही नहीं। ज्ञानशून्य हृदयमें कुछ भी अच्छी बात नहीं टिकती है। ऐसे लोगोंमेंसे जो स्वयंको साधु-महात्मा समझते हैं, उनके हृदयमें भी अज्ञानका अन्धकार व्याप्त है।

**रे यामें केते आप कहावें स्याने, पर छूटत नहीं विकार ।**

**स्यानप लेके कंठ बंधाए, या छल रच्यो है नार ॥ ४**

यहाँ पर ऐसे कितने ही लोग स्वयंको समझदार (ज्ञानी) मानते हैं, परन्तु उनके हृदयसे भी मायाका विकार छूटता नहीं है। बाह्य चतुराईका ही फन्दा उनके गलेमें पड़ा हुआ है। मायारूपी नारीने इस प्रकारका छल-कपटसे परिपूर्ण खेल रचा हुआ है।

**रे मूढमति या फंदमें उरझे, उपजत नहीं विचार ।**

**आप न चीन्हें घर ना सूझे, ना लखें रचनहार ॥ ५**

हे मूर्ख-अभिमानी जीव ! तुम मायाके इस झूठे फन्देमें फँसे हुए हो। तुम्हारे मनमें इन मायावी बन्धनोंसे मुक्त होनेका विचार भी पैदा नहीं होता। इसलिए तुम्हें ना अपनी पहचान है, ना घरकी सुधि है और ना ही संसारकी रचना करने वाले परमात्माकी पहचान है।

**अपनी मत ले ले साधू बोले, सबद भए अपार ।**

**बोहोत सबदको अरथ न उपजे, या बल सुपन धुतार ॥ ६**

विभिन्न धर्म-सम्प्रदायोंके साधु जन भी अपने-अपने सिद्धान्त तथा मर्यादित ज्ञानके अनुसार उपदेश देते हैं, जिससे उनके उपदेशोंसे भरे हुए अनेक धर्म ग्रन्थ रचे गए हैं। इन सभी धर्म ग्रन्थोंमें परमात्माके सन्दर्भमें कोई स्पष्टता ही नहीं है। इस छलवती मायाके प्रभावका ही यह दुष्परिणाम है।

यामे सतगुरु मिलें तो संसे भानें, पैडा देखावें पार ।

तब सकल सबदको अरथ उपजे, सब गम पडे संसार ॥ ७

ऐसी परिस्थितिमें यदि सद्गुरु मिल जाएँ तो वे सब प्रकारकी शङ्काओंको दूर कर पार (पूर्णब्रह्म परमात्माकी प्राप्ति) का मार्ग दिखाएँगे. तब सभी धर्मग्रन्थोंके सिद्धान्तोंका अर्थ स्पष्ट हो जाएगा और इस झूठे संसारका भी पार पाया जाएगा.

तब बल ना चले इन नारी को, लोप न सके लगार ।

महामत यामें खेलत पिया संग, नेहेचल सुख निरधार ॥ ८

तब इस मायारूपी नारीका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा. वह हमारे हृदय पर लेशमात्र भी आवरण नहीं डाल पाएगी. महामति इस माया नगरीमें भी अपने प्रियतम धनीके साथ खेलते हुए अखण्ड सुखका अनुभव कर रहे हैं.

प्रकरण २२ चौपाई २६२

राग गौरी

रे हो दुनियांको तूं कहा पुकारे, ए सब कोई हैं स्याना ।

ए मदमाती अपने रंग राती, करत मनका माना ॥ १

हे मेरी आत्मा ! तू इस नश्वर संसारके जीवोंको समझानेका प्रयत्न क्यों कर रही है ? यहाँ तो सब कोई चतुर बने हुए हैं. संसारके ये लोग मायाके रङ्गमें रङ्गकर अपनी मनमानी ही करते हैं.

रे हो याही फंदमें साध संतरी, पुकार पुकार पछताना ।

कोई कहे दुनियां बुरी करत हैं, कोई भली कहे भुलाना ॥ २

हे आत्मा ! साधु-सन्त भी इस मायाके फन्देमें फँसकर पुकार-पुकार कर पछताते हुए चले गए हैं. इनमेंसे कई कहते हैं कि यह दुनियाँ बुरी है और कई लोग इसे ही भली समझकर इसीमें भूले हुए हैं, किन्तु तू इस बुरे-भलेमें मत पड़.

रे हो बोहोत दिन बिगूती यामें, कर कर ग्यान गुमाना ।

चुप कर चतुराई लिए जात है, तूं न कर निंदा न बखाना ॥ ३

हे आत्मा ! तू भी अपने ज्ञानके अभिमानमें पड़कर संसारमें बहुत दिनों तक

उलझी रही. अब इन्हें समझाना बन्द कर क्योंकि ये तो चतुराईमें ही डूबे हुए हैं. तू न इनकी निन्दा कर और न ही प्रशंसा.

रे हो तू कर तेरी होत अबेरी, आप न देखें उरझाना ।

अब तू छोड़ सकल विध, जात अवसर तेरा जाना ॥ ४

हे आत्मा ! अब तू अपना कार्य (भजन) कर, विलम्ब हो रहा है. तू स्वयंकी उलझनको देख नहीं रही ? संसारके सभी प्रपंचोंको छोड़ दे, क्योंकि परमधामका मार्ग ग्रहण करनेका यह अमूल्य अवसर व्यर्थ ही बीता जा रहा है.

एही सबद एक उठे अवनीमें, नहीं कोई नेह समाना ।

पेहेचान पीउ तू अक्षरातीत, ताही से रहो लपटाना ॥ ५

समग्र पृथ्वीमें चारों ओरसे एक ही शब्द सुनाई दे रहा है कि परमात्माके प्रति स्नेह (प्रेम) की तुलनामें अन्य कोई भी वस्तु नहीं आती (अर्थात् प्रेम ही सर्वश्रेष्ठ है). इसलिए हे आत्मा ! तू अपने प्रियतम धामधनी अक्षरातीतको पहचान ले और उनके प्रेममें लिपटकर एकरस हो जा.

अहेनिस आवेस हुआ अंगमें, फिर्या दिलडा हुआ दिवाना ।

महामत प्रेमें खेले पियासों, ए मद है मस्ताना ॥ ६

मेरे अङ्ग-अङ्गमें धामधनीके प्रेमका जोश रात-दिन उमड़ रहा है. मेरा हृदय उनके प्रेममें दीवाना बन गया महामति अपने प्रियतमके प्रेममें मग्न होकर उन्हींके साथ खेल रहे हैं. यह प्रेमरस मद मस्त बना देता है.

प्रकरण २३ चौपाई २६८

राग केदारो

रे मन भूल ना महामत, दुनियां देख तू आप संभार ।

ए नाही दुनियां बावरी, ए रच्यो माया ख्याल ॥ १

महामति कहते हैं, हे मन ! तू संसारमें मत भूल. संसारके झूठे रीति-रिवाजोंको देखकर तू स्वयंको संभाल ले. संसारके लोग अल्पज्ञ (नासमझ) नहीं हैं. किन्तु यह खेल मायाकी कल्पनाका विस्तार मात्र है.

रे मन त्रिषा न बूझे तेरी झांझुए, प्रतिबिंब पकड़ो न जाए ।

ज्यों जलचर जल बिना ना रहे, जो तूं करे अनेक उपाए ॥ २

हे मन ! मृगतृष्णाके समान इस झूठे संसारसे तुझे तृप्ति नहीं होगी, क्योंकि यहाँके सुख तो प्रतिबिम्बमात्र हैं, इनको पकड़ा नहीं जा सकता. जिस प्रकार जलचर जलके बिना नहीं रह सकते, उसी प्रकार मायाके जीव भी मायाके बिना नहीं रह सकते चाहे तू अनेक प्रयत्न क्यों न कर ले.

रे मन सृष्टि सकल सुपनकी, तूं करे तामें पुकार ।

असत सतको ना मिले, तूं छोड आप विकार ॥ ३

हे मन ! संसारकी सम्पूर्ण रचना स्वप्नवत् है, इसमें तू क्यों व्यर्थ पुकार रहा है. (मिथ्या संसारके लोग अखण्ड-सत्य वस्तुको समझ नहीं सकेंगे क्योंकि) असत्य कभी भी सत्यको प्राप्त नहीं कर सकता. इसलिए तू अपने ही विकारोंको त्याग दे.

रे मन सुपनका घर नींदमें, सो रहे न नींद बिगर ।

याको कोट बेर परमोधि, तो भी गले नहीं पथर ॥ ४

हे मन ! स्वप्नका घर नींदमें है अर्थात् उसकी उत्पत्ति निद्रासे हुई है. इसलिए इस स्वप्नवत् संसारके लोग अज्ञानरूपी निद्राके बिना रह नहीं सकते. उन्हें चाहे करोड़ों बार उपदेश दिया जाए, तथापि उनका पाषाणतुल्य हृदय द्रवित नहीं होगा.

वासना होगी बेहद की, सो क्यों छोडे अपनी पर ।

ओ सुपनमें एक सबद सुनते, उड जासी नींदर ॥ ५

यदि इस संसारमें परमधामकी सुरता होगी, तो वह अपनी रीतिको कभी भी नहीं छोड़ेगी. उसे स्वप्नमें भी यदि अपने मूलघर परमधामसे सम्बन्धित एक भी शब्द सुनाई दे, तो तत्काल उसकी नींद (अज्ञान) उड़ जाएगी.

सत सबदको सोई चीन्हें, जो होए वासना ब्रह्म ।

ए तो असत उलटिए खेल रच्यो है, देत देखाई सब भरम ॥ ६

सत्य वचनोंको वही पहचान सकेगी जो वस्तुतः ब्रह्मवासना होगी. संसारका



यह नश्वर खेल तो इस उलटी मायाने रचा है. इसलिए इसमें सब कुछ भ्रम ही भ्रम दिखाई देता है.

असत तिनको भ्रम कहिए, होत है जिनको नास ।

ए तो चौदे चुटकीमें चल जासी, यों कहत सुकजी व्यास ॥ ७

उसीको असत्य (भ्रम) कहा जाता है जिसका नाश होता है. माया द्वारा रचे गए ये चौदह लोक तो चुटकी बजाते (क्षणमात्रमें) ही नष्ट हो जाएँगे, शुकदेवजी एवं व्यासजीने ऐसा कहा है.

तू उलट याको पीठ दे, प्रेमें खेल पियासों रंग ।

ओ आए मिलेंगे आप ही, जासों तेरा है सनमंध ॥ ८

इसलिए हे मन ! तू संसारको पीठ देकर अपनी वृत्तिको यहाँसे हटा दे. प्रेमपूर्वक धामधनीके गुण गाकर उनके प्रेममें मस्त हो जा. ऐसा करने पर प्रियतम धनी स्वयं आकर तूझे दर्शन देंगे, क्योंकि उनके साथ तेरा सच्चा सम्बन्ध है.

तेरे संगी तोहे अबहीं मिलेंगे, तू करे क्यों न करार ।

महामत मनको द्रढ कर, समरथ स्याम भरतार ॥ ९

हे मन ! तेरे सङ्गी (ब्रह्मसृष्टि-सुन्दरसाथ) तुझे अभी प्राप्त होंगे. तू शान्त क्यों नहीं रहता. महामति अपने मनको कह रहे हैं, तू दृढ़ बनकर अपने समर्थ स्वामी श्यामसुन्दरको याद कर.

प्रकरण २४ चौपाई २७७

राग गौरी

रस मगन भई सो क्या गावे ।

विचली बुध मन चित मनुआ, ताए सबद सीधा मुख क्यों आवे ॥ १

प्रियतमके प्रेममें मस्त बने हुए महामति अपनी दशाका वर्णन करते हैं— धामधनीके प्रेममें मस्त होने पर उनके गुणगान कैसे कर पाएँगे ? जिनकी बुद्धि, मन और चित्त संसारसे विरक्त हो गए हैं, ऐसे प्रेम मदोन्मत्त व्यक्तिकी जिह्वाके द्वारा सीधे शब्द कैसे व्यक्त होंगे ?

**विचले नैन श्रवन मुख रसना, विचले गुन पख इन्द्री अंग ।**

**विचली भांत गई गत प्रकृत, विचल्यो संग भई और रंग ॥ २**

मेरी आँखें, कान, जिह्वा, मुखादि संसारसे विरक्त हो गए हैं. मेरे भीतर विद्यमान सत, रज और तम ये तीनों गुण; पुष्ट, प्रवाह और मर्यादा ये तीनों पक्ष; दशों इन्द्रियाँ; मन, चित्त, बुद्धि और अहङ्कार ये सब संसारके मायावी पाशसे मुक्त (संसारसे विचलित-अस्थिर होकर परमात्मामें स्थिर) हो गए हैं. मेरी गति, मति एवं प्रकृति भी बदल गई है. सांसारिक सम्बन्धों (सङ्ग) से विचलित होकर, मैं तो धनीके रङ्गमें रङ्ग गया हूँ.

**विचली दिसा अवस्था चारों, विचली सुध ना रही सरीर ।**

**विचल्यो मोह अहंकार मूलथें, नैनों नींद न आवे नीर ॥ ३**

मेरी दिशा भी बदल गई है. जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरिया ये चारों अवस्थाएँ भी बदल गई हैं. अब तो मुझे अपने शरीरकी भी सुधि नहीं रही. मेरे मनसे मोह, ममता, अहङ्कार, बड़प्पन आदि दुर्गुण भी विचलित होकर समाप्त हो गए हैं. धनीके प्रति प्रेमोन्मादके कारण मेरी आँखोंमें न नींद आती है और न ही विरहके आँसू आते हैं.

**विचल गई गम वार पारकी, और अंग न कछुए सान ।**

**पिया रसमें यों भई महामत, प्रेम मगन क्यों करसी गान ॥ ४**

अब मुझे वार-पार (हृद-बेहृद)की सुधि भी नहीं रही अर्थात् इसे जाननेकी आवश्यकता भी नहीं रही. मेरे शरीरके अङ्गोंका भी मुझे भान नहीं रहता. इस प्रकार प्रियतमके प्रेमरसमें मग्न महामति उनके गुणोंका कैसे गान करे.

**प्रकरण २५ चौपाई २८१**

**राग मारु**

**खोज बडी संसार रे तुम खोजो साधो, खोज बडी संसार ।**

**खोजत खोजत सतगुरु पाइए, सतगुरु संग करतार ॥ १**

हे साधुजन ! इस संसारमें खोजका बड़ा ही महत्त्व है, इसलिए पूर्णब्रह्म परमात्माको प्राप्त करनेका मार्ग खोजो. खोजते-खोजते जब सद्गुरु प्राप्त होंगे,

तब सद्गुरुके सङ्गसे अपने करतार (परब्रह्म परमात्मा) को पा सकोगे।

भगत होत भगवान की, किव कर कहावे सिध साध ।

गुन अंग इन्द्री के वस परे, ताथें बांधत बंध अगाध ॥ २

इस संसारमें ऐसे भी भक्तजन होते हैं जो कीर्तन और कविताएँ रचकर सिद्ध पुरुष कहलाते हैं। वे गुण, अङ्ग और इन्द्रियोंके वशीभूत होकर अपने स्वार्थको सिद्ध करनेके लिए उपदेश देते हुए मायाके अगाध बन्धनोंमें फँस जाते हैं।

सतगुरु क्यों पाइए कुलीमें, भेषें बिगाड्यो वैराग ।

डिंभकाइए दुनियां डबोई, बाहेर सीतल माहें आग ॥ ३

आडम्बर पूर्ण इस कलियुगमें सद्गुरुकी प्राप्ति किस प्रकार हो सकती है, आडम्बरी वेशने वैराग्यको कलङ्कित किया है। पाखण्डियोंने संसारको डूबा दिया है। बाहरसे शान्त दिखाई देने वालोंके हृदयमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष आदिकी आग धधक रही है।

गोविन्दके गुन गाए के, तापर मागत दान ।

धिक धिक पडो ते मानवी, जो बेचत हैं भगवान ॥ ४

ऐसे पाखण्डी लोग गोविन्दके गुणगान कर बदलेमें दान माँगते हैं। धिक्कार है ऐसे लोगोंको, जो अपने स्वार्थके लिए भगवानको भी बेच देते हैं।

उदर कारन बेचें हरि, मूढों एही पायो रोजगार ।

मारते मुख ऊपर, वाको ले जासी जमद्वार ॥ ५

ऐसे लोग अपने उदरपूर्ति (पेट पालने) के लिए हरि (भगवान) को बेचते हैं, इन मूर्ख लोगोंने इसे ही अपना व्यवसाय बना लिया है। ऐसे लोगोंको मृत्युके समय यमदूत उनके मुख पर प्रहार करते हुए यमलोक ले जाएँगे।

बैठत सतगुरु होए के, आस करे सिष्य केरी ।

सो डूबे आप सिष्यन सहित, जाए पडे कूप अंधेरी ॥ ६

सद्गुरु बनकर बैठे हुए आडम्बरी लोग अपने शिष्योंसे मान-प्रतिष्ठा और

भौतिक पदार्थोंकी आशा लगाए रहते हैं. ऐसे गुरु अपने शिष्यों सहित अन्धकूप नामक नरकमें गिर जाते हैं.

जो माँहें निरमल बाहेर दे न देखाई, वाको पारब्रह्मसों पेहेचान ।

महामत कहें संगत कर वाकी, कर वाहीसों गोष्ट ग्यान ॥ ७

जो हृदयसे निर्मल हैं और बाह्य आडम्बर भी नहीं दिखाते, उन्हें ही पूर्णब्रह्म परमात्माकी पहचान है. महामति कहते हैं, ऐसे ही महापुरुषोंका सङ्ग करो और उनके साथ ही अखण्ड ज्ञानकी चर्चा करो.

प्रकरण २६ चौपाई २८८

किरंतन वेदांत के - राग श्री जेतसी

कहो कहोजी ठौर नेहेचल, वतन कहां ब्रह्मको ॥ टेक ॥

तुम तीन सरीर तज भए ब्रह्म, पायो है पूरन ग्यान ।

जोलों संसे ना मिटे, साधो तोलों होत हैरान ॥ १

हे ज्ञानीजन ! तुम निश्चय कर बताओ कि पूर्णब्रह्म परमात्माका अखण्ड धाम कहाँ पर है ? तुम स्थूल, सूक्ष्म और कारण इन तीन शरीरोंको छोड़कर स्वयंको ब्रह्मरूप मानते हो तथा पूर्णज्ञानी होनेका दावा भी करते हो. जब तक सद्गुरुके सङ्गसे संशय नहीं मिटेगा, तब तक चित्तमें व्याकुलता छायी रहेगी.

वेदांती संतो महंतो, तुम पायो अनभव सार ।

निज वतन जो आपनों, तुम सोई करो निरधार ॥ २

हे वेदान्ती सन्त-महन्तजन ! तुमने तो वेदोंके ज्ञानका सार अनुभव कर लिया है. इसलिए जो अपना मूल घर है, उसे निश्चित कर लो अर्थात् बताओ कि वह घर कहाँ है ?

पेहेले पेड देखो माया को, जाको न पाइए पार ।

जगत जनेता जोगनी, सो कहावत बाल कुमार ॥ ३

सर्व प्रथम मायाका मूल देखो, जिसका पार ही नहीं पाया जा सकता. सम्पूर्ण जगतको पैदा करने वाली (जगत जननी) यह माया योगिनी अथवा बाल-

कुमारी (कन्या) कहलाती है.

मात पिता बिन जनमी, आपे बंझा पिंड ।

पुरुष अंग छूयो नहीं, और जायो सब ब्रह्मांड ॥ ४

यह क्या बिडम्बना है कि यह माया माता-पिताके बिना ही उत्पन्न हुई है और स्वयं (इसका शरीर) भी बाँझ है. इसने पुरुष अङ्गका स्पर्श भी नहीं किया तथापि समग्र ब्रह्माण्डको पैदा किया है.

आद अंत याको नहीं, नहीं रूप रंग रेख ।

अंग न इन्द्री तेज न जोत, ऐसी आप अलेख ॥ ५

इस मायाका आदि या अन्त कुछ भी नहीं है. इसका रूप, रङ्ग, आकार या सीमा भी नहीं है. इसके अङ्ग, इन्द्रियाँ, तेज या ज्योति भी नहीं है. इस प्रकार यह माया अनिर्वचनीय तथा अगोचर है.

जल जिमी न तेज वाए, ना सोहं सबद आकास ।

तब ए आद अनाद की, जब नहीं चेतन प्रकास ॥ ६

जब इस संसारकी रचना नहीं हुई थी अर्थात् पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश, ये पाँचों तत्त्व उत्पन्न नहीं हुए थे, 'सोऽहं' शब्द भी आकाशमें उच्चारित नहीं हुआ था, किसी चैतन्य (जीव) का प्रकाश भी नहीं हुआ था, तब भी यह माया अक्षरब्रह्मके अव्याकृत स्वरूपमें स्थित थी.

पढ पढ थाके पंडित, करी न निरने किन ।

त्रिगुन त्रिलोकी होए के, खेलें तीनों काल मगन ॥ ७

विद्वान तथा पण्डित लोग शास्त्रोंका अध्ययन करते हुए थक गए, किन्तु किसीने भी मायाके स्वरूपका निर्णय नहीं किया. यह माया सत्त्व, रज, तम इन तीनों गुणोंको धारण कर तीनों लोकोंमें व्याप्त है तथा भूत, वर्तमान एवं भविष्य तीनों कालमें मग्न होकर खेल रही है और सभीको खेला रही है.

विस्नु ब्रह्मा रुद्र जनमे, हुई तीनों की नार ।

निरलेप काहूं न लेप ही, नारी है पर नाही आकार ॥ ८

ब्रह्मा, विष्णु और महेश ये तीनों देवता भी इसी मायासे उत्पन्न हुए और

यही माया इन तीनों देवोंकी नारी अर्थात् शक्तिरूपा देवी बन गई, तथापि यह स्वयं निर्लेप है एवं किसी पर भी आसक्त नहीं होती. नारी होते हुए भी इसका कोई आकार नहीं है.

**गगन पाताल मेर सिखरों, अष्टकुली बनाए ।**

**पचास कोट जोजन जिमी, सागर सात समाए ॥ ९**

इस मायाने आकाशसे पाताल पर्यन्त सुमेरु पर्वतके ऊँचे शिखरों सहित आठ (अष्टकुली) पर्वतोंकी रचना की है. इसने मृत्युलोकमें भी पचास करोड़ योजन भूमिका विस्तार कर उसमें सात द्वीपों तथा सात सागरोंको समाविष्ट कर लिया है.

**तेज तिमर यामें फिरें, रवि ससि तारे ना थिर ।**

**सेसनाग कर ब्रह्मांड, ले धरयो वाके सिर ॥ १०**

इसी मायाके प्रभावसे यहाँ पर प्रकाश और अन्धकार अर्थात् दिन और रात होते रहते हैं. सूर्य चन्द्र, तथा नक्षत्रगण भी इसीके कारण चलायमान रहते हैं. इसीने शेषनागकी रचनाकर समस्त ब्रह्माण्डका भार उसके सिर पर रख दिया है.

**देव दानव रिषी मुनि, ब्रह्मग्यानी बडी मत ।**

**सास्त्र वानी सबद मात्र, ए बोली सबे सरस्वत ॥ ११**

देव, दानव, ऋषि, मुनि और ब्रह्मज्ञानियोंके मुखसे उच्चारित वाणी, उपदेश तथा उनके रचे हुए शास्त्रोंको मायाने ही सरस्वतीका रूप धारण कर तैयार किया है.

**वरन चारों विद्या चौदे, ए पढाए भली पर ।**

**कर आवरन मोह नींद को, खेलावे नारी नर ॥ १२**

चारों वर्णोंके नर-नारियोंको चौदह विद्याकी शिक्षा भी माया ही देती है, तथापि सबके हृदयमें मोह और निद्राका आवरण डालकर यही माया उनको नचाती रहती है .

[चौदह विद्या - चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद), छः

वेदाङ्ग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छन्दशास्त्र), और मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र एवं पुराण. अथवा निम्न चौदह कलाओंको भी चौदह विद्या माना गया है - नृत्य, सङ्गीत, पढ़ना, सीना, घर सजाना, भाषा सीखना, शस्त्र बनाना, औषधि बनाना, चित्रकारी, कढ़ाई, बुनाई, खेती करना, पुष्प सजाना, शृङ्गार करना.]

**लाख चौरासी जीव जंत, ए बांधे सबे निरवान ।**

**थिर चर आद अनाद लों, ए भरी चारों खान ॥ १३**

सृष्टिके चौरासी लाख जीव जन्तुओंको मायाने अपने जालमें जकड़कर रखा है. जरायुज, अण्डज, स्वेदज और उद्भिज इस प्रकार चार प्रकारसे उत्पन्न होने वाले चल-अचल, जड़ और चैतन्य सृष्टिमें भी यह माया अनादि कालसे व्याप्त है.

[२० लाख स्थावर, ९ लाख जलचर, ११ लाख कीट, १० लाख पक्षी, ३० लाख चतुष्पाद, ४ लाख मनुष्य. इस प्रकार जीवोंकी चौरासीलाख योनियाँ मानी गई हैं.]

**पांच तत्व चौदे लोक, पाउ पलमें उपजाए ।**

**खेल ऐसे अनेक रचे, नार निरंजन राए ॥ १४**

पाँच तत्वोंसे रचे गए चौदह लोकों (अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, पाताल तथा भूःलोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महर्लोक, जनलोक, तपोलोक और सत्यलोक) की सृष्टिको माया पलमात्रमें उत्पन्न करती है. मायाकी निरञ्जन शक्तिने पुरुष-प्रकृतिसे मिलकर ऐसे अनेक खेल रचाए हैं.

**ए काली किन पाई नहीं, सब छायामें रहे उझाए ।**

**उपजे मोह अहंकार थें, सो मोहैं में भरमाए ॥ १५**

मायाकी काल-निरञ्जन शक्तिका ज्ञान किसीको भी प्राप्त नहीं हो सका. सभी जीव उसीके प्रतिबिम्बमें फँसे हुए हैं. मोह और अहङ्कारसे उत्पन्न होनेके ये सभी कारण मोहमें ही भ्रमित हैं.

बुध तुरिया द्रष्ट श्रवना, जेती गम वचन ।

उतपन सब होसी फना, जो लों पोहोंचे मन ॥ १६

इस संसारमें बुद्धि, चित्त, दृष्टि, श्रवण और वचन द्वारा जितना समझा जाता है तथा मन जहाँ तक पहुँच पाता है, वह सब मायाकी ही उत्पत्ति है। इसलिए ये सब मायामें ही विलीन होकर नष्ट हो जाते हैं।

ऊपर तले माहें बाहेर, दसों दिसा सब एह ।

सो सबद काहूँ न पाइए, कहाँ ठौर अखंड घर जेह ॥ १७

संसारके अन्दर, बाहर, ऊपर, नीचे और दशों दिशाओंमें मायाका ही विस्तार है। इसलिए इस संसारमें अखण्ड घरका परिचय करानेवाले शब्द कहींसे भी सुनाई नहीं देते।

तो कह्यो न जाए मन वचन, ना कछू पोहोंचे चित ।

बुधे सुनी न निसानी श्रवनों, तो क्यों कर जाइए तित ॥ १८

पूर्णब्रह्म परमात्माका अखण्ड धाम मन और वचन द्वारा व्यक्त नहीं हो सकता, चित्त भी वहाँ पर नहीं पहुँच सकता। कान द्वारा सुनने पर भी जिसके विषयमें बुद्धि कुछ भी सङ्केत नहीं कर सकती, ऐसे पूर्णब्रह्म परमात्माके अखण्ड धाममें किस प्रकार पहुँचा जा सकता है ?

वेदांती माया को यों कहें, काल तीनों जरा भी नाहें ।

चेतन व्यापी जो देखिए, सो भी उडावें तिन माहें ॥ १९

वेदान्ती विद्वान् मायाके सम्बन्धमें कहते हैं कि तीनों कालमें मायाका लेश-मात्र भी अस्तित्व नहीं है। एक ओर वे कहते हैं कि यह चेतन ब्रह्म ही सर्वत्र व्याप्त है, पश्चात् ब्रह्म (चेतन) द्वारा व्याप्त जगतको मिथ्या कहकर क्षणमात्रमें उड़ा देते हैं।

ना कछू ना कछू ए कहें, ओ सत चिद आनंद ।

असत सत को ना मिले, ए क्यों कर होए सनमंध ॥ २०

वेदान्ती “न इति न इति” कहकर ब्रह्मतत्त्वको नकारात्मक शब्दोंमें व्यक्त करते हैं, परन्तु वे समझते नहीं कि ब्रह्म तत्त्व तो सत् चिद् आनन्द स्वरूपमें



परिपूर्ण है। फिर ऐसे सच्चिदानन्द स्वरूपको मायामें व्याप्त बताते हैं, वस्तुतः असत्य मायाका सम्बन्ध सत्य स्वरूप ब्रह्मके साथ किस प्रकार जुड़ सकता है ?

ए जो व्यापक आत्मा, पर आत्म के संग ।

क्यों ब्रह्म नेहेचल पाड़े, इत बीच नार को फंद ॥ २१

यह जो आत्मा सर्वत्र व्यापक है उसका मूल सम्बन्ध तो पर-आत्माके साथ है। जब आत्मा और पर-आत्माके बीचमें ही मायाका आवरण (फन्दा) है, तो यह आत्मा अखण्ड अविनाशी ब्रह्मको कैसे प्राप्त करेगी ?

निबेरा खीर नीर का, महामत करे कौन और ।

माया ब्रह्म चिन्हाए के, सतगुरु बतावें ठौर ॥ २२

महामति कहते हैं, क्षीर-नीर विवेक अर्थात् ब्रह्म और मायाका निरूपण सद्गुरुके अतिरिक्त अन्य कौन कर सकता है ? माया और पूर्णब्रह्म परमात्माकी पहचान करवा कर सद्गुरु ही अखण्ड धामका मार्ग बताते हैं।

प्रकरण २७ चौपाई ३१०

राग आसावरी

मैं पूछों पांडे तुम को, तुम कहो करके विचार ।

सास्त्र अरथ सब लेवहीं, पर किने न कियो निरधार ॥ १

हे पण्डितजन ! मैं आपसे पूछता हूँ, उसका ध्यानपूर्वक विचार कर उत्तर दें। शास्त्रोंका अर्थ तो सब जानते हैं किन्तु किसीने भी निश्चय नहीं किया कि परब्रह्म परमात्माका स्थान कहाँ है ?

माया मोह अहंकार थें, ए सबे उतपन ।

अहंकार मोह माया उडी, तब कहाँ है ब्रह्म वतन ॥ २

माया, मोह और अहङ्कारसे समग्र विश्व उत्पन्न हुआ है। जब अहङ्कार मोह, मायाका नाश होकर विश्वका प्रलय हो जाएगा, तब पूर्णब्रह्म परमात्माका स्थान कहाँ रहेगा ?

कोई कहे ब्रह्म आत्मा, कोई कहे पर आत्म ।

कोई कहे सोहं सबद ब्रह्म, या विध सब को अगम ॥ ३

कई लोग आत्माको ब्रह्म मानते हैं, कई पर-आत्माको ब्रह्म मानते हैं. कई लोग 'सोऽहं' शब्दको ही ब्रह्म मानते हैं. इस प्रकार पूर्णब्रह्म परमात्मा सबके लिए अगम्य ही रह गए.

कोई कहे ए सबे ब्रह्म, रहत सबनमें व्याप ।

कोई कहे ए सबे छाया, नहीं यामें आप ॥ ४

कई लोग मानते हैं कि जगतमें जड़ और चेतनके रूपमें सर्वत्र ब्रह्म ही व्याप्त है. कई पण्डितजन कहते हैं कि यह तो ब्रह्मकी छाया (प्रतिबिम्ब) मात्र है इसमें ब्रह्म नहीं है.

कोई कहे ओ निरगुन न्यारा, रहत सबन से असंग ।

कोई कहे ब्रह्म जीव ना दोए, ए सब एकै अंग ॥ ५

कई पण्डित मानते हैं कि ब्रह्म निर्गुण-निराकार है और सबसे न्यारा (परे) है. कई पण्डित ब्रह्म और जीव इन दोनों स्वरूपको अलग नहीं मानते. वे मानते हैं कि दोनोंका स्वरूप एक ही है.

कोई कहे ए तेज पुंज, याकी किरना सबे संसार ।

कोई कहे याको अंग न इन्द्री, निरंजन निराकार ॥ ६

कई लोग ब्रह्मको तेजपुञ्ज (ज्योतिस्वरूप) मानते हैं और कहते हैं कि संसारके सभी जीव इसीकी किरणें हैं. कोई कहते हैं कि ब्रह्मका न कोई स्वरूप है और न ही अङ्ग-इन्द्रियाँ हैं, वह तो निरञ्जन निराकार है.

कोई कहे ओ पुरुष उत्तम, और ए सबे सुपन ।

कोई कहे ए अलख अलहा, कोई कहे सब सुन ॥ ७

कई ज्ञानीजन कहते हैं कि ब्रह्म पुरुषोत्तम है और समग्र संसार स्वप्नवत् है, जबकि कई लोग कहते हैं कि ब्रह्म अगोचर (अलख) तथा अलभ्य (अलहा) है तथा कई लोगोंकी मान्यता है कि वह शून्य (निराकार) है.

**कोई कहे ओ सदासिव, और न कोई देव ।**

**कोई कहे आद नारायण, करत कमला जाकी सेव ॥ ८**

कई लोग सदाशिव (नारायणके पाँच अङ्गों-सदाशिव, ईश्वर, विष्णु, ब्रह्मा और रुद्रमें-से एक) को ही ब्रह्म मानते हैं, इसके अतिरिक्त अन्य कोई देव नहीं है। कई लोग कहते हैं कि आदि नारायण ही ब्रह्म है और कमला (लक्ष्मीजी) उनकी सेवा करती हैं।

**कोई कहे आदे आद माता, और न कोई क्याहें ।**

**सिव नारायण सबे याथें, या बिन कछुए नाहें ॥ ९**

कई विद्वान माया स्वरूपा सुमङ्गला शक्तिको ही आदि माता (समग्र सृष्टिको उत्पन्न करने वाली) समझकर उसके अतिरिक्त अन्य किसीको भी पूज्य नहीं मानते। उनका कहना है कि शिव, नारायण आदिकी उत्पत्ति भी इन्हीं आदि मातासे हुई है। इसलिए इनके अतिरिक्त अन्य किसीका भी अस्तित्व नहीं है।

**कोई कहे याको करम करता, सब बंधे आवें जाए ।**

**तीनों गुन भी करमें बांधे, सो फेर फेर फेरे खाए ॥ १०**

कई लोग इस मायाको ही सृष्टिरूप कर्मका कर्ता मानते हैं। समग्र संसारके जीव मायाके कारण ही कर्म करके जन्ममरणके चक्रमें घूमते रहते हैं। तीनों गुणोंके अधिपति ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी कर्मके बन्धनोंमें बँध कर इस भवचक्रमें जन्म मरणके फेरे लगाते रहते हैं।

**कोई कहे ए सबे काल, करम सक्ति उपाए ।**

**खेलावे अपने मुखमें, और आखर दोऊ को खाए ॥ ११**

कुछ लोगोंका कथन है कि यह सब कालका ही पसारा है, कर्म और शक्तिकी उत्पत्ति इसीसे हुई है। यही काल सबको अपने मुख (अधिकार) में नचाता है और अन्तमें शक्ति एवं कर्म दोनोंको खा जाता है।

**कोई करे कालको संजम, कोई दिन काया बचाए ।**

**कोई रातें करामातें, यों सब निगम नचाए ॥ १२**

कई लोग कालको अपना वशवर्ती बनाकर कई दिनों तक शरीरको मृत्युसे

बचा लेते हैं. कई लोग चमत्कारोंमें मग्न होकर उन्हें ही सर्वस्व समझते हैं. इस प्रकार वेदोंके बाह्य ज्ञानमें ही सब नाच रहे हैं.

**पढ़ें गुनें विकार न छूटे, आग न अंगथें जाए ।**

**आप वतन चीन्हे बिना, तोलों जल बिन गोते खाए ॥ १३**

शास्त्रोंके सिद्धान्तोंका रटन करने मात्रसे संसारके विकार नहीं छूटते तथा ईर्षा और द्वेषकी अग्नि शान्त नहीं होती. स्वयं और अपने मूल घरकी पहचान हुए बिना जीव बिना पानीके इस भवसागरमें गोते खाते हैं.

**ए संसे सब समझाए के, कोई अंग करे उजास ।**

**सो गुर मेरा मैं सेवों ताए, सुध चित होए दास ॥ १४**

महामति कहते हैं, इन सब संशयोंका समाधान कर हृदयमें जो ज्ञानका प्रकाश फैलाएँगे, वे ही मेरे सद्गुरु हैं और मैं दास बनकर शुद्ध चित्तसे उनकी सेवा करूँगा.

**मैं तो खोजों सुध पार की, कोई न देवे बताए ।**

**मोह अहंकार के बीचमें, सब इतहीं रहे उझाए ॥ १५**

मैं तो बेहदके परेकी सुधि रखने वाले महापुरुषकी खोजमें हूँ परन्तु कोई भी पारकी बात नहीं करता. ये सब लोग मोह और अहङ्कारके बीचमें ही उलझ रहे हैं.

**समझे बिना सुख पारको नहीं, जो उदम करो कै लाख ।**

**तोलों प्रेम न उपजे पूरा, जोलों अंदर न देवे साख ॥ १६**

लाखों यत्न क्यों न कर लें, किन्तु परम तत्त्वको समझे बिना परमधामका अखण्ड सुख प्राप्त नहीं हो सकता. जब तक अन्तरात्मा साक्षी नहीं देती, तब तक पूर्ण प्रेम उमड़ता नहीं है.

**ए धोखे गुरु सरवग्यन भानें, जिन पाया सब विवेक ।**

**बाहेर उजाला करके, आखर देखावें एक ॥ १७**

जिन्होंने विवेक पूर्वक तत्त्वज्ञानको प्राप्त किया हो, ऐसे सर्वज्ञ सद्गुरु ही इस

भ्रामक मायावी अज्ञानका नाश करके मनकी शङ्काओंको दूर कर सकते हैं।  
ऐसे सद्गुरु बाहर और भीतर दोनों स्थानोंमें प्रकाशित कर एक पूर्णब्रह्म  
परमात्माका साक्षात्कार करवा देते हैं

**महामत सो गुरु कीजिए, जो बतावें मूल अंकूर ।**

**आतम अरथ लगावहीं, तब पिया वतन हजूर ॥ १८**

महामति कहते हैं, ऐसे व्यक्तिको ही सद्गुरु बनाना चाहिए जो मूल अङ्कुर  
(पारके सम्बन्ध) का परिचय करवा दे। ऐसे सद्गुरु ही शास्त्रोंके सभी  
वचनोंका आत्मा परक अर्थ लगाते हैं, तब परमधाम तथा पूर्णब्रह्मका  
सान्निध्य प्राप्त होता है।

**प्रकरण २८ चौपाई ३२८**

**राग रामकली**

**संत जी सुनियो रे, जो कोई हंस परम ।**

**मैं पूछत हों पर आतमा, मेरा भानो एही भ्रम ॥ १**

हे सन्तजन ! सुनिए, यदि आपमेंसे कोई परमहंस हैं तो मैं पर-आत्माकी  
बातें पूछना चाहता हूँ। आप मेरे भ्रमका निवारण कीजिए।

**जिन जानो विवादे पूछे, मैं जग्यासु करों खोज ।**

**जो लों धोखा ना मिटे, साधो तोलों न छूटे बोझ ॥ २**

आप ऐसा मत समझना कि मैं वाद-विवाद करनेके लिए यह पूछ रहा हूँ,  
मैं तो जिज्ञासु बनकर खोज कर रहा हूँ। जब तक मनका सन्देह दूर न हो,  
तब तक सांसारिक बोझसे मुक्त नहीं हो सकते।

**कोई कहे ए भ्रम की बाजी, ज्यों खेलत कबूतर ।**

**तो कबूतर जो खेल के, सो क्यों पावे बाजीगर ॥ ३**

कई लोग कहते हैं कि संसारकी रचना मात्र भ्रम पैदा करने वाला इन्द्रजाल  
(जादूका खेल) है। जादूके कबूतरकी भाँति जीव इस खेलमें नाच रहे हैं।  
इसलिए विचार करो कि ये जादूके कबूतर जादूगरको कैसे प्राप्त कर सकेंगे ?

कोई कहे ए ब्रह्मकी आभा, आभा तो आपसी भासे ।

तो ए आभा क्यों कहिए ब्रह्मकी, जो होत है झूठें तमासे ॥ ४

कई लोग कहते हैं कि यह ब्रह्माण्ड पूर्णब्रह्म परमात्माका प्रतिबिम्ब है। प्रतिबिम्ब तो यथार्थकी भाँति होता है। तो ब्रह्माण्डमें होने वाले झूठे तमाशेको परब्रह्मका प्रतिबिम्ब कैसे कहा जाए ?

कोई कहे ए कछुए नाही, तो ए भी क्यों बनी आवे ।

जो यामें ब्रह्म सता न होती, तो अधखिन रहने न पावे ॥ ५

कई लोग इस संसारको कुछ भी नहीं है, ऐसा कहते हैं। यदि कुछ भी नहीं होता तो बनता कैसे ? उनकी इस मान्यताको कैसे स्वीकर किया जाए ? यदि इस संसारमें ब्रह्मकी सत्ता न होती, तो आधे क्षणके लिए भी इसका अस्तित्व नहीं रहता।

कोई कहे ए सबे ब्रह्म, तब तो अग्यान कछुए नाही ।

तो षट सास्त्र हुए काहेको, मोहे ऐसी आवत मन मांही ॥ ६

कई लोग मानते हैं कि यह समग्र ब्रह्माण्ड ब्रह्ममय है। तो ब्रह्माण्डमें किसी भी प्रकारका अज्ञान नहीं रहना चाहिए। यदि ऐसा है, तो अज्ञानके निवारण हेतु षड्दर्शन आदि शास्त्र क्यों रचे गए हैं ? इस प्रकार मेरे मनमें कई बार शङ्का उत्पन्न होती है।

कोई कहे ए पुरुष प्रकृति, मिल रचियो खेल एह ।

तो सूरज द्रष्टे क्यों रहे अंधेरी, ए भी बडा संदेह ॥ ७

कई मानते हैं कि यह संसार पुरुष और प्रकृतिके संयोगसे रचा हुआ खेल है। यदि यह बात सत्य है, तो सूर्यरूपी ब्रह्मके सामने अन्धकाररूपी माया (प्रकृति) कैसे रह सकती है ? यह भी बड़े सन्देहकी बात है।

कोई कहे ए सबे सुपना, न्यारा खावंद है और ।

तो ए सुपना जब उड गया, तब खावंद है किस ठौर ॥ ८

कई मानते हैं कि यह समग्र संसार स्वप्न ही है, इसका स्वामी तो इससे भिन्न कोई दूसरा ही है। यदि यह सत्य मान लें, तो प्रश्न यह उठता है कि

जब स्वप्न मिट जाएगा, तो जगतके स्वामीका स्थान कहाँ होगा ?

ऊपर तले माहें बाहेर, दसों दिसा सब माया ।

षट प्रमाणथें ब्रह्म रहित है, सो कर्मों कर द्रढाया ॥ ९

इस संसारके ऊपर, नीचे, अन्दर और बाहर दशों दिशाओंमें सर्वत्र मायाका ही विस्तार है. छः प्रमाणोंके द्वारा भी परब्रह्मकी धारणा स्पष्ट नहीं होती, तो इस विषयमें निर्णय कैसे हो ?

बुध तुरिया द्रष्ट श्रवना, जोलों पोहोंचे मन ।

उतपन सारी आवटे, जो कछू कहिए वचन ॥ १०

बुद्धि, चित्त, दृष्टि, श्रवण तथा मन द्वारा जिसकी धारणा हो सकती है तथा शब्दों द्वारा जिसका वर्णन हो सकता है, उन सबकी उत्पत्ति इस झूठी मायासे ही हुई है. इसलिए वे सब नाशवान हैं.

कोई कहे अद्वैत के कारन, द्वैत खोजी पर पर ।

अद्वैत सबद जो बोलिए, तो सिर पडे उतर ॥ ११

कई मानते हैं कि अद्वैत ब्रह्मको इस द्वैत (माया) में अलग-अलग प्रकारसे ढूँढ़ा. यदि द्वैतमें रहकर अद्वैत शब्दका उच्चारण हो जाए, तो मस्तक धड़से अलग हो जाएगा.

[राजा जनककी सभामें ब्रह्मवादिनी गार्गीके द्वारा बार-बार अद्वैत विषयक प्रश्न पूछने पर महर्षि याज्ञवल्क्यने उसे सावचेत करते हुए कहा था कि अद्वैत ब्रह्मके विषयमें मात्र पूछती ही रहोगी तो तुम्हारा सिर उड़ जाएगा. महर्षिके कथनका तात्पर्य था कि यह मात्र चर्चाका विषय नहीं है, समर्पण भाव होना चाहिए. किन्तु उसके बाद लोगोंने अद्वैत विषय पर चिन्तन करना ही छोड़ दिया और कहने लगे कि अद्वैत शब्दके उच्चारण करनेसे सिर उतर जाएगा.]

कोई कहे अद्वैत के आडे, सब द्वैत को विस्तार ।

छोड द्वैत आगे वचन, किने न कियो निरधार ॥ १२

कई मानते हैं कि अद्वैत ब्रह्मकी छायामें मायारूपी द्वैतका विस्तार हुआ है

(इसलिए सर्वत्र द्वैत ही दिखाई देता है), किन्तु द्वैतको छोड़कर अद्वैत पूर्णब्रह्म परमात्माका निश्चय किसीने भी नहीं किया।

**भोमका सात कही वसिष्ठे, तामें पांचमी केवल विदेही ।**

**छठी को सबद ना निकसे, तो सातमी द्रढ क्यों होई ॥ १३**

वसिष्ठ मुनिने योगवासिष्ठमें ज्ञानकी सात भूमिकाओंका वर्णन किया है। उनमेंसे पाँचवीं भूमिका केवल विदेहीके लिए बताई गई है। छठी भूमिका तो शब्दसे परे है, तो फिर सातवीं भूमिकाका निश्चय किस प्रकार किया जा सकता है?

[ज्ञानकी सात भूमिकाएँ -

१. शुभेच्छा : मोक्षकी इच्छा। २. विचारणा : शास्त्रों पर विवेकपूर्ण विचार।
३. तनुमानसा : अनासक्ति। ४. सत्त्वापत्ति : मन शुद्धि एवं परमात्मामें तद्रूपता। ५. असंसक्ति : सांसारिक संस्कारोंसे असङ्ग एवं निर्विकल्प समाधि।
६. पदार्थभावना : पदार्थ बाह्याभ्यान्तर स्वभावसे परेकी भावना। ७. तुर्यगा : आत्मभावमें निष्ठा.]

**पार वचन कहे कौन दूजा, सर्वग्यन को सब सूझे ।**

**ए संसे भानो आतमके, ज्यों पर आतम बूझे ॥ १४**

इस ब्रह्माण्डके पार (पूर्णब्रह्मके धाम) का वर्णन कौन कर सकता है ? सर्वज्ञ व्यक्ति ही उसे समझ सकता है। इसलिए इन आत्मसम्बन्धी शङ्काओंका समाधान करो, जिससे परात्माकी वास्तविकताका ज्ञान हो सके।

**परमहंस बिन कौन कहे, जिन तजे हैं तीन सरीर ।**

**कहें महामत महादिसा धनीकी, कोई कर द्यो जुदे खीर नीर ॥ १५**

जो तीन (स्थूल, सूक्ष्म तथा कारण) शरीरको पार कर चौथी अवस्था (तुरीया) में पहुँच गए हैं, ऐसे परमहंसोंके अतिरिक्त इस विषयका निर्णय कौन कर सकता है ? महामति कहते हैं, पूर्णब्रह्म परमात्माकी प्राप्तिका मार्ग अति जटिल है, इसलिए कोई तो क्षीर और नीर (ब्रह्म और माया) को अलग-अलग कर स्पष्ट बता दे।

**प्रकरण २९ चौपाई ३४३**



चीन्हे क्यों कर ब्रह्मको, एतो गुन ही के अंगको विकार ।

बाजीगरें बाजी रची, मूल माया थें मोह अहंकार ॥ १

त्रिगुणात्मक (सत्त्व, रज तमके) विकारसे रचित इस मायावी ब्रह्माण्डमें ब्रह्मकी पहचान कैसे हो सकती है ? जिस प्रकार जादूगर भ्रामक विद्याकी कलासे झूठा खेल रचता है, उसी प्रकार अक्षर ब्रह्मने मायावी आवरण खड़ा कर, मोह तथा अहङ्कारके द्वारा झूठे (नश्वर) संसारकी रचना की है।

जाको पेड़ प्रतिबिम्ब प्रकृति, पांच तत्त्व ही को आकार ।

माहें खेले निरगुन व्यापक, लिए माया मोह अहंकार ॥ २

इस संसारका मूल (उद्गम) प्रकृतिमें पड़ा हुआ अक्षर ब्रह्मका प्रतिबिम्ब है, उसीसे पाँच तत्त्वोंने आकार लिया है। इस प्रकार निर्गुण रूपमें व्याप्त ब्रह्मकी सत्ता माया, मोह और अहङ्कारके साथ खेल कर रही है।

लोक चौदे दसों दिस, सब नाटक स्वांग संसार ।

आवे नैन श्रवण मन वचन, ए सब माया मोह अहंकार ॥ ३

चौदह लोक और दशों दिशाओंमें विस्तृत यह ब्रह्माण्ड नाटकका ही एक स्वाङ्ग (तमाशा) है। इस संसारमें जो कुछ भी देखने, सुनने, कहने तथा चिन्तन करनेमें आता है, वह सब मोह माया और अहङ्कारका ही परिणाम है।

क्या दानव क्या देवता, क्या तीर्थंकर अवतार ।

ब्रह्मा विष्णु महेश लों, सो भी पैदा माया मोह अहंकार ॥ ४

इस संसारमें देव, दानव, ऋषि, मुनि, तीर्थङ्कर, अवतार आदि अनेक हुए हैं, उनसे लेकर ब्रह्मा, विष्णु और महेश पर्यन्त सभी मायावी मोह और अहङ्कार द्वारा ही पैदा हुए हैं।

अब औरन की मैं क्या कहूं, जो बडकों का ए हाल ।

जल जैसे तरंग तैसे, उठे माया मोह अहंकार ॥ ५

जब ब्रह्मा, विष्णु और महेश जैसे बड़े-बड़े देवताओंकी यह दशा है, तो

अन्य सामान्य जीवोंकी बात ही क्या रही ? वे सब माया, मोह और अहङ्कारके प्रभावसे सागरमें उत्पन्न होने वाली तरङ्गोंकी भाँति पैदा होते हैं, फैलते हैं और अन्तमें मिट जाते हैं.

**जो बंध बांधे बापने, बेटे चले जाए तिन लार ।**

**जीव उरझे जाली छल की, ए सब माया मोह अहंकार ॥ ६**

जैसे बाप दादाओंके द्वारा चलाई गई परम्पराओंका अन्धानुकरण उनके पुत्र करते हैं, उसी प्रकार संसारके सभी जीव भी देवताओंकी भाँति मायामें ही उलझे रहते हैं. इस प्रकार यह सारा संसार माया, मोह, अहङ्कार तथा छल-कपटसे परिपूर्ण है.

**देहुरे मसीत अपासरे, सब लगे माँहें रोजगार ।**

**बाहेर देखावें बंदगी, माँहें माया मोह अहंकार ॥ ७**

मन्दिर, मस्जिद, उपाश्रय आदिमें भी स्वार्थका व्यापार चलने लगा. उपासना और सेवा तो बाह्यरूपसे ही दिखाई देती है, किन्तु भीतर तो मोह, माया और अहङ्कार ही भरा पड़ा है.

**जुदे जुदे भेष दरसनी, अनेक इस्ट आचार ।**

**धरे नाम धनीके जुदे जुदे, पैँडे चलें माया मोह अहंकार ॥ ८**

विभिन्न सम्प्रदायोंके शास्त्रज्ञ पृथक्-पृथक् प्रकारके वेश धारण कर, पृथक्-पृथक् आचार-विचारसे अपने इष्टकी पूजा कर रहे हैं. वे एक ही परमात्माको भिन्न-भिन्न नामसे पुकारते हैं, इस प्रकार माया, मोह और अहङ्कारसे ग्रस्त होकर विभिन्न पन्थ चल रहे हैं.

**खोज खोज षट सास्त्र हुए, अनेक वचन बिस्तार ।**

**करम उपासना ग्यानकी, वानी थकी माँहें माया मोह अहंकार ॥ ९**

संसारमें प्रचलित ज्ञान छानबीन होनेके बाद षड्दर्शनकी रचना हुई है. उन्हींका विस्तरण होकर अन्य शास्त्र रचे गए; जिनमें कर्म, उपासना और ज्ञानकी चर्चा की गई है. उनके उपदेश (शब्द) भी माया, मोह और अहङ्कारमें ही थक गए.

सबद सुनें एक दूजे के, फेर फेर करें बिचार ।

किव कर नाम धरें अपने, सब मगन माया मोह अहंकार ॥ १०

आश्चर्यकी बात तो यह है कि ऐसे ज्ञानीजन एक दूसरेके सिद्धान्त ग्रन्थोंमें अभिव्यक्त ज्ञानको सुनकर परस्पर विचार भी करते हैं. अलग-अलग पदोंकी रचना करके मान्य कविके रूपमें ख्याति भी प्राप्त करते हैं, तथापि वे सब माया मोह और अहङ्कारमें ही मग्न होकर खेल रहे हैं.

ए वानी कथें सब अगम, माहें गुझ सबद हैं पार ।

सो ए कैसे समझहीं, मोहोरे माया मोह अहंकार ॥ ११

ऐसे ज्ञानीजन अगम्य परमात्माकी चर्चा करते हैं, तो उनके वचनोंमें भी पारके गूढ़ सङ्केत मिलते हैं. उन रहस्योंको वे स्वयं ही कैसे समझ सकते हैं, क्योंकि वे भी तो माया, मोह और अहङ्कारमें ही नाचने वाले (मोहरे) हैं.

यामें जीव दोए भांत के, एक खेल दूजे देखनहार ।

पेहेचान न होवे काहूँ को, आडी पडी माया मोह अहंकार ॥ १२

इस संसारमें दो प्रकारके जीव हैं-एक हैं खेलने वाले और दूसरे हैं खेलको देखने वाले. परन्तु उन दोनोंमेंसे किसीको भी परस्परकी या खेलकी पहचान नहीं होती, क्योंकि उनके बीच माया, मोह और अहङ्कारका परदा व्यवधान बना हुआ है.

ए खेल किया जिन खातर, सो तो है कोई सिरदार ।

जोलों न होवें जाहेर, तोलों उडे न माया मोह अहंकार ॥ १३

इस संसारके खेलकी रचना जिनके लिए की गई है, वे तो कोई शिरोमणि ब्रह्मात्माएँ ही हैं. जब तक वे प्रकट नहीं होंगी, तब तक माया मोह और अहङ्काररूपी अज्ञानका पट दूर नहीं हो पाएगा.

ऐसे खेल अनेक एक खिनमें, करे अग्याएं करतार ।

सो करतार ठौर क्यों पाइए, जोलों उडे न माया मोह अहंकार ॥ १४

अक्षरातीत पूर्णब्रह्म परमात्माकी आज्ञासे अक्षरब्रह्म इस प्रकारके अनेक खेल (ब्रह्माण्ड) एक ही क्षणमें बनाते हैं और मिटाते भी हैं. जब तक माया, मोह

और अहङ्कारका पट दूर न हो, तब तक पूर्णब्रह्म परमात्मा (करतार) का स्थान परमधाम कैसे पाया जाएगा ?

**महामत होसी सब जाहेर, मिले अक्षरातीत भरतार ।**

**वैराट होसी नेहेचल, उड्यो माया मोह अहंकार ॥ १५**

महामति कहते हैं, अब वे शिरोमणि ब्रह्मात्माएँ प्रकट होंगी, क्योंकि अक्षरातीत धामधनी (पूर्णब्रह्म) मुझे मिल गए हैं। अब यह विराट ब्रह्माण्ड भी अखण्ड हो जाएगा (संसारके सभी जीव अखण्ड मुक्ति स्थलोंका सुख प्राप्त कर लेंगे), क्योंकि अब माया और अहङ्कारका आवरण हट गया है।

**प्रकरण ३० चौपाई ३५८**

**राग सोरठ**

**कलिमें देख्या ग्यान अचंभा ।**

**बातन मोहोल रचे अति सुन्दर, चेजा जिमी न थंभा ॥ १**

इस कलियुगमें आश्चर्यजनक (थोथा) ज्ञान दिखाई दे रहा है। लोग मात्र बातोंके सुन्दर महल बनाते हैं, जिसकी न कोई नींव दिखाई देती है न भूमि है और न ही कोई स्तम्भ हैं। (इस प्रकार ब्रह्मविषयक आधार विहीन अवधारणा इस युगमें दिखाई देती है।)

**अंग न इंद्री अंतसकरन वाचा, ब्रह्म न पोहोंचे कोए ।**

**यों कहें साख पुरावें श्रुति, फेर कहें अनभव होए ॥ २**

इस शरीरके मन, वचन, गुण, अङ्ग, इन्द्रियाँ तथा अन्तःकरण कोई भी पूर्णब्रह्म परमात्माका परिचय प्राप्त करनेमें समर्थ नहीं है। इस प्रकारका सिद्धान्त कह कर संसारके ज्ञानीजन वेदोंकी साक्षी देते हैं, फिर यह भी कहते हैं कि ब्रह्मका तो मात्र अनुभव ही हो सकता है।

**अहं ब्रह्म अस्मी होएके बैठें, तत्त्वमसी और कहावें ।**

**स्वामी सिष्य न क्रिया करनी, यों महावाक्य द्रढावें ॥ ३**

ऐसे वेदान्ती लोग “अहं ब्रह्मास्मि” (मैं स्वयं ब्रह्म हूँ) बनकर बैठे हैं और अपने शिष्योंको भी “तत्त्वमसि” (तुम भी वही ब्रह्म हो) कहते हैं। इस

प्रकार वेदान्त महावाक्योंको अपने ऊपर घटाते हैं। वस्तुतः ब्रह्ममय होने पर स्वामी (गुरु) और शिष्यकी कोई क्रियाकलाप (मान-मर्यादा) होती ही नहीं है।

**षट् प्रमाणसे ब्रह्म है न्यारा, सो कहें अद्वैत हम आप ।**

**माया ईश्वर त्रिगुण हमथें, हमहीं रहें सबमें व्याप ॥ ४**

शास्त्रोंके कथनोंको उद्धृत करके वे कहते हैं कि ब्रह्म तो छः प्रमाणों (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अनुपलब्धि और अर्थापत्ति) से अलग है। दूसरी ओर कहते हैं कि हम, तुम सभी अद्वैत (ब्रह्म) हैं। माया, ईश्वर, त्रिगुण ये सब हमसे ही उत्पन्न हुए हैं और हम ही सृष्टिमें व्याप्त हैं।

**ईश्वर फिरें ना रहें त्रिगुण, त्रिगुण चलें जीव भेले ।**

**ए कहावें ब्रह्म सब पैदास याथें, और जात हैं आप अकेले ॥ ५**

शास्त्रोंके अनुसार जब ईश्वर अर्थात् नारायणका लय हो जाता है, तो जीव सहित त्रिगुणमयी सृष्टिका भी नाश होता है। किन्तु स्वयं ब्रह्म होनेका झूठा अभिमान रखनेवाले वेदान्ती इस सृष्टिको स्वयं (अपने) से पैदा हुई मानते हैं। फिर भी मृत्युके समय वे मात्र अकेले ही चले जाते हैं। (यदि वे स्वयं ब्रह्म होते तो उनके जाते हुए पूरे ब्रह्माण्डका ही लय होना चाहिए.)

**कूवत कछुए न पाइए माहें, खेलें मोहमें परें परवस मन ।**

**भोमका एक न चढ सकें, कहावें ईश्वर को महाकारन ॥ ६**

स्वयंको ब्रह्म कहने वाले वेदान्तियोंके ज्ञानमें कोई तथ्य नहीं है। वे स्वयं तो मनकी इच्छाओंके वशीभूत होकर मोहमें पड़े हुए हैं। शास्त्रोंमें बताई गई सप्त भूमिकाओं (शुभेच्छा, विचारणा, तनुमानसी, सत्त्वापत्ति, असंशक्ति, पदार्थभावना और तुर्यगा) मेंसे एक भूमिका पर भी वे आरोहण नहीं कर सकते फिर भी स्वयंको ईश्वरका भी महाकारण (ईश्वरके भी सर्जकब्रह्म) होनेका दावा करते हैं।

**तीन सरीर उडावें मुखथें, आप होत हैं ब्रह्म ।**

**पूछे ते कहें हम भोगवें, प्रालब्ध जो करम ॥ ७**

ऐसे लोग स्थूल, सूक्ष्म और कारण इन तीनों शरीरोंको कथनमात्रसे पार कर

स्वयंको तुरीयावस्थामें मान कर ब्रह्म होनेका दावा करते हैं. यदि उनसे पूछा जाए कि तुम इस संसारमें क्यों पड़े हुए हो ? तो वे उत्तर देते हैं कि हम प्रारब्ध (भाग्यमें लिखित कर्मों) का फल भोग रहे हैं.

**माया ईश्वरतें होत हैं न्यारे, न्यारे होत तीन देह ।**

**अद्वैतको प्रालब्ध लगावें, देख्या ग्यान बडा ब्रह्म एह ॥ ८**

ऐसे तथाकथित ज्ञानी अपने आपको ब्रह्म मानकर ब्रह्मकी भाँति स्वयंको भी माया और ईश्वरसे अलग समझते हैं तथा स्थूल, सूक्ष्म और कारण इन तीनों शरीरोंसे भी स्वयंको अलग मानते हैं. स्वयं ब्रह्म बनकर अद्वैत ब्रह्मको कर्म और प्रारब्धके साथ जोड़ते हैं. इस प्रकारके उनके ब्रह्मज्ञानसे बड़ा आश्चर्य होता है.

**ऐसे कोट ब्रह्मांड होवें पलमें, अद्वैत के हुकम ।**

**ए कहावें ब्रह्म सुध नहीं ब्रह्म घरकी, द्वैत अद्वैत नहीं गम ॥ ९**

अद्वैत ब्रह्म (परमात्मा) की आज्ञासे अक्षरब्रह्म एक पलमें ही ऐसे करोड़ों ब्रह्माण्डोंकी रचना करते हैं. किन्तु ऐसे तथाकथित वेदान्ती लोग स्वयंको ब्रह्म होनेका दावा करते हैं परन्तु उन्हें तो परमात्माके घर-परमधामकी पहचान भी नहीं है. इतना ही नहीं, उन्हें माया (द्वैत) और ब्रह्म (अद्वैत) का परिचय तक नहीं है.

**ए सुकमुनि बानी बोल्या वेदांत, सो इनों क्यों समझी जाए ।**

**होसी प्रगट प्रकास निज बुध को, सो महामत देसी बताए ॥ १०**

शुकदेवमुनिने श्रीमद्भागवतमें वेदान्तके सिद्धान्तोंका सुन्दर विवेचन किया है. परन्तु उनके इस ज्ञानको ऐसे तथाकथित वेदान्ती कैसे समझ सकेंगे ? निज बुद्धि (जागृत बुद्धि) अर्थात् तारतम ज्ञानके द्वारा महामति इन सभी रहस्योंका स्पष्टीकरण कर देंगे, जिससे संसारमें ब्रह्मज्ञानका प्रकाश फैलेगा.

**प्रकरण ३१ चौपाई ३६८**

भाई रे ब्रह्मग्यानी ब्रह्म देखलाओ, तुम सकलमें सांई देख्या ।

ए संसार सकल है सुपना, तो तुम पारब्रह्म क्यों पेख्या ॥ १

हे ब्रह्मज्ञानी भाइयो ! तुमने सकल संसारमें व्याप्त ब्रह्मके दर्शन किए हैं. उस ब्रह्मके दर्शन मुझे भी कराओ. शास्त्रोंके अनुसार यह संसार तो स्वप्नवत् (झूठा) है, फिर तुम्हें इस झूठे संसारमें ब्रह्मके दर्शन किस प्रकार हुए ?

सत सुपनेमें क्यों कर आवे, सत सांई है न्यारा ।

तुम पारब्रह्मसों परच्या नाही, तो क्यों उतरोगे पारा ॥ २

ब्रह्म तो सत्य है, वह इस स्वप्नवत् संसारमें किस प्रकार आ सकता है ? सत्य परमात्मा तो मायासे अलग (परे) होते हैं. यदि तुम परब्रह्मको पहचान नहीं पाए, तो इस संसार सागरसे किस प्रकार पार उतर सकोगे ?

तुम वैकुंठ जमपुरी एक कर देखी, तब तो सास्त्र पुरान सब भान्या ।

सुकदेव व्यासके वचन बिना, कौन कहे मैं जान्या ॥ ३

हे ब्रह्मज्ञानी ! तुम वैकुण्ठ और यमपुरीको एक ही मानकर दोनोंको समान रूपसे देखते हो. यदि ऐसा ही है तो समग्र शास्त्र-पुराणोंके सब सिद्धान्तोंका खण्डन हो गया. परन्तु शुकदेवजी तथा व्यासजीके सिद्धान्तोंको समझे बिना कौन कह सकता है कि मुझे ब्रह्मका परिचय प्राप्त हुआ है ?

यामें बड भागी भए वल्लभाचारज, जाको सुकदेवका गुन भाया ।

उतम टीका कीन्हीं दसम की, तो इन ए फल पाया ॥ ४

ज्ञानीजनोंमें सिद्धान्तोंको जानने वाले महान भाग्यशाली श्री वल्लभाचार्यजी हुए. उन्हें शुकदेवजीका सिद्धान्त (प्रेमलक्षणाभक्ति) अच्छा लगा. इसलिए उन्होंने श्रीमद्भागवतके दशम स्कन्धकी उत्तम टीका लिखी है. परिणामस्वरूप उन्हें श्रीकृष्ण तत्त्व प्राप्त हुआ.

बिना पुरान प्रकास न होई, सास्त्र बिना कौन माने ।

एक अक्षर को अर्थ न आवे, तो ब्रह्म भरममें आने ॥ ५

शास्त्रों और पुराणोंके सिद्धान्तोंको समझे बिना ब्रह्मज्ञानका प्रकाश प्राप्त नहीं

हो सकता और शास्त्रोंके प्रमाण बिना मानेगा भी कौन ? जिन्हें शास्त्रोंके सिद्धान्तोंके एक भी अक्षरका गूढ़ार्थ समझमें नहीं आता, वे लोग भ्रममें पड़कर ब्रह्मको मायामें घटाते हैं.

**काल आवत कबूं ब्रह्म भवनमें, तुम क्यों न विचारो सोई ।**

**अखंड साईं जो यामें होता, तो भंग ब्रह्माण्डको न होई ॥ ६**

जहाँ परब्रह्मका निवास हो, ऐसे ब्रह्म भवनमें मृत्यु कैसे प्रवेश पा सकती है ? इतना भी क्यों विचार नहीं करते ? यदि इस ब्रह्माण्डमें अखण्ड परमात्मा होते, तो इसका कभी भी नाश नहीं होता.

**तुम केवल काल तत्त्व ग्यानी, ब्रह्म ग्यानी भए ।**

**सब दरवाजे खोजे साधो, पर सुन छोड कोई ना गए ॥ ७**

हे ज्ञानीजन ! तुम तो केवल कालतत्त्वज्ञानी अर्थात् कालके वशीभूत तत्त्वोंको ही जानने वाले हो किन्तु स्वयंको ब्रह्मज्ञानी मानने लगे. तुम्हारे जैसे साधुजनोंने ब्रह्मको ढूँढ़नेके लिए चौदह लोकोंके सब द्वार छान मारे, तथापि मोहतत्त्व, शून्य अथवा निराकारसे आगे कोई नहीं जा सका.

**इन सुपनेमें सब कोई भूल्या, किनहूं न देख्या पार ।**

**विध विधसों भवसागर थाह्या, सुकदेव व्यास पुकार ॥ ८**

इस स्वप्नवत् संसारमें मोहके वशीभूत होकर सब लोग मार्ग भूल गए हैं. किसीने भी संसारसे परे (ब्रह्मधाम) का मार्ग नहीं दिखाया, यद्यपि महर्षि व्यास और शुकदेव मुनिने इस भवसागरकी थाह पाकर विभिन्न प्रकारसे पुकार की है.

**यामें प्रेम लछन एक पारब्रह्मसों, एक गोपियों ए रस पाया ।**

**तब भवसागर भया गौपद वछ, विहंगम पैडा बताया ॥ ९**

इस संसारमें परब्रह्मकी प्राप्तिके लिए अनन्य प्रेम लक्षणाभक्ति ही एक महत्त्वपूर्ण साधन है. इस भक्तिरसको मात्र ब्रजकी गोपियाँ ही प्राप्त कर सकीं. इसीके प्रभावसे गोपियोंके लिए यह भवसागर बछड़ेके पाँवसे बने हुए छोटे-से गड्डेके समान हो गया (जिसे वे अनायास ही पार कर गईं). इसीलिए



इस प्रेममार्गको विहङ्गममार्ग (आकाशीमार्ग) कहा गया है।

कै दरवाजे खोजे कबीरें, बैकुंठ सुन सब देख्या ।

आखर जाए के प्रेम पुकार्या, तब जाए पाया अलेखा ॥ १०

सन्त कबीर साहेबने विभिन्न साधनाओंके द्वारा ब्रह्मको ढूँढ़ा, वैकुण्ठसे शून्य पर्यन्त सबका वर्णन भी किया। अन्तमें जब प्रेमकी पुकार की, तभी उन्हें अलख ब्रह्मकी प्राप्ति हो सकी।

भाई रे ब्रह्मग्यानी ब्रह्म सुपनेमें, महामत कहे यों पाइए ।

पार निकसके पूरन होइए, तब फेर सब द्रष्टे देखाइए ॥ ११

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मज्ञानी भाइयो ! इस स्वप्नवत् संसारमें मात्र अनन्य प्रेमलक्षणा भक्ति द्वारा ही ब्रह्मको पाया जा सकता है। इस संसारके पार (निराकारके पार) का ज्ञान प्राप्त करने पर ही पूर्णज्ञानी बन सकते हो, तब तुम्हारी दृष्टिमें सब कुछ आ जाएगा।

प्रकरण ३२ चौपाई ३७९

राग गौरी

रे जीवजी जिन करो यासों नेहडा ।

जाको सनमुख नाही सरम, तासों नाही मिलवेको धरम ।

ए तो भूलवनी कोई भरम, कोहेडासों लाग्यो करम ॥ १

जीवको उद्दिष्ट (लक्ष्य) कर सुन्दरसाथको उपदेश देते हैं, हे जीव ! पाँचतत्त्वके द्वारा बने हुए इस नश्वर शरीर पर ममता मत रखो। जिस शरीरको अपने साथी (जीव) को छोड़कर सामनेसे जाते हुए लज्जा ही नहीं आती, उसके साथ ममता रखना तेरा धर्म नहीं है। यह शरीर तो भुलाने वाला भ्रममात्र है। तू तो कुहिरके समान कर्मोंके जालमें उलझा हुआ है।

नामैं जाको प्रपंच, तिन सबको मूल सरीर ।

या बनथें बाग विस्तरयो, जानो भरिया मृगजल नीर ॥ २

जिसका नाम ही प्रपञ्च है, उन प्रपञ्चों (सांसारिक बन्धनों) का मूल ही यह शरीर है। इसके द्वारा ही बाग-बगीचेकी भाँति मायाका विस्तार फैला हुआ

है. मानों चारों ओर मृगजलके समान (आभासित) जल भरा हुआ है.

रे जीव शरीर मंदिर सोहामनों, चौदे खूने रे अवास ।

इनके भरोसे जे रहे, ते निकस चले निरास ॥ ३

हे जीव ! यह शरीररूपी मन्दिर अति सुन्दर दिखाई दे रहा है. इस आवासके चौदह अङ्ग (दश इन्द्रियाँ और चार अन्तःकरण) हैं. जो इनके भरोसे रहते हैं, वे अन्तमें निराश होकर चले जाते हैं.

खास छजे गोख जालियां, यामें केती मिलाई धात ।

संधों संध समारियां, मिने हिकमत कै हिकात ॥ ४

इस शरीररूपी मन्दिरमें चाँदनी जैसा ललाट, छज्जेके समान कन्धा, गोख (झरोखे) के समान नेत्र और नाक कानके समान जालियाँ लगी हुई हैं. जिस प्रकार भवनमें विभिन्न पदार्थोंका उपयोग होता है, उसी प्रकार इस शरीररूपी भवनमें भी धातुओंके रूपमें मांस, मज्जा, रक्त, हड्डियाँ, त्वचा आदिका उपयोग कर शरीरके अङ्गोंको भलीभाँति जोड़ा गया है. महान कलाकारकी कला कौशलका यह आदर्श उदाहरण है.

मेहेनत करी केती या पर, विध विध बांधे बंध ।

जानिए सदा नेहेचल, ए रच्यो ऐसी सनंध ॥ ५

इस शरीरकी रचना विभिन्न प्रकारके अंशोंको जोड़कर बड़े परिश्रमसे की गई है. उसे देखकर संसारके जीवोंको यह आभास होता है कि यह अखण्ड रहनेवाला है. इसकी रचना ही इस प्रकारसे की गई है.

गुन पख अंग इन्द्रियां, सबके जुदे जुदे स्वाद ।

तरफ अपनी खैचहीं, खेलत मिने बिवाद ॥ ६

इस शरीरमें तीन गुण (सत्व, रज, तम), चार अङ्ग (अन्तःकरण) तथा दश इन्द्रियोंका समूह है, उन सबके अलग-अलग स्वाद हैं. ये सब अपने-अपने स्वभावके अनुसार अपनी ओर आकर्षित करते हैं. लोग इनके मोहमें उलझकर परस्पर वाद-विवाद करते हैं.

या वनथें बाग रंग फूलिया, जानें लेसी सुख अपार ।

अधबीच उछेदिया, सो करता गया पुकार ॥ ७

मायावी वन (जङ्गल) के समान इस जगतके कुटुम्ब-परिवाररूपी उपवनमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहङ्कारसे भरे हुए मायावी रङ्गके विभिन्न पुष्प खिले हैं। इन्हें देखकर जीवको आभास होता है कि इनसे अपार सुख प्राप्त होगा। परन्तु बीचमें ही मृत्यु द्वारा उसका नाश होता है। इसलिए (ब्रह्मका साक्षात्कार न होनेके) पश्चात्तापके साथ उसे संसार छोड़ना पड़ता है।

मोहे बाग रंग मंदिरों, सेजडिएं सोए करार ।

सो काढे कंठ पकडके, गए कलकलते नर नार ॥ ८

हे जीव ! इस शरीररूपी मन्दिरके कुटुम्ब परिवाररूप बागमें मोहित होकर रङ्गकर झूठे सुखोंकी शय्या पर चैनकी नींद सो रहे हो। जब काल गला पकड़कर इस सुख-शय्या परसे खींच ले जाता है, तब सब नर-नारी रोते-कलपते हुए चले जाते हैं।

ए अनमिलतीसों ना मिलिए, जाको सांचो नाही संग ।

नाहीं भरोसो खिन को, ज्यों रैनी को पतंग ॥ ९

इसलिए हे जीव ! जिस शरीरने अन्त तक कदापि किसीका साथ नहीं दिया, उसके साथ मित्रता मत रखो। इसका सङ्ग सच्चा नहीं है। जैसे पतङ्ग रातमें ही पैदा होकर रातको ही मर जाता है, इसी प्रकार इस शरीरका भी क्षण मात्रका भरोसा नहीं किया जा सकता।

क्यों रे नेहडा यासों कीजिए, जो मिलके करे भंग ।

एक रस होइए क्यों तिनसे, नेहेचल नहीं जाको रंग ॥ १०

हे जीव ! तू इस मायावी शरीरके साथ ममता क्यों रख रहा है ? क्योंकि यह तो थोड़े दिन साथ देकर फिर धोखा दे देता है। ऐसे मायावी शरीरके साथ एकरस क्यों हो रहे हो (शरीरके साथ क्यों तादात्म्य सम्बन्ध रख रहे हो) जिसका रङ्ग (प्रभाव) ही स्थायी नहीं है।

ऐसे कै उजाडे मंदिर, ए सब को देवे छेह ।

मिलापै में रंग बदले, अधबीच तोडे नेह ॥ ११

ऐसे अनेक मन्दिर (शरीर) उजाड़ दिए गए हैं क्योंकि यह सबको धोखा देता है। इससे मिलते ही यह जीवको अपने मायावी रङ्गसे रङ्ग देता है, फिर बीचमें ही अपना साथ छोड़ देता है।

रे जीव सरीर रची सेजडी, इत आवे नींद अपार ।

ए सूतेहीं पटकावहीं, पुकार न पीछे बहार ॥ १२

हे जीव ! यह शरीररूपी शय्या इस प्रकार बनाई गई है कि उस पर सोते ही अज्ञानताकी गहरी नींद आ जाती है। वह इस प्रकार सोते हुए जीवको नींदमें ही चौरासीके फेरेमें पटक देता है, फिर उससे बाहर निकलकर कुछ बोला भी नहीं जा सकता।

यासों तो मनडो माने नहीं, जो छोडे ए अंत्रीयाल ।

उझाए आप न्यारी रहे, जीवको बांध देवे मुख काल ॥ १३

जब तक यह देह जीवको ऊँचा उठाकर बीचमें ही पटक नहीं देती, तब तक यह मन मायासे नहीं भरता। यह देह तो जीवको कर्मबन्धनमें बाँधकर उलझा देती है एवं कालके मुखमें इसे धकेल कर स्वयं अलग हो जाती है।

रे जीव नीके जानिए ए भूलवनी, इत भूले सब कोए ।

या रंग रसे जो भूलहीं, तिन करडी कसोटी होए ॥ १४

इसलिए हे जीव ! तू भलीभाँति समझ ले कि यह मायावी देह भूल-भूलैयाका खेल है, इसके सङ्गमें आकर सभी जीव मार्ग भूल गए हैं। इसके रस-रङ्गमें फँसकर जो जीव ब्रह्म प्राप्तिके सत्य मार्गको भूल जाएगा, उसकी कड़ी कसौटी होगी अर्थात् उसे नाना योनियोंमें जाना पड़ेगा।

कांटे चूभे दुख पाइए सेहे न सके लगार ।

पर होत है मोहे अचंभा, ए क्यों सेहेसी जम मार ॥ १५

शरीरमें एक काँटा चुभने पर भी बड़ा कष्ट होता है, वह सहन नहीं होता,

किन्तु मुझे आश्चर्य होता है कि यह जीव कर्मबन्धनमें बँधकर यमराजकी मार कैसे सहेगा ?

इन गफलत के घरमें, पडेगी बडी अगिन ।

पीछे लाख चौरासी देहमें, जलसी रात और दिन ॥ १६

इस झूठे शरीरमें रहते हुए चिन्ता और सन्तापरूपी भयङ्कर आग जलने लगेगी. फिर मृत्युके बाद चौरासी लाख योनियोंमें घूमते हुए रात-दिन झुलसना पड़ेगा.

ए देखी अजाडी आंखा खोलके, याकी तो उलटी सनंध ।

ए मोहडा लगावे मीठडा, पीछे पडिए बडे फंद ॥ १७

मैंने आँख खोलकर देखा कि यह देह तो फँसाने वाली खाईके समान है. इसकी कार्यशैली ही उलटी है. यह सर्व प्रथम मीठा मोह उत्पन्न करती है और अन्तमें बड़े जालमें फँसा देती है.

ए अंधेरी है विकट, ए जाहेर रची जमजाल ।

ए पेहेले देखावे सुख सीतल, पीछे जाले अगिनकी झाल ॥ १८

यह मायावी देह गहन अन्धकारके समान है. वस्तुतः यह तो प्रत्यक्ष यमपाश ही है क्योंकि यह सर्वप्रथम जीवको ललचानेके लिए इन्द्रियोंका सुख देती है और अन्तमें कर्म फलकी अगिनकी ज्वालामें जला देती है.

ए धूतारीको न धीरिए, जो पलटे रंग परवान ।

ए विस्व बंधे वैराट को, सो भी निगलसी निरवान ॥ १९

इस ठगिन देहका तनिक भी विश्वास मत करना, क्योंकि यह तो क्षणमें ही अपना रङ्ग बदलती रहती है. इस विराट विश्वके जीव इसी देहके बन्धनमें बँधे हुए हैं, यह निश्चय ही सबको निगल जाएगी.

ए सब मोहे इन मोहनी रे, पर इन बांध्यो न कासों मन ।

जीवको यातें बिछडते, बडी लागी दाझ अगिन ॥ २०

इस मोहिनी मायाने सब जीवोंको मोह लिया है, किन्तु यह स्वयं किसीसे

मोहित नहीं हुई (इसका मन किसीसे भी नहीं बाँधा). परन्तु जीवको इससे अलग होनेमें अति कष्ट होता है.

### प्रकरण ३३ चौपाई ३९९

अब देहकी तरफको जवाब

रे जीवजी तुमें लागी दाढ़ मुझ बिछडते, पर मैं खाक हुईं तुम बिन ।

तुम मोहीसे न्यारे भए, मोहे राखी नहीं किन खिन ॥ १

अब देहकी ओरसे उत्तर इस प्रकार है, हे जीव ! मुझे छोड़ते हुए तुम्हें बड़ी जलन हुई होगी, परन्तु मैं तुम्हारे बिना जलकर राख हो गई हूँ. जब तुम मुझसे पृथक् हुए, तब मुझे एक क्षणके लिए भी किसीने घरमें रहने नहीं दिया.

मेरी सेवा जो करते साथीडे, फूलडे बिछावते सेज ।

सीतल वाए मोहे ढोलते, तिन जारी रेजारेज ॥ २

हे जीव ! मेरे परिवारजन तथा मित्रवर्ग मेरी सेवा करते थे, मेरे लिए फूलोंकी शय्या बिछाते थे, गर्मीके दिनोंमें मुझे पंखा द्वारा शीतल वायुका अनुभव कराते थे, परन्तु तुमसे छूटने पर उन्हीं लोगोंने मेरे अङ्ग-प्रत्यङ्गोंको जला दिया.

एक बाल टूटे दुख पावते, तिन जारी ले खोरने हाथ ।

मनुए उतारे या विध, मेरे सोई संगी साथ ॥ ३

हे जीव ! मेरा एक बाल भी टूट जाने पर जो परिवारजन दुःखी होते थे, तेरे जानेके बाद उन्होंने ही मेरे प्रत्येक अङ्गको लकड़ीसे घोंप-घोंप कर जला डाला. इस प्रकार मेरे उन्हीं साथियोंने मुझसे मुख मोड़ लिया.

मैं पाले प्यार करके, सो बैरीडे भए तिन ताल ।

मोसों तो राख्यो ए सनमंध, तुमें डाले ले जमजाल ॥ ४

हे जीव ! मैंने जिनको लाड़-प्यारसे पाला पोषा, तेरे जानेके बाद वे उसी समय मेरे वैरी बन गए. मेरे साथ तो उन्होंने ऐसा सम्बन्ध रखा, किन्तु तुझे भी यमराजके बन्धनमें डाल दिया.

तुम बंध पड़े जिन कारने, किया आपनसों ज्यों ।

मुझ जैसे होए मोहे छेतरा, तुमको दर्ई अगिन त्यों ॥ ५

हे जीव ! जिन परिवारजनोंके कारण तुझे कर्मोंके बन्धनमें बँधना पड़ा. उन लोगोंने तुझसे अपनत्व स्थापित करके तेरे साथ जिस प्रकारका व्यवहार किया है, उसी प्रकारका व्यवहार मेरे साथ सम्बन्ध बाँधकर भी किया है. जिस प्रकार तुझे दुःखकी आगमें जला दिया, उसी प्रकार मेरे अपने बनकर मुझे भी आगमें जला दिया.

मैं तो आई तुम खातर, तुम जानी नहीं सुपन ।

मैं तो सुपना हो गई, अब दुखडे देखो चेतन ॥ ६

हे जीव ! मैं तो तेरे लिए आई थी, किन्तु तुम इस स्वप्नवत् (क्षण भङ्गुर) देहको पहचान नहीं पाए. मैं जलकर राख हो जानेसे स्वप्नवत् हो गई हूँ, परन्तु तू तो चेतन होनेके कारण ये सब दुःख देखता (भोगता) रहेगा.

पेहेले क्यों न संभारिए, काहेको पडिए जम फांस ।

लाख चौरासी अगनी, तित जलिए न कीजे बास ॥ ७

हे जीव ! पहले ही स्वयंको क्यों नहीं संभाल लेता ? यमपाशमें क्यों पड़ रहा है ? तूने अपने जीवनकालमें ही इस झूठी मायासे बचनेका प्रयत्न क्यों नहीं किया ? यदि पहलेसे ही तू सावधान हो जाएगा तो चौरासी लाख योनियोंके चक्रकी आगमें जलना नहीं पड़ेगा और न ही उनमें निवास करना पड़ेगा.

मोसों पेहेचान ना कर सके, मेरा मेला तो अधखिन होए ।

मेरी तो पेहेचान जाहेर, मुझे जाती देखे सब कोए ॥ ८

हे जीव ! तू मुझे पहचान नहीं पाया. मेरा मिलन तो आधेक्षणके लिए ही होता है. मेरा परिचय सर्व विदित ही है, क्योंकि सब लोग मुझे (चारजनोंके कन्धे पर चढ़कर) जाते हुए स्पष्ट देखते हैं.

तुम जान बूझ मोहे मोहीसों, छोडके नेहेचल सुख ।

मैं तो आई भले अवसर, पर भूले सो पावे दुख ॥ ९

हे जीव ! तू जान-बूझकर मुझ पर आसक्त हुआ और अखण्ड सुख छोड़

बैठा. मैं तो अच्छे अवसरके रूपमें तेरे पास आई थी. परन्तु जो इस अवसरको चूक जाता है, वह अवश्य दुःखी हो जाता है.

**ए अवसर क्यों भूलिए, जित पाइए सुख अखंड ।**

**या घर बिना सो ना मिले, जो ढूँढ फिरो ब्रह्मांड ॥ १०**

मनुष्य जीवनरूपी इस सुअवसरको क्यों भूलें, जिसके द्वारा अखण्ड सुख प्राप्त होता है, क्योंकि समग्र ब्रह्माण्डमें ढूँढ़ने पर यही निष्कर्ष निकलता है कि इस मनुष्य शरीररूपी घर प्राप्त किए बिना परब्रह्मकी प्राप्ति हो नहीं सकती.

**इन पिंडमें ब्रह्म द्रढ किया, नेहेचल सुख परवान ।**

**अब खिनमें घर देखिए, ऐसा समे न दीजे जान ॥ ११**

शास्त्रकारोंने यह निश्चयपूर्वक कहा है कि इस शरीर पर रहते हुए ही जीव परमात्माके साथके सम्बन्धको दृढ़ कर अखण्ड सुख प्राप्त कर सकता है. इसलिए अब क्षण मात्रमें अपने घर परमधामको देखो और इस अमूल्य अवसरको व्यर्थ जाने मत दो.

**और उपाए कै करो, पर पाइए न या घर बिन ।**

**अंदर जागके चेतिए, ए अवसर अधखिन ॥ १२**

अनेक प्रयत्न क्यों न करो, किन्तु इस मनुष्य तनके बिना परब्रह्म परमात्माकी प्राप्ति नहीं हो सकती. इसलिए आत्माको जागृत कर देखो, यह अवसर तो मात्र आधे क्षणके लिए ही प्राप्त हुआ है.

**कैसे कर याको खोजिए, ए तो कोहेडा आकार ।**

**ए ढूँढ्या बोहोतों कै विध, पर किनहूँ न पाया पार ॥ १३**

इस शरीरमें ब्रह्मको कैसे ढूँढ़ा जाए ? यह शरीर तो कुहिरके समान अस्थायी है. बहुतसे साधकोंने इसी शरीरमें ब्रह्मको ढूँढ़नेका प्रयत्न किया परन्तु किसीने भी इसमें ब्रह्म (पार) को नहीं पाया.



बाहर निकसो तो आप नहीं, और माहें तो नरक के कुंड ।

ब्रह्म तो यामें न पाइए, ए क्यों कहिए ब्रह्म घर पिंड ॥ १४

शरीरसे बाहर निकल कर ब्रह्माण्डमें ढूँढ़ें तो वहाँ भी परमात्मा दिखाई नहीं देते और इसके अन्दर तो नरकके कुण्डके समान गन्दगी भरी हुई है। इसलिए ब्रह्म इस शरीरमें नहीं है, तब इसे ब्रह्मका घर कैसे कहा जाए ?

पवन जोत सबदा उठे, नाडी चक्र कमल ।

इत कैयों कै विध खोजिया, पर यामें ब्रह्म नहीं नेहेचल ॥ १५

पाताञ्जल योगशास्त्र, वेदान्त दर्शन तथा सांख्य योगके मतानुसार प्राणायाम द्वारा ज्योति स्वरूपका आभास होता है तथा ब्रह्म (अनहद) नाद सुनाई देता है। इस प्रकार तीनों नाडियाँ, छः चक्र तथा सहस्रदल कमलकी साधना करके लोगोंने विभिन्न प्रकारसे ब्रह्मको ढूँढ़नेका प्रयत्न किया, परन्तु निश्चय ही अविनाशी परमात्मा इस शरीरमें नहीं हैं।

पार ब्रह्म क्यों पाइए, ततखिन कीजे उपाए ।

कै ढूँढे माहें बाहेर, बिना सतगुरु न लखाए ॥ १६

पूर्णब्रह्मकी प्राप्ति कैसे हो सकेगी, इसके लिए इसी क्षण प्रयत्न करना चाहिए। कई लोगोंने इस शरीरमें और शरीरके बाहर ब्रह्माण्डमें उनको ढूँढ़ा, परन्तु सच्चे सद्गुरुके बिना ब्रह्मकी पहचान न हो सकी।

अब संग कीजे तिन गुरकी, खोजके परुष पूरन ।

सेवा कीजे सब अंगसों, मन कर करम वचन ॥ १७

इसलिए अब सत्य मार्ग पर चलनेवाले, सम्पूर्ण गुणी-ज्ञानी, पूर्ण पुरुष ऐसे सद्गुरुको ढूँढ़कर उनका सङ्ग करो। मन वचन और कर्म द्वारा पूर्णरूपसे उनकी सेवा करो और उनके ऊपर श्रद्धा रखकर उनके दिए हुए ज्ञानके अनुसार चलो।

सो संग कैसे छोडिए, जो सांचे हैं सतगुर ।

उडाए सबे अंतर, बताए दियो निज घर ॥ १८

जब ऐसे पूर्णपुरुष सद्गुरु मिल जाएँ, तो उनका सङ्ग कैसे छोड़ा जा सकता

है ? क्योंकि उन्होंने ही अज्ञानको दूर कर निजघर अखण्ड (परमधाम) की पहचान करा दी है.

पाइए सुध पूरन से, पैंडा बतावें पार ।

सबद जो सारे सूझहीं, सब गम पडे संसार ॥ १९

ऐसे पूर्णज्ञानी सद्गुरुके उपदेशके द्वारा ही सब प्रकारके ज्ञान प्राप्त होते हैं. वे ही पारका मार्ग भी बता देते हैं. पश्चात् शास्त्रोंके वचन स्पष्ट हो जाएँगे तथा संसारकी वास्तविकताका भी ज्ञान हो जाएगा.

पांच तत्व पिंडमें हुए, सोई तत्व पांच बाहेर ।

पांचों आए प्रले मिने, सब हो गयो निराकार ॥ २०

जैसे यह शरीर पाँच तत्वों द्वारा बना हुआ है, उसी प्रकार बाह्य जगत भी इन्हीं पाँच तत्वोंसे बना हुआ है. परन्तु जब ये पाँचों तत्व महाप्रलयमें नष्ट हो जाएँगे, तब सब कुछ निराकार हो जाएगा.

ए पांचों देखे विध विध, ए तो नहीं थिर ठाम ।

यामें सो कैसे रहे, नेहेचल जाको नाम ॥ २१

इन पाँच तत्वोंसे बने हुए विभिन्न शरीर दिखाई देते हैं किन्तु ये सब स्थिर नहीं हैं. ऐसे नाशवान तत्वोंसे बने हुए झूठे शरीरमें अखण्ड परमात्मा कैसे रह सकते हैं ?

पारब्रह्म जित रहे, तित आवे नाही काल ।

उतपन सब होसी फना, ए तो पांचों ही पंपाल ॥ २२

जहाँ परब्रह्म परमात्माका वास हो, वहाँ काल पहुँच नहीं सकता. किन्तु जिसकी उत्पत्ति हुई है, उसका नाश भी अवश्य होगा. इसलिए ये पाँचों तत्व नश्वर हैं.

यामें अंतरबासा ब्रह्मका, सो सतगुरु दिया बताए ।

बिन समझे या ब्रह्मको, और न कोई उपाए ॥ २३

इस नश्वर संसारमें परमात्मा अपनी सत्ताके रूपमें विराजमान हैं. इसका रहस्य

सद्गुरुने स्पष्ट किया है. ब्रह्मके इस रहस्यको जाने बिना संसारसे पार होनेका कोई दूसरा मार्ग नहीं है.

**आंकड़ी अंतरजामी की, कबहूँ ना खोली किन ।**

**आद करके अब लों, खोज थके सब जन ॥ २४**

इस प्रकार सत्ताके रूपमें विराजमान अन्तर्यामी परमात्माके रहस्यको आज तक किसीने स्पष्ट नहीं किया था. सृष्टिके आरम्भसे लेकर आज तक सब लोग इस संसारमें परमात्माको ढूँढ़ते हुए थक गए थे.

**ए पूरन के प्रकासथें, खुल गया अंतर सब ।**

**सो क्यों रहेवे ढांपिया, प्रगट होसी अब ॥ २५**

ऐसे पूर्ण सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजके ज्ञानके प्रकाश द्वारा अन्तरके पट सब खुल गए हैं. अब यह प्रकाश कब तक छिपा रहेगा, अभी प्रत्यक्ष हो जाएगा अर्थात् अब सब लोग इसे समझ जाएँगे.

**जिनको सब कोई खोजहीं, ए खोली आंकड़ी तिन ।**

**तो इत हुई जाहेर, जो कारज है कारन ॥ २६**

जिस पूर्णब्रह्म परमात्माको सब लोग खोज रहे हैं उन्होंने ही श्रीदेवचन्द्रजीके हृदयमें विराजमान होकर तारतम्य ज्ञान द्वारा यह रहस्य खोल दिया है. वे ब्रह्माङ्गनाओंकी जागृतिके लिए ही प्रकट हुए हैं, जिनके लिए इस संसारकी रचना हुई है अथवा जिन ब्रह्मात्माओंको सारा संसार खोज रहा है, उन्होंने ही इस संसारमें आकर पूर्णब्रह्मका रहस्य खोल दिया है. अब वे ही आत्माएँ प्रकट हुई हैं, जिनके लिए (कारण) यह संसारका खेल (कार्य) बनाया गया है.

**घर ही में न्यारे रहिए, कीजे अंतरमें बास ।**

**तब गुन वस आपे होवहीं, गयो तिमर सब नास ॥ २७**

इस शरीररूपी घरमें रहते हुए भी अन्तरात्मामें स्थित हो जाओ अर्थात् स्वयंको शरीरसे भिन्न आत्मा समझो. तब ये सब गुण, अङ्ग, इन्द्रियाँ आदि अपने आप वशमें हो जाएँगी. परिणाम स्वरूप अज्ञानका अन्धकार भी

सम्पूर्ण रूपसे नष्ट हो जाएगा।

या विध मेला पीउ का, पीछे न्यारे नहीं रैन दिन ।

जलमें न्हाइए कोरे रहिए, जागिए माहें सुपन ॥ २८

इस प्रकार पूर्णब्रह्म परमात्माके साथ मिलन होने पर रात-दिन कभी भी उनसे वियोग नहीं होगा। इसलिए मोहजलमें रहते हुए भी उससे निर्लेप रहो तथा स्वप्नवत् संसारमें रहते हुए भी जागृत रहो।

या सुपनतें सुख उपज्यो, जो जागके कीजे विचार ।

आतम भेली पर आतमा, सुपन भेलो संसार ॥ २९

जागृत होकर विचार करने पर ज्ञात होगा कि इस स्वप्नवत् संसारमें रहकर भी अखण्ड सुखका अनुभव हो सकता है। कारण कि आत्माका सम्बन्ध परमात्माके साथ है और स्वप्नकी देहका सम्बन्ध स्वप्नके संसारके साथ है।

इन विध लाहा लीजिए, अनमिलतीका रे यों ।

सुखडा दिया धुतारिए, याको बुरी कहिए क्यों ॥ ३०

इस प्रकार इस विजातीय नाशवान शरीरसे सम्पूर्ण लाभ प्राप्त कर लेना चाहिए। इस ठगिनी देहने भी प्रियतम धनीके मिलनका अखण्ड सुख प्रदान किया, अतः इसे बुरी क्यों कहें ?

जो सुख याथें उपज्यो, सो कह्यो न किनहूं जाए ।

पात्र होए पूरा प्रेम का, तिन का रस ताहीमें समाए ॥ ३१

इस मायावी शरीरके द्वारा जिस अखण्ड सुखका अनुभव होता है, उसका वर्णन किसीसे भी नहीं हो सकता। परब्रह्मके प्रेमके सुपात्र, मूलघरके सम्बन्धी ही इस अखण्ड सुखका वास्तविक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। कारण कि ब्रह्मका प्रेमरस, ब्रह्मसे सम्बन्धित प्रेम पात्रमें ही समा सकता है।

ए वतनीसों गुझ कीजिए, जो खैंचे तरफ वतन ।

प्रेमैंमें भीगे रहिए, पीउसों आनंद घन ॥ ३२

अखण्ड धामधनीके रहस्यकी बातें परमधामके साथी ब्रह्मसृष्टियोंके साथ ही

करना चाहिए क्योंकि वे ही आत्माएँ हमें अखण्ड घर परमधामकी ओर खींचेंगी. इस प्रकार सदैव धामधनीके प्रेममें मग्न होकर मिलनका अखण्ड आनन्द प्राप्त करना चाहिए.

**महामत पिया संग विलसहीं, सुख अखंड इन पर ।**

**धन धन परपंच ए हुआ, धन धन सो या मंदर ॥ ३३**

इस नश्वर शरीरमें रहते हुए भी ऐसा अखण्ड सुख मिला कि महामति अपने धनीके साथ आनन्द विलास कर रहे हैं. इसके कारण मायाका यह झूठा खेल धन्य हो गया तथा यह शरीररूपी मन्दिर भी धन्य हो गया.

**प्रकरण ३४ चौपाई ४३२**

[मुगल शासक औरङ्गजेबके अत्याचारके कारण उदयपुरके पर्वतोंमें भटकते हुए सुन्दरसाथको जो कठिनाइयाँ झेलनी पड़ीं, श्रीकृपारामभाईने तत् सम्बन्धित एक पत्र मन्दसोर आकर श्रीप्राणनाथजीको दिया. सुन्दरसाथके कष्टोंको सुनकर उनके निवारणार्थ स्वामी श्रीप्राणनाथजीने धामधनीसे प्रार्थना की. निम्न छः प्रकरण उसी प्रार्थनाके प्रकरण हैं].

**राग सिंधुडो**

**वालो ब्रह्मस भीनो रंग ब्रह्मां रमाडतो, वासना रुदन करे जलधार ।**

**आप ओलखावी अलगो थयो अमथी, जे कोई हुती तामसियो सिरदार ॥ १**

हे धामधनी ! आपके विरह रससे भीगी हुई (डूबी हुई) ब्रह्मात्माओंको आप और विरह वेदनाका अनुभव करवाते हुए विरहके रङ्गमें रङ्गकर विरहमें ही रमण करवा रहे हैं. इसलिए ब्रह्मावासनाएँ आँखोंसे अश्रुधारा बहाती हुई रो रहीं हैं. (मायावी खेलका पूर्ण अनुभव करनेकी इच्छुक) मुझ जैसी अग्रणी तामसी सखीको अपनी पहचान करवाकर आप अलग हो गए हैं.

**कलकली कामनी वदन विलखाविया, विस्वमां वरतियो हा हा कार ।**

**उनमाद अटपटा अंगथी टालीने, माननी सहुए मानवियो हार ॥ २**

विरहसे व्याकुल होकर विलखती (विलाप करती) हुई ब्रह्मात्माओंका मलिन वदन देखकर विश्वमें हा-हाकार मच गया है. ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई कि

सभी मानिनी आत्माओंने विषम (अटपटे) उन्मादको अपनेसे दूर कर अर्थात् अपने प्रेमकी प्रबलताकी मान्यताको छोड़कर अपनी हार स्वीकार कर ली है.

पतिव्रता पल अंग थाए नहीं अलगियो, न काँई जारवंतियो विना जार ।

पात्रियो पीउ थकी अमें जे अभागणियो, रहियो अंग दाग लगावनहार ॥ ३

हे धनी ! पतिव्रता स्त्रियाँ क्षणमात्रके लिए भी अपने पतिसे दूर होना नहीं चाहतीं. इसी भाँति प्रेमिकाएँ भी अपने प्रियतमसे बिछुड़ना नहीं चाहतीं. किन्तु आपसे बिछुड़कर अभागिनी बनी हुई हम ब्रह्मात्माएँ पतिताओंकी भाँति अपने अङ्ग (हृदय) को कलङ्कित करनेके लिए ही जीवित रही हैं.

स्यारे करम एवा करयां हतां कामनी, धाम माहें धणी आगल आधार ।

हवे काढो मोहजल थकी बूडती कर ग्रही, कहे महामति मारा भरतार ॥ ४

हे धनी ! परमधाममें आपके समक्ष हमने ऐसे कौन-से अधम कर्म किए, जिससे हमारी यह अवदशा हुई है. महामति कहते हैं, हे मेरे धामधनी ! इस मोहजल (भवसागर) में डूबी हुई हम ब्रह्मात्माओंको हाथ पकड़कर आप बाहर निकालें.

### प्रकरण ३५ चौपाई ४३६

हारे वाला रलझलावियो रामते रोवरावियो, जुजवे परवतें पाड्या रे पुकार ।

रणवगडा माहें रोई कहे कामनी, धणी विना धिक धिक आ रे आकार ॥ १

हे धामधनी ! आपकी विरहाग्निमें झुलसी (दाझी) हुई ब्रह्मात्माएँ इस खेलमें इस प्रकार रो रही हैं कि उनकी पुकार विभिन्न पर्वतोंसे प्रतिध्वनित हो रही है. मरुभूमिके समान निर्जन (वीरान) संसारमें रोती हुई आत्माएँ पुकार रही हैं कि धनीके बिना यह शरीर (धारण करना) धिक्कार (व्यर्थ) है.

वेदना विषम रस लीधां अमे ब्रहतणां, हवे दीन थई कहुं वारमवार ।

सुपनमां दुख सहां घणां रासमां, जागतां दुख न सहेवाए लगाए ॥ २

हे धनी ! हमने विरह वेदनाके विषम रस (असह्य विरह) का अनुभव किया है. इसलिए विनम्र होकर वारंवार प्रार्थना करती हैं कि रासलीलाके समय

आपके अन्तर्धान होने पर विरहकी असह्य पीड़ाका सहन हमने स्वप्नमें कर लिया था किन्तु अब जागृत होने पर लेशमात्र भी आपका विरह सहा नहीं जाता.

दंत तरणां लेई तारुणी तलफियो, तमे बाहो दाहो दीन दातार ।

खमाए नहीं कठण एवी कसनी, राखो चरण तले सरण साधार ॥ ३

विरहमें व्याकुल हम ब्रह्मात्माएँ दाँतों तले तिनका दबाकर प्रार्थना करती हैं कि आप दीन-दुःखियोंके प्रति दया रखते हैं, इसलिए हमारी विरहाग्निकी ज्वालाको शान्त कर दें. ऐसी कठोर कसौटी हमसे सही नहीं जाती, इसलिए हे शरणागतके आधार धामधनी ! अब आप हमें अपने चरणोंमें स्थान दें.

हवे हारया हारया कहुं वार केटली, राखो रेतियों करो निरमल नार ।

कहे महामति मेहेबूब मारा धणी, आ रे अरज रखे हासीमां उतार ॥ ४

हे धनी ! अब हम “हार गई” “हार गई” ऐसा कहती हुई कितनी बार अपनी पराजयको स्वीकार करें ? अब तो रोती हुई इन निर्मल (निर्दोष) आत्माओंको अपने चरणोंमें स्थान दीजिए. महामति कहते हैं, हे मेरे प्रियतम धनी ! इस विनम्र प्रार्थनाको आप हँसीमें न उड़ा दें.

**प्रकरण ३६ चौपाई ४४०**

हारे वाला बंध पड्या बल हरया तारे फंदडे, बंध विना जाए बांधियो हार ।

हंसिए रोइए पडिए पछताइए, पण छूटे नहीं जे लागी लार कतार ॥ १

हे धनी ! हम आपकी मायाके बन्धनमें बँध (पड़) गई हैं और उसके फन्दे (मायापाश) ने हमारी शान्तिका हरण कर लिया है. वस्तुतः हम हारकर बन्धनके बिना ही मायापाशमें बँध गई. अब हँसें, रोएँ, भूमि पर गिरकर पश्चात्ताप करें तथापि पहलेसे ही चले आ रहे मायाके बन्धन छूट नहीं सकते.

जहेर चढ्युं हाथ पाउं झटकतियो, सरवा अंग साले कोई सके न उतार ।

समरथ सुख थाए साधने ततखिण, गुणवंता गारडी जहेर तेहेने तेणी विधे झार ॥ २

मायाका विष शरीरमें इतना फैल गया कि हम अपने हाथ-पाँव पटकती ही रह गई, हमारे सभी अङ्ग पीड़ित हैं किन्तु इस विषको कोई भी उतार नहीं

सकता. हे समर्थ धनी ! जिस प्रकार गुणवान गारुडी (विष उतारने वाला) शरीरमें चढ़े हुए विषको तत्काल उतार देता है, उसी प्रकार सम्पूर्ण गुणसम्पन्न आप भी हमारे शरीरमें फैले हुए मायाके विषको उतारकर शीतलता प्रदान करेंगे तो सुन्दरसाथको उसी क्षण अपार सुख होगा.

**माहें धखे दावानल दसोदिसा, हवे बलण वासनाओथी निवार ।**

**हुकम मोहथी नजर करो निरमल, मूल मुखदाखी ब्रह्म अंगथी विसार ॥ ३**

दशों दिशाओंमें दावानलकी भाँति व्यास विरहाग्नि प्रदीप्त हो रही दिखाई देती है. इसलिए ब्रह्मवासनाओंकी इस दाहको शान्त कर दें. अपनी आज्ञा द्वारा हमारी दृष्टिको मोहसे हटाकर निर्मल बना दें और हमें अपने मूल स्वरूप (पर आत्मा) का दर्शन करवाकर हमारे अङ्गोंमें व्यास विरहाग्निको शान्त कर दें.

**छल मोटे अमने अति छेत्र्यां, थया हैया झांझरा न सहेवाए मार ।**

**कहे महामति मारा धणी धामनां, राखो रोतियो सुख देओ ने करार ॥ ४**

इस छलवती मायाने हमें अतिशय धोखा दिया है. इसकी मारसे हमारा हृदय छलनीके समान हो गया है, इसलिए अब अधिक मार सही नहीं जाती. महामति कहते हैं, हे मेरे धामधनी ! इस प्रकार रुदन कर रही अपनी अङ्गनाओंको शरणमें लेकर सुख एवं शान्ति प्रदान करें.

**प्रकरण ३७ चौपाई ४४४**

**केम रे झंपाय अंग ए रे झालाओ, वली वली वाध्यो विष विस्तार ।**

**जीव सिर जुलम कीधो फरी फरी, हठियो हारामी अंग इंद्री विकार ॥ १**

हे प्रियतम ! हमारे अङ्गमें लगी हुई इस विषयाग्निकी भयङ्कर ज्वालाको हम कैसे शान्त करें (बुझाएँ) ? प्रतिपल इस विषका प्रभाव बढ़ता ही जा रहा है. अनेक विकारोंको उत्पन्न करने वाली इन हठीली एवं अधोगामी अङ्ग, इन्द्रियोंने जीवके सिर पर वारंवार बल (अत्याचार) का प्रहार किया है.



झांप झालाओ हवे उठतियो अंगथी, सुख सीतल अंग अंगनाने ठार ।

बाल्यां वली वली ए मन ए कबुधें, कमसील काम कां कराव्यां करतार ॥ २

हे प्रियतम ! सुन्दरसाथके अङ्ग-अङ्गमें विभिन्न प्रकारके दुःख एवं विरहाग्निकी ज्वालाएँ धधक रही हैं. आप अपने अङ्गके अखण्ड सुख द्वारा उसे शान्त कर अङ्गनाओंको शीतलता प्रदान करें. यह मायावी बुद्धि (कुबुद्धि) इस मनको वारंवार मायाकी ओर ही प्रवृत्त करती है. हे धामधनी ! (आप अपने देखते-देखते) इस प्रकारके अधम कार्य क्यों करवाते हैं ?

गुण पख इंद्री वस करी इबलीसने, अंगना अंग थाप्यो दई धिकार ।

अरथ उपले एम कहेवाइयो वासना, फरी एणे वचने दीधी फिटकार ॥ ३

शरीरके गुण, अङ्ग, इन्द्रियोंको इस दुष्ट मन (इब्लीस-शैतान) ने वशीभूत कर लिया है, इसलिए ऐसे शरीरको धारण करने वाली ब्रह्माङ्गनाओंको भी धिक्कारका पात्र होना पड़ा है. बाहरसे (बाह्यदृष्टिसे) तो हम ब्रह्मवासनाएँ कहलाती हैं किन्तु (इस प्रकार ब्रह्मवासना कहकर) इन सम्मानयुक्त वचनोंके द्वारा आपने हमें फटकार (धिक्कार) ही दी है.

मांहेले मायने जोपे ज्यारे जोड़ए, त्यारे दीधां तारुणी तन तछकार ।

कलकली महामति कहे हो कंथजी, एवा स्या रे दोस अंगनाओना आधार ॥ ४

आन्तरिक (गूढ़) अर्थको जब हृदयपूर्वक विचार कर देखें तो ज्ञात होता है कि आपने हम ब्रह्मात्माओं द्वारा धारण किए हुए शरीरको तिरस्कृत कर दिया है (मानों छील दिया है). महामति कलपते हुए कहते हैं, हे धामधनी ! ब्रह्मात्माओंके ऐसे कौन-से दोष हैं, जिनके कारण उनकी यह दशा हो रही है.

प्रकरण ३८ चौपाई ४४८

हारे वाला करे आप्यां दुख अमने अनघटतां, ब्राध लगाडी विध विधना विकार ।

विमुख कीधां रस दई ब्रह अवला, साथ सनमुख मांहे थया रे धिकार ॥ १

हे धामधनी ! विभिन्न प्रकारके विकारोंसे युक्त भवरोगसे ग्रस्तकर हमें ऐसे

अघटित दुःखोंका अनुभव क्यों करवाया ? अपनी अङ्गनाओंको अपना ही विरह रस देकर भी आपने स्वयंसे विमुख करवाया और अन्य ब्रह्मात्माओंके सम्मुख लाञ्छित (धिक्कारके पात्र) कर दिया.

अनेक रामत बीजी हती अति घणी, सुपने आग्रह ठेले संसार ।

उधड़ी आंख दिन उगते एणे छले, जागतां जनम रूडा खोया आवार ॥ २

हे धनी ! परमधाममें तो अनेक प्रकारकी आनन्ददायिनी लीलाएँ बहुत थीं, किन्तु इस झूठे संसारके खेल देखनेके आग्रहके कारण ही हमें संसारमें भेज (धकेल) दिया. इस मायावी खेलमें आनेके बाद जब तारतम ज्ञानरूपी प्रभात होने पर आँखें खुलीं, तब पता चला कि हमने मनुष्य देहका महत्त्वपूर्ण अवसर व्यर्थ ही गँवा दिया.

सनमुख तमसुं ब्रहरस तम तणां, कां न कीधां जाली बाली अंगार ।

त्राहि त्राहि ए वातो थासे घेर साथमां, सेहसुं केम दाग जे लाग्या आकार ॥ ३

यह बड़ी विडम्बना है कि (मूलमिलावामें) आपके सम्मुख ही बैठी हुई ब्रह्मात्माओंको आपके ही वियोगका विरह सता रहा है, फिर उनके शरीरको विरहाग्निमें जलाकर अङ्गार क्यों नहीं बना देते ? हमारी यह त्राहि-त्राहि पुकारकी बातें परमधाममें जब ब्रह्मात्माओंके मध्य होंगी, तब इस शरीर पर लगे हुए आपके विस्मरणके कलङ्कको कैसे सह पाएँगे ?

ब्रह्मथी विछोडी दुख दीधां विसमां, अहेनिस निस्वासा अंग उठे कटकार ।

दुख भंजन सहु विध पीउजी समरथ, कहे महामति सुख देण सिणगार ॥ ४

हे धनी ! आपने हमें (मात्र विरह ही नहीं अपितु) विरहके अतिरिक्त अन्य भी दारुण (विषम) दुःखोंका अनुभव करवाया, जिसके कारण रातदिन गर्म निश्वासें निकलनेसे हमारा हृदय छिन्न-भिन्न हो रहा है. महामति कहते हैं, सर्व प्रकारसे दुःखोंका हरण करने वाले हे मेरे समर्थ धामधनी ! अब तो हमें अखण्ड सुखोंसे सुशोभित कर दें.

प्रकरण ३९ चौपाई ४५२

हारे वाला अगिन उठे अंग ए रे अमारडे, विमुख विपरीत कमर कसी हथियार ।

स्वाद चढ्या स्वाम द्रोही संग्रामे, विकट बंका अमे कीधां आसाधार ॥ १

हे धनी ! हमारे प्रत्येक अङ्गमें आपके विरहकी अग्न धधक रही है. क्योंकि आपसे विमुख होने पर काम, क्रोध, लोभ और मोह रूपी अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित होकर हमने विपरीत कार्य किए हैं, मानों हमें स्वामीके साथ द्रोह करनेका स्वाद लग गया हो जिसके कारण हमने आपके विरुद्ध अनुचित और असाधारण युद्ध (संघर्ष) कर विपरीत कार्य किए.

कुकरम कसाब जुध कै करावियां, पलीत इबलीस अम मांहे बेसार ।

जागतां दिन कै देखतां अमने छेत्र्यां, खराने खराब ए खलक खुआर ॥ २

नीच दुष्ट मनने हमारे अन्दर बैठकर अनेक प्रकारके दुष्कर्म तथा युद्ध (संघर्ष) करवाए. जागते हुए, वह भी दिनमें और कई लोगोंके देखते-देखते इस दुष्ट मनने ठगकर हम सत्य आत्माओं (समूह) की शक्तिको खराब कर नष्ट कर दिया.

ओलखी तमने अमे जुध कीधां तमसुं, मन चित बुध मोह ग्रीह अहंकार ।

ए विमुख वातो मोटे मेले वंचासे, मलसे जुथ जिहां बारे हजार ॥ ३

हे प्रियतम धनी ! आपको पहचानते हुए भी हमने मन, चित्त, बुद्धि, मोह और अहङ्कारके वशीभूत होकर आपके साथ ही युद्ध किया है. इस प्रकारकी विपरीत (विमुख) बातोंकी चर्चा उस विशेष मिलनके समय होगी, जब सब बारह हजार ब्रह्मात्माएँ जागृत होकर परमधाममें एकत्रित होंगी.

कहे महामति हूं गाउं मोहोरे थई, पण विमुख विधो बीती सहू माहें नरनार ।

धाम माहें धणी अमे ऊंचुं केम जोईसुं, पोहोंचसे पंवाडा परआतम मोंझार ॥ ४

महामति कहते हैं, ब्रह्माङ्गनाओंका अग्रणी बनकर मैं इस व्यथाका गान कर रहा हूँ, परन्तु धामधनीसे विमुख होनेका प्रसङ्ग हम सभी सुन्दरसाथकी आपबीती है. जब खेलकी ये बातें परमधाममें जागृत होने पर हमारी पर-आत्मा तक पहुँच जाएँगी, तब हम अपने प्रियतमके समक्ष मस्तक उठाकर कैसे देख सकेंगी ?

प्रकरण ४० चौपाई ४५६

[श्री प्राणनाथजीने सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीको लक्ष्यमें रखकर यह प्रकरण निरूपित किया है. वीतक साहित्यके अनुसार सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीको परमधामके दर्शन होते थे. अतः स्वामी श्री प्राणनाथजी वारंवार सद्गुरुसे प्रार्थना करते थे कि मेरे दुर्गुणोंको दूर कर मुझे भी परमधामके दर्शन कराइए. सद्गुरुने उन्हें समझाया कि धैर्य रखो. अभी धामधनीका आदेश एक ही स्थान पर है. मेरे बाद ही यह वस्तु तुम्हें प्राप्त होने वाली है. अतः स्वामीजी इस प्रकरणके द्वारा सद्गुरुकी महत्ता समझा रहे हैं.]

राग श्री

करनी तुमारी मेरी मैं तौली ।

जैसे सत असत, हो धनी मेरे एती है तफावत ॥ १

हे मेरे सद्गुरु धनी ! मुझ पर हुई आपकी कृपा और मेरे कार्य (इन दोनों) की मैंने तुलना की. हे धनी ! जैसे सत्य और असत्यके बीच अन्तर है, उतना ही अन्तर आपके और मेरे कार्योंके बीच है.

पिया ऐसी निपट मैं क्यों भई, कठिन कठोर अति ढीठ ।

श्री धामधनी पेहेचान के, फेर फेर देत मैं पीठ ॥ २

हे प्रियतम धनी ! मैं निश्चय ही ऐसा कठिन, कठोर और ढीठ क्यों बन गया कि अपने धामधनीको पहचान कर भी मैंने वारंवार उनसे पीठ फेर ली.

अंदर परदा उडाइया, तो भी न बदल्या हाल ।

नकस न मिटयो मोह मूलको, ताथें नजरों ना नूरजमाल ॥ ३

हे सद्गुरु धनी ! आपने तारतम ज्ञान द्वारा मेरे हृदयसे भ्रमका परदा हटा दिया, तथापि मेरी मनोदशा नहीं बदली. मन पर पड़ी हुई मोहकी पर्त अभी तक नहीं हटी. इसलिए मुझे अक्षरातीतके दर्शन नहीं हो रहे हैं.

इन इंद्रियनकी मैं क्या कहूँ, ए तो अवगुन ही की काया ।

इन से देखूँ क्यों साहेब, एही भई आडी माया ॥ ४

इन इन्द्रियोंके विषयमें तो क्या कहूँ ? यह पूरा शरीर ही अवगुणोंसे भरा

हुआ है। इन इन्द्रियोंके द्वारा अक्षरातीत परमात्माके दर्शन कैसे कर सकूँ, क्योंकि ये मायावी इन्द्रियाँ ही अवरोधक बनकर खड़ी हैं।

निरमल नजरों न आवहीं, ले बैठी संग चंडाल ।

उपजत ऐसी अंग्थें, उतारूं उलटी खाल ॥ ५

हे धनी ! इन दुष्ट मायावी इन्द्रियोंके सङ्गके कारण मुझे पूर्णब्रह्मके पवित्र दर्शन नहीं हो रहे हैं। इसलिए मनमें ऐसे विचार आते हैं कि इस शरीरकी उलटी खाल खींचकर उधेड़ डालूँ।

सब अंग काट चीरा करूं, माहें भरों मिर्च और लून ।

कै कोट बेर ऐसी करूं, तो भी न छूटे ए खून ॥ ६

हे धनी ! मनमें ऐसे भाव उठते हैं कि इस मायावी शरीरके सब अङ्गोंको काटकर (चीरकर) उसमें नमक और मिर्च भर दूँ, करोड़ों बार ऐसा करूँ तो भी यह कलङ्क छूट नहीं सकता।

हैडे में ऐसी उठत, सब अंग करूं टूक टूक ।

हडियां सब जुदी करूं, भान करूं भूक भूक ॥ ७

हृदयमें ऐसे भाव उठते हैं कि अवगुणोंसे भरे हुए इस मायावी शरीरके अङ्गोंको टुकड़े-टुकड़े कर डालूँ। सब हड्डियोंको अलग-अलग कर दूँ और उन्हें तोड़कर चूर्ण बना दूँ।

मैं होत सरमंदी साथ में, ए क्यों न जावे दुख ।

जब जाग बैठूं आगे धनी, तब क्यों देखूं सनमुख ॥ ८

हे धनी ! सुन्दरसाथके मध्य उठने-बैठनेमें भी मुझे लज्जाका अनुभव होता है। आत्म-वञ्चनाका यह दुःख किसी भी प्रकारसे दूर नहीं होता। जब जागृत होकर धामधनीके समक्ष बैठूँगी, तो उनके सामने किस प्रकार देख सकूँगी ?

आंखा क्यों उठाऊंगी, मुझे मारेगी बड़ी सरम ।

ऐसी कबूं किन ना करी, सो मैं किए चंडाल करम ॥ ९

हे सद्गुरु ! मैं जागृत होकर धामधनीके समक्ष आँखे कैसे उठा पाऊँगी ?

तब मुझे शर्म मार डालेगी अर्थात् शर्मसे मेरा मस्तक झुक जाएगा. जैसा निन्दनीय कृत्य मैंने किया है, वैसा तो कभी भी किसीने नहीं किया.

रोम रोम कै कोट अवगुन, ऐसी मैं गुन्हेगार ।

ए तो कही मैं गिनती, पर गुन्हे को नहीं सुमार ॥ १०

हे धनी ! जिसके शरीरके रोम-रोममें करोड़ों अवगुण भरे हों, ऐसी अपराधिनी मैं हूँ. मात्र कहनेके लिए ही मैंने गिनती की है किन्तु मेरे अपराधोंका कोई पार नहीं है.

जेते कहे मैं अवगुन, तेते हर रोम दाग ।

सो हरदम आतम को लगे, तो मैं बैठूँ जाग ॥ ११

हे सद्गुरु ! जितने अवगुण मैंने बताए हैं उतने ही धावोंके चिह्न मेरे रोम-रोममें दिखाई दें, और यह आघात प्रतिपल आत्माको स्पर्श करता रहे, तभी मैं जागृत होकर बैठ सकूँगी.

जाको गिनती मैं अपने, सोई देखे दुसमन ।

देखे देखाए तो भी ना छूटे, कोई ऐसी आग्या बल कुन ॥ १२

जिन गुण, अङ्ग, इन्द्रियोंको मैं अपना समझती थी, वे ही मेरे दुश्मन हो गए हैं. आपने तो मुझे इनकी पहचान भी करवाई थी, तथापि इनसे छुटकारा नहीं मिला. यह सब धामधनीकी आज्ञासे उत्पन्न मायाकी शक्तिका प्रभाव है.

रोम रोम सूली चढ़ूँ, सब अंग निकसे फूट ।

ऐसी करूँ जो आपसे, तो भी अवगुन एक ना छूट ॥ १३

हे सद्गुरु ! मैं अपने शरीरके रोम-रोमको सूली पर चढ़ा दूँ, इसके अङ्ग-प्रत्यङ्ग टूटकर अलग-अलग हो जाएँ. इस प्रकार शरीरको कष्ट दूँ तथापि इन अवगुणोंमेंसे एकसे भी छुटकारा नहीं मिलेगा.

ए नहीं अवगुन और ज्यों, मेरे तो लेप बजर ।

ए विध सोई जानसी, जिनकी अंतर खुली नजर ॥ १४

मेरे ये अवगुण अन्य लोगोंकी भाँति सामान्य नहीं हैं. ये तो मेरे लिए

वज्रलेपके समान हो गए हैं. जिनकी अन्दरकी आँखें खुल गई हैं, वे ही मेरी इस स्थितिको समझ पाएँगे.

**ए लेप बजरकी मैं क्या कहूँ, ए अवगुन सबदातीत ।**

**धनी आप दे करी आपसी, एही पियाकी रीत ॥ १५**

वज्रलेपके समान इन अवगुणोंकी मैं क्या बात कहूँ ? ये तो शब्दोंसे भी बताए नहीं जा सकते हैं. किन्तु हे धनी ! आपने मेरे हृदयमें विराजमान होकर (अपना अङ्ग देकर) मुझे अपने समान बनाया है, वस्तुतः सद्गुरु धनीकी यही रीति है.

**धनी के गुनकी मैं क्या कहूँ, इन अवगुन पर एते गुन ।**

**महामत कहे इन दुलहे पर, मैं वारी वारी दुलहिन ॥ १६**

सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजके गुणोंकी प्रशंसा मैं किस प्रकार करूँ ? मेरे इतने अधिक अवगुण होने पर भी उन्होंने मुझ पर इतने उपकार किए अर्थात् वे स्वयं मेरे हृदयमें विराजमान हुए. महामति कहते हैं, ऐसे धनीके प्रति उनकी यह अङ्गना वारंवार समर्पित होती है.

**प्रकरण ४१ चौपाई ४७२**

**राग काफी**

**मीठडां मीठां रे, मुने वचनिए कां बाहो ।**

**मीठां ते मुखनां लऊं मीठडां, कां प्रीतडी करीने परा थाओ ॥ १**

[श्री प्राणनाथजीको बन्दीगृह (हब्सा) में अनेक बार विरहेको अनुभव होते रहे. उस समय सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी वहाँ प्रकट होकर उन्हें आश्वासन देते थे. तब स्वामीजी उनसे निवेदन करते हैं]. हे सद्गुरु ! आप मीठी बातों द्वारा आश्वासन देकर मेरे मनको क्यों बहला रहे हैं ? आपके सुमधुर वचनोंको सदैव श्रवण करनेकी इच्छा रहती है, किन्तु आप प्रीति लगाकर अलग क्यों होते हैं ?

सनेह सनमंधडो समझावीने, अंतराय आडी टाली ।

हवे अधखिण ब्रह्म सही न सकुं, मारे न आवे अवसरियो वाली ॥ २

हे सद्गुरु ! आत्माका प्रेम-सम्बन्ध समझाते हुए आपने भ्रमका पर्दा दूर कर आत्माकी पहचान करवा दी. अब मैं आपका विरह क्षणमात्रके लिए भी सह नहीं सकती. ऐसा शुभ अवसर मुझे पुनः प्राप्त नहीं हो सकेगा.

हवे विलखुं छुं वाला विना, हुं तो प्रेमनी बांधी पिडाऊं ।

कां अलगा आप ग्रहीने ऊभा, हुं निस दिवस फडकलां खाऊं ॥ ३

हे सद्गुरु ! आपके बिना मैं दुःखी होकर व्याकुल हो गई हूँ. आपके प्रेममें बँधकर मैं पीड़ित हो रही हूँ. मुझे अपनानेके बाद अब आप मुझसे दूर क्यों खड़े हैं ? मैं तो दिन-रात आपके प्रेममें पागल बन कर अधीर हो गई हूँ.

हवे कहोने वालाजी केम करुं, केणी पेरे रहेवाय ।

एम करता इन्द्रावतीने मंदिर पधारया, मारे आनंद अंग न माय ॥ ४

हे सद्गुरु ! आप ही कहिए अब मैं क्या करूँ ? आपके बिना मुझसे यहाँ कैसे रहा जाएगा ? ऐसी प्रार्थना सुनकर सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी महाराज, इन्द्रावतीके हृदय मन्दिरमें आकर विराजमान हुए. अब इन्द्रावतीके हृदयमें आनन्द नहीं समाता है.

प्रकरण ४२ चौपाई ४७६

विनता विनवे रे, पीउजी रसिया तमे कहेवाओ ।

तो एकलडा अमने मूकी, अलगा केम करी थाओ ॥ १

हे सद्गुरु धनी ! आप तो श्रीकृष्ण प्रेरित लीला करके प्रेमका आनन्द लेने वाले (रसिया) हैं. मैं आपसे विनय करती हूँ कि मुझे अकेली छोड़कर आप अलग क्यों होते हैं ?

जो अलबेला एवा तमे, तो मंदिरिए न आवो केम म्हारे ।

हुं माननी मान मूकी केम कहुं, पण बोलडे बंधाणी छुं तारे ॥ २

हे सद्गुरु ! आप तो प्रेमरसका आनन्द लेनेवाले अलबेले हैं, तो हमारे हृदय



मन्दिरमें आकर विराजमान क्यों नहीं होते ? मैं तो (समस्त ब्रह्मात्माओंको जागृत करनेकी) आपकी आज्ञासे बँधी हुई हूँ, इसलिए मान छोड़कर आपके पास आकर कैसे कह पाऊँगी ?

तू तो मने जाणे छे जोपे, में तो घणी खीदडी खुदावी ।

अनेक विनवणी कीधी तें, तो हुं तारे वस आवी ॥ ३

हवे तो सरवे में सोंप्युं तुझने, मूल सनमंध सुध जोई ।

कहे इंद्रावती मुझ विना, तूने एम वस न करे बीजो कोई ॥ ४

हे सद्गुरु धनी ! आप मुझे भलीभाँति जानते हैं, मैंने ब्रज और रासकी लीलाओंमें भी आपको अधिक सताया. इस जागनी लीलामें भी आपने मुझे बहुत समझाया तभी मैं आपके वशमें आई हूँ. अब तो आपके उपदेशोंसे जागृत होकर परमधामका मूल सम्बन्ध पहचान कर मैंने अपना सर्वस्व आपको सौंप दिया. इन्द्रावती कहती है, हे सद्गुरु ! मेरे अतिरिक्त अन्य कोई भी आपको इस प्रकार वशमें नहीं कर सकता.

प्रकरण ४३ चौपाई ४८०

म्हारा वस कीधल वाला रे, अमथी अलगा केम करी थासो ।

हुं तो एवी नहीं रे सोहाली, जे वचनिए वहासो ॥ १

मेरे प्रेमके वशीभूत हे सद्गुरु धनी ! अब आप मुझसे कैसे अलग हो सकेंगे? मैं इतनी भोली नहीं रह गई हूँ, जो आपके वचनोंके प्रभावमें बह जाऊँ.

ए तो नहीं अटकलनी ओलखाण, जे ततखिण रंग पलटाओ ।

सनमंधीनो रंग नेहेचल साचो, जिहां हुं तिहां तमे आवो ॥ २

हे सद्गुरु धनी ! यह कोई अनुमान (ऊपर-ऊपर) की पहचान नहीं है कि तत्काल रङ्ग बदल जाए. अखण्ड परमधामके मूल सम्बन्धियोंके प्रेमका रङ्ग सच्चा और पक्का होता है. इसलिए (मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि) मैं जहाँ हूँ वहीं आप पधारें.

हवे अधखिण एक न मूकुं अलगा, प्रीत पहेलानी ओलखाणी ।

साची सगाई कीधी प्रगट, सचराचर संभलाणी ॥ ३

हे सदगुरुधनी ! अब मैं आपको आधेक्षणके लिए भी स्वयंसे पृथक् होने नहीं दूंगी, क्योंकि अब मैंने पूर्वके अपने प्रेमको पहचान लिया है. मैंने सब सुन्दरसाथके बीच हमारे इन सम्बन्धोंको प्रकट भी कर दिया और समग्र संसारके लोगोंको भी जता दिया.

प्रेम विनोद विलास माया मांहे, सुफल फेरो एम कीजे ।

अखंड आनंद सदा इन्द्रावती घरे, पूरण सुख लाहो लीजे ॥ ४

हे सदगुरु ! इस मायावी संसारमें भी इस प्रकार प्रेमानन्दका अनुभव करवाकर हमारे जीवनको सफल करें. इन्द्रावतीके हृदयधाममें आकर परमधामके अखण्ड सुखका आनन्द दें, जिससे हम मूल सम्बन्धका सम्पूर्ण सुख प्राप्त कर सकें.

प्रकरण ४४ चौपाई ४८४

राग काफ़ी

आवोजी वाला म्हारे घेर, आवोजी वाला ।

एकलडी परदेसमां मुने, मूकीने कां चाल्या ॥ १

हे प्रियतम धनी ! मेरे हृदयरूपी घरमें आप पधारें. इस संसाररूपी परदेसमें मुझे अकेली छोड़कर आप कहाँ चले गए हैं ?

मुने हती नींदरडी, तमे सूती मूकी कां राते ।

जागी जोऊं तां पीउजी न पासे, पछे तो थासे प्रभाते ॥ २

मैं तो अज्ञानकी निद्रामें सो रही थी. आप अज्ञानरूपी रात्रिमें मुझे अकेली सोई हुई छोड़कर कहाँ चले गए ? (अज्ञानरूपी निद्रासे) जागृत होकर देखा तो प्रियतम धनी पास ही नहीं हैं. पीछे तो ज्ञानका प्रभात हो जाएगा.

कलकलीने कहुं छुं तमनें, आवजो आणे ख्यणे ।

म्हारा मनना मनोरथ पूरजो, इन्द्रावती लागे चरणें ॥ ३

हे धनी ! मैं व्याकुल होकर आपसे विनयपूर्वक प्रार्थना करती हूँ कि कृपया

आप इसी क्षण मेरे हृदय मन्दिरमें पधारें. मेरे मनके सभी मनोरथ पूर्ण करें, इन्द्रावती आपके श्री चरणोंमें समर्पित होती है.

प्रकरण ४५ चौपाई ४८७

प्रीत प्रगत केम कीजिए, कीजिए तो छानी छिपाए, मेरे पीउजी ।

तूं तो निलज नंदनो कुमार, मेरे पीउ जी ॥ १

सद्गुरुमें ही प्रियतम (श्री कृष्ण) का भाव लेकर इन्द्रावती कहती है, हे मेरे प्रियतम धनी ! आन्तरिक प्रेमको किस प्रकार प्रकट किया जाए ? उसे तो एकान्तमें छिपकर ही व्यक्त किया जाता है. आप तो निर्लज्ज हैं (लोक, लज्जा और मर्यादासे परे हैं).

तूं देख भयो मोहे बावरो, मैं कुलवधुआ नार ।

तूं रोक रह्यो मोहे राहमें, घड़ी भई दोए चार ॥ २

गलियनमें दुरजन देखे, तोमें नहीं विचार ।

तूं कामी कछू ना देखहीं, पर सासुडी दे मोहे गार ॥ ३

हे धनी ! आप तो मुझे देखकर प्रेम विह्वल हो गए. परन्तु मैं तो संसारके उच्च कुलमें हूँ फिर भी आपने मुझे बीच मार्गमें ही रोक कर ज्ञान उपदेश दिया उसकी भी दो चार घड़ी ही तो बीती है. उस समय इस स्थितिको दुर्जन लोग (जो सद्गुरुके पास जानेसे दुःखी होते थे)देखते परन्तु आप उसका विचार ही नहीं करते थे. आप ब्रह्मज्ञानी होनेसे इन मर्यादाओंकी चिन्ता नहीं करते, किन्तु कुल पुरोहित (सासुड़ी) मुझे भला-बुरा कहते हैं.

कर जोरे कुच मरोरे, अंगिया नखन विडार ।

अधुर न छोडे दंतसों, करेगो कहा अब रार ॥ ४

हे सद्गुरु ! आपने तो मुझे बहुत समझाया परन्तु मेरे न समझने पर भी आपने मेरे हृदयको मोह और अभिमानसे मोड़कर परमधामकी ओर लगा दिया. ज्ञानरूपी नखसे कुल और वेद मर्यादारूपी चोलीको छिन्न-भिन्न कर दिया. आपने अपने उपदेशपूर्ण वचनोंसे मुझे पकड़े रखा, अब क्या मेरे साथ और भी झगड़ना है ?

तू बालक नेह न बूझ ही, मैं बरज्यो केतीक बार ।

मैं मेरो कियो पाइयो, अब कासों करों पुकार ॥ ५

हे धनी ! आप तो अबोध बालककी भाँति निर्मल हृदय हैं. भौतिक मोहका मूल्य आपके लिए न के बराबर है. मैंने आपको कई बार बुलानेसे रोका है किन्तु मेरा किया हुआ ही मुझे मिल रहा है, अब किसके पास जाकर पुकारूँ ?

साड़ी फारी कंठसर तोड़ी, तोड़यो नवसर हार ।

अब घर कैसे जाइए, उलटाए दियो सिनगार ॥ ६

आपने वेद और कुल मर्यादारूपी साड़ी फाड़ डाली और लौकिक बन्धनरूपी कण्ठहार भी तोड़ दिया. इतना ही नहीं नवधा भक्तिका आकर्षणरूप नवसरहार भी तोड़ दिया. (अर्थात् दशधा पराप्रेमलक्षणाभक्तिमें मनको पिरो दिया) अब इस अवस्थामें अपने लौकिक घर कैसे जाऊँ, जब कि आपने मेरा शृङ्गार ही बदल दिया है.

अब मिल रही महामति, पीउसों अंगों अंग ।

अक्षरातीत घर अपने, ले चले हैं संग ॥ ७

अब महामति प्रियतम सद्गुरुके अङ्ग-प्रत्यङ्गसे मिल रही है अक्षरातीत धनी अब उसे अपने सङ्ग घर ले चले.

प्रकरण ४६ चौपाई ४९४

राग गौरी

खोज थके सब खेल खसम री ।

मनहीमें मन उझाना, होत न काहूँ गम री ॥ १ ॥ टेक ॥

इस संसारके झूठे खेलमें प्रियतम परमात्माकी खोज करते-करते संसारके लोग थक गए हैं. यह ब्रह्माण्ड अक्षरब्रह्मके मन द्वारा रचा गया है. इसमें सांसारिक मन फँसकर भटक रहा है. इसीलिए यहाँ पर किसीको भी सत्य ज्ञान और परमात्माकी समझ नहीं पड़ती.

**मनहीं बांधे मनहीं खोले, मन तम मन उजास ।**

**ए खेल सकल है मनका, मन नेहेचल मनहींको नास ॥ २**

ब्रह्माजीके मन (वेद-कर्मकाण्ड आदि) द्वारा संसार बँधा हुआ है। शुकदेवजीका मन (ज्ञान) उसे खोलता है। संसारका मन (अज्ञान) अन्धकारमय है तथा अक्षरका मन प्रकाशमान (ज्ञानस्वरूप) है। यह ब्रह्माण्डरूपी खेल अक्षरब्रह्मके मन द्वारा ही रचाया गया है। इसलिए अक्षरका मन अविनाशी है और संसारका मन नाशवान् है।

**मन उपजावे मन ही पाले, मनको मन करे संघार ।**

**पाँच तत्व इन्द्री गुन तीनों, मन निरगुन निराकार ॥ ३**

(यह संसार अक्षरब्रह्मके मनका विस्तार है इसमें) अक्षरका मन ही नारायण बनकर ब्रह्माजीके मन द्वारा सृष्टि रचनाका काम करता है, भगवान विष्णुके मन द्वारा जीवोंका पालन पोषण करता है और शङ्करके मन द्वारा संसारका संहार करता है। पाँच तत्व, तीन गुण और दशों इन्द्रियाँ मनके ही विकार हैं। मन ही निर्गुण और निराकारके रूपमें सर्वत्र व्याप्त है।

**मन ही नीला मन ही पीला, स्याम सेत सब मन ।**

**छोटा बड़ा मन भारी हलका, मनहीं जड़ मनहीं चेतन ॥ ४**

महादेवजीका मन नीला है, ब्रह्माजीका मन पीला है। श्रीकृष्णजीका मन श्याम है, विष्णु भगवानका मन श्वेत है। त्रिगुणका मन छोटा है, आदिनारायणका मन बड़ा है। अक्षरब्रह्मका मन भारी है और संसारका मन हलका है। इसी भाँति संसारका मन जड़ है, किन्तु अक्षरब्रह्मका मन चेतन है। अथवा मन ही नीला है, मन ही पीला है, काला, सफेद आदि सारे रङ्ग मनके ही रूप हैं। कभी मन छोटा होता है तो कभी बड़ा, कभी भारी होता है तो कभी हलका बन जाता है, जड़-चेतन सभी मनके भीतर ही समाए हुए हैं।

**मनहीं मैला मनहीं निरमल, मन खारा तीखा मन मीठा ।**

**एही मन सबनको देखे, मनको किनहूँ न दीठा ॥ ५**

मन ही विकारोंकी मैलसे भरा है, यह निर्मल भी है और खारा भी है, तीखा

भी है और मीठा भी, ये सब मनके ही स्वाद हैं. अक्षरब्रह्मका मन समग्र विश्वको स्वप्नवत् देख रहा है, परन्तु स्वप्नवत् संसारके जीवोंके मन अक्षरब्रह्मके उस मनको देख नहीं सकते.

**सब मनमें ना कछू मनमें, खाली मन मन में ब्रह्म ।**

**महामत मनको सोई देखे, जिन द्रष्टे खुद खसम ॥ ६**

अक्षरब्रह्मके मनकी कल्पनामें समग्र संसार स्वप्नवत् है. संसारका मन खाली है जब कि अक्षरब्रह्मके मनमें स्वयं अक्षरातीत पूर्णब्रह्म हैं. महामति कहते हैं, इस वैविध्यपूर्ण मनके खेलको वे ही देख सकते हैं जिनकी दृष्टिमें स्वयं पूर्णब्रह्म परमात्मा विराजमान हैं.

**प्रकरण ४७ चौपाई ५००**

**राग केदारो**

**खिन एक लेहु लटक भंजाए ।**

**जनमत ही तेरो अंग झूठो, देखतहीं मिट जाए ॥ १**

यह मनुष्य जीवन क्षणभङ्गुर है. इस क्षणमात्रके संयोगको भँजाकर उसका सदुपयोग कर लो. शरीर जन्मसे ही नाशवान है. वह देखते-देखते ही मिट जाएगा.

**रे जीव निमख के नाटक में, तू रह्यो क्यों बिलमाए ।**

**देखतहीं चली जात बाजी, भूलत क्यों प्रभु पाए ॥ २**

हे जीव ! तू इस क्षणभङ्गुर मायाके नाटकमें फँसकर क्यों विलम्ब कर रहा है ? देखते-देखते ही तेरी आयु व्यतीत हो रही है. इन सबको जानते हुए भी तू धामधनीके चरणकमलको प्राप्त करना क्यों भूल जाता है.

**आपको पृथ्वी पति कहावे, ऐसे केते गए बजाए ।**

**अमरपुर सिरदार कहिए, काल न छोडत ताए ॥ ३**

हे जीव ! स्वयंको समस्त पृथ्वीका अधिपति माननेवाले कितने ही लोग अपना प्रभुत्व जमाकर चले गए. अमरपुर (स्वर्ग) के शिरोमणि कहलाने वाले इन्द्रादि देवोंको भी यह काल नहीं छोड़ता.

जीव रे चतुर्मुखको छोडत नाही, जो करता सृष्टि केहेलाए ।

चारों तरफों चौदे लोकों, काल पोहोंचो आए ॥ ४

हे जीव ! सृष्टिकी रचना करने वाले चतुर्मुख ब्रह्माजीको भी यह काल नहीं छोड़ता. इस प्रकार इस झूठे संसारमें चारों ओर चौदह लोकोंमें यह काल (समय) पहुँचा हुआ है.

पवन पानी आकास जिमी, ज्यों अग्नि जोत बुझाए ।

अवसर ऐसो जान के, तू प्रानपति लौ लाए ॥ ५

हे जीव ! जिस प्रकार अग्निकी ज्योति पानीसे बुझ जाती है, उसी प्रकार पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश ये पाँचों तत्त्व क्षणभरमें ही समाप्त हो जाते हैं. ऐसा क्षणिक समय जानकर तू धामधनीसे प्रेम कर.

देखनको ए खेल खिनको, लिए जात लपटाए ।

महामत रुदे रमे तासों, उपजत जाकी इछाए ॥ ६

हे जीव ! देखनेके लिए तो संसारका यह खेल क्षण मात्रका है, किन्तु सभी इसमें लिपटे हुए चले जा रहे हैं. महामति कहते हैं, तू अपने हृदयमें धामधनीको रमण करा ले, जिनकी इच्छा मात्रसे यह खेल बना है.

प्रकरण ४८ चौपाई ५०६

राग देसाख

बाई रे वात अमारी हवे कोण सुणे, अमे गेहेलाने मलिया ।

एहनो नेहडो सुणीने हुं तो घणुए नाठी, पण सुं कीजे जे पांणे पडिया ॥ १

हे सखी ! अब इस संसारमें हमारी बात कौन सुनेगा ? मैं तो प्रेम दीवाने सद्गुरुके साथ मिल गया हूँ. उनके आत्मीय प्रेमको देखकर मैं कई बार उनसे दूर भागा किन्तु क्या किया जाए, अब तो उनके फन्देमें फँस गया हूँ.

हुं मां हुती चतुराई त्यारे पांचमां पुछती, ते चितडां अमारां चलियां ।

मान मोहोत लज्या गई रे लोपाई, अमे माणस मांहेथी टलिया ॥ २

जब मुझमें राजनैतिक ज्ञान था, तब मैं लोगोंमें सम्माननीय माना जाता था.

(लोग मुझसे परामर्श लेनेके लिए आते थे) और मेरा चित्त अभिमानसे भर जाता था. अब मुझसे झूठे मान, प्रतिष्ठा, ममता, लज्जा और अभिमान आदि हट गए हैं और ऐसे राजनीतिज्ञ मनुष्योंमें मेरी गिनती नहीं रही.

माणस होए ते तो अमने मां मलजो, जो तमे गेहेलाइए हलिया ।

ओल्या वारसे वढसे खीजसे तमने, तोहे आवसो ते आंहीं पलिया ॥ ३

लोक-लज्जा और मर्यादाको मानने वाले लोग मुझसे न मिलें. यदि तुम प्रेममें दीवाने हो गए हो तो मेरे पास आओ. मेरी ओर आते हुए तुम्हारे सम्बन्धी तुम्हें रोकेंगे, वे तुमसे रुष्ट होंगे, तथापि तुम भागकर मेरे पास आ जाओगे.

गेहेले वाले अमने कीधां गेहेलडां, मलीने गेहेलाइए छलिया ।

जात कुटमथी जुआ थयां, हद छोडी बेहदमां भलिया ॥ ४

प्रेमके दीवाने सद्गुरु धनीने मुझे भी प्रेममें पागल बना दिया. उनसे मिलकर मेरा हृदय श्रीकृष्णके प्रेममें दीवाना हो गया है. इसके कारण मैं कुटुम्ब-परिवार और जातिसे भी अलग पड़ गया हूँ तथा इस मायावी संसारसे विरक्त होकर अक्षरातीतके प्रेममें मग्न हो गया.

देखीतां सुखडां में तो नाख्या उडाडी, दुस्तर दुखें नव बलिया ।

एहनी गेहेलाइए अमने एवा कीधां, जइने अक्षरातीतमां गलिया ॥ ५

मैंने संसारके दृश्यमान सुखोंको छोड़ दिया है. अब ऐसे सांसारिक सुख-दुःखोंमें पुनः नहीं लौटूंगा. धनीके प्रेमके दीवानापनने मेरी ऐसी दशा बना दी है कि मैं पूर्णब्रह्म परमात्मा अक्षरातीतके प्रेममें मग्न हो ही गया.

बाई रे ग्यान सबद गम नहीं रे नवधाने, वेद पुराणे न कलिया ।

ए वात गेहेलडी करे रे महामति, मारे अखंड सुख फुले फलिया ॥ ६

हे सखी ! जहाँ ज्ञान, शब्दशक्ति तथा नवधा भक्तिकी गम नहीं है और वेद पुराण भी जिसे जान नहीं सके. प्रेममग्न होकर महामति कहते हैं कि उन धामधनीका अखण्ड प्रेम मेरे अङ्ग-प्रत्यङ्गमें व्याप्त हो गया है.

प्रकरण ४९ चौपाई ५१२



बाई रे गेहेलो वालो गेहेली वात करे, एहने कोई तमे वारो ।

दुरजन देखतां अमने बोलावे, निलज ने धुतारो ॥ १

हे सखी ! प्रेम दीवाने प्रियतम धनी दीवानों जैसी बातें करते हैं, उन्हें तुम कोई तो रोको. वे तो लोकमर्यादापूर्ण लोगोंके देखते हुए भी हमें बुलाते हैं. वे छलिया तो स्वयं लोक लज्जासे ऊपर हैं.

नित उठी आंगणडे ऊभो, आल ज करे अमारी ।

लोक माहें अमे लज्जा पामुं, हुं कुलवधुआ नारी ॥ २

श्री कृष्णजी सदैव प्रातः उठकर मेरे घरके आङ्गनमें आकर खड़े हो जाते और मुझसे छेड़खानी करते, जिससे कुलवधू होनेके कारण लोगोंके समक्ष मुझे लज्जा आती.

नासंती क्याहे न छूटुं एथी, आड ज बांधे आवी ।

हुं जाणुं रखे सासुडी सांभले, थाकी कही केहेवरावी ॥ ३

दूर भागने पर भी मैं उनसे नहीं छूट सकती, क्योंकि वे मेरे मार्गको रोक लेते हैं. मुझे डर लगता है कि ये बातें मेरी सास (पुरोहित) सुन न ले. इस प्रकारका व्यवहार न करनेके लिए उन्हें बार-बार कह कर मैं थक गई.

वारतां वलगतां वाले, जोरे साईंडा लीधां ।

कहे महामति सुणो रे सखियो, वाले एणी पेरे गेहेलडां कीधां ॥ ४

इस प्रकार रोकते-टोकते हुए भी प्रियतम धनीने बलपूर्वक मुझे अपना लिया. महामति कहते हैं, हे सखियो ! प्रियतम धनीने मुझे इस प्रकार प्रेम दीवाना बना दिया.

प्रकरण ५० चौपाई ५१६

राग धनासरी

आज वधाई ब्रज घर घर, प्रगट्या श्री नंदकुमार ।

दूध दधीए ऊमर धोए, तोरण बांधे ब्रजनार ॥ १

श्रीकृष्ण जन्म महोत्सवकी शोभाका वर्णन करते हुए महामति कहते हैं, ब्रजमें

श्री नन्दबाबाके घर श्रीकृष्णजीके प्राकट्यका समाचार सुनकर ब्रजके घर-घरमें आनन्दोत्सव मनाया गया. गोप और गोपियोंने आनन्दसे उत्सुक होकर दूध-दधि द्वारा अपने-अपने घरकी देहली (चौखट) धोकर तोरण बाँधा.

एक बीजीने छांटे नाचे, उमंग अंग न माए ।

अनेक विधना बाजा रस बाजे, गृह गृह ओछव थाए ॥ २

सखियाँ परस्पर अबीर गुलाल उड़ाती हुई नाचती हैं. उनके अङ्ग-अङ्गमें उमङ्ग नहीं समाती है, विभिन्न प्रकारके आनन्ददायी वाद्ययन्त्र बजने लगे और घर-घरमें उत्सव मनाया जाने लगा.

लड़ने वधावा सांचरी, भवन भवनथी नार ।

गाए ते गीत सोहामणा, साजे छे सकल सणगार ॥ ३

सखियाँ मङ्गल गीत गाती हुई सम्पूर्ण शृङ्गार धारण कर नन्दबाबाको बधाई देनेके लिए भेंट सामग्री लेकर अपने-अपने घरसे निकल पड़ीं.

अबीर गुलाल उछालती आवे, छाया न सूझे सूर ।

चाल चरण छबे नहीं भोमे, जाणे उमड्यो सागर पूर ॥ ४

गोपियाँ मार्गमें एक-दूसरे पर अबीर गुलाल छिड़कती हुई आती हैं. आकाशमें अबीर गुलालके छा जानेसे सूर्य भी ढँक गया है. गोपियाँ इतनी द्रुत गतिसे चल रही हैं मानों उनके पाँव पृथ्वीको छू नहीं रहे हैं और लगता है समुद्रकी तरङ्गे उमड़ रही हों.

जुथ जुजवे जुवतियुं, उछरंगतियुं अपार ।

ओछव करती आवियुं, बावा नंदतणे दरबार ॥ ५

सब गोपियाँ अपने-अपने समूह बनाकर आनन्द और उत्साहसे उछलती, कूदती आनन्द मनानेके लिए नन्द बाबाके घर आ रही हैं.

धसमसियुं मंदिरमां पेसे, माननी सरवे धाय ।

नंदने वधावो देई वल्या, मांडवे मंगल गाय ॥ ६

सब सखियाँ मचलती हुई नन्द बाबाके घरमें प्रवेश करती हैं. नन्दबाबाको बधाइयाँ देकर मण्डपमें लौट कर मङ्गल गीत गाती हैं.

ब्राह्मण भाट गुणीजन चारण, मलियां ते मांगणहार ।

निरत नटवा गंधर्व, राग संगीत थेई थेई कार ॥ ७

नन्दबाबाके घर बड़े-बड़े पण्डित, प्रशंसक, संगीतशास्त्री, नर्तकियाँ, भिक्षुक सब आए हैं. गन्धर्व और नट विभिन्न वाद्यों द्वारा मनोरञ्जक सुरावलीके साथ विविध राग आलाप रहे हैं. तबला और मृदङ्गकी थेई....थेई....ध्वनिसे आकाश गूँज रहा है.

नाद दुंद पडछंदा परवते, वरत्यो जै जै कार ।

नंद गोप सहु गेहेलां हरखे, खोलावे भंडार ॥ ८

दुन्दुभी जैसे वाद्ययन्त्रोंकी ध्वनि पर्वतमें प्रतिध्वनित होकर गूँज रही है. सर्वत्र जय-जयकार हो रही है. नन्दबाबा और गोपजन सभी हर्षसे दीवाने हो गए हैं. उन्होंने लुटानेके लिए अपने भण्डार खोल दिए हैं.

गाए गोधा अंन वस्तर पेहेराव्यां, गोप सकल दातार ।

केहेने धन केहेने भूषण, नवनिध दे दे कार ॥ ९

नन्दबाबाने आनन्दमें मग्न होकर गाय और बछड़े दानमें दिए. अनेक लोगोंको वस्त्राभूषण पहनाकर अन्नदान दिया. सभी गोपजन धन लुटा रहे हैं. किसीको धन तो किसीको आभूषण देकर नव-निधियाँ लुटाई जा रही हैं.

ए लीला अखंड थई, एहनो आगल थासे विस्तार ।

ए प्रगट्या पूरण पार ब्रह्म, महामति तणो आधार ॥ १०

श्रीकृष्णजीकी यह लीला अक्षरब्रह्मके हृदयमें अङ्कित होकर अखण्ड बन गई. इस लीलाके रहस्यका आगे विस्तार होगा. अक्षरातीत पूर्णब्रह्म परमात्मा प्रकट हुए हैं, ये ही तो महामतिके प्राणाधार हैं.

प्रकरण ५१ चौपाई ५२६

राग श्री

सतगुरु मेरा स्याम जी, मैं अहेनिस चरणों रहूं ।

सनमंध मेरा याहीसों, मैं ताथें सदा सुख लहूं ॥ १

मेरे सद्गुरु श्याम-श्रीकृष्णजी हैं, मैं दिन-रात उनके चरणमें आश्रित हूँ. मेरा

सम्बन्ध ही इन्हींके साथमें हैं, इसलिए मैं सर्वदा उनके ही चरणोंके सुख चाहता हूँ.

ए जो माया लोक चौदे, सब त्रिगुन को विस्तार ।

ए मोह अहंथें उपजे, तार्थें छूटत नहीं बिकार ॥ २

मायासे उत्पन्न चौदह लोकोंमें सत, रज, तम इन तीनों गुणोंका विस्तार हुआ है. यहाँके सभी जीव मोह और अहंकारसे ही उत्पन्न हुए हैं. इसलिए उनका विकार नहीं छूटता.

इत सास्त्र सबद कै पसरे, ताको खोज करे संसार ।

वाचा निवरती मोहमें, आडी भई निराकार ॥ ३

इस संसारमें अनेक धर्म-पन्थों तथा शास्त्रोंके वचनोंका प्रचार हो रहा है. संसारके लोग उन्हीं वचनोंमें परमतत्त्वको ढूँढते हैं, किन्तु निराकारका व्यवधान होनेके कारण उन लोगोंकी वाणी मोह तत्त्वसे ही लौट आती है.

सुन निराकार पार को, खोज खोज रहे कै हार ।

बोहोतों बहुविध ढूँढिया, पर किया न किने निरधार ॥ ४

शून्य निराकारके परे ब्रह्मको खोज-खोजकर कई साधक हार गए. असंख्य साधकोंने अनेक प्रकारसे खोजा किन्तु किसीने भी ब्रह्मके विषयमें निश्चय नहीं किया.

सो बुधजीएं सास्त्र ले, सब ही को काढ्यो सार ।

जो कोई सबद संसार में, ताको भलो कियो निरवार ॥ ५

ऐसी परिस्थितिमें बुद्धजी-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजने चौदह वर्ष पर्यन्त श्रीमद्भागवत आदि शास्त्रोंका गहन मन्थन कर उनका सार निकाला. इतना ही नहीं, संसारमें जितने भी धर्मग्रन्थ हैं, उन सबका भलीभाँति अध्ययन कर सत्य और असत्यका निर्णय किया.

जा कारन माया रची, सास्त्र भी ता कारन ।

खेल भी एही देखहीं, और अरथ भी लिए इन ॥ ६

जिन ब्रह्मप्रियाओंको अपने प्रेमकी पहचान करानेके लिए पूर्णब्रह्म परमात्माने

इस मायावी संसारकी रचना की, उन्हींके लिए शास्त्र पुराणोंकी भी रचना हुई है. स्वप्नवत् संसारके खेलको भी वे ही देखती हैं और शास्त्रोंके गूढ़ रहस्य भी वे ही ग्रहण करती हैं.

**ए माया जाकी सोई जाने, क्योंकर समझे और ।**

**बुधजी के रोसनर्थें, प्रकास होसी सब ठौर ॥ ७**

यह माया जिन (पूर्णब्रह्म परमात्मा) की है, वे ही इसका रहस्य जानते हैं. अन्य कोई इस रहस्यको कैसे जान सकता ? अब तो बुद्धजी (सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी) द्वारा लाए गए अखण्ड तारतम ज्ञानके प्रकाशसे वह रहस्य समग्र संसारमें प्रकाशित होगा.

**किल्ली ल्याए वतन थें, सब खोल दिए दरबार ।**

**माया से न्यारा घर नेहेचल, देखाया मोहजल पार ॥ ८**

सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी महाराज परमधामसे तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी लेकर पधारे हैं. इसी कुञ्जीके द्वारा उन्होंने परमधामका रहस्य स्पष्ट किया है. उन्होंने स्पष्ट कहा कि परमात्माका अखण्ड परमधाम मायावी संसारसे भिन्न तथा मोहजलसे परे है.

**ब्रह्मसृष्टि जाहेर करी, बुधजीएं इत आए ।**

**अक्षरातीत को आनंद, सत सुख दियो बताए ॥ ९**

बुद्धजी (सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी) ने इस संसारमें आकर परमधामकी ब्रह्माङ्गनाओंको प्रकट किया और अखण्ड परमधामके अधिपति अक्षरातीत पूर्णब्रह्मकी लीला-विहारके सत्य सुखका अनुभव करा दिया.

**सबद सुनाए सुक व्यास के, मोहे छिन में कियो उजास ।**

**उपनिषद् अर्थ वेद को, ए गुझ कियो प्रकास ॥ १०**

उन्होंने शुकदेवजी तथा व्यासजीके वचन श्रीमद्भागवत आदि ग्रन्थोंके रहस्योंको समझाकर एक ही क्षणमें मेरे हृदयको आलोकित किया. इसी प्रकार वेद, उपनिषद् आदि ग्रन्थोंके सारभूत तत्त्वोंका रहस्य भी खोल दिया.

इनसे सुध मोहे सब भई, संसे रह्यो न कोए ।

बुधजी बिना इन मोह में, प्रकास जो कैसे होए ॥ ११

सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी महाराजकी कृपासे ही मुझे सब ग्रन्थोंके रहस्य खुल गए. अब किसी प्रकारका संशय नहीं रहा. बुद्धजीके (इस तारतम ज्ञानके) बिना इस भवसागरमें अखण्ड ज्ञानका प्रकाश कैसे हो सकता ?

संगी जो अपने सनमंधी, सो भी गए माहें भूल ।

तो क्यों समझें जीव मोह के, जाको निद्रा मूल ॥ १२

परमधामकी ब्रह्मात्माएँ भी इस मायामें पड़कर स्वयंको भूल गईं तो मायावी संसारके जीव अखण्ड ज्ञानको कैसे समझेंगे, जिनकी उत्पत्ति ही मोह माया द्वारा हुई है.

पिया मोहे अपनी जान के, अन्तर दर्ई समझाए ।

ना तो आद के संसे अब लों, सो क्योंकर मिट्यो जाए ॥ १३

सद्गुरुने मुझे अपना मानकर परमधामका सम्पूर्ण रहस्य समझा दिया, अन्यथा सृष्टिके प्रारम्भसे लेकर आज तककी शंकाओंका समधान कैसे हो सकता?

ए वीतक कहूं सैयन को, जाहेर देऊं बताए ।

मोहे जगाई पिया ने, मैं देऊं सबे जगाए ॥ १४

ब्रह्मात्माओंको मैं यह वृत्तान्त स्पष्ट समझा दूँ. मुझे सद्गुरुने अपना समझकर जगाया. अब सद्गुरु द्वारा प्रदत्त तारतम ज्ञानसे मैं सबको जगा दूँ.

ए खेल हुआ सैयों खातर, और खातर अक्षर ।

सबके मनोरथ पूरने, देखाए तीनों अवसर ॥ १५

इस मिथ्या खेलकी रचना ब्रह्मात्माओं तथा अक्षरब्रह्मके लिए हुई है. सबके मनोरथ पूर्ण करनेके लिए व्रज, रास और जागनीकी तीन लीलाएँ क्रमशः दिखा दीं.

जब माया मोह न अहंकार, ना बिस्तरे त्रिगुन ।

ए दिल देके समझियो, कहूंगी मूल वचन ॥ १६

जब मोह, माया, अहङ्कार सहित सत, रज और तम तीन गुणका विस्तार

नहीं हुआ था, मैं उस समयकी मूल बातें समझा दूँ, हे सुन्दरसाथजी ! तुम ध्यान पूर्वक समझना.

**तब खेल हम मागिया, सो देखाया दो बेर ।**

**तामैं ब्रज में खेले पिया संग, बीच मोह के अंधेर ॥ १७**

उस समय अखण्ड परमधाममें हम ब्रह्मात्माओंने धामधनीसे मायावी खेल देखनेकी माँग की. धामधनीने ब्रज और रास लीलाओंके द्वारा दो बार खेल दिखाया. ब्रजकी लीलामें पूर्ण पहचानके बिना ही मोह और अज्ञानमें ही हम धनीजीके साथ खेलते रहे.

**काल माया देखी नींद में, आधी नींद माया जोग ।**

**ताथैं देखाई जगाए के, इत लेसी सब को भोग ॥ १८**

इस प्रकार निद्रामें ही कालमायाका ब्रह्माण्ड (ब्रजलीला) देखा और अर्धनिद्रामें योगमाया द्वारा रचित रासलीलाके ब्रह्माण्डको देखा. इसलिए जागनीके इस तीसरे ब्रह्माण्डमें सद्गुरुने हमें तारतम ज्ञानके द्वारा आत्माको जगाकर जागनी लीला दिखाई. इस जागनी लीलामें ब्रह्मात्माएँ ब्रज, रास, जागनी और परमधाम इन चारों लीलाओंका अनुभव करेंगी.

**इन लीलाकी जो आतमा, सो करसी सबे पेहेचान ।**

**आवत दौड़े अंकूरी, ए ताए मिलसी निसान ॥ १९**

जो इन ब्राह्मी लीलाओंकी सहभागिनी आत्माएँ हैं, वे ही इन लीलाओंके सम्पूर्ण रहस्योंको पहचानेंगी. अब अंकुरी आत्माएँ दौड़ती हुई आएँगी, उन्हें ही परमधामके सङ्केत प्राप्त होंगे.

**अखंड सुख जाहेर कियो, मूल बुध प्रकासी ।**

**देत देखाई जैसे दुनियां, पर अक्षरातीत के वासी ॥ २०**

ब्रह्मात्माओंने परमधामकी मूल बुद्धिके प्रकाशके द्वारा अखण्ड सुखोंको प्रकट कर दिया. ब्रह्मात्माएँ देखनेमें तो संसारके अन्य जीवोंके समान ही दिखाई देती हैं किन्तु ये अक्षरातीत परमधाममें विचरण करनेवाली हैं.

खेल किया पेहेले ब्रज में, खेल दूजा वृन्दावन ।

उमेद रही तो भी नेकसी, ताथें एह उतपन ॥ २१

ब्रह्माङ्गनाओंने सर्वप्रथम धामधनी श्रीकृष्णजीके साथ ब्रजमें लीला की। पश्चात् वृन्दावनमें दूसरी लीला-रासलीला की, तथापि मायाजन्य खेल देखनेकी थोड़ी-सी इच्छा शेष रह जानेके कारण जागनीके इस तीसरे ब्रह्माण्डकी रचना हुई।

ब्रज रास ए सोई लीला, सोई पिया सोई दिन ।

सोई घडी ने सोई पल, वैराट होसी धन धन ॥ २२

ब्रज और रासकी भाँति यह जागनी लीला भी अखण्ड है। इसमें भी वही धामधनी सद्गुरुके रूपमें हैं, वही लीला भरे दिन, वही आनन्दकी घड़ी, वही पल है। इसी जागनी लीलाके कारण समग्र सृष्टि धन्य (अखण्ड) हो जाएगी।

सखी एक दूजी को ढूँढहीं, आई जुदी जुदी इन बेर ।

प्रेम पियासी पिआकी, लई जो विरहा घेर ॥ २३

इस जागनीके तीसरे ब्रह्माण्डमें ब्रह्माङ्गनाएँ देश-विदेशमें विभिन्न स्थानों पर आई हैं और यहाँ पर एक दूसरेको ढूँढ रही हैं। सभी आत्माएँ प्रियतमके प्रेमकी प्यासी हैं, इसलिए इस मायामें भी धनीजीके विरहने उन्हें घेर लिया है।

अब ए लीला क्यों छानी रहे, सखियां मिली सब टोले ।

पल पल प्रकास पसरे, आगम ही आगम बोले ॥ २४

अब यह लीला किसीसे भी छिपी नहीं रहेगी, क्योंकि ब्रह्माङ्गनाएँ झुण्डके झुण्ड बनकर एकत्र हो रही हैं। इसलिए प्रतिदिन अखण्ड ज्ञानका प्रकाश फैल रहा है, सभी लोग ब्रह्मात्माओंके अवतरण सम्बन्धी शास्त्रोंकी भविष्यवाणीके विषयमें बात कर रहे हैं।

ब्रह्मलीला ढांपी हती, अवतारों दरम्यान ।

सो आए फेर अपनी, प्रगट करी पेहेचान ॥ २५

विभिन्न अवतारोंकी लीलाओंमें ब्रह्मलीलाका रहस्य छिपा हुआ था।



बुद्धजीस्वरूप सद्गुरुने स्वयं प्रकट होकर अपनी तथा आत्मा परमात्माकी पहचान कराई.

**सो पेहेचान सबों पसराए के, देसी सुख वैराट ।**

**लौकिक नाम दोऊं मेटके, करसी नयो ठाट ॥ २६**

बुद्धजी सबको पूर्णब्रह्मका परिचय कराकर पूरे ब्रह्माण्डको सुख देंगे. लौकिक द्वैत भाव हिन्दुओंका कर्मकाण्ड एवं मुसलमानोंका सरीयत दोनोंको मिटाकर अर्थात् साकार तथा निराकार इन दोनों मान्यताओंसे ऊपर उठकर एक ही परमात्माके नूतन प्रेम मार्ग (शुद्ध साकार सच्चिदानन्द स्वरूप स्वलीलाद्वैत) का निर्देशन करेंगे.

**ए नित लीला बुध जी, करसी बडो विलास ।**

**दया भई दुनियां पर, होसी सबे अविनास ॥ २७**

बुद्धजी संसारमें इस नित्य लीलाका विस्तार करके आनन्द विहार करेंगे. संसारके जीवों पर धनीजीकी असीम कृपा हुई है जिसके कारण ये सब अखण्ड मुक्ति प्राप्त कर लेंगे.

**सुर असुर ब्रह्मांड में, मिल कर गावसी ए सुख ।**

**इन लीला को जो आनंद, वरन्यो न जाए या मुख ॥ २८**

दैवी प्रकृति वाले, तथा आसुरी प्रकृति वाले, आस्तिक-नास्तिक, हिन्दू-मुसलमान सभी एक साथ मिलकर पूर्णब्रह्म परमात्माके अखण्ड सुखोंका गुणगान करेंगे. बुद्धजीकी इस लीलाके आनन्दका वर्णन मेरी जिह्वा द्वारा नहीं हो सकता.

**सब पर हुआ कलस, प्रेम आनंद भरपूर ।**

**महामत मोह अहं उड्यो, ऊग्यो अखंड वतनी सूर ॥ २९**

यह सुख प्रेम आनन्दसे परिपूर्ण (भरपूर) होनेसे सभी सुखोंका शिरोमणि (कलशके समान) हो गया. महामति कहते हैं, अब इस ज्ञानको जीवनमें उतारने वालोंके मोह और अहङ्कार उड़ गए हैं क्योंकि बुद्धजीके द्वारा अखण्ड परमधामकी पहचान करानेवाला तारतम ज्ञानरूपी सूर्य उदय हो चुका है.

**प्रकरण ५२ चौपाई ५५५**

धनीजी ध्यान तुमारे रे ।

धनी मेरे ध्यान तुमारे, बैठे बुधजी वरस सहस्र चार ।

छे सै साठ बीता समे, दुनियां को भयो आचार ॥ १

हे मेरे धामधनी ! रासके पश्चात् कलियुगके ४६६० वर्ष व्यतीत होने तक अक्षरब्रह्मकी बुद्धि आपके ध्यानमें बैठी. तत्पश्चात् मेरे हृदयमें अवस्थित होकर संसारमें प्रचलित सभी प्रकारके ज्ञानके आचार्यके रूपमें प्रकट हुई है.

हिन्दू मुसलमान रे फिरंगी कै जातें, होदी बोदी जैन अपार ।

बादें सो ब्रोध बधारिया, करी अगनी उदेकार ॥ २

इस संसारमें हिन्दू, मुसलमान, फिरंगी, यहूदी, बौद्ध, जैन आदि विभिन्न मत-मतान्तरको मानने वाले लोग हैं. उन सबने अपने-अपने मतानुसार विवाद खड़ा कर पारस्परिक विरोधकी ज्वाला भड़काई हुई है.

कहावे धर्म पंथ रे लडे माहें बैरें, अंग असुराई को अधिकार ।

पसू पंखी साधु न छूटे काहूं, पुकार न काहूं बहार ॥ ३

यद्यपि वे सब धर्म-सम्प्रदाय ही कहलाते हैं किन्तु पारस्परिक वैर भावनासे वे लड़ मरते हैं. ऐसे तथाकथित धार्मिक लोगोंके हृदय पर आसुरी वृत्तिने अपना अधिकार जमा लिया है. इस वृत्तिने पशु-पक्षीसे लेकर साधुजनको भी नहीं छोड़ा. इनके दुःखको कोई सुनने वाला तक नहीं है.

भाजे भजन रे बाजे उछव अटके, ढाहे मंदिर हरद्वार ।

सत छोड सूरों नीचा देखिया, कमर बांधी रही तलवार ॥ ४

मुगल बादशाह औरङ्गजेबने अत्याचारों द्वारा हिन्दुओंके भजन-कीर्तन पर तथा मन्दिरोंमें उत्सवके समय बजाए जानेवाले वाद्ययन्त्रों पर प्रतिबन्ध लगाया. हरिके द्वार कहलाने वाले मठ मन्दिरोंको गिरा दिया. शूर-वीरोंने भी सत्यमार्गको छोड़कर उनके समक्ष अपने मस्तक झुका दिए, उनकी तलवारें कमरमें ही बाँधी रह गई.

कसे साधु रे काहूँ भजन ना रह्या, कुली वरस्या जलते अंगार ।

धखियो दावानल दसों दिसा, ऐसा भवडा हुआ भयंकार ॥ ५

साधुओंको कष्ट दिया गया, इसके कारण भजन-कीर्तन ठप्प होने लगे. इस प्रकार कलियुगने जलते हुए अङ्गारोंकी वर्षा आरम्भ की. आतङ्करूपी दावानलकी ज्वालाएँ दशों दिशाओंमें फैलने लगीं. संसारमें ऐसा भयङ्कर अत्याचार होने लगा.

मांस आहारी रे न दया डरे किनसे, ऐसा हुआ हाहाकार ।

बुद्धजी बिना वैराट में, ऐसो वरत्यो बेहेवार ॥ ६

आसुरी वृत्ति वाले माँसभक्षी लोगोंमें न दया है और न ही वे किसीसे डरते हैं, सर्वत्र हाहाकार मच गया. बुद्धजीके बिना इस विराट ब्रह्माण्डमें ऐसा व्यवहार होने लगा था.

आवसी धनी धनी रे सब कोई केहेते, आगमी करते पुकार ।

सो सत बानी सबोंकी करी, अब आए करो दीदार ॥ ७

सभी धर्मोंके आचार्य अपने-अपने धर्म ग्रन्थोंमें कहते हैं कि इस प्रकारके अत्याचार होने पर पूर्णब्रह्म परमात्मा प्रकट होंगे. भविष्यवेत्ताओंने पहलेसे ही इसकी साक्षी बनकर पुकार की थी. बुद्धजीने प्रकट होकर उन सबके वचनोंको सिद्ध कर दिया, अब आप सभी आकर उनके दर्शन करो.

कुरान पुरान रे वेद कतेबों, किए अर्थ सबे निरधार ।

टाली उरझन लोक चौदेकी, मूल काढ्यो मोह अहंकार ॥ ८

बुद्धजीने प्रकट होकर कुरान-पुराण, वेद-कतेब आदि धर्म ग्रन्थोंके गूढ़ार्थोंका निरूपण कर दिया. चौदह लोकोंके जीवोंकी उलझन टाल दी और उनमें व्याप्त मोह और अहङ्कारको मूल सहित उखाड़ दिया.

सुंन निरगुन निरंजन, देखे वैकुंठ निराकार ।

अक्षर पार अक्षरातीत, प्रेम प्रकास्यो पार के पार ॥ ९

वैकुण्ठ, शून्य, निराकार, निर्गुण, निरञ्जन, इन सबका निरूपण कर बुद्धजीने अक्षरसे भी परे अक्षरातीतके प्रेमको प्रकाशित किया.

पेहेर्यो बागो रे बांधी कमर, अस्व उजले भए अस्वार ।

होसी बडा मेला वरस एके, साथ होत सबे तैयार ॥ १०

निष्कलङ्क बुद्धजीने ज्ञानके वस्त्र पहनकर कलियुगके साथ लड़नेके लिए तत्परता दिखाई है। वेद-कतेबके गूढ़ार्थोंको स्पष्ट करनेके लिए धर्मके शुद्ध स्वरूप श्वेत अश्व (सफेद कागज) पर वाणीके रूपमें आरूढ़ हुए हैं। एक वर्ष जागनीका बड़ा मेला होगा, ऐसा मानकर सब सुन्दरसाथ तैयार हो रहे हैं।

प्रकरण ५३ चौपाई ५६५

राग श्री

हो साथजी बेगे ने बेगे, बेगे ने मिलो रे सैयों समे रासको ॥ टेक ॥

कारज कारन की बात अति बडी, याको क्यों कहिए अवतार ।

रे साथजी हुई अखंड निध पांचों भेली, कियो सो बडो विस्तार ॥ १

हे सुन्दरसाथजी ! जागनी रासका समय आ पहुँचा है। इसलिए शीघ्रातिशीघ्र एकत्रित हो जाओ। जागनी रासके द्वारा ब्रह्मात्माओंका मनोरथ पूर्ण कर संसारके जीवोंको भी अखण्ड मुक्ति देनेके लिए प्रकट हुए बुद्धजीको मात्र अवतार कैसे कहा जा सकता है ?

धनी मैं अरधांग अक्षर मुझ माहीं, बुधजी बोले सो कै प्रकार ।

हुकम महंमद नूर ईसा भेला, कजा इमाम मेहेदी सिर मुदार ॥ २

महामति अपने स्वरूपकी पहचान देते हुए कहते हैं, मैं धनीजीकी अर्धाङ्गिनी हूँ। मुझमें गूढ़ रहस्योंको सुलझानेके लिए अक्षरब्रह्मकी बुद्धि है। इन रहस्योंको बुद्धस्वरूप श्री देचन्द्रजीने अनेक प्रकारसे समझाया है। मेरे अन्दर हुकुमके स्वरूप मुहम्मद, नूर-तारतम, अक्षरकी बुद्धि, ईसा रूहअल्लाह-सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीकी कृपा, ये सब समाहित हुए हैं। उन्होंने कुरानके सिद्धान्तोंके अनुसार अन्तिम दिनका न्याय करनेका उत्तरदायित्व भी मुझ (इमाम मेहदी) को सौंपा है।

अंग समागम धनी के, हिरदें लियो सो सब वि चार ।

साके सोले तोडी गुझ रहे, या दिनसैं कियो सो प्रगट पसार ॥ ३

ऐसे सद्गुरु धनी मेरे अङ्गमें समाहित हो गए अर्थात् सद्गुरुने मेरे हृदयमें वास किया, तभी मैंने जागनी लीलाका विचार हृदयमें दृढ़ किया. शालिवाहन सक १६०० (वि. सं. १७३५) तक यह रहस्य सब गुप्त रहा. अब यह प्रकाशित होकर फैलने लगा.

आई नूरबुध वैराट माहीं, विस्व करी सो निरविकार ।

छोटे बड़े नर नार सबे मिल, रंगे गाए सो मंगल चार ॥ ४

अक्षरकी बुद्धिका अवतरण इस ब्रह्माण्डमें हुआ जिससे सम्पूर्ण विश्वको ही निर्विकार बना दिया. इसलिए छोटे-बड़े सभी नर-नारी प्रसन्न हो धनीजीके प्रेमानन्दमें रङ्गकर आनन्द मङ्गलके गीत गाने लगे.

काटे सो आउध असुरोंके, पाडी पापीडा के सिर पर प्रहार ।

इनें दुख दिए साध संत को, तो सेहेता है सिर पर मार ॥ ५

आसुरी वृत्तिवाले मुगल शासकोंके अहङ्काररूपी हथियारको निरस्त कर (काट) दिया. ऐसे पापियोंके सिर पर यह तारतम ज्ञान प्रहार करने लगा. इन आततायियोंने साधु-सन्तोंको भी अनेक कष्ट पहुँचाए थे, इसलिए इनको अपने सिर पर ये प्रहार सहने पड़ रहे हैं.

रुंधी रुदे त्रिगुन त्रैलोकी, बैठा था करके अंधार ।

अब प्रगटी जोत तले लागी आकासों, उडाए दियो जो थो धुसार ॥ ६

यह अज्ञानरूप अन्धकार (कलियुग) तीनों लोकों (स्वर्ग, मृत्यु और पाताल) के लोगोंके हृदयको रोक कर त्रिगुणाधिपति-ब्रह्मा, विष्णु, महेश पर्यन्त ही सीमित कर रहा था. परन्तु अब अखण्ड ज्ञानकी ज्योति द्वारा तीनों लोकोंमें प्रकाश फैल गया है और झूठे ज्ञानका भ्रम (धुँध) दूर हो गया है.

जुध दारुण अति जोर हुआ, तिमर घोर झुंझार ।

प्रकासवान खांडा धार बुधैं, निरमल कियो संसार ॥ ७

कलियुगरूपी इस लड़ाकू (घोर अन्धकार) के साथ बुद्धजीका घमासान युद्ध

हुआ अर्थात् विभिन्न सम्प्रदायके धर्माचार्योंके साथ शास्त्रार्थ हुआ. बुद्धजीने अखण्ड ज्ञानरूपी तेज तलवारके द्वारा अज्ञानरूप अन्धकारका नाश किया और लोगोंकी शङ्काओंका निवारण कर पूरे संसारको निर्मल बना दिया.

**पड्या पडछंदा पाताल आकासें, धरती धम धमकार ।**

**खल भल हुआ लोक चौदे, करत कालिंगा को संघार ॥ ८**

इस धर्मयुद्धकी प्रतिध्वनि आकाश और पातालमें भी पहुँच गई. सम्पूर्ण पृथ्वी गूँज उठी, अज्ञान अन्धकाररूपी कलियुगका संहार कर बुद्धजीने चौदह लोकोंमें शोर मचा दिया.

**घर घर उछव बाजे रस बाजे, चोहटे चौवटे थेई थेईकार ।**

**पसु पंखी साधु कोई न दुखी, सुखें खेलें चरें चुगें करार ॥ ९**

कलियुगके संघार होने पर प्रसन्न होकर लोग घर-घरमें विविध प्रकारके वाद्ययन्त्र बजाकर आनन्द मनाने लगे. चौक चौराहोंमें प्रेमका नाद गूँज उठा. अब पशु-पक्षीसे लेकर साधु सज्जनका भी दुःख दूर हो जानेके कारण प्रेममें मस्त होकर सभी लोग परस्पर प्रसन्नता व्यक्त करने लगे.

**सत बरत्यो त्रिगुण त्रैलोकी, असत न रही लगार ।**

**काटी करम फांसी दुनियां की, पीछे निरमल किए सिरदार ॥ १०**

बुद्धजीके प्रतापसे त्रिगुण निर्मित तीनों लोकोंमें सत्यका आचरण आरम्भ होनेसे असत्यका लवलेख नहीं रहा. इस दिव्य ज्ञानने संसारके जीवोंके कर्मबन्धन काट डाले तत्पश्चात् चौदह लोकोंके शिरोमणियों (त्रिदेवों) को भी निर्मल बना दिया.

**राई गौरी सावित्री जो कोई सती, सब धवल गावें नर नार ।**

**पुरुष दूजा कोई काहूँ न कहावे, सबों भजिया कर भरतार ॥ ११**

राई (लक्ष्मी), गौरी, सावित्री आदि देवियों सहित सभी सतियोंने सब नर-नारियोंसे मिलकर अक्षरातीत ब्रह्मके प्रेमका गुणगान किया. अब अक्षरातीत परब्रह्म परमात्माके अतिरिक्त अन्य कोई भी पुरुष अर्थात् ब्रह्म नहीं कहलाएगा. सभीने पूर्णब्रह्म परमात्माको ही अपने स्वामीके रूपमें स्वीकार किया.

एक सृष्टि धनी भजन एकै, एक गान एक आहार ।

छोडके बैर मिले सब प्यारसों, भया सकल में जै जै कार ॥ १२

सारी सृष्टि एक होकर एक ही ब्रह्मका भजन तथा गुणगान करने लगी। सभीका खान-पान-गान एवं व्यवहार एक-सा हो गया। परिणाम स्वरूप वैरभावको छोड़कर सभी प्रेमसे मिले। तब सारी सृष्टि जय-जयकारकी ध्वनिसे गूँज उठी।

मिलके साथ आवे दौडता, मिले सकुंडल सकुमार ।

निज धामसे आईं सखियां, जुथ चालीस सहस्र बार ॥ १३

खेलें मिलके रास जागनी, भेलें इहां से चौबीस हजार ।

करसी लीला वरस दस तोडी, हांस बिलास आनन्द अपार ॥ १४

सब सुन्दरसाथ भाव विभोर होकर दौड़ते हुए आने लगे। विशेष सखियाँ साकुण्डल और सकुमार भी यहाँ मिलेंगी। परमधामसे चालीस जुथ बारह हजार सखियाँ खेल देखनेके लिए संसारमें अवतरित हुई हैं। उक्त बारह हजार ब्रह्मप्रियाओं एवं अक्षरधामसे चौबीस हजार कुमारिकाओंकी सुरताएँ सब मिलकर यहाँ पर एक साथ जागनी रास खेलेंगी। इस प्रकार दश वर्ष पर्यन्त यह लीला चलेगी। इससे सभीको अपार आनन्द विलासका अनुभव होगा।

ब्रज लीला लीला रास माहें, हम खेलें जानके जार ।

जागनी लीला जाग पेहेचान, पीउसों जान बिलसे करतार ॥ १५

ब्रज और रासमें हम सब सखियोंने श्रीकृष्णजीके साथ मित्र (यार) भावसे प्रेमानन्दकी लीलाएँ कीं। अब इस जागनी लीलामें तारतम ज्ञान द्वारा जागृत होकर पूर्णब्रह्म परमात्माको अपने प्रियतम धनी पहचान कर उनके साथ अनन्यभावसे आनन्द-विलास करती हैं।

सबदातीत निध ल्याए सबद में, मेट्यो सबनको अंधकार ।

तीसैं सृष्टि विस्नु सौ वरसे, प्रेमें पीवेगा सबदों का सार ॥ १६

इस प्रकार बुद्धजीने अक्षरातीत परमात्माकी शब्दातीत निधिको शब्दोंके माध्यमसे वर्णन कर सब लोगोंका अज्ञानरूप अन्धकार दूर किया। तीस

वर्षोंमें यह सुन्दरसाथ और सौ वर्षोंमें भगवान विष्णुकी सृष्टि भी इस ज्ञानके द्वारा पूर्णब्रह्म परमात्माके अखण्ड प्रेमका अनुभव करेगी.

**विष्णुको पोहोँचाए ठौर अक्षर हिरदे, बुधजी देएंगे खोल के द्वार ।**

**अखंड ब्रह्मांड वरस पचास पीछे, रहेसी हिरदे में खुमार ॥ १७**

भगवान विष्णुको अपने मूल स्थान अक्षरब्रह्मके हृदयमें पहुँचाकर बुद्धजी समस्त विश्वके लिए मुक्तिके द्वार खोल देंगे. जागनीका यह ब्रह्माण्ड अक्षर ब्रह्मके हृदयमें अखण्ड होनेके पश्चात् पचास वर्षतक सुषुप्ति अवस्था (खुमारी) रहेगी.

**किया जमा सब सबदों का, धोए हाथ और हथियार ।**

**होसी नेहेचल सुख चौदे लोकों, हम देखें खेल कारन इन बार ॥ १८**

सब धर्म ग्रन्थोंका सार श्री तारतमसागरमें समाहित हुआ. बुद्धजीने इस मायाके साथ युद्धमें विजयी बनकर हाथ और हथियार धोए अर्थात् सभी कार्य पूर्ण किए. अब चौदह लोकोंमें अखण्ड सुखका विस्तार होगा, क्योंकि इस बारका यह खेल हम ब्रह्मात्माओंने देखा है.

**महामत जागसी साथजी भेलें, जहां बैठें मिने दरबार ।**

**हम उठके आनंद करसी झीलना, हंस हंस करसी सिनगार ॥ १९**

महामति कहते हैं, ब्रह्मात्माएँ परमधाममें एक साथ जागृत होंगी, जहाँ पर वे मूलमिलावामें श्रीराजजीके चरणोंमें बैठी हुई हैं. पश्चात् एक साथ उठकर स्नान करेंगी और हँसते-हँसते शृङ्गार करेंगी.

**तीन ब्रह्मांड लीला तीन अवस्था, खिनमें देखे खेले संग आधार ।**

**धनी मैं अरधांग साथ अंग मेरा, इन घर सदा हम नित विहार ॥ २०**

इस प्रकार हमने तीनों ब्रह्माण्डों (व्रज, रास और जागनी) की तीनों लीलाओंको तीन अवस्था (बाल, किशोर और वृद्ध अथवा निद्रा, अर्धनिद्रा और जागृत) में आत्माके आधार स्वरूप प्रियतम धनीके साथ रहकर क्षणमात्रमें देखा. पूर्णब्रह्म परमात्मा मेरे धनी हैं. मैं उनकी अर्धाङ्गिनी हूँ.



सुन्दरसाथ मेरा अङ्ग है. मूल वतन परमधाममें हम सब आनन्दपूर्वक नित्य विहार करती हैं.

## प्रकरण ५४ चौपाई ५८५

### आगमवाणी-राग धवल

आए आगम वानी इत मिली, विस्व मुख करत बखान ।

कौल सबनके पूरन भए, आए सो पोहोंचे निसान ॥ १

महामति कहते हैं, निष्कलङ्कबुद्धावतार होने पर विश्वके सभी भविष्यवक्ताओंकी भविष्यवाणी साकार हुई. विश्वके महान पुरुषोंने भी अपनी-अपनी वाणीमें बुद्धावतारकी प्रशंसा की है. सभीके कथन सत्य सिद्ध हुए एवं बुद्धजीके प्राकट्यके सभी चिह्न स्पष्ट हो गए.

चेतो सबे सत बादियो, सुनियो सो सतगुरु मुख वान ।

धनी मेरा प्रभु विस्व का, प्रगटिया परवान ॥ २

हे सत्यवादियो ! सद्गुरुके इन वचनोंको ध्यानपूर्वक सुनो. मेरे धनी पूर्णब्रह्म परमात्मा विश्वके समर्थ स्वामी हैं, वे निर्धारित समय पर प्रकट हो गए हैं.

आगमी सब खडे हुए, दिन बोहोत रहे थे गोप ।

आए धनी मेले मिने, प्रगटी है सत जोत ॥ ३

बुद्धजीके प्रकट होने पर सभी भविष्यवेत्ता भी अपनी वाणीको सिद्ध होती हुई देखनेके लिए सामने आ गए, क्योंकि वे इतने दिनों तक छिपे हुए थे. धामधनी पूर्णब्रह्म परमात्मा हरिद्वारके कुम्भ मेलेके समय जागृत ज्ञान लेकर पधारे हैं और उनके अखण्ड ज्ञानका प्रकाश चारों ओर फैल गया है.

पेहेले मंडल में मागी मुझे, सो आए व्याही इत ।

कौल किया लिख्या सास्त्रों में, सो आए पोहोंची सरत ॥ ४

प्रथम अवतरणके समय व्रजमें धामधनी श्रीकृष्णजीके साथ मेरी सगाई हुई थी अर्थात् मात्र सम्बन्ध ही स्थापित हुआ था (पूर्ण पहचान नहीं हुई थी). इस जागनी लीलामें सद्गुरुके रूपमें पधारकर धामधनीने पूर्ण पहचान

करवाई और मुझे अङ्गनाके रूपमें स्वीकार किया। धामधनीके प्रकट होनेका यह समय शास्त्रोंमें लिखा गया था। तदनुसार प्रकट होकर उन्होंने अपने वचन पूर्ण किए।

**मैं जो आई व्याहन दुलहे को, दुलहा आए मुझ कारन ।**

**बांधे पालवसों पालव, पाट बैठे दुलहा दुलहिन ॥ ५**

धामधनीकी पहचान (विवाह) के लिए मेरा (तथा सभी ब्रह्मात्माओंका) इस संसारमें आना हुआ और धामधनी भी हमारे लिए ही सद्गुरुके रूपमें पधारे हैं। जैसे विवाहमें वर और वधुका पालव बाँधा जाता है, उसी प्रकार धामधनीके साथ हमारा आत्मिक सम्बन्ध बँध गया और वे स्वयं मेरे हृदयरूपी आसन पर बैठ गए।

**सत पर सत दोऊ परवत, तोरन बांधे हैं बंध ।**

**बिन थलिए बिवाह हुआ, हाथों हाथ जोडे मूल सनमंध ॥ ६**

इस प्रकार सद्गुरुने प्रकट होकर सत्य-अक्षरधाम तथा उससे भी परे अक्षरातीत परमधामके साथ सम्बन्ध (तोरण बन्ध) कर दिया। सद्गुरुने मेरे हृदय पटल पर (अन्य बाह्यस्थानमें नहीं) विराजमान होकर परमधामके मूल सम्बन्धको जोड़ दिया अर्थात् पहचान करवाई।

**मंडल अखंड में मांडवा, चोरी थंभ रोपे हैं चार ।**

**सो थंभ थापे थिर कर, कहूं सो तिन को प्रकार ॥ ७**

**एक ब्रज दूजो रास को, दूजे दोए इन वैराट ।**

**चारों थंभों चोरी रची, रच्यो सो नेहेचल ठाट ॥ ८**

अखण्ड मण्डलमें चार स्तम्भ स्थिर कर मण्डप तैयार किया। इस प्रकार बड़ी दृढ़तासे स्थिर (स्थापित) किए हुए चार स्तम्भोंका विवरण कहता हूँ। एक स्तम्भ ब्रजमें, दूसरा रासमें और अन्य दो स्तम्भ इस जागनीके ब्रह्माण्डमें (नवतनपुरी और पद्मावतीपुरीमें) स्थापित कर चारों स्तम्भोंका मण्डप अखण्ड सामग्रियोंके साथ सुसज्जित किया गया अर्थात् इन चारों स्थानोंमें अद्वैत अखण्ड धामके स्वरूपोंकी अद्वितीय लीलाएँ हुईं।

एक बेर एक मांडवे, मोर बांधियो सीस ।

व्याही बारे हजार को, और हजार चौबीस ॥ ९

एक ही मुहूर्तमें एक ही मण्डपमें मस्तक पर मोर मुकुट धारण कर श्रीकृष्णजीने एक साथ बारह हजार ब्रह्मप्रियाओं तथा चौबीस हजार कुमारिकाओंका वरण किया।

तीन फेरे दुलहे पीछे फिरी, चौथे फेरे आगल भई ।

अब ए लीला सब गावसी, सब मिल करि है सही ॥ १०

ब्रज, रास और जागनी लीलाके प्रथम चरणमें धामधनीकी अङ्गनाके रूपमें तीनों बार मैं उनके पीछे रही। चौथी बार जागनी रासमें मुझे आगे होना पड़ा। अब इस लीलाकी महिमा सब लोग गाएँगे, क्योंकि सभी ब्रह्मात्माओंने मिलकर यह लीला की है।

और कागद सब उड गए, उड्यो सबों को अग्यान ।

पसरयो प्रकास जो पीउ को, ब्रह्मसृष्टि प्रगट भई पेहेचान ॥ ११

परा विद्या अर्थात् तारतम ज्ञानके प्रकट होने पर अपरा विद्या अर्थात् बाह्य कर्मकाण्डके लौकिक ज्ञान ग्रन्थोंका महत्त्व घट गया। लोगोंके हृदयसे अज्ञानरूप अन्धकार मिट गया। सर्वत्र धामधनीके अखण्ड ज्ञानका प्रकाश फैल गया, जिससे ब्रह्मसृष्टिकी पहचान प्रकट हुई।

ठौर ठौर थाने दिए, मेला हुआ है मधदेस ।

छत्रपति नमे नेहसों, राए राने पृथवी के नरेस ॥ १२

नवतनपुरीके पश्चात् विभिन्न स्थानों पर धर्मस्थान (मन्दिरों) की स्थापना हुई। मध्य देश (पन्ना) में ब्रह्मात्माएँ एकत्रित होंगी तथा जागनी रास (मेला) होगा। छत्रपति, सम्राट, राजा, नरेश ये सब बुद्धजीके ज्ञानसे प्रभावित होकर प्रेमपूर्वक नमन करने लगे।

बैठे सिंघासन सिर छत्र, वैराट वरती हैं आन ।

मुकट मनी ढोलें चमर, नवखंड घुरे है निसान ॥ १३

बुद्धजी सत्यधर्मके सिंहासन पर आसीन होकर सभीके शिरछत्र बने। समग्र

ब्रह्माण्डमें उनका आदेश चलने लगा. बड़े-बड़े मुकुटधारी नरेश आकर चँवर ढुलाने लगे. नवों खण्डोंमें बुद्धजीके प्राकट्यके समाचार गूँजने लगे.

**जोत जागृत बुध जोर हुई, सत वानी कियो है विस्तार ।**

**कार्लिंगा कुली मारिया, सत सुख वरत्यो संसार ॥ १४**

जागृत बुद्धि द्वारा अखण्ड ज्ञानकी प्रखर ज्योतिका सर्वत्र विस्तार हुआ. अज्ञानरूपी कलियुगका संहार हुआ और संसारमें सत्य सुखका प्रचार-प्रसार हुआ.

**पेहलाद जुधिष्ठिर वसुदेव, बलि रुकमांगद हरिचंद ।**

**सगाल दधीच मोरध्वज, कसनी कर छूटे या फंद ॥ १५**

परमात्माको स्वीकार कर प्रह्लादने पिताके अत्याचारोंसे मुक्ति पाई. इसी प्रकार युधिष्ठिर, वसुदेव, बलिराजा, रूकमाङ्गद, हरिश्चन्द्र सगाल, दधीचि, मयुरध्वज आदि महापुरुष भी अनेक कष्ट सहन कर संसारके बन्धनोंसे मुक्त हुए.

**सतबादी नाम केते लेऊं, कै हुए तरन तारन ।**

**सत न छोड्या कै दुख सहे, सो या दिनके कारन ॥ १६**

मैं ऐसे सत्यवादियोंके कितने नाम लूँ. जो भवसागरसे तरने और तारने वाले हुए हैं. उन्होंने अनेक कष्ट सहन किए किन्तु सत्यको कभी नहीं छोड़ा. यह सब इसी दिनकी प्रतीक्षाके लिए ही था.

**जोगारंभ कर देह रखी, नवनाथ जाए बसे वन ।**

**सिध चौरासी और कै जोगी, सो भी कारन या दिन ॥ १७**

योगी, ऋषि-मुनि और तपस्वियोंने योग साधना द्वारा अपनी देहको टिकाए रखनेका प्रयास किया, नवनाथ वनमें जाकर बसे. गच्छ चौरासी अथवा अनेक सिद्धोंने भी अनेक प्रकारके दुःख सहन किए. ये सभी साधनाएँ इसी दिनकी प्रतीक्षाके लिए थीं.

असुर केते कहूं पीर कै, केते कहूं पैगंमर ।

आए मिल इत सब कोई, जेता कोई भेष धर ॥ १८

आसुरीवृत्तिवाले (सम्प्रदायके) लोगोंके कितने नाम गिनाऊँ ? उनमें भी बड़े-बड़े पीर, पैगम्बर हुए हैं. इनके अतिरिक्त अन्य वेशधारी लोग भी यहाँ आकर इसी सत्यमार्ग पर सम्मिलित हुए.

वरनावरन बादे लडते, ब्रोध न छोडता कोए ।

चाल असत की चलते, हिंदू मुसलमान दोए ॥ १९

भिन्न-भिन्न धर्म, सम्प्रदाय और पन्थके लोग झूठे वाद-विवाद खड़े कर लड़ते रहे और परस्पर विरोधको छोड़नेके लिए तैयार नहीं हुए. इस प्रकार हिन्दू या मुसलमान दोनों ही असत्य मार्गकी ओर बढ़ रहे थे.

बाघ बकरी एक संग चरें, कोई न करे किसीसों बैर ।

पसू पंखी सुखे चरें चुगें, छूट गयो सबको जेहेर ॥ २०

ऐसी स्थितिमें बुद्धजीके आगमनसे अखण्ड ज्ञान प्राप्त कर इन लोगोंने विरोध करनेकी वृत्ति छोड़ दी. फलतः बलवान् और निर्बल (बाघ-बकरी) सभी एक दूसरेके साथ मिलकर चलने लगे. कोई भी किसीसे शत्रुता नहीं रखते. इतना ही नहीं पशु-पक्षी भी निर्भय होकर एक साथ चरने और चुगने लगे. सबका आपसी बैरभाव (जहर) उतर गया.

सनमुख सब एक रस भए, भाग्यो सो विस्वको ब्रोध ।

घर घर आनंद उछव, कुली पोहोरो काढ्यो सबको क्रोध ॥ २१

बुद्धजीके सम्मुख आकर सब लोग एक दूसरेके साथ एक रस बनकर प्रेम भावनासे रहने लगे. इस प्रकार समग्र संसारसे विरोधी वृत्ति हट गई. घर-घर उत्साह पूर्वक आनन्द मङ्गलके गीत गाए जाने लगे और कलियुगके दुर्गुण-अहङ्कार, क्रोध, मद आदि दूर हो गए.

धनी आए मेरे लाड पालने, वतन पार के पार ।

कारज कारन महाकारन से, न्यारी हों इन पीउकी नार ॥ २२

मेरे धनीजी मेरी इच्छाएँ पूरी करनेके लिए अक्षरसे भी परे दिव्य परमधामसे

इस जागनीके ब्रह्माण्डमें पधारे हैं. इस प्रकार ऐसे अक्षरातीत धनीकी अङ्गना मैं इस संसार (कार्य) से परे इच्छा शक्ति (कारण) तथा आदिनारायण (महाकारण) से न्यारी (अलग) हूँ.

**ए बात पोहोंची जाए वैकुण्ठ, बुधजीएं उडायो उनमान ।**

**सुक सिव सन ब्रह्मा नमे, नमे विस्नु लखमी नारायन ॥ २३**

बुद्धजीके प्राकट्यके समाचार वैकुण्ठ पर्यन्त फैल गए. बुद्धजीने चौदह लोकोंमें व्याप्त अनुमानित ज्ञानको उड़ा दिया. इसके कारण शुकदेवमुनि, शिव, ब्रह्मा, विष्णु, लक्ष्मी-नारायण आदि सभीने बुद्धजीको नमन किया.

**मुक्ति दै सब जीवों को, पावें पसू पंखी नर नार ।**

**होसी वैराट ए धन धन, सुख आनंद अखंड अपार ॥ २४**

बुद्धजीने प्रकट होकर अपने ज्ञानके प्रतापसे संसारके सभी जीवों-पशुपक्षी, नर-नारीको मुक्ति स्थलोंका सुख प्रदान किया जिससे अब यह ब्रह्माण्ड ही धन्य-धन्य हो जाएगा और प्राणीमात्रको अखण्ड सुख प्राप्त होगा.

**ए नेक करी मैं इसारत, याको आगे होसी बडो बिस्तार ।**

**थोडे से दिन में देखोगे, वरतसी जै जै कार ॥ २५**

यहाँ तो मात्र सङ्केत ही किया है. भविष्यमें इसका बड़ा विस्तार होगा. अब उसके प्रभावका क्षेत्र बढ़ेगा. इसके द्वारा लोग मुक्ति प्राप्त कर सकेंगे. आप सब थोड़े ही समयमें देखोगे कि समग्र संसारमें जय-जयकार हो जाएगी.

**साथ सुनो एक वचन, आवे बाई सकुण्डल सकुमार ।**

**रास खेल घर चलसी, भेले इन भरतार ॥ २६**

हे सुन्दरसाथजी ! एक बात ध्यानपूर्वक सुनो, जब साकुण्डल और साकुमार जैसी अग्रणी सखियाँ जागृत होकर आएँगी, तब जागनी रास पूर्ण कर हम सभी ब्रह्मात्माएँ धनीजीकी आज्ञासे एक ही साथ मूल घर परमधाम जाएँगी अर्थात् परमधाममें जागृत होंगी.

कहें महामत ए सो खेल, जो तुम माग्या था चित दे ।

देख खेल हंस चलसी, घर बातां करसी ए ॥ २७

महामति कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी ! यह मायाका वही झूठा खेल है जिसकी माँग तुम सबने हृदयसे की थी. इसलिए इस झूठे खेलका अनुभव कर हम सब हँसते खेलते अपने मूल वतन परमधाम जाएँगी (जागृत होंगी) और परमधाममें इस झूठे खेलकी बातें भी करेंगी.

प्रकरण ५५ चौपाई ६१२

राग वसंत : भई नई रे नवों खंडों आरती

श्री विजिया अभिनंदकी आरती, प्रेम मगन होए उतारती ।

सखी आप पिया पर वारती, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥ १

(स्वामी श्रीप्राणनाथजीने वि. सं. १७३५ में हरिद्वारके कुम्भ मेले पर सभी धर्म सम्प्रदायोंके आचार्योंके साथ धर्मचर्चा कर विजय प्राप्त की. सर्वत्र छाए हुए आनन्दको प्रकट करते हुए स्वामीजी कहते हैं) नवों खण्डोंमें विजयाभिनन्दबुद्धजीकी आरती नए ढङ्गसे उतारी जा रही है. प्रेममग्न होकर सुन्दरसाथ आरती कर रहे हैं और अपने प्रियतम पर सर्वस्व न्योछावर कर रहे हैं.

दुष्टई सबोंकी संघारती, सुख अखंड आनन्द विस्तारती ।

जन सचराचर तारती, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥ २

बुद्धजीके अखण्ड ज्ञानकी ज्योति द्वारा सबके मनसे दुष्ट भावनाओं (नास्तिक विचारों) का नाश होने लगा और सबके हृदयमें धामधनीके प्रति प्रेम तथा अखण्ड सुखका आनन्द छाने लगा. संसारके चर-अचर (सचराचर) प्राणीमात्रको मोक्षका मार्ग प्राप्त हो गया. इसलिए नवों खण्डोंमें नवीन रीतिसे आरती उतारी गई.

सैयां सब सिनगार साजती, मिने सूरत पियाकी विराजती ।

ए सोभा इतही छाजती, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥ ३

ब्रह्मप्रियाएँ भी प्रेम विश्वास आदि अलौकिक गुणोंका शृङ्गार सजाकर अपने

हृदयमें धामधनीकी छवि स्थापित करती हैं. बुद्धजीकी यह अद्वितीय शोभा सर्वत्र छा रही है. इसलिए नवों खण्डोंमें नई रीतिसे उनकी आरती उतारी गई.

**झालर अगनित बाजे ले बाजती, ब्रह्माड में नौबत गाजती ।**

**कलियुग सेना सुन भाजती, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥ ४**

लोगोंके मनमें प्रेमका आवेग तीव्र गतिसे उभरने लगा. सब लोग झालर-घण्टनाद और विभिन्न प्रकारके वाद्ययन्त्रोंको बजाने लगे. सारे ब्रह्माण्डमें नौबत-नगाड़े बजाकर धनीजीके गुणोंकी प्रशंसा होने लगी. उसे सुनकर कलियुगके लोगोंकी आसुरीवृत्ति दूर हो गई. इसलिए नवों खण्डोंमें नवीन पद्धतिसे आरती उतारी गई.

**सप्त धातु सुन मंडल थाल, निरंजन जोत भई उजाल ।**

**झलहलिया इत नूरजमाल, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥ ५**

उस समय (चर्म, अस्थि, माँस, रक्त, मज्जा, रग, शुक्र इन) सात धातुओंसे बने हुए शरीरकी हृदयरूपी थालमें धामधनीकी ज्ञानज्योति प्रकाशित हो रही थी. इसलिए नूरके पुञ्ज स्वरूप पूर्णब्रह्मका स्वरूप झिलमिला उठा. इस प्रकार नवों खण्डोंमें नवीन रीतिसे आरती उतारी गई.

**पसरी दया प्रगटे दयाल, काटे दुनीके करम जाल ।**

**चेतन व्यापी भए निहाल, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥ ६**

पूर्णब्रह्म परमात्मा कृपानिधि प्रकट हुए. उनकी कृपाका सर्वत्र विस्तार हुआ, संसारको कर्मकाण्डके बन्धनोंसे मुक्ति मिली. संसारके सभी जीव आनन्दित हुए. इस प्रकार नवों खण्डोंमें आरती उतारी गई.

**सेन्या सहित आए त्रिपुरार, आए ब्रह्मा पढत मुख वेद चार ।**

**विष्णु बोलत बानी जै जै कार, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥ ७**

[शास्त्रोंके नियमानुसार जो कोई भी परमात्माकी दिव्य शक्ति संसारमें अवतरित होती है, उस समय देवी-देवता और अन्य शक्तियाँ किसी न किसी रूपमें अपने गणोंके साथ आती हैं और उस दिव्य शक्तिकी



लीलाओंका अनुभव कर स्वयंको धन्य-धन्य मानती हैं। साथ ही उनके उपासक गण भी धन्य-धन्य हो जाते हैं। ये चौपाईयाँ भी इसी भावको प्रकट करती हैं-]

बुद्धजीके दर्शनोंके लिए त्रिपुरारी शिवजी अपनी सेना सहित पधारे। ब्रह्माजी भी चार वेदोंका गान करते हुए पधारे। भगवान विष्णु भी दर्शन पाकर जय-जयकार कर रहे हैं। इस प्रकार नवों खण्डोंमें अपूर्व आरती हो रही है।

**आए धरमराए और इन्द्र वरुन, नारद मुनि गंधर्व चौदे भवन ।**

**सुर असुरों सबों लई सरन, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥ ८**

धनीजीके अखण्ड ज्ञानकी ज्योतिसे आकर्षित होकर धर्मराज, इन्द्र, वरुण, नारद और चौदह लोकोंके मुनिजन, गन्धर्व तथा उनके उपासक भी आकर उस धर्म सभामें सम्मिलित हुए। सुर, असुर वृत्तिके सब लोग भी पूर्णब्रह्म परमात्माकी शरणमें आए। इस प्रकार नवों खण्डोंमें अपूर्व आरती हुई।

**आए सनकादिक चारों शंभ, लिए खडे संग विष्णु ब्रह्मांड ।**

**जो ब्रह्म अनुभवी भए अखंड, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥ ९**

संसारको धारण करने वाले शेषशायी भागवान विष्णुके साथ संसारमें ज्ञानके चारों स्तम्भ माने जाने वाले ब्रह्माजीके मानस पुत्र- सनक, सनातन, सनन्दन, सनत्कुमार भी आए जो संसारमें सर्वाधिक ब्रह्मानुभवी माने जाते हैं। इस प्रकार नवों खण्डोंमें अपूर्व आरती हुई।

**जिन हृद कर दर्ई नवधा भगत, जुदी कर गाई पाई प्रेम जुगत ।**

**यों आए सुक व्यास बडी मत, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥ १०**

श्रीमद्भागवतमें प्रचण्ड बुद्धि सम्पन्न शुकदेवजी तथा व्यासजीने नवधा भक्तिको सीमित मानकर अनन्य प्रेमलक्षणा भक्तिको सर्वोच्च स्थान पर स्थापित करते हुए बताया कि प्रेमलक्षणा भक्ति द्वारा ही पूर्णब्रह्मकी प्राप्ति होती है। इस प्रकार भक्तिका निरूपण करनेवाले आचार्य भी अखण्ड ज्ञानको समझकर धामधनी पर श्रद्धा रखने लगे। इसलिए नवों खण्डोंमें विशिष्ट प्रकारसे आरती हुई।

आए नवनाथ चौरासी सिध, बरस्या नूर सकल या विध ।

इत आए बुधजी ऐसी किध, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥ ११

उस समयके प्रचलित नवनाथके अनुयायी, चौरासी सिद्धोंके अनुयायी आदि भी आकर शरणागत हुए. इस प्रकार बुद्धजीकी वाणीका प्रकाश सर्वत्र फैल गया, बुद्धजीने संसारमें आकर ऐसा महान कार्य किया जिसके कारण नवों खण्डोंमें उनकी अपूर्व आरती हुई.

आए चारों संप्रदा के साधु जन, चार आश्रम और चार वरन ।

चारों खूटोंके आए गावते गुन, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥ १२

रामानुज, निम्बार्क, विष्णुश्याम एवं मध्व इन चारों सम्प्रदायोंके साधुजन, चारों आश्रम तथा चारों वर्णके लोग चारों दिशाओंसे आकर धनीजीके गुणोंका गान कर रहे हैं. इस प्रकार नवों खण्डोंमें नवीन ढङ्गसे आरती उतारी गई.

आए गछ चौरासी जो अरहंती, दतजी दसनामी जो महंती ।

आए करम उपासनी वेदांती, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥ १३

उस समय ऋषभदेव प्रस्थापित जैन सम्प्रदायके ८४ गच्छके अनुयायी-अरिहन्ती, दत्तात्रयके अनुयायी, दशनामी संन्यासी, वेदान्ती विद्वान, कर्मकाण्डी भी आए और बुद्धजीके ज्ञानसे प्रभावित होकर पूर्णब्रह्म परमात्माकी उपासनाने संलग्न हुए. इस प्रकार नवों खण्डोंमें आरती हुई.

आए षट दरसन षट सास्त्र भेदी, बहतर फिरके आए अथर्व वेदी ।

आए सकल कैदी और बेकैदी, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥ १४

उस ज्ञान मेलेमें छः दर्शनशास्त्र-सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्तको मानने वाले तथा उनको न मानने वाले-चारवाक, जैन, माध्यमिक आदि तथा बहतर फिरकोंमें बटे हुए मुस्लिम आदिके साथ अथर्ववेदी कर्मकाण्डको मानने वाले और न माननेवाले भी मेलेमें आकर बुद्धजीके ज्ञानसे प्रभावित हुए. इस प्रकार नवों खण्डोंमें नवीन ढङ्गसे आरती हुई.

बुधजीकी जोतें कियो प्रकास, त्रैलोकी को तिमर कियो नास ।

लीला खेलें अखंड रास विलास, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥ १५

इस प्रकार बुद्धजीके ज्ञानकी ज्योतिका प्रकाश चारों ओर प्रसारित हो गया,

जिसके द्वारा तीनों लोकोंका अन्धकार दूर हुआ. सब आनन्दमें आकर जागनी रास लीलाके अखण्ड आनन्दमें विहार (विलास) करने लगे. इस प्रकार नवों खण्डोंमें आरती हुई.

पिया हुकमें गावे महामत, उडाए असत थाप्यो सत ।

सब पर कलस हुआ आखरत, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥ १६

धनीजीकी आज्ञासे महामति आरतीका गान करते हैं. बुद्धजीने प्रकट होकर संसारके अज्ञान अन्धकार (असत्य) को दूर कर सर्वत्र सत्यकी स्थापना की, जिसके कारण अन्त समयमें सब शास्त्रोंके ज्ञानसे भी ऊपर सर्वश्रेष्ठ कलशके समान यह तारतम ज्ञान प्रतिष्ठित हुआ. इस प्रकार नवों खण्डोंमें नवीन ढङ्गसे आरती उतारी गई.

प्रकरण ५६ चौपाई ६२८

भोग-राग काफ़ी

कृपानिध सुंदरवर स्याम, भले भले सुंदरवर स्याम ।

उपज्यो सुख संसार में, आए धनी श्री धाम ॥ १

श्री श्यामाजीके वर श्याम-श्रीराजजी कृपाके सागर तथा अत्यन्त सुन्दर हैं. ऐसे धामके धनीके प्रकट होने पर संसारमें अखण्ड सुखका उदय हुआ.

प्रगटे पूरन ब्रह्म सकल में, ब्रह्म सृष्टि सिरदार ।

ईश्वरी सृष्टि और जीव की, सब आए करो दीदार ॥ २

ब्रह्मसृष्टियोंकी शिरोमणि श्यामाजी पूर्णब्रह्मका आवेश लेकर इस संसारमें सद्गुरुके रूपमें पधारी हैं. ईश्वरीसृष्टि एवं जीवसृष्टि सभी आकर उनके दर्शन करें.

नित नए उछव आनंद में, होत किरंतन सार ।

वैस्नव जो कोई षट दरसनी, आए इष्ट आचार ॥ ३

धामके सुन्दरसाथ नित्य नवीन उत्साहके साथ धनीजीके गुणानुवादके लिए कीर्तनोंका गान कर आनन्द मङ्गलके साथ उत्सव मनाते हैं, वैष्णव, षट्दर्शनके ज्ञाता और विभिन्न इष्टों तथा आचारको मानने वाले लोग भी

दर्शनके लिए आने लगे.

**भोजन सरवे भोग लगावत, पांच सात अनं पाक ।**

**मेवा मिठाई अनेक अथाने, विध विध के बहु साक ॥ ४**

सभी मिलकर मेवा-मिठाई पक्वान्न सहित विभिन्न प्रकारकी सामग्रियाँ, भाँति-भाँतिके अचार, नाना प्रकारके शाक तैयार कर धामधनीको भोग लगाते हैं. [पाँच-सातका तात्पर्य छप्पन्न प्रकारका व्यञ्जन (भोग) और एक जल इस प्रकार सतावन (५७) प्रकारके भोग भी माना जाता है].

**अठारे बरन नर नारी आए, साजे सकल सिनगार ।**

**प्रेम मगन होए गावें पिया के, धवल मंगल चार ॥ ५**

अठारह वर्णके स्त्री-पुरुष सुन्दर वस्त्राभूषणसे सजकर आते हैं. धनीजीके प्रेमानन्दमें मग्न होकर, धामधनीके गुणानुवादके साथ विविध गीतों, मङ्गलाचरणका गान करते हैं.

**कै गंधर्व गुन गावें बजावें, कै नट नाचनहार ।**

**कै रिषी मुनी वेद पढत हैं, वरतत जै जै कार ॥ ६**

कई सङ्गीतशास्त्री (गन्धर्व), गवैया विभिन्न प्रकारके वाद्ययन्त्रोंकी सुन्दर सुरावलीके साथ धनीजीके गुणोंका गान करते हैं, नर्तक नृत्य करते हैं, ऋषि-मुनि वेद मन्त्रोंका पठन-पाठन करते हैं, इस प्रकार सर्वत्र जय-जयकार होती है.

**जब की माया ए भई पैदा, ए लीला न जाहेर कब ।**

**ब्रज रास और जागनी लीला, ए जो प्रगटी अब ॥ ७**

जबसे यह माया (मायावी खेल) उत्पन्न हुई है, तबसे आज तक यह ब्राह्मी लीला प्रकट नहीं हुई थी. अब यह लीला ब्रज, रास और जागनीके रूपमें नवतनपुरीमें प्रकट हो गई है.

**चारों तरफों चौदे लोकों, ए सुध हुई सबों पार ।**

**बाजे दुंदभी भई जीत सकल में, नेहेचल सुख बेसुमार ॥ ८**

चौदह लोकोंकी चारों दिशाओंमें ब्राह्मी लीलाकी सुधि हुई, चारों ओर

विजयकी दुन्दुभी बजने लगी, सर्वत्र विजय पताका फहराने लगी. इस प्रकार सभीको अपार तथा अखण्ड सुखका अनुभव हुआ.

**जोत उदोत कियो त्रिलोकी, उड्यो मोह तत्व अंधेर ।**

**वरस्यो नूर वतन को, जिन भान्यो उलटो फेर ॥ ९**

धनीजीके अखण्ड ज्ञानकी ज्योतिका प्रकाश तीनों लोकोंमें फैल जानेसे मोह तत्त्वका अन्धकार मिट गया. परमधामके दिव्य ज्ञानके तेज (नूर) की वर्षा हुई, जिससे आवागमनरूपी मायावी बन्धनोंका नाश हो गया.

**प्रगटे ब्रह्म और ब्रह्मसृष्टि, और ब्रह्म वतन ।**

**महामत इन प्रकास थें, अखंड किए सब जन ॥ १०**

इस संसारमें पूर्णब्रह्म परमात्मा, ब्रह्मसृष्टि और ब्रह्मधाम (परमधाम) की पहचान प्रकट हो गई. महामतिने इस अखण्ड ज्ञानके द्वारा संसारके सभी जीवोंको अमरत्व प्रदान किया है.

**प्रकरण ५७ चौपाई ६३८**

**राग कटको**

**राजा ने मलो रे राणें राए तणो, धरम जातां कोई दौडो ।**

**जागो ने जोधा रे उठ खडे रहो, नींद निगोडी रे छोडो ॥ १**

[मुगलबादशाह औरङ्गजेबकी धर्मान्धता एवं हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचारको देखकर श्री प्राणनाथजीने उसे सत्य धर्म समझानेका अथक प्रयास किया. परन्तु उसके मुल्ला-काजी और अधिकारीगणके कारण वह मिल नहीं सका. तत्पश्चात् स्वामीजीने निश्चय किया कि अब राजाओंको उसके सम्मुख खड़ा कर उसके साथ युद्ध किया जाए. इसलिए वे राजा, महाराजाओंको सम्बोधित करते हुए ललकारते हैं] हे राजाओ, राणाओ, महाराजाओ ! एक मत होकर औरङ्गजेबके साथ धर्मयुद्ध करो. क्योंकि सत्य धर्मका नाश हो रहा है, इसलिए हे वीर योद्धाओ ! तुम आन्तरिक फूट, कुसङ्ग जैसी निद्राको छोड़कर धर्मकी रक्षाके लिए तत्पर हो जाओ.

छूटत है रे खडग छत्रियों से, धरम जात हिन्दुआन ।

सत न छोडो रे सत बादियों, जोर बढ्यो तुरकान ॥ २

हे क्षत्रिय वंशके शूरो ! तुम्हारे हाथोंसे तलवार छूट रही है और हिन्दू धर्मका नाश हो रहा है. मुगलोंके अत्याचारोंका जोर बढ़ रहा है इसलिए हे सत्यवादियो ! तुम अपना सत्य कर्तव्य मत छोडो.

कुलिए छकाए रे दिलडे जुदे किए, मोह अहं के मद माते ।

असुर माते रे असुराई करे, तो भी न मिले रे धरम जाते ॥ ३

कलियुगके प्रभावने सबकी बुद्धि भ्रष्ट कर दी है. सबके दिलोंमें फूट पैदा हो गई है. इसलिए सभी मोह, माया, अहङ्कार और स्वार्थके मदमें चूर हो गए हैं. दूसरी ओर आसुरीवृत्ति वाले हिन्दुओं पर अत्याचार कर रहे हैं. धर्मका नाश होते हुए देख कर तुम सब एकत्रित क्यों नहीं होते ?

त्रैलोकी में रे उत्तम खंड भरत को, तामे उत्तम हिन्दू धरम ।

ताकी छत्रपतियों के सिर, आए रही इत सरम ॥ ४

स्वर्ग, मृत्यु और पाताल इन तीनों लोकोंमें भरत खण्ड सर्वोत्तम है. उसमें भी हिन्दूधर्म सर्वोपरी है. ऐसे हिन्दू धर्मके संरक्षक राजाओंके शिर पर धर्म और देशकी रक्षाकी लाज है.

पन ने धारी रे पन इत ले चढ्या, कोई उपज्यो असुर घर अंस ।

जुध ने करने उठ्या धरमसों, सब देखें खडे राजवंस ॥ ५

किसी असुर जातिके घर दैविक शक्तिका जन्म हुआ है परन्तु विरोध भावको लेकर उसने हिन्दू धर्मका नाश करनेका व्रत लिया है तथा देश व हिन्दू धर्म पर चढ़ाई की है. उसने धर्मके विरुद्ध युद्ध करनेकी ठान ली है. ऐसी आपत्तिके समय आप सब राजवंशी खड़े-खड़े देख रहे हो !

भरत खंड रे हिन्दू धरम जान के, मांगे विस्नु संग्राम अरथ ।

फिरत आप रे ढंढेरा पुकारता, है कोई देवे रे समरथ ॥ ६

भरत खण्डमें हिन्दू धर्मकी विशिष्टता समाहित है, यह समझकर औरङ्गजेब

धर्मयुद्ध करना चाहता है और चुनौती देता है कि हिन्दूधर्ममें देवोंकी कोई शक्ति हो तो हमें दिखाओ.

**असुर सत रे धरम जुध माग ही, सुर केहेलाए जो न दीजे ।**

**पूछेंने पंडितो रे जुध दिए बिना, धरम राज कैसे कही जे ॥ ७**

आसुरी वृत्तिवाला मुगल बादशाह इस प्रकार सत्य धर्मके साथ युद्ध करना चाहता है, परन्तु सुरवृत्तिवाले हिन्दू यदि सत्य धर्मकी रक्षाके लिए तैयार न हों तो वे कैसे हिन्दू हैं ? हे पण्डितगण ! मैं आपसे भी पूछता हूँ कि धर्मयुद्ध किए बिना धर्मराज किस प्रकार कहलाएँगे ?

**राज कुली रे रखन रजवट, जो न आया इन अवसर ।**

**धरम जाते जो न दौडिया, ताए सुर कहिए क्यों कर ॥ ८**

हे राजवंशोंके अधिकारी ! यदि तुम अपने राज्योंकी रक्षाके लिए ऐसे आपातकालीन समयमें भी धर्मयुद्धमें सम्मिलित न हुए और हिन्दू धर्मको विनाशसे बचानेके लिए तत्पर न हुए, तो तुम्हें सुर (दैवी) वृत्तिवाले हिन्दू कैसे कहा जा सकता है ?

**वेद ने व्याकरणी रे पंडित पढवैयो, गछ दीन इष्ट आचार ।**

**पीछे रे बल कब करोगे, होत है एकाकार ॥ ९**

वेदोंके जाननेवाले वेदान्तियो, व्याकरणके जाननेवाले शास्त्रियो, पठन-पाठन करने वाले पण्डितो, जैनोंके गच्छाधिपतियो, धर्माचार्यों, सात्विक आचारके प्रचारको ! आप सभी विचार करें, जब सभी लोग हिन्दू धर्म छोड़कर असुर धर्म स्वीकार कर लेंगे और चारों ओर उन्हींका बोलाबाला हो जाएगा, तब आपलोग अपने पौरुषका परिचय कब देंगे ?

**सिध ने साधो रे संतो महंतो, वैस्नव भेष दरसन ।**

**धरम उछेदे रे असुरें सबन के, पीछे परचा देओगे किस दिन ॥ १०**

हे सिद्धजन ! सन्त-महन्त ज्ञानी वैष्णववेशधारी दार्शनिको ! असुर लोग सबका धर्म मिटा रहे हैं, फिर आप अपनी वीरताका परिचय कब दिखाएँगे ?

सुनियो पुकार रे स्याने संतजनों, जो न दौड्या जाते सत ।

गए ने अवसर पीछे कहा करोगे, कहाँ गई करामात ॥ ११

हे चतुर विद्वान सन्तो ! मेरी यह पुकार ध्यानपूर्वक सुनो. सत्यधर्मका विनाश हो रहा है, यदि आप इसे बचानेका अभी प्रयत्न नहीं करेंगे, तो अवसर बीत जानेके बाद क्या कर सकेंगे ? आपका सामर्थ्य और चमत्कारी शक्ति इस समय कहाँ चली गई है ?

लसकर असुरों का चहुँ दिस फैलिया, बाढयो अति बिस्तार ।

वन ने जंगल रे हिन्दू रहे परवतों, और कर लिए सब धुंधूकार ॥ १२

असुरोंकी सेनाएँ अति विस्तारके साथ चारों दिशाओंमें फैल रही हैं. इसके कारण हिन्दुओंको वन-जङ्गल और पर्वतोंमें छिप कर रहना पड़ रहा है. सर्वत्र अन्धकार छाया हुआ है.

हरद्वार ढहाए रे उठाए तपसी तीरथ, गौवध कैयों विघन ।

ऐसा जुलम हुआ जग में जाहेर, पर कमर न बांधी रे किन ॥ १३

हरिके द्वार (मन्दिर), साधनाके स्थल और तीर्थोंका नाश किया. गौवध करके अनेक विघ्न पैदा किए. इतने बड़े अत्याचार प्रत्यक्ष हो रहे हैं, फिर भी सत्य धर्मकी रक्षाके लिए कोई भी अपनी कमर बाँध नहीं रहा है !

सुर ने केहेलाए रे सेवा करे असुरकी, जो दारुबाए उडावें देहुर ।

हिन्दू नाम रे सेन्या तिनकी होए खडी, ऐसा कुलिएं किया रे केहेर ॥ १४

मुझे दुःख इस बातका है कि सात्विक वृत्तिका अधिकार जतानेवाले कई हिन्दू राजा भी आसुरीवृत्तिके मुगल बादशाहकी सेवा और चाटुता कर रहे हैं. तोपके गोले छोड़कर मन्दिरोंको उड़ा रहे हैं. हिन्दू कहलाकर असुरोंकी सेनामें खड़े हैं. हिन्दू ही हिन्दुओंको कष्ट पहुँचा रहे हैं. ऐसा अत्याचार कलियुग कर रहा है.

प्रभू प्रतिमा रे गज पांड बांध के, घसीट के खंडित कराए ।

फरस बंदी ताकी करके, तापर खलक चलाए ॥ १५

ये अत्याचारी लोग देवताओंकी मूर्तिओंको हाथीके पाँवमें बँधवाकर घसीटते



हुए उनके टुकड़े-टुकड़े कर रहे हैं और उनसे सड़कें बनवा कर उस पर चलनेके लिए हिन्दुओंको विवश करते हैं.

असुरें लगाया रे हिन्दुओं पर जेजिया, वाको मिले नहीं खान पान ।

जो गरीब न दे सके जेजिया, ताए मार करे मुसलमान ॥ १६

आसुरी वृत्तिवाले इस बादशाहने ऐसे हिन्दुओं पर 'जेजिया' नामक कर लगा दिया है जिसके पास खाने पीनेकी भी व्यवस्था नहीं है. वह इतना क्रूर है कि यदि कोई गरीब 'जेजिया' न दे सके, तो उसे मार-मारकर मुसलमान बना लेता है.

सास्त्रें आवरदा कही कलियुग की, चार लाख बत्तीस हजार ।

काटे दिन पापें लिख्या माहें सास्त्रों, सो पाड़ए अर्थ अंदर के विचार ॥ १७

शास्त्रोंमें कलियुगकी आयु चार लाख बत्तीस हजार वर्ष मानी गई है. यह भी बताया है कि आयुकी मर्यादा पाप बढ़नेके कारण घट जाएगी. अन्तर्दृष्टिसे विचार करने पर उसका रहस्य समझमें आ जाएगा.

सोले सै लगे रे साका सालिबाहनका, संवत सत्रह सै पैतीस ।

बैठा ने साका विजिया अभिनन्दका, यों कहे सास्त्र और जोतीस ॥ १८

शास्त्रोंके कथन तथा ज्योतिषियोंकी भविष्यवाणीके अनुसार, इस समय शालिवाहनकी सोलहवीं शताब्दी चल रही है और वि. सं. १७३५ चल रहा है. इसी समय विजयाभिनन्दका सम्वत् शुरु होगा.

कलियुगें चैन रे अंतके सब किए, लोक बतावें अजुं दूर अंत ।

अर्थ अन्दर का कोई न पावे, बारे अरथ बाहेर के ले डूबत ॥ १९

शास्त्रोंके कथनानुसार कलियुगके अन्त समयके सब चिह्न दिखाई दे रहे हैं अर्थात् कलियुगका अन्त निकट है. तथापि लोग ऐसा मानते हैं कि कलियुगका अन्त अभी बहुत दूर है. क्योंकि भविष्यवाणीका गूढ़ रहस्य कोई समझता नहीं है, इसलिए बाह्यार्थ द्वारा भ्रमित होकर लोग अज्ञानतामें डूबे हुए हैं.

बात ने सुनी रे बुंदेले छत्रसालने, आगे आए खड़ा ले तलवार ।

सेवा ने लई रे सारी सिर खैचके, सांझ किया सेन्यापति सिरदार ॥ २०

यह मेरी ललकारको सुनकर बुन्देला राजपूत छत्रसाल औरङ्गजेबके साथ धर्मयुद्धके लिए तलवार लेकर खड़ा हुआ। उसने हिन्दू धर्मकी रक्षा जैसी महान सेवाका उत्तरदायित्व अपने सिर पर ले लिया। इसलिए महामतिने प्रसन्न होकर इस महान वीर सेनानायकका सम्राटके रूपमें अभिषेक किया और धर्मयुद्धका सेनापति बनाया।

प्रगटे निसान रे धूमरकेत खेमास, पर सुध न करे अजू कोई इत ।

बेगे ने पधारो रे बुद्धजी या समे, पुकार कहे महामत ॥ २१

महामति कलियुगके अन्तिमचरणके चिह्नोंको उद्घाटित करते हुए कह रहे हैं कि आकाशमें धूमकेतु नामक पूच्छलतारा उदय हो चुका है। क्षयमास होनेसे एक महीना घटकर यह वर्ष ग्यारह महीनेका हुआ है। तथापि अभी तक इस बात पर कोई भी ध्यान नहीं दे रहा है। इसलिए महामति पुकार करते हैं, हे बुद्धजी ! ऐसे सङ्कटके समय आप तत्काल पधारें।

प्रकरण ५८ चौपाई ६५९

राग श्री

ऐसा समे जान आए बुद्धजी, कर कोट सूर समसेर ।

सुनते सोर सबद बाननका, होए गए सब जेर ॥ १

ऐसा समय जानकर बुद्धजी प्रकट हो गए हैं। उनके हाथमें करोड़ों सूर्योंके समान तेजस्वी (अखण्ड ज्ञानकी) तलवार है। उनके मुखसे निःसृत शब्द वाणोंकी ध्वनीसे भयभीत होकर सभी अत्यचारी पराजित हो गए हैं।

काटे विकार सब असुरों के, उडायो हिरदे को अंधेर ।

काढ्यो अहंकार मूल मोह मन को, भान्यो सो उलटो फेर ॥ २

बुद्धजीने आसुरीवृत्तिवालोंके हृदयके सब विकार (अज्ञानान्धकार) दूर कर दिए। उनके मनमें स्थित अहङ्कार और स्वार्थको हटाकर, उनकी विपरीत प्रवृत्तियोंको सत्य मार्गकी ओर मोड़ दिया।

वेद कतेबके जो अर्थ, ढांपे हुते सबों पास ।

विस्नु संग्राम मागे जो असुर, ताको कियो कोट प्रकास ॥ ३

वेद और कतेबके गुह्य रहस्य सभीसे छिपे हुए थे. ऐसे समयमें आसुरीवृत्तिवाले मुगल धर्मयुद्ध माँग रहे थे. बुद्धजीने अखण्ड ज्ञानके प्रभाव द्वारा उनका भ्रम दूर कर दिया.

तब पेहेचान भई सकल, हुए सब सर्वग्यन ।

नेहेचल सूर उग्यो निज वतनी, हुआ मन को भायो सबन ॥ ४

बुद्धजीके अखण्ड ज्ञान द्वारा संसारके मत-मतान्तर तथा संशय दूर हो जानेसे सबको पूर्णब्रह्म परमात्मा तथा अपनी आत्माका परिचय होने लगा. सब सर्वज्ञ बन गए. उनके हृदयोंमें परमधामके अखण्ड ज्ञानका सूर्य उदय हुआ और सबकी मनोकामनाएँ पूर्ण हुई.

बाललीला भई ब्रज में, लीला किसोर वृन्दावन ।

जगन्नाथ बुद्धजी जागनी, भई भोर लीला बुढापन ॥ ५

सर्व प्रथम ब्रज मण्डलमें धामधनीने बाललील की. तत्पश्चात् वृन्दावनमें किशोर लीला की. अब इस तीसरे जागनीके ब्रह्माण्डमें जगतके नाथ बुद्धजी द्वारा प्रौढ़ावस्थाके समान जागनी लीलाका प्रभात हुआ.

राजा प्रजा बाल बूढा, नर नारी ए सुमरन ।

गाए सुने ताए होवहीं, लीला तीनों का दरसन ॥ ६

राजा-प्रजा, बालक-वृद्ध, स्त्री-पुरुष कोई भी व्यक्ति यदि धामधनीकी इन लीलाओंका ध्यान, मनन, गान या श्रवण करे, तो उसे ब्रज, रास और जागनी इन तीनों लीलाओंके दर्शन हो सकते हैं.

सुर असुर सबों को ए पति, सब पर एकै दया ।

देत दीदार सबनको सांई, जिनहूं जैसा चाह्या ॥ ७

सुर-असुर (हिन्दू-मुस्लिम) सभीके स्वामी ये ही बुद्धजी हैं. वे सब पर समानरूपसे दया करने वाले महान कृपालु हैं और सभीको अपनी-अपनी भावनाके अनुरूप दर्शन देकर उनकी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं.

साहेब के हुकमें ए वानी, गावत है महामत ।

निज बुध नूर जोस को दरसन, सबमें ए पसरत ॥ ८

धामधनीकी आज्ञासे महामति यह वाणी गा रहे हैं। निजबुद्धि, जागृत बुद्धिका ज्ञान, तारतम ज्ञानका तेज एवं धामधनीके आवेश (जोश) का साक्षात्कार कर यह वाणी सबके हृदयोंमें प्रकाश फैला रही है

प्रकरण ५९ चौपाई ६६७

राग गौरी

कुली बल देखो रे, ए जो देखन आइयां तुम ।

खेल किया तुमारी खातर, सुनियो हो सृष्टि ब्रह्म ॥ १

हे ब्रह्मात्माओ ! कलियुगके प्रभावको देखो. तुम सब परमधामसे ऐसा ही झूठा खेल देखनेके लिए यहाँ आई हो. इस खेलकी रचना तुम्हारे लिए ही की गई है. तुम यह बात ध्यानपूर्वक सुनो.

अथाह थाह नहीं ऊंचा नीचा, गेहेरा गृदवाए मोहजल ।

लोक चौदे खेलें जीव याके, याको सूझे न याकी कल ॥ २

यह मोहजल (भवसागर) अथाह है. इसकी लम्बाई, चौड़ाई, और गहराईको मापा नहीं जा सकता. चौदह लोकोंके जीव इसी मोहजलमें मग्न होकर खेल रहे हैं, क्योंकि इन्हें इसकी वास्तविकता (अथाह) का ज्ञान नहीं है.

सत ढांप्या पीठ देवाई पियाको, झूठ ल्याया नजर ।

नेहेचल राज सोहाग धनी को, सो भुलाए दियो घर ॥ ३

कलियुगके मायावी अज्ञानान्धकारने सत्य वस्तुको छिपा दिया है. ब्रह्मात्माएँ भी प्रियतम धनीको पीठ देकर उनसे विमुख कर दी गई हैं और उनकी दृष्टिके समक्ष मायावी प्रपञ्च खड़े कर दिए हैं. इन मायावी प्रलोभनोंमें फँसकर हम ब्रह्मात्माओंने धनीजीके अखण्ड सुहाग तथा मूल घरको भूला दिया है.

नेहेचल घरथें आइयां खेल देखने, सत सरूप परवान ।

सो अंकूरी भूलें क्यों यामें, जाए दई पीउ पेहेचान ॥ ४

हम ब्रह्मात्माएँ तो अखण्ड घर परमधामसे यह झूठा खेल देखनेके लिए सुरताके रूपमें आई हैं। हमारा मूल स्वरूप निश्चय ही परमधाममें विराजमान है। ऐसी अङ्कुरी आत्माएँ इस झूठे खेलमें कैसे भूलेंगी, जिनको सद्गुरुने धामधनीकी पहचान करवाई है।

बिन वाए चढ्या बगरूला, सबको देखे बिन आंखे ।

खिनमें फिरबले सब लोकों, पांऊ बिना बिन पांखे ॥ ५

यह कलियुग बिना वायुकी भँवरी (बवंडर) है। यह माया नेत्रोंके बिना ही सबको देखती है। उसके पाँव अथवा पङ्खु नहीं हैं, फिर भी क्षणमात्रमें चौहद लोकोंमें फिर जाती है।

कुली दजाल अंधेर सरूपें, त्रिगुन को पाडे त्रास ।

सूर सिरोमन साध संग्रामें, पीछे पटक किए निरास ॥ ६

कलियुगरूपी दज्जाल अन्धकारका स्वरूप है। इसने तीनों गुणोंके देवता-ब्रह्मा, विष्णु, महेशको भी भयभीत कर दिया है। इसने बड़े-बड़े शूर-वीर, सन्त शिरोमणि और साधु सज्जनको युद्धमें परास्त कर निराश कर दिया है।

मोह फांस बंध दिए दुनी को, सब अंगो वस आने ।

राज करे सिर सबन के, चलावत ज्यों जित जाने ॥ ७

इस कलियुगी अज्ञानताने संसारके लोगोंको मोहके बन्धनमें डालकर उनकी सभी अङ्ग, इन्द्रियोंको वशीभूत कर लिया है। यह सबके सिर पर राज करती है तथा लोगोंको अपनी इच्छानुसार नचाती है।

प्रथम मूल से बुध फिराई, अहंमेव दियो अंधेर ।

या विध इंड रच्यो त्रैलोकी, मूलथें दियो मन फेर ॥ ८

इस कलियुगने सर्वप्रथम सभीकी बुद्धिको मूलसे ही फिराकर प्रत्येकके मनमें अज्ञान-अन्धकाररूपी अहङ्कार भर दिया। तीनों लोकोंकी रचना इस प्रकारसे

की कि मूल परमधामसे सबका मन फिरा दिया.

उदयो लोभ विषे रस विषया, सेन्या पति सैतान ।

दसों दिस आग लगाई दुनियां, सुध बुध खोई सान ॥ ९

लोभका उदय हो जानेसे लोगोंको विषयोंके प्रति रस आने लगा, जिसके कारण यह दुष्ट कलियुग गुण, अङ्ग, इन्द्रियोंका सेनापति बन बैठा. इसने संसारकी दशों दिशाओंमें विकारोंकी आग लगाई, जिससे लोग सुधि-बुद्धि खो बैठे.

बाढी व्याध स्वाद गुन इन्द्री, मद चढ्यो मोह अंध ।

माता बेहेन पुत्री गोरानी, कासों नहीं सनमंध ॥ १०

गुण, अङ्ग, इन्द्रियोंका विषयोंके स्वादका रोग बढ़ जानेसे जीव, मद एवं मोहमें अन्धा हो जाता है. इसके कारण वह माता, बहन, पुत्री तथा गुरुपत्नी आदिकी मर्यादाओंका सम्बन्ध भी भूल जाता है.

खिन सजन खिन दुसमन, दिवाना दाना प्रवीन ।

विध विध के बंध फंद डार के, सब सूर किए आधीन ॥ ११

कलियुगके प्रभावसे मनुष्य क्षणमें सज्जन, क्षणमें दुश्मन बन जाता है. झूठे सुखोंके मोहमें फँसकर कभी वह पागल बनता है तो कभी चतुर, बुद्धिमान भी बन जाता है. इस प्रकार भाँति-भाँतिके बन्धनों द्वारा यह कलियुग बड़े-बड़े शूर-वीर भक्तजनोंको भी अपने अधीन कर लेता है.

ना कछू चोर ना कोई साधू, कै डिंभके धरे ध्यान ।

तान मान सब विद्या व्याकरण, बहुरंगी बहु ग्यान ॥ १२

यहाँ पर न कोई चोर जैसा लगता है, न कोई साधु जैसा. इस कलियुगी प्रभावके कारण कई लोग आडम्बर धारण कर ध्यान लगाते हैं. सभी जन तान, मान, विद्या, व्याकरण आदिके बहुरङ्गी ज्ञानमें पड़े हुए हैं.

वेद कतेब सास्त्र सबे मुख, जुगों लिए सब जीत ।

मंत्र धात करामात माहीं, पाक उतम पलीत ॥ १३

इस कलियुगने वेद, कतेब तथा अन्य सभी धर्मग्रन्थोंको कण्ठस्थ करने

वालॉको भी जीत लिया है. इतना ही नहीं, इसने तो मन्त्र तथा रसायनके द्वारा चमत्कार दिखानेवाले पवित्र, उत्तम तथा नीच सभी लोगोंको वशीभूत कर लिया है.

**जिन अंगो मिलिए पीउसों, सोए दिए उलटाए ।**

**फेरी दुहाई वैराट चौखूंटों, कोई सिर न सके उठाए ॥ १४**

जिन अङ्गोंके द्वारा धनीजीका मिलन हो सकता है उन गुण, अङ्ग, इन्द्रियोंको कलियुगने उलटा दिया है. सम्पूर्ण विराट ब्रह्माण्डमें इसी कलियुगकी दुहाई सुनाई देती है, इसके सामने कोई भी सिर नहीं उठा सकता.

**चौदे लोक आग्याकारी, सिर सबन के हुकम ।**

**या छलने ऐसे उरझाए, आप भूली सुध घर खसम ॥ १५**

चौदह लोकोंके सभी लोग इस कलियुगके आज्ञाकारी हैं, उन सब पर इसका आदेश चलता है. इस छल-कपटयुक्त कलियुगी मायाने ब्रह्मात्माओंको भी ऐसा उलझा दिया कि वे स्वयंको, अपने मूलधरको तथा धनीजीको भी भूल गई हैं.

**केती विध कहूं कलिजुग की, अलेखें अप्रमान ।**

**वरनावरन कर मिने व्याप्या, काहूं न किसी की पेहेचान ॥ १६**

इस कलियुगी मायाके प्रभावका वर्णन कहाँ तक करूँ ? इसका विस्तार असीम है. यह तो वर्णव्यवस्थाको मानने वाले (हिन्दू) तथा वर्णव्यवस्थाको न मानने वाले (मुस्लिम) अथवा सद्गृहस्थ तथा सन्त जन सभीमें व्याप्त है. इसके कारण किसीको भी आत्मा और परमात्माकी पहचान नहीं है.

**छूटी छोलें लेहेरें पडियां बाहेर, छूट गई मरजाद ।**

**भाने भेष पंथ पैडे दरसन, ढाहे तीरथ प्रासाद ॥ १७**

जिस प्रकार तूफानके समय समुद्रका पानी मर्यादा लाँघ कर बाहर फैल जाता है, उसी प्रकार कलियुगके प्रभावके कारण भवसागरके लोग भी मर्यादाका उल्लंघन कर नश्वर सुखोंकी ओर आकृष्ट होते हैं. कलियुगके इस मायावी आकर्षणने विभिन्न मत-मतान्तरके लोगोंके वेश, पन्थ तथा दर्शन आदिको

भी मिटा दिया तथा तीर्थ स्थानों और मन्दिरोंको भी धराशायी कर दिया.

ग्रास किए त्रिगुन त्रैलोकी, ऐसो मोह अंध अहंकार ।

सुध न होवे काहूँ धाम धनी की, पोहोंचने न देवे पुकार ॥ १८

इस कलियुगी मायाने तीनों लोकोंको और तीनों गुणोंको अपना ग्रास बना लिया है. इसने झूठे मोहके अहङ्कारका ऐसा अन्धकार जमा दिया है कि किसीको भी परब्रह्म परमात्माकी पहचान नहीं हो पाती और यह परब्रह्म तक किसीकी प्रार्थनाको पहुँचने भी नहीं देती.

पोहोंचे नहीं कल बल कुली को, कोई मिने चौदे भवन ।

ऐसो महाबली ताए उडावें, बुधजी एकै खिन ॥ १९

कलियुगके इस प्रभावका नाश करनेकी शक्ति चौदह लोकोंमें किसीके पास नहीं है. ऐसे शक्तिशाली कलियुगको सर्वशक्तिमान बुद्धजी अपने अखण्ड ज्ञान द्वारा क्षणमात्रमें उड़ा देते हैं.

चलता पूर लिए दोऊ किनारे, डर धरता बुधजी का ।

मद चढ्यो करी एकल छत्री, ले बैठा सिर टीका ॥ २०

आकाश और पातालके दोनों किनारोंको छूकर बहता हुआ कलियुगका प्रवाह मात्र बुद्धजीसे ही डरता है. यह कलियुग अपने एकचक्री शासनके कारण अहङ्कारसे मदान्ध बन गया है और यह अपने सिर पर परमात्माके आदेशका टीका लगाकर सम्राट बन बैठा है.

बुधजी धनी हुकम माहें, फिरस्ता असराफील ।

तिन कान दिए सुनने आग्याको, अब हुकम को नहीं ढील ॥ २१

अब पूर्णब्रह्म परमात्माकी आज्ञासे इस्राफील फरिश्ता (अक्षरब्रह्मकी जागृत बुद्धि) भी बुद्धजीमें प्रकट हुआ है. वह परमात्माकी आज्ञा सुननेके लिए कान देकर बैठा है. अब धनीजीकी आज्ञा प्राप्त करनेमें कोई विलम्ब नहीं है.

पोहोंची पुकार सुनी धनी श्रवनों, कही कुली की सब गम ।

कलपे जुथ जान ब्रह्मसृष्टि के, मिले नूर बुध हुकम ॥ २२

इस प्रकार सर्वत्र छाए हुए कलियुगके आतङ्कसे दुःखी होकर की गई प्रार्थना



धनीजीने ध्यानपूर्वक सुनी. ब्रह्मसृष्टियोंको दुःखी देखकर उन्होंने अपने आदेश और अक्षरकी बुद्धिको एक साथ भेजा.

**उडाए अंधेर किया मिलावा, प्रकास कियो सब अंग ।**

**काढ्यो मोह अहंकार मूलथें, जो करता सबनसों जंग ॥ २३**

धनीजीने अपने अखण्ड ज्ञान द्वारा अज्ञानके अन्धकारको दूर कर सुन्दरसाथका परस्पर मिलन कराया. परिणामतः सभीके हृदयमें ज्ञानका प्रकाश फैल गया. इस ज्ञानके द्वारा मोह और अहङ्कारको समूल नष्ट कर दिया, जो सभीके साथ टकरा रहा था.

**उदयो अखंड सूर निज वतनी, भई जोत कोटान कोट ।**

**कहे महामत रात टली सबनकी, आए सब धनीकी ओट ॥ २४**

अब मूल घर परमधामके ज्ञानरूप सूर्यका उदय हुआ है. उसकी करोड़ों तेजस्वी किरणों द्वारा सर्वत्र दिव्य प्रकाश फैल गया है. महामति कहते हैं, इसके कारण सभीकी अज्ञानरूपी रात्रि मिट गई और सभी धामधनी पर विश्वास कर उनकी शरणमें आ गए.

**प्रकरण ६० चौपाई ६९१**

**राग नट**

**साहेब तेरी साहेबी भारी ।**

**कौन उठावे तुझ बिन तेरी, सो दै मेरे सिर सारी ॥ १**

हे (सद्गुरु) धनी ! आपकी महिमा अपरम्पर है. आपके बिना यह महान दायित्व कौन संभाल सकता है ? आपने तो यह महान् दायित्व मेरे सिर पर डाल दिया.

**त्रिगुन तिथंकर अवतार, कै फिरस्ते पैगंमर ।**

**तिन सबकी सोभा ले स्याम, आया महंमद पर ॥ २**

त्रिदेव-ब्रह्मा, विष्णु और महेश, तीर्थंकर, पैगम्बर तथा अनेक अवतार कलियुगमें हो गए. उन सबकी शोभा लेकर श्रीकृष्णजी अतिशय प्रशंसापात्र (मुहम्मद) श्यामाजीके अवतार स्वरूप श्री देवचन्द्रजीके हृदयमें विराजमान हुए.

नूर नामे में पैगंमर, एक लाख बीस हजार ।

सो सिफत सब महंमद की, सो महंमद स्याम सिरदार ॥ ३

नूरनामा नामक पुस्तकमें एकलाख बीस हजार पैगम्बरोंका उल्लेख है। उस पुस्तकके अनुसार सभी पैगम्बरोंकी विशेषताएँ रसूल मुहम्मदमें हैं, जिनके हृदयमें श्रीकृष्णजी विराजमान हैं।

सो महंमद कासिद होएके, ले आया फुरमान ।

वास्ते हमारे हममें, पोहोंचाए हैं निसान ॥ ४

वे मुहम्मद सन्देशवाहकके रूपमें कुरान लेकर इस संसारमें प्रकट हुए। वे सब सन्देश हमारे लिए हैं और उन्होंने वे सारे सङ्केत हमें ही दिए हैं।

रूहअल्ला किल्ली अल्लाहपें, ले उतरे चौथे आसमान ।

सो हम माहें बैठ के, खोले कुलफ कुरान ॥ ५

रूहअल्ला अर्थात् अल्लाहकी आत्मा श्री श्यामाजीके अवतार सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी धामधनी श्रीराजजीके पाससे वेद-कतेब आदि ग्रन्थोंके गूढ़ रहस्य उद्घाटित करनेके लिए तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी लेकर चौथे आसमान (अखण्ड परमधाम) से इस संसारमें अवतरित हुए हैं। उन्होंने मेरे हृदयमें विराजमान होकर वेद-कतेबके गूढ़ रहस्य खोल दिए।

सो फुरमान आप खोल के, करी जाहेर हकीकत ।

खोले वेद कतेब के गुझ, आई सबों की सरत ॥ ६

मेरे हृदयमें बैठे हुए सद्गुरु धनीने सम्पूर्ण शास्त्रोंके सभी रहस्य खोलकर सब वास्तविकताको प्रकट कर दिया। भविष्यवेत्ता और धर्मशास्त्रोंने यह आश्वासन दिया था कि वेद-कतेबके गूढ़ रहस्य भविष्यमें खोले जाएँगे। वह वचन इस प्रकार पूर्ण हुआ।

कलीमअल्लाह कहा मूसे को, फुरमाया सब कहे ।

सो कलाम अल्ला की रोसनी, ताबे हादी के रहे ॥ ७

हजरत मूसाको अल्लाहकी आज्ञा प्राप्त करनेवाले अधिकृत पैगम्बर (कलीमुल्लाह) कहा गया है। उन्होंने अल्लाहके हुक्मकी बात सबसे कही है।

परमात्माने उन वचनोंको प्रकाशमें लानेका उत्तरदायित्व हादी-सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीको सौंपा.

**खलील अल्ला दोस्त खुदाएका, जाकी पोहोंची द्वा हजूर ।**

**सो भी रहत इमाम में, कलाम अल्ला का जहूर ॥ ८**

खुदाके दोस्त खलील अल्लाह पैगम्बर हजरत इब्राहीमकी प्रार्थना खुदाके पास पहुँची. इसलिए वे भी सत्य धर्म तथा अखण्ड ज्ञानके तेजके साथ सद्गुरु (इमाम) में समाविष्ट हुए.

**अली बली सेर दरगाह का, जो दरगाह बडी खुदाए ।**

**अव्वलसे किन पाई नहीं, सो आखर प्रगटी आए ॥ ९**

हजरत अलीको दरगाहका शेर कहा गया है. उनको काबाकी दरगाहको सुरक्षित रखनेका कार्य सौंपा गया था. परन्तु खुदाकी उस मूल दरगाह-परमधामकी वास्तविकताको तो आदिकालसे आजतक कोई पहचान नहीं सका है. उसे अब अन्तिम समयमें सद्गुरुने प्रकट किया.

**नूह नबी को वारसी, आदम दै पोहोंचाए ।**

**आए ईसा नूह नबी इमाम, सो आदम सफी अल्लाह ॥ १०**

जिस प्रकार आदमने नूह नबीको उत्तराधिकारी (वारिस) बनाया था, उसी प्रकार अन्तमें ईसा स्वरूप सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी तथा उनके हृदयमें स्थित श्यामाजी अखण्ड तारतम ज्ञानका उपदेश करानेके लिए मेरे (इमाम) हृदयमें आ बैठे. आदमको सफी अल्लाह अर्थात् खुदाके मित्रकी उपाधि दी गई, इन्होंने कार्यभार नूह नबीको सौंपा. इसी प्रकार सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीने अपने जागनीके कार्यको मुझे सौंप दिया है.

**असराफील ले उतरया, जागृत बुध नूर ।**

**सो बैठे बजाए इमाम में, मगज मुसाफी सूर ॥ ११**

कुरानमें बताया गया है कि अन्तमें इस्त्राफील फरिश्ता आएगा. तदनुसार इस्त्राफील अक्षरब्रह्मकी बुद्धि और धनीजीका अखण्ड ज्ञान लेकर मुझमें प्रविष्ट हुआ है. उसने मेरे द्वारा कुरान-पुराणके गूढ़ रहस्य स्पष्ट कराए हैं.

कुरानका भेद खोलकर सत्यज्ञानका प्रकाश फैलाकर अपना कर्तव्य निभाया है अर्थात् 'सूर' बजाया है.

**जबराईल जोस धनी का, सो आया गिरो जित ।**

**करे वकीली उमत की, कहूं पैठ न सके कुमत ॥ १२**

धामधनीका जोश लेकर जिब्रील फरिश्ता परमधामकी ब्रह्माङ्गनाओंकी रक्षाके लिए मुझमें प्रकट हुआ है. वह ब्रह्माङ्गनाओंकी सहायता करता है जिससे उनमें कुमति प्रवेश न कर सके.

**औल्लिए अंबिए गोस कुतब, सब आए बीच उमत ।**

**रूहें पैगंमर फिरस्ते, सब मिले आखरत ॥ १३**

अन्त समयमें अवतार धारण करनेकी इच्छा व्यक्त करने वाले सभी वली (खुदाके मित्र) नबी (पैगम्बर), न्याय करने वाले महात्मा (गौस), कुतब (कुत्ब-बड़े क्षेत्रका अधिकारी महात्मा) इत्यादिकी आत्माएँ, पैगम्बर तथा फरिश्ते सबके सब आत्मजागृतिकी इस अन्तिम घड़ीमें (क्यामतके समय) एकत्र होकर ब्रह्मसृष्टियोंमें प्रकट हुए हैं.

**बनी असराईल जिकरिया, एहिया युस्फ इस्माईल ।**

**बखत बदल्या दाउद आए, हुए जाहेर नूर जमाल ॥ १४**

इस अन्तिम समयमें इस्त्राईलके पुत्रों (बनी इस्त्राईल)-जिकरिया, एहिया, यूसुफ, इस्माईल आदि भी आ गए. समय बदलने पर दाउद पैगम्बर भी आ पहुँचे. इस प्रकार इन सभीके साथ अक्षरातीत पूर्णब्रह्म परमात्मा संसारमें बुद्धजीके रूपमें प्रकट हुए.

**इसहाक एलिया इद्रीस, आए बोहोना सलेमान ।**

**मुलक हुआ नबियन का, मार दिया सैतान ॥ १५**

वलियों (महात्माओं) में इसहाक, इद्रीश, यहून्ना तथा सबको सच्चा न्याय देने वाले दाउदके पुत्र सुलेमान भी प्रकट हुए. इस प्रकार भरत खण्डमें तमाम नबियोंका अवतरण हुआ और समस्त देश ब्रह्मसृष्टिमय (नबीमय) बन गया अर्थात् सभी पैगम्बर ब्रह्मसृष्टियोंमें समा गए. इन्होंने अज्ञानताके शैतानको मार दिया.

कै किताबें कै कलमें, कै जो नामें और ।

जो कोई कहावे बुजरक, सब आए मिले इन ठौर ॥ १६

कई आसमानी किताबें और कई कलमाओंको लानेवाले पैगम्बर तथा अन्य कई पीर एवं उनके साथ जुड़े हुए नामधारी समझदार कहलाने वाले इस अन्तिम समयमें यहाँ ब्रह्ममुनियोंमें समाहित हो गए.

दई बडी बडाई आपसी, दियो सो अपनों नाम ।

करनी अपनी दे थापी, दे साहेदी अल्ला कलाम ॥ १७

हे धनी ! आपने मुझे अपने समान बना दिया और अपने समान दायित्वपूर्ण कार्य मुझसे करवा कर मुझे अपने नामकी शोभा दी तथा कुरानके द्वारा इन सबकी साक्षी दिलाई.

मोहे अपनों सब दियो, रही न कोई सक ।

सही नाम दियो मोहोर अपनी, कर रोसन थापी हक ॥ १८

हे धनी ! आपने अपनी सारी विशेषताएँ मुझे प्रदान कीं, इसमें कोई सन्देह नहीं रहा. इतना ही नहीं, आपने तो अपने नामकी सही और सिक्का प्रदान कर परमात्माके रूपमें प्रकाशित किया.

खुदा काजी होए के, कजा करसी सबन ।

सो हिसाब जरे जरे को, लियो चौदे भवन ॥ १९

कुरानमें यह उल्लेख है कि खुदा (ब्रह्म) अन्तमें (कयामतके समय) न्यायाधीश (काजी) बनकर सबको न्याय देगा. इस बातको पूर्ण करनेके लिए आपने अखण्ड तारतम ज्ञान द्वारा चौदह लोकोंका अज्ञान दूर कर सबके भले-बुरे कार्योंको उद्घाटित करके उनके सब कार्योंका हिसाब कर दिया.

त्रैलोकी तिमर नसाइयो, कर रोसन अति जहूर ।

चौदे लोक चारों तरफों, वरस्या खुदाएका नूर ॥ २०

हे धनी ! आपने अखण्ड ज्ञानके प्रकाश द्वारा तीनों लोकोंमें व्याप्त अज्ञानके अन्धकारको दूर किया. इस प्रकार चौदह लोकोंमें चारों ओर आपके अखण्ड ज्ञानरूपी तेज (खुदाई नूर) की वर्षा हुई.

भई सोभा संसारमें, अति बड़ी खूबी अपार ।

दुनियां उठाई पाक कर, ना जरा रह्या विकार ॥ २१

हे धनी ! आपके दिए हुए इस तारतम ज्ञानके प्रभावसे संसारमें मेरी शोभा हुई. इसके कारण चारों ओर आपके नामकी अपार महिमा फैल गई. इस अखण्ड ज्ञानके प्रभावसे संसारके जीवोंको भी निर्विकार (पाक) बनाकर ऊँचा उठाया अर्थात् मुक्तिस्थलों (बहिस्तों) में स्थान दिलाया. अब उनमें अज्ञानताका विकार लेशमात्र भी नहीं रहा.

पेहेले प्रले करके, उठाए लिए ततखिन ।

मेरे हाथ कराए के, दई सोभा चौदे भवन ॥ २२

बुद्धजीने सर्वप्रथम सबकी अज्ञानताका नाश कर सभी जीवोंको मुक्तिस्थलका अधिकार प्रदान किया. यह सम्पूर्ण कार्य मेरे हाथोंसे करवाकर चौदह लोकोंमें मेरी शोभा बढ़ाई.

काटे करम सबन के, काल मार किया दुख दूर ।

हिरदे माहें नूर के, लिए नजर तले हजूर ॥ २३

सभी जीवोंके कर्म बन्धन काटकर उन्हें जन्म-मृत्युके दुःखसे बचाया और उन्हें अपने शरणमें लेकर अक्षर ब्रह्मके अन्तःकरणरूप मुक्तिस्थलोंमें स्थान दिलाया.

रोसनी पार के पार की, दई साहेब नाम धराए ।

भई दुनियां साफ मुसाफसे, मुझसे कजा कराए ॥ २४

धामधनीने मुझे अपना नाम प्रदान कर क्षर, अक्षरसे पार परमधामके ज्ञानका प्रकाश दिया. कुरानके गुह्य रहस्योंको प्रकट कर सब लोगोंके हृदय पवित्र किए और मेरे द्वारा सबका न्याय कराया.

नूर अक्षर की नजरों, कै कोट ऐसे इंड ।

त्रिगुन त्रैलोकी पलमें, कै उपज फना ब्रह्मांड ॥ २५

पूर्णब्रह्म अक्षरातीतके नूर अङ्ग अक्षरब्रह्मकी दृष्टिमात्रमें तीनों लोकोंके स्वामी और तीनों गुणोंके अधिष्ठाता देव ब्रह्मा, विष्णु और महेश सहित करोड़ों

ब्रह्माण्ड एक क्षणमें बनते हैं और एक क्षणमें नष्ट होते हैं.

सो नूर सरूप आवें नित, नूर तजल्ला के दीदार ।

आस पुराई इन की, मेरे ऐसे इन आकार ॥ २६

ऐसे अक्षरब्रह्म भी प्रकाश पुञ्ज (नूर तजल्ला) अक्षरातीत धनीके दर्शन करने प्रतिदिन आते हैं. धामधनी अक्षरातीतने मेरे इस नश्वर शरीरके द्वारा ऐसे महान् अक्षर ब्रह्मकी (परधामकी लीला देखनेकी) इच्छा पूर्ण की.

ऐसी बडाई कै सिर मेरे, दे दे लई जो दाब ।

सब दुनियां के दिलमें अपनी, दे साहेदी सब किताब ॥ २७

धनीजीने मुझे अनेक प्रकारसे ऐसी प्रतिष्ठा देकर, अपना उत्तरदायित्व सौंपा और अपनी ही शोभा प्रदान कर वेद-कतेब आदिके प्रमाणके साथ संसारके सभी लोगोंके दिलमें इस (बुद्धावतार) का विश्वास दिलाया.

प्रकरण ६१ चौपाई ७१८

राग श्री

मागत हों मेरे दुलहा, मन कर करम वचन ।

ए जिन तुम खाली करो, मैं अरज करूं दुलहिन ॥ १

हे मेरे प्राणाधार धामधनी ! मैं आपकी अङ्गना मन, वचन और कर्मसे विनय पूर्वक प्रार्थना करती हूँ कि आप मुझे अपने प्रेमसे वञ्चित न करें.

मेरे धनी तुमारी साहेबी, तुम अपनी राखो आप ।

इसक दीजे मोहे अपनो, मैं तासों करूं मिलाप ॥ २

हे मेरे प्रियतम धनी ! अपनी महिमाको आप अपने पास ही रखें और मुझे मात्र अपना प्रेम ही प्रदान करें जिससे उसके द्वारा मैं आपको प्रत्यक्ष पा सकूँ.

ना चाहों मैं बुजरकी, ना चाहों खिताब खुदाए ।

इसक दीजे मोहे अपना, मोहे याहीसों मुदाए ॥ ३

हे धनी ! न मुझे इतनी समझदारी चाहिए और न ही मैं ब्राह्मी पद (खुदाई

खिताब) चाहती हूँ, मुझे तो आप मात्र अपना प्रेम दीजिए, क्योंकि मेरा लक्ष्य ही आपका प्रेम प्राप्त करना है।

**इलम चातुरी खूबी अंग की, मोहे एही पट लिख्या अंकूर ।**

**एही न देवे देखने, मेरे दुलहे के मुखका नूर ॥ ४**

शास्त्रोंके गूढ़ रहस्योंको समझनेका ज्ञान एवं उसे वर्णन करनेका चातुर्य तो इस शरीरकी विशेषता (शोभा) मात्र है। यही चातुर्य आप और मेरे सम्बन्धके बीच परदा (आवरण) बना हुआ है। इस प्रकारकी महत्ता और बढ़प्पनसे भरा उत्तरदायित्व ही मुझे मेरे प्रियतमके दर्शन करने नहीं देता।

**एही अंकूर साथ कारन, करत मिलाप अंतराए ।**

**ना तो एकै आहे इन पिया की, देवे ब्रह्मांड उडाए ॥ ५**

ब्रह्मप्रियाओंको जागृत करनेके लिए दिया गया दायित्व ही आपसे मिलनके लिए बाधक बना हुआ है, अन्यथा आपके विरहकी एक ही आह इस ब्रह्माण्डको उड़ा देनेके लिए सक्षम है।

**एही खूबी मेरे अंग को, देत नाही दरद ।**

**एही हांसी बुजरकी, करत इसक को रद ॥ ६**

यही चातुर्य मेरे हृदयमें आपका विरह पैदा होने नहीं देता। यह हास्यास्पद चातुर्य ही आपके प्रेमको मिटा देना चाहता है।

**इलम आतम संग बुध के, ए जो आवत जुबांए ।**

**फेर श्रवना देवें आतम को, एही परदा नाम खुदाए ॥ ७**

यह आत्माका अनुभव बुद्धिके सहारे जिह्वा द्वारा व्यक्त होता है। उसे पुनः कानों द्वारा सुनकर आत्मा तक पहुँचाया जाता है। यह चातुर्य (सुनना-सुनाना) ही आत्मा और परमात्माके बीच आवरण (परदा) बन जाता है।

**ना तो क्यों न उडे इन आतमा, विचार के एह वचन ।**

**इसक जरे आतम को, इत हो जाए सब अगिन ॥ ८**

अन्यथा धामधनीके प्रेमको विचार कर यह आत्मा शरीरको क्यों नहीं छोड़ देती ? धनीका प्रेम (विरह) आत्माके सभी विकारोंको जला डालता है।



तब तो सर्वत्र अग्निकी ज्वालाएँ ही दिखाई देंगी.

एही बुजरकी साथ जी, भया गले में तोक ।

धनी को न देवे देखने, एही खूबी इन लोक ॥ ९

हे सुन्दरसाथजी ! यह समझदारी (बड़प्पन) ही गलेमें फन्दा बन गई है. यह अपने धनीके प्रत्यक्ष दर्शन होने नहीं देती. इस नश्वर संसारकी विशेषताएँ ही ऐसी हैं.

साथ मोको सुख चाहें, जान धाम की प्रीत ।

मैं परमोधों जान वतनी, मोहे बंधन भयो इन रीत ॥ १०

परमधामका सम्बन्ध जानकर सुन्दरसाथ मेरी सेवा करके मुझे सुख देना चाहते हैं और मैं भी सुन्दरसाथको अपने धामके सम्बन्धी जानकर सद्उपदेश देता हूँ. वही उपदेशक होनेका बड़प्पन मेरे लिए बन्धनका कारण बना है.

वे सेवा करें बहु विध, फेर फेर देवें बडाई ।

हेत करें जान के साहेब, मोहे एही होत अंतराई ॥ ११

सब सुन्दरसाथ विविध प्रकारसे मेरी सेवा करते हैं और बार-बार मुझे सम्मान देते हैं. मुझे अपना स्वामी समझकर मुझसे बड़ा स्नेह रखते हैं. सुन्दरसाथका यह प्रेमभाव ही मुझे अपने धनीके दर्शनमें व्यवधान बना हुआ है.

मैं भी हेत करत हों इनसों, जान के वतन सगाई ।

मोहे प्यारा साथ मेरे धनी का, एही पट आडे आई ॥ १२

मैं भी सुन्दरसाथको परमधामके सम्बन्धी जानकर उनसे प्रेम करता हूँ. धामधनीके ही अङ्ग सुन्दरसाथ मुझे भी अति प्रिय हैं. परन्तु सुन्दरसाथका यह प्रेम मुझे धामधनीके मिलनमें बाधक बन जाता है.

जिन दयाए परदा उडाइया, मैं फेर फेर मागों सो मेहेर ।

इसक दीजे मोहे अपना, जासों लगे बुजरकी जेहेर ॥ १३

हे धनी ! आपकी जिस कृपा द्वारा यह अज्ञानका आवरण दूर हुआ, मैं आपसे वारंवार वही कृपा माँगती हूँ. इसलिए हे धनी ! मुझे आप अपना प्रेम दीजिए जिससे यह बड़प्पन मुझे विषतुल्य लगने लगे.

मोहे सेवा प्यारी पीउकी, साहेब हो बैठो तुम ।

अति सुख पाऊं इनमें, करों बंदगी खसम ॥ १४

हे धनी ! मुझे तो आपकी सेवा ही अत्यन्त प्रिय है. आप ही मेरे धनीके रूपमें विराजमान हों. आपकी सेवा-पूजा करनेसे ही मुझे अति सुख प्राप्त होता है. इसलिए मैं आपकी ही वन्दना करती हूँ.

बोझ अपनो निज वतन को, सो सब मेरे सिर दियो ।

नाम सिनगार सोभा सारी, मैं भेष तुमारो लियो ॥ १५

हे धनी ! आपने मेरे सिरपर परमधामका दायित्व (सुन्दरसाथको जागृत कर परमधाम ले जानेका भार) सौंपा, परन्तु यह नाम शृङ्गार तथा सम्पूर्ण शोभा आपकी ही है. मैंने तो मात्र आपका वेश ही धारण किया है.

अल्ला आसक मासूक महंमद, इसक दीजे हम ।

हम आसक नाम धराए के, मासूक करे हैं तुम ॥ १६

कुरानमें अल्लाहको आशिक और मुहम्मदको माशूक कहा है, किन्तु आप हमें अपना प्रेम प्रदान करें जिससे हम आपके आशिक बनकर आपको माशूक बना सकें.

तुम दुलहा मैं दुलहिनी, और न जानूं बात ।

इसकसों सेवा करूं, सब अंगों साख्यात ॥ १७

वस्तुतः आप मेरे स्वामी हैं और मैं आपकी अङ्गना हूँ, मुझे और कुछ भी ज्ञात नहीं है. अतः मैं अपने सभी अङ्गोंसे प्रेम पूर्वक आपकी साक्षात् सेवा कर सकूँ, यही मेरी प्रार्थना है.

अब तो उमत मिली खासी, और उमत दूसरी ।

तीसरी भी कायम हुई, अब काहे को ढील करी ॥ १८

हे धनी ! अब तो ब्रह्मात्माएँ (खासी उमत) एकत्र हो गई हैं, दूसरी ईश्वरीसृष्टि भी आकर सम्मिलित हो गई है तथा तीसरी जीवसृष्टि भी अखण्ड हो गई है. इसलिए अब आप मुझे अपने पास बुलानेके लिए विलम्ब क्यों कर रहे हैं ?

सकल काम भए पूरन, रही ना किसी की सक ।

महामत चाहे पीउ वतन, आए मिलूं ले इसक ॥ १९

अब तो सभी कार्य पूर्ण हो गए हैं, किसीकी भी कोई शङ्का शेष नहीं है। महामतिको अब अपने धनीके घर-परमधामकी ही चाहना है जिससे प्रेम पूर्वक अपने धनीसे मिल सकूँ।

प्रेम दरद इसक तुमारा, मैं फेर फेर मागूं फेर ।

प्यारें मिलूं प्यारे पीउसों, प्यारी महामत कहे बेर बेर ॥ २०

हे धनी ! मैं वारंवार आपका प्रेम और विरह माँगती हूँ जिससे अपने प्रियतम धामधनीसे प्रेमपूर्वक मिल सकूँ। धामधनीकी प्यारी अङ्गना महामतिकी वारंवार यही प्रार्थना है।

प्रकरण ६२ चौपाई ७३८

[श्रीप्राणनाथजीकी जागनी यात्रामें कई सुन्दरसाथ घर छोड़कर निकल पड़े थे किन्तु वे निन्दास्तुति तथा अपने कुटुम्ब कबीलों को नहीं छोड़ सके थे। उनके व्यवहार पर यहाँ प्रकाश डाला गया है। ]

राग श्री

जिन सुध सेवा की नहीं, ना कछू समझे बात ।

सो काहे को गिनावे आप साथमें, जिन सुध ना सुपन साख्यात ॥ १

जिन लोगोंको धनीजीकी पहचान एवं सेवाकी सुधि नहीं है, वे गूढ़ रहस्योंको नहीं समझ सकते। ऐसे लोग स्वयंको सुन्दरसाथमें क्यों गिनाते हैं, जिन्हें न स्वप्न संसारकी सुधि है और न ही साक्षात् धामधनीकी पहचान है।

कमर बांधे देखा देखी, जाने हम भी लगे तिन लार ।

ले कबीला कांध पर, हंसते चले नर नार ॥ २

ऐसे लोग दूसरोंकी देखा देखी कमर बाँध कर तैयार होते हैं और मान लेते हैं कि हम भी ब्रह्मसृष्टिके मार्ग पर चल रहे हैं। अपने कुटुम्ब परिवारका भार कंधेमें उठाकर सांसारिक सुखोंको भोगते हुए ऐसे नर-नारी भी हँसते हुए चल रहे हैं।

ए लोक राह न पावहीं, क्योंए न सुने पुकार ।

ए चले चींटी हार ज्यों, बांधे ऊंट कतार ॥ ३

ऐसे लोग सत्यका मार्ग ग्रहण नहीं कर सकते क्योंकि वे सत्य उपदेश सुनते ही नहीं. वे तो मात्र चींटियों अथवा ऊंटोंकी पड़ितवत् एक दूसरेसे बंधे हुए चलते हैं.

इन लोकों की मैं क्या कहूं, जो जाए पड़े मुख काल ।

जो साथ केहेलाए सामिल भए, सो भी कहूं नेक हाल ॥ ४

इन लोगोंकी बात मैं क्या करूं जो जानबूझकर कालके मुखमें पड़ रहे हैं. परन्तु जो लोग स्वयंको सुन्दरसाथ कहला कर सुन्दरसाथके समूहमें सम्मिलित हुए हैं, मैं उनकी दशाका भी थोड़ा-सा वर्णन करता हूँ.

दूध तो देख्या नहीं, देख्या ऊपर का फेन ।

दौड करें पड़ें खैंच में, ए यों लगे दुख देन ॥ ५

जिन्होंने दूधको तो देखा ही नहीं मात्र ऊपरके फेनको ही देखा है अर्थात् जो वास्तविक रहस्यको समझे बिना मात्र बाह्य आडम्बरसे ही भ्रमित हो रहे हैं और पारस्परिक खींचातान (वाद-विवाद) में ही पड़े हैं, वे इस प्रकार अपने व्यवहारसे मुझे दुःखी कर रहे हैं.

लेने को बुजरकियां, सेवें चातुरी चैन ।

सेवा करत सब खैंच की, ए यों लगे दुख देन ॥ ६

मात्र मान प्राप्त करनेके लिए कई लोग चातुर्य पूर्वक दिखावटी सेवा करते हैं और स्वार्थ सिद्ध करनेके लिए सेवा करते हुए भी परस्पर अनावश्यक खींचातान करते हैं, ऐसे लोग अपनी सेवासे भी मुझे इस प्रकार दुःखी करते हैं.

देखा देखी न छूटहीं, सेवत हैं दिन रैन ।

खुस वखत होवें खैंचमें, ए यों लगे दुख देन ॥ ७

कितने लोग रात-दिन सेवा करते हैं परन्तु उनसे देखादेखीका विरोध भाव नहीं छूटता. वे परस्पर खींचातानीके व्यवहारसे ही प्रसन्न होते हैं. ऐसे साथी

भी मुझे दुःख देने लगे हैं।

क्योंए प्रमोद्धे न समजे, कोई आद अमल ऐसा घेन ।

क्या मूरख क्या समझू, सबे लगे दुख देन ॥ ८

ये लोग समझाने पर भी नहीं समझते हैं। उनपर मायाका ऐसा नशा चढ़ा हुआ है, चाहे वे अशिक्षित, अज्ञानी, मूर्ख हों या पढ़े लिखे ज्ञानी समझदार हों, अन्ततः सभी अपने व्यवहारसे दुःखी करते हैं।

सनमुख होए सेवा करें, मुख बोलत मीठे बैन ।

तित भी खँच ऐसी भई, ए भी लगे दुख देन ॥ ९

कितने सुन्दरसाथ मेरे सन्मुख आकर सेवा करते हैं। दिखावेके लिए श्रद्धा जताकर मीठे वचन भी बोलते हैं किन्तु उनमें भी खींचातानी ऐसी हुई कि वे भी दुःख देने लगे।

निपट नजीकी सेवहीं, दौडे एक दूजेपें लेन ।

खँचाखँच ऐसी करी, ए भी लगे दुख देन ॥ १०

कई ऐसे लोग भी हैं जो मेरे अत्यन्त निकटका सेवक बनकर सेवाभाव दिखाते हैं और एक दूसरेके हाथसे सेवा छीननेके लिए दौड़ते हैं। उन्होंने भी अपने स्वार्थके लिए ऐसी खींचातानी की कि जिसे देखकर बड़ा दुःख होता है।

मन वाचा कर सेवहीं, गलित गात रोवें नैन ।

तहां भी खँच छूटी नहीं, ए भी लगे दुख देन ॥ ११

जो मन, वचन और कर्मसे सेवा करते हैं, चर्चा वाणी सुनते हुए भाव विभोर होकर रोने लगते हैं, ऐसे लोगोंसे भी खींचातानी नहीं छूटी, इस प्रकार वे भी दुःख देने लगे।

सेवक कै समझावहीं, साखी सबे मुख केहेन ।

इन भी खँच छूटी नहीं, ए भी लगे दुख देन ॥ १२

कई ऐसे भी सेवक हैं जो दूसरोंको समझानेके लिए व्याख्यान देते हैं और

साखी आदि भी बोलते हैं, किन्तु उनमें भी पारस्परिक स्पर्धा नहीं छूटी, इस प्रकार वे भी दुःख देने लगे.

**अरथ अंदर का लेवहीं, समझें इसारत सेन ।**

**खैच उनकी भी ना गई, वे भी लगे दुख देन ॥ १३**

जो शब्दोंके रहस्यात्मक अर्थोंको समझते हैं तथा सङ्केत द्वारा कही गई बातें भी समझते हैं, किन्तु उनसे भी खींचातानी नहीं छूटी, इस प्रकार वे भी दुःख देने लगे.

**अंदर बाहेर उजले, दोष देखें सब एन ।**

**ताए भी खैच छूटी नहीं, ए भी लगे दुख देन ॥ १४**

सुन्दरसाथमें ऐसे लोग भी हैं जिनके अन्तःकरण भी शुद्ध हैं तथा वे बाह्यरूपसे भी स्वच्छ और पवित्र हैं और वे अपने आन्तरिक दोष भी जानते हैं, किन्तु उनमें भी खींचातानी नहीं छूटी और वे भी कष्ट पहुँचाने लगे.

**तारतम सब समझहीं, धाम सैयां हम बेहेन ।**

**तिन भी ब्रोध छूट्या नहीं, ए भी लगे दुख देन ॥ १५**

सुन्दरसाथमें कई ऐसे भी हैं जो तारतम ज्ञानका रहस्य समझते हैं और कहते हैं कि हम सभी परमधामकी ब्रह्माङ्गनाएँ हैं, किन्तु वे भी पारस्परिक विरोध नहीं छोड़ सके और कष्ट पहुँचाने लगे.

**ए खेल है इन भांत का, क्योंए न खुले मूल नैन ।**

**निज नजर खुले बिना, कोई न देवे सुख चैन ॥ १६**

इस मायावी संसारके झूठे खेलकी रचना ही इस प्रकारकी है कि किसी भी प्रकारसे लोगोंकी आत्म-दृष्टि नहीं खुलती. वस्तुतः आत्म-दृष्टि खुले बिना कोई भी सुन्दरसाथ सुख शान्ति नहीं दे सकता.

**राह निपट बारीक है, तिन बारीक पर बारीक ।**

**साथें लई लीक जाहेरी, सो उतरी लीकथें लीक ॥ १७**

परमात्मा प्राप्तिके लिए कर्म उपासनाका मार्ग बारीक है. ज्ञानमार्ग इससे भी

अधिक सूक्ष्म है और विज्ञान मार्ग सूक्ष्मसे सूक्ष्मतरंग है, परन्तु कितने ही सुन्दरसाधने भी ऊँट कतारकी भाँति देखादेखी बाह्यमार्गको ही पकड़ लिया है.

काहूँ न दरवाजा नजीक, कहाँ कुलफ किल्ली कल गत ।

राह भी नजरों न आवहीं, ए चले जाहेरी ले मत ॥ १८

जब किसीको बेहदका द्वार निकट दिखाई नहीं दिया, तो उसका ताला-चाबी तथा उस द्वारको खोलनेकी कला क्या है इस रहस्यको वह कैसे जान सकता है ? इसलिए सत्य मार्ग दिखाई नहीं देने पर लोगोंने बाह्य कर्मकाण्डके मार्गको ही स्वीकार किया.

अब कहा कहुँ मैं इन पर, कोई ऐसी बनी जो आए ।

ए जानबूझ तो भूलहीं, जो इनका कछू न बसाए ॥ १९

ऐसे लोगोंके विषयमें मैं क्या कहूँ ? कहीं इनके भाग्यमें ही ऐसा लिखा होगा. तभी ये लोग जानबूझकर मार्ग भूल जाते हैं क्योंकि उनका कुछ वश ही नहीं चलता.

राह जुदी दोऊ पेड से, तो कहा सके कोई कर ।

उन आडा पट अंतर, इनों बाहेर पडी नजर ॥ २०

कर्म (लौकिक) मार्ग तथा ज्ञान (अलौकिक) मार्ग आदिकालसे ही भिन्न-भिन्न हैं. इसलिए दोनोंको एक सूत्रमें कैसे बाँधा जा सकता है ? ज्ञानियोंके हृदयमें भ्रमका परदा है तो कर्ममार्गको अङ्गीकार करने वालोंकी दृष्टि बाह्य रहती है.

ना तो सूरें क्यों ना बल करें, कोई बुरा न आपको चाहे ।

दौडत हैं निस बासर, किन पट न टाल्यो जाए ॥ २१

अन्यथा ये साधक पार जानेके लिए प्रयत्न क्यों नहीं करते ? वस्तुतः कोई भी अपनी बुराई नहीं चाहता. इसलिए रात-दिन दौड़ तो करते हैं परन्तु यह अज्ञानताका आवरण किसीसे भी दूर नहीं होता.

महामत केहेवे यों कर, हम सैयां दौडी धाए ।

पर ए पट सुंदरबाई बिना, किनहूँ न खोल्यो जाए ॥ २२

महामति कहते हैं, इस प्रकार हम ब्रह्मात्माएँ भी पार जानेकी दौड़में लगी हुई थीं, परन्तु अज्ञानताका आवरण (परदा) सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी (सुन्दरबाई) के बिना किसीसे भी नहीं खुल पाया अर्थात् सर्वप्रथम सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजने परमधामका मार्ग प्रशस्त किया।

बात सुंदरबाई और है, और उनकी और रवेस ।

गत मत उनकी और है, हम लिया सब उनका भेस ॥ २३

क्योंकि सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी महाराज (सुन्दरबाई) की बात ही कुछ विशिष्ट है, उनका रहन-सहन, बुद्धि-विवेक भी और ही महत्त्व रखते हैं। हमने तो उनका वेश ही धारण किया है अर्थात् हम उनके चलाए हुए मार्ग पर चल रहे हैं।

मोहे सिखापन उनकी, दे फुरमान करी रोसन ।

इन्द्रावती तो केहेवहीं, जो दोऊ विध करी चेतन ॥ २४

मुझे तो उनके ही उपदेश प्राप्त हुए हैं। उनके ही आदेशसे कुरान तथा पुराणका रहस्य मैंने स्पष्ट किया है। इन्द्रावती इसीलिए ऐसा कह रही है कि सद्गुरुने ही उसे व्यवहारिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान देकर (अथवा वेद और कतेबकी समझ देकर) दोनों प्रकारसे जागृत किया है।

प्रकरण ६३ चौपाई ७६२

राग श्री

तमे वाणी विचारी न चाल्या रे वैस्नवो, तमे वाणी विचारी नव चाल्या ।

अक्षर एकनो अर्थ न लाध्यो, मद मस्त थईने हाल्या ॥ १

हे वैष्णवजन ! तुम वल्लभाचार्यजीकी वाणी-श्रीमद्भागवतकी सुबोधिनी टीकाके गूढ़ रहस्योंको समझकर उन पर आचरण नहीं करते। उनके शब्दोंके एक भी अक्षरका अर्थ तुम नहीं समझ पाए, इसलिए झूठी मायामें मस्त होकर चल रहे हो।



सतवाणी वैस्नवने समझावुं, जेसूं मूल डाल प्रकासी ।

श्री मुख आचारज जे ओचरया, तेणे जाए भरमणा नासी ॥ २

वैष्णवजनको मैं श्रीमद्भागवतकी सुबोधिनी टीका सही ढंगसे समझाता हूँ जिससे मूलस्वरूपकी लीला, सृष्टिकी उत्पत्ति एवं विस्तारका तथा धर्मके मूल और उनकी शाखाओंका यथार्थ ज्ञान प्राप्त होगा. वल्लभाचार्यजीने अपने श्रीमुखसे जो कहा है उसीको समझने पर तुम्हारी शंकाओंका निवारण हो सकेगा.

वैस्नव वाणी जो जो विचारी, ए भोम देखी पामो त्रास ।

चौदे भवनथी ए वाणी न्यारी, एमां पेर पेरना प्रकास ॥ ३

हे वैष्णवजन ! इस उत्तम वाणी पर विचार करो तथा संसारके जन्म-मृत्युरूपी भयसे डरो. क्योंकि वल्लभाचार्यजीकी यह वाणी चौदह लोक से परेकी है, इसमें अनेक प्रकारका (ज्ञानका) प्रकाश भरा हुआ है.

प्रथम मोहतत्त्वनी उत्पन, ते माहेंथी तत्त्व पांचे ।

ए पांच तत्त्व थकी चौदलोक प्रगट्यां, एमां वैस्नव होए ते नव राचे ॥ ४

(पूर्णब्रह्म अक्षरातीत परमात्माकी प्रेरणाद्वारा अक्षरब्रह्मके हृदयमें इस संसाररूपी खेल रचनेकी इच्छा हुई. इसलिए) सर्वप्रथम मोह तत्त्व उत्पन्न हुआ. उससे पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश, ये पाँच तत्त्व बने. इन पाँच तत्त्वोंके द्वारा चौदह लोकोंकी रचना हुई. ऐसे नश्वर संसारमें सच्चा वैष्णव नहीं फँसता.

एमां प्रेमे पारब्रह्म पामिए, ए वाणी बोले रे एम ।

अनेक कसोटी जो आवे आडी, तो ए निध मूकिए केम ॥ ५

इस वाणीमें स्पष्ट बताया है कि संसारमें ही रहकर अनन्य प्रेमलक्षणा भक्तिद्वारा अक्षरब्रह्मसे भी परे पूर्णब्रह्मकी प्राप्ति हो सकती है. इसलिए अनेक प्रकारकी विपत्तियाँ आने पर भी इस सत्य वाणीको कैसे छोड़ा जाए ?

वैस्नवो सत वस्त एक देखाड्युं, बीजो कह्यो सर्व नास ।

महाप्रलयमां तत्त्व लेवासे, आंही मुझ थकी अजवास ॥ ६

हे वैष्णवजन ! वल्लभाचार्यजीने तो एक ही सत्य वस्तु-परब्रह्म परमात्माको

दिखाया है, उसके अतिरिक्त अन्य सभी वस्तुएँ नाशवान हैं। पूर्णब्रह्म परमात्माके अतिरिक्त अन्य सभी झूठी वस्तुओंका महा प्रलयमें नाश होता है। इसलिए इस सत्यका स्पष्ट ज्ञान यहाँ मेरे पास आकर प्राप्त करो।

**वैस्नवो मोहं थकी निधं न्यारी दीधी, आपणने अविनास ।**

**नाम तत्त्व कह्युं श्रीकृष्णजी, जे रमे अखंड लीला रास ॥ ७**

हे वैष्णवो ! वल्लभाचार्यजीने हमें इस मोहसागरसे परेका अखण्ड अविनाशी धन (ज्ञान) दिया और कहा कि श्रीकृष्णनाम ही परम तत्त्व है, जो श्रीकृष्णजी अखण्ड रासकी लीला करते हैं।

**एहने सरणे सौंष्यां वैस्नवने, जिहां विधविधनां विलास ।**

**हवे नेहेचल रंग कीजे ते पुरुषसुं, दर्ई प्रेमनो पास ॥ ८**

श्रीवल्लभाचार्यजीने तो ऐसे श्रीकृष्णजीके चरण शरणमें वैष्णवोंको सौंपा है, जहाँ विविध प्रकारके अखण्ड लीला-विहार होते हैं। इसलिए अब उन श्रीकृष्णजीके साथ प्रेमपूर्वक नित्य विलास करो।

**पुरुषपणे ए द्रष्टे न आवे, ए अवलापणे लीजे अंग ।**

**पुरुष नथी ए विना कोई बीजो, जे रमे नेहेचल लीला रंग ॥ ९**

पुरुषभावसे भक्ति करनेपर उनके दर्शन न हो सकेंगे परन्तु सखी-भावसे भक्ति करनेपर उनके दर्शन हो सकेंगे क्योंकि उनके अतिरिक्त अन्य कोई पुरुष ही नहीं है। मात्र वे ही सर्वत्र अखण्ड आनन्द लीला-विलास कर रहे हैं।

**ए प्रीछे तो पारब्रह्म चित आवे, समझे सुपन परुं थाए ।**

**अखंडतणां सुख एणी पेरे लीजे, लाहो मायामां लेवाए ॥ १०**

इस मर्मको समझ लेने पर पूर्णब्रह्म पुरुषोत्तमके दर्शन होंगे और उनके दर्शनसे स्वप्नरूपी संसारकी अज्ञानता दूर होगी। संसारकी मायामें आबद्ध रहनेपर भी इस प्रकार अखण्ड सुखका आनन्द लिया जा सकता है।

सत वस्त घणुं स्याने प्रकासुं, अरथी विना नव कहिए ।

एहेना नेहेचल नेहडा गोप भला, आ उलटीमां प्रगट न थैए ॥ ११

सत्यवस्तुको अधिक कैसे प्रकट करूँ ? योग्य पात्र (जिज्ञासु) के बिना सत्यको कहना भी नहीं चाहिए. श्रीकृष्णका अखण्ड प्रेम तो गुप्त रखना ही अच्छा है. विपरीत आचरण करने वालोंके समक्ष इसे प्रकट भी नहीं करना चाहिए.

अरथी होए ते आवी ने पूछे, मोटी मत तेहने दाखुं ।

ए निध देवा जोग नहीं, तेथी अंतर राखुं ॥ १२

जो जिज्ञासु होंगे वे अवश्य आकर पूछ लेंगे. उनको ही यह प्रेमका विशेष सिद्धान्त (बड़ी मत) समझाएँगे. यह अखण्ड निधि हर किसीको देने योग्य नहीं है, इसलिए मैं इसे अन्तरमें ही रखता हूँ.

गुण मुख बोली भलुं न मनावुं, अवगुण न राखुं छानो ।

सत वस्त देवाने सत भाखुं, एमां दुख मानो ते मानो ॥ १३

किसीके गुणोंकी प्रशंसा करके मुझे न तो बड़प्पन पाना है और न ही किसीके अवगुणोंको छिपाना है. सत्य ज्ञानको प्रकट करनेके लिए मैं सत्य ही कहता हूँ. इसमें यदि किसीको दुःख लगे तो लगने दो.

पतलीने तमे पगला भरिया, लाग्यो स्वाद संसार ।

पुरुषपणे रमिया मायामां, तो आडी आवी अंधार ॥ १४

तुमने कुलटाकी भाँति आचरण किया है क्योंकि तुम्हें सांसारिक वस्तुओंका स्वाद अच्छा लगने लगा. पुरुषाभिमान रखकर ही तुम मायामें प्रवृत्त हुए हो, तभी अज्ञानका अन्धकार अवरोधक बन गया.

जोयुं नहीं तमे जागीने, अम्रत ढोलीने विष पीधुं ।

असत मंडलने सतकरी समझयां, अखंडने वासो दीधुं ॥ १५

अज्ञानकी निद्रासे जागृत होकर तुमने ज्ञानके प्रकाशको नहीं देखा अर्थात् अपनी आत्माको नहीं पहचाना. इसलिए पूर्णब्रह्मके ज्ञानामृतको छोड़कर

संसारके विषरूपी दुःखको ग्रहण किया और झूठे संसारको ही सत्य समझकर अखण्ड परमात्माकी ओर पीठ दे दी.

अंध थेके तमे ए निध खोई, जे तमने सत स्वामिए दीधी ।

कठण वचन तो कहुं छुं तमने, जो तमे दुष्टाई कीधी ॥ १६

नहीं तो करुं कटका जे जिथ्या वदे वांकुं, पण तमे लक्षणे आप एम कहावो ।

जे स्वामी अविचल सुख आपे, तेहने तमे कां निंदावो ॥ १७

श्रीवल्लभाचार्यजीने तुम्हें पूर्णब्रह्म परमात्माका अखण्ड ज्ञान दिया है, उसे तुमने मायाके अन्धकारमें फँसकर खो दिया. ऐसे निन्दनीय कार्य करनेके कारण मुझे तुम्हें ये कटु वचन कहने पड़ रहे हैं. अन्यथा इस जीभके टुकड़े-टुकड़े कर डालूँ यदि यह तुम्हें कटु वचन सुना रही हो तो परन्तु अपने लक्षणोंसे ही तुम इस प्रकार कहलाते हो. जो स्वामी अखण्ड सुखोंके दाता हैं तुम उन्हींकी निन्दा क्यों करवाते हो ?

ओलख्या नहीं तमे आचारजजीने, तो भ्रम माहें भमिया ।

वैस्नव सकलने तमे वांकु कहावो, जो तमे नीचा नमिया ॥ १८

वास्तवमें तुम वल्लभाचार्यजीको समझ नहीं सके, इसलिए तुम भ्रमजालमें फँसकर भटक रहे हो. तुम निम्न कोटिका आचरण कर सभी वैष्णवोंको अज्ञानी कहलाते हो.

पतिव्रता नारी ते पतिने पूजे, सेवे ते अनेक पेरे ।

पीउ पर वचन सुणे जो वांकु, तो देह त्याग त्यहां करे ॥ १९

तमे वांकु विसमुं काई नव जोयुं, जेम भामनी भूंडी भंडावे ।

कुकरम करतां काई न विचारे, पछे नाहोने नीचुं जोवरावे ॥ २०

पतिव्रता नारी अपने पतिकी पूजा करती है तथा विविध प्रकारसे उसकी सेवा करती है. यदि अपने पतिके विरुद्ध झूठी बात सुने तो उससे सहन नहीं होता, वह वहीं पर अपनी देह छोड़ देती है. तुमने तो योग्य अयोग्य कुछ देखा ही नहीं. जिस प्रकार मूर्ख स्त्री अपने पतिकी निन्दा होने देती है, उसी प्रकार तुमने भी आचार्यकी निन्दा होने दी. जो स्त्री कुकर्म करते

समय विचार भी नहीं करती वह अन्तमें अपने पतिको ही लज्जित करती है.

एणी पेरे सेव्यां तमे स्वामीने, चितसुं जुओ विचारी ।

दुष्टपणे तमे धणीने दुखविया, हवे केही पेर थासे तमारी ॥ २१

इसी प्रकार तुमने अपने आचार्यकी सेवा की है, जरा विचार करके तो देखो ! तुमने तो अपनी दुष्टतासे अपने स्वामीको दुःख दिया है. तुम ही विचार करो कि अब तुम्हारी क्या दशा होगी ?

सत कहे संतोष उपजे, कुली तणे कांधे चढ्या ।

ते वैस्नव नहीं तेथी रहिए वेगला, जे ए निध मूकी पाछ पड्या ॥ २२

सत्यका उपदेश देने पर हृदयको सन्तोष होता है, किन्तु जो कलियुगके कंधे पर आसीन हुए हैं वे सत्य उपदेशको नहीं समझते हैं. जो लोग ऐसे अखण्ड धनरूपी सत्यको छोड़कर विपरीत मार्ग ग्रहण करते हैं, वे वैष्णव कहलानेके अधिकारी नहीं है, इसलिए ऐसे लोगोंसे अलग रहना चाहिए.

केहेतां सवलुं आणे चित अवलुं, वस्त विना करे विवाद ।

महामत कहे तेहने केम मलिए, जे करे अवला उदमाद ॥ २३

ऐसे लोग सीधी कही हुई बातको भी उलटा समझते हैं तथा सत्य ज्ञानको समझे बिना झूठे अभिमानमें मस्त बनकर विवाद करते हैं. महामति कहते हैं, ऐसे अयोग्य व्यक्तिओंसे क्यों मिलें जो सत्यको विपरीत समझकर उन्मादी होते हैं.

प्रकरण ६४ चौपाई ७८५

राग श्री

ए माया आद अनादकी, चली जात अंधेर ।

निरगुन सरगुन होएके व्यापक, आए फिरत है फेर ॥ १

यह माया आदि अनादि कालसे ही अज्ञानका अन्धकार फैलाकर सर्वत्र छा गई है. वह निर्गुण और सगुणके रूपमें सर्वत्र व्याप्त है. उसके बन्धनमें पड़कर लोग जन्म-मरणके चक्रमें फँसे रहते हैं.

ना पेहेचान प्रकृत की, ना पेहेचान हुकम ।

ना सुध ठौर नेहेचल की, ना सुध सरूप ब्रह्म ॥ २

मायामें मग्न रहने वाले लोगोंको अक्षरकी इच्छा शक्तिरूपी प्रकृतिकी तथा पूर्णब्रह्मके आदेशकी पहचान नहीं है। उन्हें अपने अखण्ड घर एवं परब्रह्म परमात्माका भी ज्ञान नहीं है।

सुध नाही निराकार की, और सुध नाही सुन ।

सुध ना सरूप काल की, ना सुध भई निरंजन ॥ ३

ऐसे लोगोंको निराकार या शून्यकी भी सुधि नहीं है। उन्हें इसका भी ज्ञान नहीं है कि कालका स्वरूप क्या है और निरञ्जन किसे कहते हैं ?

ना सुध जीव सरूप की, ना सुध जीव वतन ।

ना सुध मोह तत्व की, जिनथें अहं उतपन ॥ ४

ऐसे लोगोंको जीवके स्वरूपकी तथा जीवके घरकी भी सुधि नहीं है। इसी प्रकार उन्हें अहङ्कारके जन्मदाता मोहतत्त्वकी भी सुधि नहीं है।

शास्त्रों जीव अमर कह्यो, और प्रले चौदे भवन ।

और प्रले पांचों तत्व, और प्रले कहे त्रिगुन ॥ ५

शास्त्रोंमें जीवको अमर और अविनाशी कहा है एवं चौदह लोकोंकी सृष्टिको नाशवान् कहा है। जल, पृथ्वी, तेज, वायु और आकाश, इन पाँचों तत्त्वों तथा सत, रज, तम, इन तीनों गुणोंको भी नाशवान् माना है।

और प्रले प्रकृत कही, और प्रले सब उतपन ।

ना सुध ब्रह्म अद्वैत की, ए कबहूं न कही किन ॥ ६

इसी प्रकार शास्त्रोंमें प्रकृति और उससे उत्पन्न समग्र वस्तुओंका भी प्रलय होना कहा है परन्तु अद्वैत ब्रह्मकी पहचान किसीको भी न होनेसे इस विषयमें किसीने भी कभी चर्चा नहीं की है।

ए त्रिगुन की पैदास जो, सो समझे क्यों कर ।

त्रिगुन उपजे अहं थें, और हिजाब अहंके पर ॥ ७

सत, रज, तम इन तीन गुणोंसे उत्पन्न संसारके लोग अद्वैत ब्रह्मको कैसे

समझ सकेंगे ? कारण कि तीनों गुण अहङ्कारसे पैदा हुए हैं और अहङ्कार पर मायाका आवरण छाया हुआ है.

ए आदके संसे अबलों, किनहूं न खोले कब ।

सो साहेब इत आए के, खोल दिए मोहे सब ॥ ८

सृष्टिके प्रारम्भसे लेकर आज तक चले आ रहे इन संशयोंका निवारण किसीने भी नहीं किया. निजानन्द स्वामी सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीने अवतरित होकर वे सब रहस्य मुझे स्पष्ट कर दिए.

रूहअल्ला की मेहेर से, उपज्यो एह इलम ।

और महंमद की मेहेर थें, सुध कहूं माया ब्रह्म ॥ ९

परमात्माकी अभिन्न अङ्गना (रूह अल्लाह) तथा उनके द्वारा विशेष प्रशंसित (मुहम्मद) श्री श्यामाजीके अवतार स्वरूप निजानन्द स्वामीकी असीम कृपासे तारतम ज्ञान प्राप्त हुआ और इसी ज्ञानके प्रतापसे मैं ब्रह्म और मायाका निरूपण कर रहा हूँ.

प्रकृति पैदा करे, ऐसे कै इंड आलम ।

ए ठौर माया ब्रह्म सबलिक, त्रिगुन की पर आतम ॥ १०

प्रकृति (अक्षरब्रह्मकी इच्छा) इस ब्रह्माण्डके समान अनेक ब्रह्माण्ड पैदा करती है. त्रिगुण (तीनों देवों) के परात्म स्वरूप तथा मायाकी उत्पत्तिका कारण स्वरूप अव्याकृतके महाकारण सबलिक ब्रह्मका स्थान अक्षरब्रह्मके अन्तर्गत है.

कै इंड अक्षर की नजरों, पलमें होए पैदास ।

ऐसे ही उड जात हैं, एकै निमखमें नास ॥ ११

अक्षरब्रह्मकी दृष्टि मात्रसे ऐसे अनेक ब्रह्माण्ड एक क्षणमें पैदा होते हैं और उसी प्रकार एक ही क्षणमें उनका नाश भी होता है.

केवल ब्रह्म अक्षरातीत, सत चिद आनन्द ब्रह्म ।

ए कह्यो मोहे नेहेचे कर, इन आनंद में हम तुम ॥ १२

मात्र अक्षरातीत ब्रह्म ही अद्वैत सच्चिदानन्द परमात्मा हैं. सद्गुरु श्री

देवचन्द्रजीने मुझे यह निश्चित रूपसे समझाया कि अक्षरातीत धामधनीके परमानन्दको प्राप्त करनेवाले हम और तुम ब्रह्मसृष्टि ही हैं।

कहे कतेब साहेदी साहेब की, दे न सके कोई और ।

खुदा की खुदाए बिना, किन पाया नहीं ठौर ॥ १३

कतेब ग्रन्थोंमें कहा है कि परमात्मा (साहेब) की साक्षी (स्वयं परमात्मा बिना) कोई अन्य नहीं दे सकता और उनकी कृपा बिना किसीने भी मूल घर अखण्ड परमधामको प्राप्त नहीं किया।

ए कतेब यों केहेत है, हादी सोई हक ।

बिना साहेब साहेब वतन की, कोई और न मेटे सक ॥ १४

उन्हीं कतेब ग्रन्थोंमें यह भी बताया गया है कि सद्गुरु स्वयं ही परब्रह्म परमात्मा स्वरूप हैं। ऐसे ब्रह्मस्वरूप सद्गुरुके बिना अन्य कोई भी व्यक्ति परमधामका वास्तविक ज्ञान देकर उनसे सम्बन्धित शङ्काओंका निवारण नहीं कर सकता।

संसे मिटाया सतगुरें, साहेब दिया बताए ।

सो नेहेचल वतन सरूप, या मुख वरन्यो न जाए ॥ १५

सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजने मेरी सभी शङ्काएँ दूर कर दीं और अक्षरातीत पूर्णब्रह्मकी पहचान करा दी। उस अखण्ड परमधाम तथा धामधनीके स्वरूपकी शोभा अवर्णनीय है। इस मुखसे उसका वर्णन नहीं हो सकता।

साख पुराई वेद ने, और पूरी साख कतेब ।

अनभव करायो आत्मा, जो न आवे मिने हिसेब ॥ १६

वेद और कतेब ग्रन्थोंने भी इस तथ्यकी साक्षी दी है। सद्गुरुने आत्माकी जो अनुभूति कराई है, उसका वर्णन (हिसाब) ही नहीं हो सकता।

हबीब बताया हादिएं, मेरा ही मुझ पास ।

कर कुरबानी अपनी, जाहेर करूं विलास ॥ १७

सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्रजीने बताया है कि मेरे प्रियतम धनी तो मेरे पास



ही हैं, वे मेरे हृदयमें ही बसे हैं। इसलिए मैं स्वयंको पूर्णरूपसे समर्पित कर उनके साथके आनन्द-विलासका गान करता हूँ।

**तुम देखत मोहे इन इंडमें, मैं चौदे तबक से दूर ।**

**अंतरगत ब्रह्मांड तैं, सदा साहेब के हजूर ॥ १८**

तुम मुझे इस संसारमें (नश्वर देहधारीके रूपमें) निरख रहे हो परन्तु मैं तो चौदह लोकके मार्गसे नितान्त अलग हूँ। इस संसारके अन्तर्गत होते हुए भी सदैव धनीजीकी ही सेवामें हूँ।

**ब्रह्म सृष्टि और ब्रह्म की, है सुध कतेब वेद ।**

**सो आप आखर आए के, अपनों जाहेर कियो सब भेद ॥ १९**

पूर्णब्रह्म परमात्मा और ब्रह्मसृष्टिके सङ्केत वेद और कतेब ग्रन्थोंमें हैं। आत्म-जागृतिके समयमें परमात्माने स्वयं इन सङ्केतोंके सभी रहस्योंको समझाया है।

**महामत जो रूहें ब्रह्म सृष्टि की, सो सब साहेब के तन ।**

**दुनियां करी सब कायम, सही भए महंमद के वचन ॥ २०**

महामति कहते हैं, जो भी आत्माएँ परमधामकी ब्रह्मसृष्टि हैं, वे सभी पूर्णब्रह्म अक्षरातीतकी ही अङ्ग स्वरूपा हैं। उन्होंने ही इस संसारमें आकर संसारके जीवोंको अखण्ड मुक्ति दिलाई है। इस प्रकार रसूल मुहम्मदके वचन सत्य सिद्ध हुए।

**प्रकरण ६५ चौपाई ८०५**

[अन्तिम (कयामतके) समय खुदा (परमात्मा) स्वयं काजी बनकर आएँगे और सबको न्याय देंगे इस प्रकार कुरानमें उल्लेखित भविष्यवाणीका रहस्य स्वामी श्री प्राणनाथजी इस प्रकरणमें समझाते हैं।]

**सैयां मेरी सुध लीजियो, जो कोई एहेल किताब ।**

**तुम ताले लिख्या नूरतजल्ला, सुनके जागो सिताब ॥ १**

हे मेरे धामके सम्बन्धी सुन्दरसाथजी ! जो कोई स्वयंको कतेब आदि धर्म ग्रन्थोंकी उत्तराधिकारी समझते हैं, वे सब सुनें। तुम्हारे भाग्यमें ही अक्षरातीत

ब्रह्मका ज्ञान प्राप्त करना लिखा है। इसलिए मेरा उपदेश सुनकर शीघ्र ही जागृत हो जाओ।

**ना छूटी सरीयत करम की, ना छूटी तरीकत उपासन ।**

**मगज न पावे माएना, चले सब वस परे मन ॥ २**

जिन लोगोंसे कर्मकाण्डके बन्धन और उपासनाकी विधियाँ नहीं छूटीं, वे धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको भी नहीं समझे हैं। इसलिए वे मनके वशीभूत होकर चले जा रहे हैं।

**दोऊ दौड करत हैं, हिन्दू या मुसलमान ।**

**ए जो उड़्ये बीच में, इनका सुन मकान ॥ ३**

हिन्दू और मुसलमान दोनों ही परब्रह्मकी प्राप्ति के लिए परस्पर स्पर्धामें उतर आए हैं, किन्तु दोनों ही मूल घर (परमधाम) तक पहुँच नहीं पाए तथा बीचमें ही फँस गए, उनका ठिकाना शून्य तक ही रहा।

**जोगारंभी या कसबी, पोहोंचे ला मकान ।**

**मोह तत्व क्योंए न छूटहीं, कहा परदा ऊपर आसमान ॥ ४**

योगकी साधना करनेवाले योगी तथा उद्यमी साधक भी ब्रह्मको ढूँढ़ते हुए मात्र शून्य तक ही पहुँचे। मोह तत्त्व उनसे भी किसी प्रकार नहीं छूटा अर्थात् वे मोहतत्त्वसे आगे नहीं जा सके। शास्त्रोंमें कहा है कि चौदह लोकोंके ऊपर मोहतत्त्वका ही आवरण छाया हुआ है।

**एक इलम ले दौडहीं, और ले दौडे ग्यान ।**

**तित बुध न पोहोंचे सबद, ए भी थके इन मकान ॥ ५**

मुसलमान इल्म द्वारा खुदाको ढूँढ़ते हैं तो हिन्दू ज्ञानके द्वारा पूर्णब्रह्मको पाना चाहते हैं। किन्तु दोनोंकी बुद्धि और शब्द ब्रह्म तक नहीं पहुँच पाते। अतः ये सभी लोग शून्य (ला मकान) निराकारसे आगे नहीं जा पाते। खोजते-खोजते यहीं तक पहुँचकर थक जाते हैं।

दूजी कुरसी इत तरीकत, जाहेरी ऊपर फुरमान ।

हकीकत मारफत की, ना किन किया बयान ॥ ६

दूसरी भूमिका तरीकत अर्थात् उपासना करने वालोंकी है, जो कुरानके बाह्य (जाहेरी) अर्थके आधार पर चलते हैं, किन्तु यथार्थ ज्ञान (हकीकत) तथा पूर्ण पहचान (मारफत) के विषयमें किसीने भी कुछ नहीं कहा।

सो खिताब खोलन का, हुकम हादी पर ।

जो औलाद आदम हवा की, सो खोले क्यों कर ॥ ७

यथार्थ ज्ञान तथा पूर्ण पहचानका रहस्य स्पष्ट करनेका दायित्व सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी (हादी) पर है। आदम और हवाकी सन्तान अर्थात् मायासे उत्पन्न जीव उन रहस्योंको किस प्रकार स्पष्ट कर सकते हैं ?

पातसाह इबलीस दिल पर, सब पर हुआ हुकम ।

इन दोऊ की अकलसों, कहे खोलें बातून हम ॥ ८

मायासे उत्पन्न जीवोंके हृदय पर दुष्ट इबलीसका ही राज्य (शासन) है। ऐसे मायावी जीव व्यर्थ ही कहते हैं कि हम हकीकत या मारफती बुद्धिके द्वारा वेद-कतेबके गूढ़ रहस्य स्पष्ट करते हैं।

जहां कछुए है नहीं, सब कहें बेचून बेचगून ।

सुन निराकार निरंजन, बेसबी बेनिमून ॥ ९

इस प्रकार मायासे उत्पन्न जीव जहाँ अस्तित्व नामकी कोई वस्तु ही नहीं, उसे ब्रह्म मानकर बेचून कहते हैं, जहाँ कोई गुण दिखाई नहीं देता वहाँ ब्रह्मको बेचगून कहते हैं। दूसरे शब्दोंमें ब्रह्मको शून्य, निराकार, निरञ्जन, बेशब्बीह (जिसका कोई आकार नहीं), बेनिमून (जिसका कोई निमूना नहीं) कहते हैं।

इत खावंद तो न पाइए, बीच आपके ऐब ।

पीछे कहें हम पाया बातून, हमहीं हैं साहेब ॥ १०

नाशवान मायामें फँसे हुए इन जीवोंको पूर्णब्रह्म परमात्माके स्वरूपके दर्शन तो नहीं होते, किन्तु वे कहते हैं कि हमने धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्य समझ लिए

हैं और हम स्वयं ही ब्रह्म हैं.

आत्म रूह न चीन्हें, ले माएने इलम ग्यान ।

आप खुदा हो बैठहीं, ए इबलीसें फूके कान ॥ ११

इन लोगोंको आत्मा अथवा रूहकी पहचान ही नहीं है, तथापि वे ब्रह्मज्ञानी होनेका दावा रखते हैं. शैतान (इबलीस) ने उनके कान भर दिए हैं, इसलिए वे स्वयंको ही खुदा (ब्रह्म) मान बैठे हैं.

लोक जिमी आसमान के, तिनके सबद अकल चित मन ।

सो आगूं ना चल सके, रहे हवा बीच सुन ॥ १२

मृत्युलोकके मनुष्य और स्वर्ग आदि लोकोंके देवताओंमें पूर्णब्रह्मके विषयमें विचार करने तथा कहनेके लिए बुद्धि, मन तथा वाणी ही नहीं है. इसलिए वे आगे बढ़ ही नहीं सकते क्योंकि उनके मन, वचन और बुद्धि मात्र माया और शून्यका विचार करके अवरूद्ध हो जाते हैं.

एह सिपारे दूसरे, या विध कर लिखे बयान ।

बीच हवा के पलना, चौदे तबक झुलान ॥ १३

कुरानके दूसरे सिपारेमें इस प्रकार कहा गया है कि हवा अर्थात् निराकारके पालनेमें चौदह लोक झूल रहे हैं.

भूले सब जुदे पडे, माएना सबों का एक ।

ए सतगुरु हादी बिना, क्यों कर पावे विवेक ॥ १४

धर्मग्रन्थोंके उपदेशक भी अपनी भूलके कारण पृथक्-पृथक् हो जाते हैं. वस्तुतः सभी धर्मग्रन्थोंका आशय एक ही होता है, किन्तु सद्गुरु (हादी) के बिना इन रहस्योंको विवेकपूर्वक कौन समझा सकता है ?

हवा पार महंमद नूर कहा, नूर पार तजल्ला नूर ।

अरज करी वास्ते उमत, पोहोंच के हक हजूर ॥ १५

हजरत मुहम्मदने स्पष्ट कहा है कि हवा, शून्य और निराकारसे परे अक्षरब्रह्म (नूर) हैं और उन अक्षरब्रह्मसे भी परे अक्षरातीत पूर्णब्रह्म (नूर तजल्ला) हैं. उन्होंने परमात्माके पास पहुँचकर ब्रह्मसृष्टि (उमत) के लिए प्रार्थना की.

नबे हजार हरफ कहे, यों कर किया हुकम ।

तीस हजार जाहेर करो, आखर बाकी खोले हम ॥ १६

परमात्माने रसूल मुहम्मदको नब्बे हजार शब्दोंमें अपना सन्देश कहा और आदेश दिया कि इनमेंसे तीस हजार शब्दोंको ही तुम प्रकट करना, शेष शब्दोंको अन्तिम (कयामतके) समय आकर हम स्पष्ट करेंगे।

सो जाहेर सब जानत, जो ले खडे सरीयत ।

और मुदा बिलंदी गुझ रख्या, सो खोलसी बीच आखरत ॥ १७

इसलिए शरीयत (कर्मकाण्ड) को प्राधान्य देने वाले लोग उन तीस हजार शब्दोंको ही जानते हैं और जो अखण्ड ज्ञान गुप्त रखनेके लिए कहा है, उसे अन्तिम (कयामतके) समय स्वयं परमात्मा आकर स्पष्ट करेंगे।

सोई साहेब आखर आवसी, किया महंमद सों कोल ।

भिस्त दरवाजे कायम, सब को देसी खोल ॥ १८

वे परमात्मा अन्तिम (आत्मजागृतिके) समय प्रकट होंगे, जिन्होंने हजरत मुहम्मदको अपने आनेका वचन दिया था वे स्वयं प्रकट होकर सबके लिए अखण्ड मुक्तिके द्वार खोल देंगे।

काजी होए के बैठसी, हिसाब लेसी सबन ।

पल में प्रले करके, उठाए लेसी ततखिन ॥ १९

उस समय परमात्मा स्वयं न्यायाधीश बनकर बैठेंगे और सभी जीवोंके कर्मोंका लेखा-जोखा (हिसाब) लेंगे, तब क्षणमात्रमें ही अज्ञानताको मिटाकर (प्रलयकर) सभी जीवोंको अखण्ड मुक्ति स्थलों (बहिश्तों) में पहुँचाएँगे।

ए सब उमत कारने, आखर करी सरत ।

देसी भिस्त सबन को, सो रूहअल्ला की बरकत ॥ २०

पूर्णब्रह्म परमात्माने अपनी अङ्गना (ब्रह्मप्रियाओं) के लिए ही इस प्रकार अन्तिम समयमें आनेके वचन दिए हैं। अब वे परमात्मा सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी (रूहअल्लाह) के रूपमें आए हैं। अतः अब उनके ही प्रतापसे सभी जीवोंको मुक्ति मिलेगी।

सो हुकम हादी का छोडके, छोड साहेब के पाए ।

बीच अंधेरी सुन के, जाए जल बिन गोते खाए ॥ २१

ऐसे परमात्मा स्वरूप सद्गुरुकी आज्ञा एवं उनके चरण कमल (आश्रय) को छोड़कर जो लोग शून्य निराकारमें भटकते हैं, वे वस्तुतः बिना जलके ही गोते खा रहे हैं।

अब पूछो दिल अपना, इत कहां रह्या यकीन ।

मुंह से कहें हम महंमद के, कायम खडे बीच दीन ॥ २२

अब जरा अपने दिलसे तो पूछो ऐसे सद्गुरुके प्रति तुम्हारा विश्वास कहाँ रहा ? मुखसे ही कहते हो कि हम मुहम्मद साहेबके बन्दे (सेवक) हैं तथा उनके बताए हुए धर्म पर हमारा विश्वास स्थिर है।

ए बिचारे क्या करें, सुख ताले लिख्या नाहें ।

ना तो जान बूझ पडे आरफ, क्यों परें दोजख माहें ॥ २३

वस्तुतः ये बेचारे करें भी क्या ? उनके भाग्यमें पूर्णब्रह्म परमात्माका अखण्ड सुख लिखा ही नहीं है, अन्यथा वे कुरानके जानकार होने पर भी जानबूझकर नरकागि (दोजखकी आग) में क्यों गिरते ?

तो आंखा मूंदे कहे, और बेहेरे कहे श्रवन ।

पढे तो पावें नहीं, कुलफ दिलों पर इन ॥ २४

इसलिए तो कुरानके पहले सिपारेमें उनको आँखके अन्धे और कानसे बहरे कहा गया है। वे कुरानका मात्र ऊपर-ऊपरका अभ्यास करते हैं। उन्हें उसका गूढ़ार्थ समझमें नहीं आता, क्योंकि उनके हृदय पर अज्ञानताका ताला लगा हुआ है।

सो पोहोंची सरत सबन की, हुए वेद कतेब रोसन ।

सदी अग्यारहीं बीच में, होसी दोजख भिस्त सबन ॥ २५

उन सभी महापुरुषोंके वचन (भविष्यवाणी) अब पूर्ण हो गए हैं। वेद तथा कतेब ग्रन्थोंके रहस्य स्पष्ट हो गए। कतेबके अनुसार मुहम्मद साहेबके पश्चात् ग्यारहवीं शताब्दीमें सभी जीवोंको कर्मानुसार मुक्तिस्थल अथवा नर्क प्राप्त होगा।

दिया दोऊ हाथों कर, सिर साहेबें खिताब ।

महामत खोले सो माएने, आगे एहेल किताब ॥ २६

महामति कहते हैं, सद्गुरुने अपने करकमलोंसे मुझे उपर्युक्त दोनों कार्योका दायित्व (न्यायाधीशका पद) सौंपा है। इसलिए अब मैं उन साक्षी ग्रन्थोंके उत्तराधिकारी ब्रह्मसृष्टियोंके समक्ष उनके रहस्योंको स्पष्ट कर रहा हूँ।

ए अहंमद अल्ला के हुकमे, महंमद कहा समझाए ।

अब क्या कहिए तिन को, जो ए सुनके फेर उड़ाए ॥ २७

(तफसीर हुसैनीमें कहा गया है कि मुहम्मदके हृदयमें जब ईसा विराजमान होते हैं, तो उनका नाम अहम्मद हो जाता है, इसलिए स्वामीजी कहते हैं) ईसा स्वरूप श्रीदेवचन्द्रजी मेरे हृदयमें बस गए, इसलिए मैंने अहम्मद बनकर परमात्माके आदेशानुसार मुहम्मदकी किताब कुरानके सभी गूढ़ रहस्य समझाए हैं। इतना सब कुछ जानते हुए भी जो लोग समझे बिना वारंवार भ्रमित होते रहते हैं, उनके लिए क्या कहा जाए ?

प्रकरण ६६ चौपाई ८३२

राग सिंधूडो

वाटडी विसमी रे साथीडा बेहद तणी, ऊवट कोणे न अगमाए ।

खांडानी धारे रे एणी वाटे चालवुं, भाला अणी केहने न भराए ॥ १

हे ब्रह्मात्माओ ! बेहदका मार्ग विषम है। कठिन होनेसे उस पर कोई चल नहीं पाता। ऐसे मार्ग पर चलना तो तलवारकी धार तथा भालेकी नोंक पर चलनेके समान है।

आडीने आडी रे अगनी जोने पर जले, वैराट माहे न समाए ।

ब्रह्मांड फोडीने झालो जोने नीसरी, ओलाडी ते केहने न जाए ॥ २

देखो ! इस मार्ग पर तो काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहङ्कारकी अग्नि व्यवधान रूप बनी हुई है, जिससे जीवरूप पक्षीके प्रेम और श्रद्धा (इश्क और ईमान) रूप पंख जलने लगते हैं। यह अग्नि तो इस ब्रह्माण्डमें ही नहीं समा रही है। देखो ! इसकी ज्वालाएँ ब्रह्माण्डको भी फोड़ कर बाहर निकल रही हैं। इसे कोई लाँघ (पार कर) नहीं पा रहा।

इहां हस्ती थईने एणी वाटे हींडवुं, पेसवुं सुईना नाका माहे ।

आल न देवी रे भाई आकारने, झांप तो भैरव खाय ॥ ३

इस मार्ग पर हाथीकी भाँति मस्त होकर चलना है और सुईके छेदमेंसे पार भी होना है अर्थात् निर्भय होकर चलते हुए भी पूर्ण विनम्र होकर रहना है. भौतिक सुखोंकी झंखना (वाञ्छा) में रहकर शरीरमें आलस्य आने नहीं देना है, अपितु भैरव झाँपकी भाँति यहाँसे कूदकर परमधाम पहुँचना है.

ओतड दीसे रे अति घणुं दोहेली, हाथ न थोभे रे पाय ।

काम नहीं रे इहां कायर तणुं, सूरे पूरे घायले लेवाय ॥ ४

यह मार्ग तो अति विषम (ऊबड़-खाबड़) होनेसे कष्टदायी प्रतीत होगा. इस पर चलते हुए हाथ-पाँव कुछ भी टिक नहीं सकते. यहाँ पर कायरोंका काम नहीं है. इस मार्ग पर तो शूर-वीर (भक्त) ही चल सकते हैं.

सागरना पंथे रे बीजा जोने पाधरा, चाले चाले उतरतां जाय ।

स्वांत लईने सेहेजल सुखमां, प्रघल जाए रे प्रवाहे ॥ ५

दूसरी ओर भवसागरका मार्ग बड़ा सरल है. उसे बड़ी सरलतासे (उतरते हुए) पार किया जा सकता है. बहते हुए प्रवाहकी भाँति भवसागरके सुखोंकी ओर आरामसे जाया जा सकता है.

ते तो आकार करे रे जोने उजला, माहें तो अधम अंधार ।

खाए ने पिए रे सेज्या सुख भोगवे, एणी वाटे चालतां करार ॥ ६

भवसागरका मार्ग लेने वाले लोग बाह्यरूपसे अपनी कायाको शुद्ध कर लेते हैं, किन्तु उनके अन्तरमें तो अज्ञानका अन्धकार भरा हुआ होता है. उसी अज्ञानके वशीभूत होकर वे खान पान एवं विषय भोगमें ही मस्त रहते हैं. ऐसे मार्ग पर चलते हुए ही वे शान्तिका अनुभव करते हैं.

भ्रांत माहेंली जिहां भाजे नहीं, तिहां लगे जाए नहीं कपट ।

भेष बनावो रे अनेक विधनां, पण मूके नहीं वेहेवट ॥ ७

जब तक हृदयसे भ्रम दूर नहीं होगा, तब तक कपटका व्यवहार नहीं छूटेगा. चाहे अनेक प्रकारका वेश ही क्यों न बना लें, किन्तु उनसे कपटका व्यवहार



नहीं छूटेगा.

बेहद वाटे रे कपट चाले नहीं, राखे नहीं रज मात्र ।

जेने आवो रे ते तो पेहेले आगमी, पछे ने करूं प्रेमनां पात्र ॥ ८

बेहदके मार्गमें छल-कपट चलने वाला नहीं है, इसलिए बेहद मार्गी लेशमात्र भी कपट नहीं रखते. अतः इस मार्ग पर जिनको आना है, वे पहले आ जाएँ पश्चात् मैं उन्हें अनन्य प्रेमके पात्र बना दूँगा.

भ्रांत माहेली रे महामत भाजवी, रदे माहेँ करवो प्रकास ।

पछे ने देखाडुं घेर मुख आगल, जेम सोहेलो आवे मारो साथ ॥ ९

महामति कहते हैं, सर्वप्रथम मुझे अन्तरकी भ्रान्तिको दूर कर ज्ञानके द्वारा उनके हृदयको प्रकाशित कर देना है. पश्चात् परमधामकी लीलाओंको सम्मुखीन कर देता हूँ, जिससे सुन्दरसाथ बड़ी सरलतासे इस मार्ग पर चले आएंगे.

प्रकरण ६७ चौपाई ८४१

राग धोल-धन्या

अटकले ए केम पामिए, ए तो नहीं पंथ प्रपंच ।

एणे पगले न पोहोंचाए, जिहां चोकस न कीजे चित, मारा समंधी ॥ १

हे मेरे आत्म-सम्बन्धियो ! परमात्माको प्राप्त करनेका यह मार्ग मात्र अटकलें लगानेसे कैसे प्राप्त हो सकेगा ? यह मार्ग झूठ और कपट भरा नहीं है. इसलिए जब तक चित्तको सावधान करके हृदयमें विश्वास दृढ़ न किया जाए, तब तक इस मार्ग पर चलना कठिन है.

जिहां अटकल तिहां भ्रांतडी, अने भ्रांत तो थई आडी पाल ।

पार जवाए पूरण द्रष्टे, इहां रज न समाए पंपाल ॥ २

जहाँ अनुमान होता है, वहाँ भ्रान्ति भी होती है और भ्रान्ति तो भवसागरसे पार होनेके मार्गमें व्यवधान स्वरूप है. पूर्ण एकाग्रता (पूर्णदृष्टि) होने पर ही पार जाया जा सकता है. इस मार्ग पर तो झूठ-प्रपञ्च रज मात्र भी नहीं रह पाएगा.

भ्रांत आडी जिहां भाजे नहीं, तिहां माहेंथी न पूरे साख ।

वचन रुदे प्रकासीने, जिहां आतमा न देखे साख्यात ॥ ३

जब तक यह भ्रान्तिका व्यवधान दूर नहीं होता, तब तक आत्मा साक्षी नहीं देगी। जब तक उपदेश द्वारा हृदयमें ज्ञानका प्रकाश न फैले, तब तक आत्माको साक्षात्कारका अनुभव नहीं होगा।

इहां सर्वने साख पुराविए, गुण अंग इन्द्री ने पख ।

आउध सरवे संभारिए, ए तो अलखनी करवी छे लख ॥ ४

यहाँ पर तो गुण, अङ्ग, इन्द्रियाँ तथा पक्ष सभीकी साक्षी देनी है। इसलिए इन सभी अस्त्र-शस्त्रोंको संभाल लो, क्योंकि इन्हींके द्वारा अलक्ष्य (अलख) परमात्माका साक्षात्कार करना है।

वाट विना इहां चालवुं, अने पग विना करवुं पंथ ।

अंग विना आउध लेवां, जुध ते करवुं निसंक ॥ ५

यहाँ तो बिना मार्गके चलना है, बिना पाँव पार कर जाना है तथा बिना अङ्गोंके ही शस्त्रधारण करना है, परन्तु प्रेम, दया, क्षमा, शील, सन्तोष आदि शस्त्रोंके द्वारा युद्ध तो निश्चय ही करना है।

सुपन माहें सुख साख्यात लेवुं, ते निद्रामां केम लेवाए ।

जागी अखंड सुख ओलखिए, आ सुपन लगाडिए वली ताहे ॥ ६

इस स्वप्नवत् संसारमें रहकर धनीजीके अखण्ड सुखका अनुभव करना है किन्तु भ्रम और अज्ञानकी निद्रामें वह सुख कैसे प्राप्त होगा ? इसलिए तारतम ज्ञान द्वारा अज्ञानताकी निद्रासे जागृत होकर अखण्ड सुखको पहचानो और स्वप्नवत् संसारके इन साधनों (इन्द्रियों) को भी उधर ही लगा दो।

एम ने अखंड सुख उदे थयुं, ज्यारे समझयां सुपन मरम ।

जागी साख्यात बेठा थैए, त्यारे आगल पूरण पारब्रह्म ॥ ७

इस प्रकार जब झूठे स्वप्नका रहस्य समझमें आ जाएगा, तब अखण्ड सुखका अनुभव होने लगेगा। जब हम स्वप्नसे जागृत होकर उठ बैठेंगे, तभी धामधनीको अपने समक्ष विराजमान पाएँगे।

वचने कामस धोई काढिए, राखिए नहीं रज मात्र ।

जोगवाई सरवे जीतिए, त्यारे थैए प्रेमनां पात्र ॥ ८

इसलिए अपने धनीजीके उपदेश वचनोंसे मनके विकारोंको धो डालो. उन्हें अपने हृदयमें लेशमात्र भी रहने मत दो. जब मन इन्द्रियोंको अपने वशमें करोगे, तभी प्रेमके पात्र बनोगे.

ए पगले एणे पंथडे, प्रेम विना न पोहोंचाए ।

वैकुण्ठ सुन ने मारगे, बीजी अनेक कथनी कथाए ॥ ९

इस मार्ग पर चलनेकी यही रीति है, जहाँ प्रेमके बिना पहुँचा नहीं जा सकता. वैकुण्ठ शून्यकी ओर जानेके लिए तो अन्य अनेक मार्ग शास्त्रोंमें कहे गए हैं.

ए तो हृद नहीं आ तो बेहद, इहां अनेक अटकलो तणाए ।

अनेक सूर सङ्ग्राम करे, अनेक उथडतां जाए ॥ १०

ब्रह्मप्राप्तिका यह मार्ग हृदका मार्ग नहीं है अपितु बेहदका मार्ग है. इस मार्गका अनुमान करनेवाले अनेक लोग भवसागरमें ही बह गए. इससे पार होनेके लिए अनेक शूर-वीरों (भक्तों) ने संघर्ष किया, किन्तु वे सब इसकी लहरोंसे ही टकराते रह गए.

साध सूरधीर अनेक मलो, अनेक जाओ वैकुण्ठ पार ।

पण अखंड तणां दरवाजा कोणे, ते तो नव उघडे निरधार ॥ ११

अनेक साधु महात्मा, शूर और धीर मिलकर वैकुण्ठके परे क्यों न चले गए हों किन्तु निराकारके पार अखण्ड बेहद भूमिके द्वार निश्चय ही किसीसे नहीं खुले हैं.

तमने मोटी मतवाला साध देखाडुं, जेणे भरयां ब्रह्मांडमां पाय ।

कोई वैकुण्ठ कोई सुन मंडलमां, एटलां लगे पोहोंचाए ॥ १२

मैं तुम्हें महान बुद्धिशाली अनेक साधु महात्माओंका उदाहरण देता हूँ, जिन्होंने इस ब्रह्माण्डसे पार जानेके लिए पाँव भरे, परन्तु उनमेंसे कुछ ही लोग वैकुण्ठ तथा शून्य मण्डल तक पहुँच सके.

पार ब्रह्म पाम्या तणा, अनेक उदम करे साध ।

चढी वैकुण्ठ आघा वहे, तिहां तो आडी अगम अगाध ॥ १३

परब्रह्म परमात्माकी प्राप्तिके लिए साधु महात्माओंने अनेक प्रयत्न किए. वैकुण्ठ तक पहुँचकर उससे भी आगे निकलने लगे, परन्तु शून्य, निराकारका अगाध परदा व्यवधान बन गया.

साध आउध सरवे साचवी, जुध ते करतां जाए ।

लोही मांस न रहे अंग उपर, वचमां स्वांस न खाए ॥ १४

बड़े-बड़े साधु महात्माओंने अपने गुण, अङ्ग, इन्द्रियोंको वशीभूत कर ब्रह्मधामकी ओर जानेके लिए कठिन तपस्याएँ कीं. परिणामतः उनके शरीर रक्त और मांस विहीन शुष्क बन गए. वे प्राणायामके द्वारा वर्षों तक श्वासको भी रोकते रहे, किन्तु उन्हें सार वस्तु नहीं मिली.

चौदे चढी चाले एणी विधे, आगल निराकार केहेवाए ।

तिहां पंथ न थाए पग थोभ विना, साध इहां जईने समाए ॥ १५

इस प्रकार कठिन साधना करनेवाले लोग चौदह लोकोंसे ऊपर उठकर वैकुण्ठसे परे निराकार तक पहुँचे. इससे आगेका मार्ग बिना आधारके प्राप्त नहीं होता अर्थात् तारतम ज्ञानके बिना प्राप्त नहीं हो सकता. इसलिए वे साधक शून्य निराकारमें ही समा गए.

केटलाक जोर करे जुध करवा, पण पग पंथ सबद न कोए ।

सुं करे साध सनंध विना, मोटी मत वाला जोए ॥ १६

कितने ही साधकोंने शून्य-निराकारसे पार जानेके लिए मायासे संघर्ष किया, किन्तु उन्हें सत्य मार्ग तथा उसका उपदेश नहीं मिला. विशेष बुद्धिमान होने पर भी पारके सम्बन्धके बिना वे साधक क्या कर सकते ?

आ पांचे तणुं मूल कोय न प्रीछे, अनेक करे छे उपाय ।

साध मोटा पोहोंचे सुंन लगे, पण सत सुख केने न लेवाय ॥ १७

अनेक उपाय करने पर भी इन पाँच तत्त्वोंका उद्भव स्थान कहाँ है, इसे कोई समझ नहीं पाया. बड़े-बड़े साधु-सन्त भी निराकार तक ही पहुँच पाए,

परन्तु अखण्ड सुख कोई भी प्राप्त नहीं कर सका.

**वेदे वैराट जोयुं दसों दिसा, कही आ पांच चौदनी उतपन ।**

**चौद लोक जोया चारे गमा, चाल्यां आधा जोवा माहें सुन ॥ १८**

वेदोंने इस विराटको दसों दिशाओंसे देखकर कहा कि इन पाँच तत्त्वसे ही चौदह लोकोंकी उत्पत्ति हुई है. फिर चौदह लोकोंके विस्तारको चारों ओरसे देख कर वे और देखनेके लिए आगे बढ़े तो शून्यमें जाकर समा गए.

**सुन जोयुं घणुं श्रम करी, त्यारे नाम धराव्यां निगम ।**

**सनंध न लाधी सुन तणी, त्यारे कहीने वल्या अगम ॥ १९**

वेदोंने शून्यका निरूपण करनेके लिए बड़ा प्रयत्न किया, किन्तु उसका पूरा निरूपण न हो सका. इसलिए परमात्माको उससे भी परे अगम्य कहकर वे लौट आए, तबसे उनका नाम निगम पड़ा.

**वेदे वलतां वाणी जे ओचरी, तेतां चढी वैराटने मुख ।**

**कुलिए ते लेई मुख विप्रोने, करी आपी व्रत भख ॥ २०**

शून्यसे लौटते हुए वेदोंने परमात्माको अगम कहा था. परमात्माके विषयमें वही अगम शब्द संसारके लोगोंकी जिह्वा पर प्रतिष्ठित हो गया. इस कलियुगमें ब्राह्मणोंने उसीका अनुष्ठान कर आजीविका आरम्भ कर दी.

**वेद सनमुख चढ्यां ज्यारे ऊंचा, त्यारे मूल हता पाताल ।**

**फरीने वाणी पाछी वली, त्यारे थया मूल ऊंचा ने नीची डाल ॥ २१**

जब वेद ब्रह्मको ढूँढ़नेके लिए चौदह लोकोंसे परे निराकार तक पहुँचे, तब संसारकी उत्पत्तिके स्थानके रूपमें पातालके शेषशायी नारायणको मूल माना था. परन्तु ब्रह्मका पता न लगने पर निराकारसे ही लौट आए और कहने लगे कि संसारकी उत्पत्ति करनेवाले तो निराकारके भी पार हैं. तबसे संसारका मूल ऊपर है और शाखाएँ नीचे फैली हुई हैं, ऐसा माना जाने लगा.

**कल्पवृक्ष तिहां वेद थयो, तेहनुं फल निपनूं भागवत ।**

**वन पकव रस ग्रही मुनि थया, एम सुके प्रीसव्या संत ॥ २२**

इस प्रकार वेद कल्पवृक्षकी भाँति संसारके लोगोंकी इच्छा पूर्ण करनेवाले

ज्ञानका आधार बन गए. उन वेदोंसे नवनीत रूपमें श्रीमद्भागवत पुराण तैयार हुआ. उसके परिपक्व अमृत-रसको ग्रहण कर मुनी शुकदेवजी अमर बन गए. उन्होंने अन्य साधु-सन्तोंको भी अमृत रस पिलाकर उनकी ज्ञान-पिपासा शान्त की.

**ए रस सनमुख साध लईने, वैकुण्ठ सुन समाए ।**

**बीजा काष्ठ भखी जन जे हेठां उतर्यां, तेतां जल बिना लेहेर पछटाए ॥ २३**

इस रसको ग्रहण कर साधु-सन्त वैकुण्ठ, शून्य तक पहुँच जाते हैं, परन्तु अन्य अभिमानी लोग काष्ठ भक्षण करनेवाले कीड़ोंकी भाँति नीचे उतर आते हैं तथा इस मोह सागरमें जल बिना ही गोते खाने लगते हैं.

**प्रकरण ६८ चौपाई ८६४**

**सुन्य मंडल सुध जो जो मारा समंधी, आ इंडु जेहने आधार ।**

**नेत नेत कहिने निगम वलिया, निगम ने अगम अपार ॥ १**

मेरे धामके सम्बन्धी सुन्दरसाथजी ! इस शून्य मण्डलको देखो, जिसके आधार पर यह ब्रह्माण्ड टिका हुआ है. वेद भी उसे “नेति-नेति” कह कर लौट आए और कहने लगे कि वह तो अगम और अपार है.

**इहां आद अंत नहीं थावर जंगम, अजवास न कांई अंधार जी ।**

**निराकार आकार नहीं, नर न कहेवाय कांई नार जी ॥ २**

उस शून्य मण्डलका कोई आदि अन्त नहीं है. वहाँ चल-अचल, प्रकाश-अन्धकार कुछ भी नहीं है. उसे निराकार या साकार भी नहीं कहा जा सकता. वह न नर रूप है और न नारी ही है.

**नाम न ठाम नहीं गुन निरगुन, पख नहीं परवान जी ।**

**आवन गमन नहीं अंग इंद्री, लख न कांई निरमान जी ॥ ३**

उसका न कोई नाम है, न स्थायी ठिकाना ही है और न ही कोई गुण है, फिर उसे निर्गुण भी नहीं कहा जा सकता. उसका कोई पक्ष या प्रमाण भी नहीं है. वह आवागमन तथा अङ्ग और इन्द्रियोंसे परे है. उसकी कोई पहचान अथवा आकार भी नहीं है.

इहां रूप न रंग नहीं तेज जोत, दिवस न कांई रात जी ।

भोम न अगिन नहीं जल वाए, न सबद सोहं आकास जी ॥ ४

उस शून्य मण्डलका कोई रूप रङ्ग और तेज नहीं होता. इसलिए वहाँ दिवस और रात्रि नहीं है. पृथ्वी, जल, तेज, वायु तथा आकाश, इन पाँच तत्त्वोंका स्वरूप भी वहाँ नहीं है और आकाशके 'सोऽहं' शब्दकी ध्वनि भी वहाँ सुनाई नहीं देती.

इहां रस न धात नहीं कोई तत्व, ग्यान नहीं बल गंध जी ।

फूल न फल नहीं मूल वृक्ष, भंग न कांई अभंग जी ॥ ५

वहाँ पर रस, धातु, तत्त्व, ज्ञानशक्ति और गन्ध कुछ भी प्राप्त नहीं होता. फल, फूल, मूल, तना, किसीका भी अनुभव नहीं होता और नाशवान या स्थायित्वका भी अनुभव नहीं होता.

अखंड तणां दरवाजा आडी, सुन मंडल विस्तार जी ।

एणे ठेकाणे बेठी अच्छी, बांधीने हथियार जी ॥ ६

शून्य मण्डलका यह विस्तार अखण्ड मार्गका अवरोध है. इसी स्थान पर कालनिरञ्जन शक्ति अस्त्र-शस्त्र बाँधकर बैठी हुई है.

ए बल जो जो बलवन्तीनुं, एहनो कोई न काढे पार जी ।

अनेक उपाय कीधां घणे, पण कोय न पोहोता दरबार जी ॥ ७

शक्तिशाली इस कालनिरञ्जन शक्तिके बलको तो देखो, इसका कोई भी पार नहीं पा सकता. इस पर विजय प्राप्त करनेके लिए अनेक लोगोंने प्रयत्न किए, परन्तु कोई भी इसके पार अखण्ड धामके द्वार पर नहीं पहुँच सका.

कोई न पोहोतो इहां लगे, एहनो बोली मारे प्रताप जी ।

आ पांचे एहनी छाया पडी छे, ए सुन्य मंडल विस्तार जी ॥ ८

इस काल निरञ्जन तक भी कोई नहीं पहुँच सका, क्योंकि सभी इसके त्राससे त्रस्त रहते हैं. यह पाञ्च भौतिक विराट इसकी छाया मात्र है. इस प्रकार यह शून्य मण्डल फैला हुआ है.

प्रकरण ६९ चौपाई ८७२

हवे वासना हसे जे बेहदनी, ते तां जागीने जोसे निरधार ।

सत असत बंने जुआ करसे, एहनो तेहज उघाडसे बार ॥ १

अब जो बेहद भूमि (परमधाम) की ब्रह्माङ्गना होगी, निश्चय ही वह जागृत होकर देखेगी. वह सत्य और असत्य वस्तु (ब्रह्म और माया) का पृथक्-पृथक् निरूपण कर सबके लिए बेहदके द्वार खोल देगी.

एहमां वासना पांचे प्रगट थई, रची रामत देखाडी रूडी पे ।

कारज करीने अखंडमां भलसे, अक्षर सरूप एहनुं घेर ॥ २

इस संसारमें पाँच वासनाएँ प्रकट हुई हैं. उन्होंने ही इस रामतकी रचना कर ब्रह्मात्माओंको भलीभाँति यह खेल दिखाया. वे अपना कार्य पूर्ण कर अन्तमें अखण्डमें समा जाएँगी, क्योंकि अक्षरब्रह्म ही उनके आश्रय हैं.

रामत जोवा वाला ते जुआ, ते आगल वाणी थासे विस्तार ।

माया देखाडीने बार उघाडी, जावुं अक्षर ने पार ॥ ३

किन्तु मायाका खेल देखनेवाली आत्माएँ तो उनसे भिन्न ही हैं. उनके विषयमें फिर विस्तार पूर्वक कहा जाएगा. इन सभी आत्माओंको मायाका खेल दिखाकर उनके लिए पारके द्वार खोलकर अक्षरके भी पार परमधाममें जाना है.

सास्त्र साधोनी वाणी सरवे, आगम भाखी छे अनेक ।

ते सरवे आंहीं आवीने मलसे, तेहना वंचासे विवेक ॥ ४

पहलेसे ही साधु-सन्तोंकी वाणीमें तथा शास्त्रोंमें ब्रह्मात्माओंके विषयमें चर्चा हुई है. उनकी भविष्यवाणी अब यहाँ सिद्ध होनेवाली है और उन वाणियोंको भी विवेकपूर्वक पढ़ा जाएगा.

क्षरथी तीत अक्षर थया, अने अक्षरातीत कहेवाय ।

आपणने जावुं एणे घरे, इहां अटकले केम पोहोंचाय ॥ ५

क्षर अर्थात् नाशवान संसारसे परे अक्षरधाम है. उससे भी परे अक्षरातीतका परमधाम है. उस अखण्ड घरमें हम सब ब्रह्माङ्गनाओंको जाना है, परन्तु



संसारकी अटकल बाजीसे वहाँ तक कैसे पहुँचा जा सकेगा ?

पार सुख थयुं एणी पेरे, हजी रमो तमे छाया माहें ।

तमने फरी फरी आ भोम आडी आवे, तमे कामस न टालो क्याहे ॥ ६

पारका सुख तो अक्षरसे भी परे है, परन्तु अभी भी तुम इस प्रतिबिम्बमें ही रमण कर रहे हो। यह नश्वर भूमिका वारंवार तुम्हारा व्यवधानरूप बनेगी तथापि तुम इन विकारोंको क्यों नहीं छोड़ते ?

हुं सनमंधी माटे बार उघाडुं, आपवाने सुख सत ।

खीजी वढीने हंसी तमारा, फरी फरी वालुं छुं चित ॥ ७

परमधामके मूल सम्बन्धियोंको अखण्ड सुख देनेके लिए मैं पारके द्वार खोल देता हूँ। तुम पर गुस्सा कर, लड़कर अथवा हँसकर, मैं तुम्हारे चित्तको वारंवार परमधामकी ओर मोड़ रहा हूँ।

तमे राखी रदेमां अंधेर, ओलाडवा हींडो छे संसार ।

एणी पेरे उवट चढाए नहीं, जवाए नहीं पेले पार ॥ ८

तुम हृदयमें अज्ञानरूप अन्धकार रखकर संसारको लाँघनेके लिए प्रयत्न कर रहे हो, परन्तु इस प्रकार बेहदके विषम मार्ग पर चढ़ा नहीं जा सकता और न उसके पार ही पहुँचा जा सकता है।

सतगुरु संग करे आप ग्रही, वचने धमावे निसंक ।

रस थई कस पूरे कसोटी, त्वारे आडो न आवे प्रपंच ॥ ९

इसलिए सद्गुरुका सङ्ग करनेसे वे तुम्हें स्वीकार कर तुम्हारे हृदयमें ज्ञानकी अग्नि प्रज्वलित कर देंगे। जब तुम धामधनीके प्रेममें एकरस होकर कसौटीसे पार हो जाओगे, तब यह अनित्य संसार तुम्हारे मार्गमें व्यवधान स्वरूप नहीं रहेगा।

तमसुं जुध करे घेन घारण, लज्या ने अहंकार ।

कायरने कंपावे ए बल, बीक ने भ्रांत विचार ॥ १०

यह अज्ञानरूपी नींद, तन्द्रा, लज्जा तथा अहङ्कार तुम्हारे साथ संघर्ष कर रहे हैं। इन सबकी शक्ति कायर व्यक्तिको कंपा देती है, क्योंकि वह तो भ्रान्त

विचारोंसे ही भयभीत होता है.

तमें ग्यान तणो अजवास लेइने, उपलो टालो छे अंधेर ।

पण माहेंलो सूतो निद्रा माहें, तो केम जाय मननो फेर ॥ ११

तुम ज्ञानका प्रकाश प्राप्त करके भी मात्र बाह्य रूपसे ही अज्ञान अन्धकारको दूर कर रहे हो. परन्तु जीव यदि भ्रमरूपी निद्रामें ही सोता रहेगा, तो फिर तुम्हारे मनका चक्र कैसे दूर होगा ?

ज्यारे वचने जगवसो वासना, त्यारे आप ओलखसो प्रकास ।

त्यारे पारब्रह्मनो पार थकी, तमे आंहीं देखसो अजवास ॥ १२

जब तारतम ज्ञानके वचनों द्वारा अपनी आत्माको जागृत करोगे, तब तुम्हें आत्माका प्रकाश दिखाई देगा. पश्चात् तुम यहींसे अक्षरके पार अक्षरातीतके प्रकाशका अनुभव कर सकोगे.

हवे जेणे आपणने ए निध आपी, तेहनां चरण ग्रहिए चित मांहे ।

निद्रा उडाडीने सुपन समावे, त्यारे जागी बेटा छैए जांहे ॥ १३

जिन सद्गुरुने हमें अखण्ड ज्ञानकी निधि दी है, अब उनके चरण कमलोंको हृदयमें धारण करना चाहिए. भ्रमरूपी निद्राके टूट जानेके पश्चात् स्वप्नका भी नाश हो जाएगा, तब हमें अनुभव होगा कि हम जागृत होकर धामधनीके चरणोंमें ही बैठे हुए हैं.

हवे एणे चरणे तमे पामसो, अखंड सुख कहिए जेह ।

सरवा अंगे चित सुध करी, तमे सेवा ते करजो एह ॥ १४

अब इन्हीं सद्गुरुके चरणोंकी कृपासे तुम्हें मूल घर परमधामके अखण्ड सुख प्राप्त होंगे. इसलिए सब प्रकारसे चित्तको शुद्ध कर तुम सद्गुरुकी सम्पूर्ण रूपसे सेवा करो.

महामत कहे समंधी सांभलो, मारा सबदातीत सुजाण ।

चरणसुं चित पूरो बांधजो, जिहां लगे पिंडमां प्राण ॥ १५

महामति कहते हैं, हे मेरे शब्दातीत परमधामके मूल सम्बन्धी सुज्ञ सुन्दरसाथजी ! जब तक तुम्हारे शरीरमें प्राण रहें, तब तक इन सद्गुरुके

चरणोंमें अपने चित्तको पूर्ण रूपसे लगाए रखना.

प्रकरण ७० चौपाई ८८७

किरंतन आखरके-राग आसावरी

लाडलियां लाहूत की, जाकी असल चौथे आसमान ।

बडी बडाई इन की, जाकी सिफत करें सुभान ॥ १

सभी ब्रह्मप्रियाएँ धनीजीकी लाड़ली (प्यारी) अङ्गनाएँ हैं. उनका मूल शरीर (पर-आत्मा) चौथे आसमान (परमधाम) में है. इस ब्रह्माण्डमें उनकी प्रतिष्ठा अधिक है, क्योंकि पूर्णब्रह्म परमात्मा स्वयं उनकी प्रसंशा करते हैं.

सो उतरी अरस अजीम से, रूहें बारे हजार ।

साथ सेवक मलाएक, पावें दुनियां सब दीदार ॥ २

वे बारह हजार ब्रह्माङ्गनाएँ परमधामसे सुरताके रूपमें उतर कर इस संसारमें आई हैं. उनके साथ चौबीस हजार ईश्वरी सृष्टिका समूह भी है. अब संसारके लोगोंको इनके दर्शन होंगे.

मोती कहे जो इन को, जाको मोल न काहूँ होए ।

बारे डाली गिनती, सूरत आदमी सोए ॥ ३

इन ब्रह्मात्माओंको अनमोल मोती कहा गया है, जिनका मूल्य कोई आँक ही नहीं सकता. इनकी गिनती बारह हजार है और ये साधारण मनुष्यके वेशमें हैं.

मोमिन बडे मरातबे, नूर बिलंद से नाजल ।

इनों काम हाल सब नूर के, अंग इसकै के भीगल ॥ ४

ब्रह्मसृष्टियोंका पद बहुत ऊँचा है. वे परमधामसे अवतरित हो इस संसारमें आई हैं. इसलिए उनके सब कार्य एवं व्यवहार तेजोमय हैं. उनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग धामधनीके दिव्य प्रेममें भीगे हुए हैं.

साल नव सै नबे मास नव, हुए रसूलको जब ।

रूहअल्ला मिसल गाजियों, मोमिन उतरें तब ॥ ५

कुरानके अनुसार जब हजरत मुहम्मदको यह संसार छोड़े हुए नौ सौ नब्बे

वर्ष और नौ महीने बीत गए, तब विक्रमी सम्वत् १६३८ (ईस्वी सन् १५८१) में स्वयं सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी (रूहअल्लाह) ब्रह्मात्माओंके समूहको लेकर परमधामसे इस ब्रह्माण्डमें प्रकट हुए.

औलिया लिल्ला दोस्त, जाके हिरदें हक सूरत ।

बंदगी खुदा और इनकी, बीच नहीं तफावत ॥ ६

ये पूर्णब्रह्म परमात्मा (हक) के निकटतम मित्र (वलीलिल्लाह-परमात्माके प्रति समर्पित महात्माके समान) माने जाते हैं. इनके हृदयमें परब्रह्मका स्वरूप सदैव स्थिर रहता है, ऐसी ब्रह्मात्माओं तथा पूर्णब्रह्म परमात्माकी उपासनामें कोई अन्तर नहीं है.

एही गिरो इसलाम की, खडियां तले अरस ।

या दुनियां या दीन में, सब में इनको जस ॥ ७

ब्रह्मात्माओंके इसी समूहको कुरानमें भी सत्यधर्मके अनुयायी कहा गया है. वे सदैव परमधाममें ही हैं (मात्र सुरता रूपसे संसारमें आई हैं). इसलिए संसारमें तथा धर्मके कार्यमें सर्वत्र उनको ही यश प्राप्त होता है.

लोक जिमी आसमान के, साफ जो करसी सब ।

बुजरकी इन गिरोह की, ऐसी देखी न सुनी कब ॥ ८

यही ब्रह्मसृष्टि संसारके मनुष्य तथा आकाशके देवी-देवताओंके अन्तःकरणको पवित्र करेगी. इनकी ऐसी प्रतिष्ठा है, जिसे आजतक किसीने न देखी है और न ही सुनी है.

गिरो उठाई अदल से, वास्ते पैगंमरों ।

देवें ग्वाही आखर को, ऊपर मुनकरों ॥ ९

पैगम्बरोंकी भविष्यवाणीको सत्य सिद्ध करनेके लिए, इन्होंने ही जीवसृष्टिको न्याय देकर मुक्तिस्थलोंका सुख दिया है. पैगम्बरोंकी वाणी अन्तिम (कयामतके) समयमें परमात्माको न मानने वालोंके समक्ष इन ब्रह्मात्माओंकी साक्षी देगी.

करें इमारत भिस्त की, कोसिस सिफत कामिल ।

देवें खुसखबरी खुदा तिनको, जिनके नेक अमल ॥ १०

इन्हीं ब्रह्मात्माओंकी कृपासे संसारके जीवोंके लिए उनके कार्यानुसार मुक्तिस्थलोंका कुशलता पूर्वक निर्माण हुआ है। परमात्मा उन्हीं लोगोंको मुक्तिस्थलोंमें जानेकी शुभ सूचना देंगे, जिनके कार्य और व्यवहार पवित्र तथा नीतिपूर्ण होंगे।

गिरो बनी असराईल, जित महंमद पैगंमर ।

जिन कौल मकसूद सबन के, सो बीच इन आखर ॥ ११

कुरानके अनुसार इस्राइलके बेटेके समुदायमें पैगम्बर रसूल मुहम्मद प्रकट हुए। उन्होंने जिस ध्येयके लिए पुनः आनेका वचन दिया था, वह अन्तिम समय यही है।

मुल्क हुआ नबियन का, आखर हिन्दुओं के दरम्यान ।

गिरो भेष फकीरों में, पातसाह महंमद परवान ॥ १२

कुरानके कथनानुसार अन्तिम समयमें हिन्दुओंका यह देश भारत पैगम्बरोंका मुल्क कहलाया। जहाँ पर ब्रह्मात्माओंने सन्त (फकीरी) वेश धारण किया हुआ है और अन्तिम मुहम्मद उनके सम्राट हैं।

माणे रुजू सब इनसे, तौरेत दै है जित ।

होत पेहेचान खुदाए की, इन गिरोकी सोहोबत ॥ १३

सभी धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्य इनके द्वारा स्पष्ट हो गए। तौरेत ग्रन्थ (मूलसन्देश) भी कलशके रूपमें उन्हें प्राप्त हुआ। इन्हीं ब्रह्मसृष्टिके सम्पर्क द्वारा संसारके लोगोंको पूर्णब्रह्म परमात्माका परिचय प्राप्त होगा।

बरसे बयान राह वतनी, कही सूरत मेह इसलाम ।

गिरे भूने मुरग आसमान से, बनी असराईल पर तमाम ॥ १४

कुरान तथा हदीसोंमें कहा गया है कि इस्राइलके समुदाय पर आपातकालमें आहारके रूपमें आकाशसे भुने हुए मुर्गोंकी वर्षा होगी। महामतिने इस प्रसङ्गका यह तात्पर्य निकाला है कि आत्म-जागृतिके समय ब्रह्मात्माओंको

स्वयंकी पहचान करानेके लिए 'तारतम सागर' वाणीका अवतरण होगा.

**छे हजार बाजू दोए बगल, जबरईल ऊपर रूहन ।**

**अग्यारैं सदी गिरह खोल के, चले महंमद संग मोमन ॥ १५**

तफसीर हुसैनीमें वर्णन किया गया है कि जिब्रीलके दोनों (प्रेम और विश्वासरूपी) पंखों पर छः छः हजार आत्माएँ बैठकर अपने मूल घर जाएँगी. महामति इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार करते हैं कि ग्यारहवीं शताब्दी (ग्यारह गाँठों) का रहस्य खोलकर अन्तमें आखरी मुहम्मद (मैं स्वयं) ब्रह्मात्माओंको साथ लेकर परमधाम जाएँगे.

**खुदा देवें साहेदी खुदाए की, और ना किनहू होए ।**

**करे बयान फुरमावें हुकम, लाएक पूजने के सोए ॥ १६**

कुरानमें कहा गया है कि खुदाके साक्षी स्वयं खुदा ही बनेंगे. खुदाके अतिरिक्त अन्य कोई भी उनका साक्षी बन नहीं सकता. खुदाकी आज्ञाके अनुरूप जो खुदाका वर्णन करता है, वही पूज्य हैं.

**अलफ लाम मीम हरफ ए कहे, ए भेद ना किन समझाए ।**

**सो छीले गए कुरान से, ए भेद जानें एक खुदाए ॥ १७**

कुरानमें लिखित अलिफ, लाम और मीम अक्षरोंका रहस्य कोई भी समझ नहीं सका. इन अक्षरोंको अगम कहकर कुरानमें इनके रहस्योंको गुप्त रखा गया है और कहा है कि इन रहस्योंका अर्थ तो स्वयं खुदा (परमात्मा) ही जानते हैं.

**इत हुजत न रही काहू की, तुम देखो एह सुकन ।**

**एह खिताब महंमद मेहेदीपें, जिन रोसन किए मोमन ॥ १८**

विचार करने पर यह समझमें आ जाएगा कि इन दिव्य अक्षरोंका अर्थ प्रसिद्ध करनेका दावा कोई भी व्यक्ति नहीं कर सकता, क्योंकि इन अक्षरोंका अर्थ प्रसिद्ध करनेका अधिकार अन्तिम समयके मुहम्मद इमाम महदी (मुझ) को है, जिन्होंने धाम धनीकी आज्ञा पाकर ब्रह्मात्माओंके लिए ये गूढ़ रहस्य प्रकट किए हैं.

कुन के रोज की साहेदी, देवे एही उमत ।

सो कहे उस वखत की, जो ल्यावे एह हुजत ॥ १९

खुदाने जिस दिन कुन (होजा अर्थात् सृष्टिका सर्जन हो) कहकर सृष्टि रचनाकी आज्ञा दी, उस दिनकी साक्षी भी (असल उमत) ब्रह्मसृष्टि ही देगी. वस्तुतः वे ही उस समयकी बातें कर सकते हैं, जो उस समय वहाँ होनेका दावा करते हैं.

तौरेत आई नूर बिलंद से, आखर उमत करी बेसक ।

भई चिन्हार महंमद मुसाफ की, जैसे पेहेचानने का हक ॥ २०

हजरत मूसाको प्राप्त हुए तौरेत ग्रन्थमें अन्तिम समयमें प्रकट होनेवाली ब्रह्मात्माओंका वर्णन है. इस प्रकार हजरत मुहम्मद तथा कुरानके सब सङ्केतोंका परिचय प्राप्त हो गया है.

सब सिफतें एक गिरोह की, लिखी जुदी जुदी जंजीर ।

कोई पावे न दूजा माएना, बिना महंमद फकीर ॥ २१

वस्तुतः सभी विशेषताएँ एक ही समुदाय (ब्रह्मसृष्टियों) की हैं, जो विभिन्न धर्मग्रन्थोंमें अलग-अलग रूपमें लिखी गई हैं. इन धर्मग्रन्थोंका रहस्य फकीर (सन्त) के रूपमें आए हुए आखरी मुहम्मदके बिना अन्य कोई स्पष्ट नहीं कर सकता.

प्रकरण ७१ चौपाई १०८

जंजीरा मुसाफ की, मोतियों में परोइए जब ।

जिनसें जिनस मिलाइए, पाइए मगज माएने तब ॥ १

कुरानकी आयतोंमें अलग-अलग स्थानोंपर पूर्णब्रह्म परमात्माकी रहस्यमयी गूढ़ बातें साङ्केतिक भाषामें लिखी गयी हैं. मोतीके समान इन छुट-पुट रहस्योंको क्रमशः एकत्रित कर एक मालाके रूपमें पिरोया जाए, तो इसका पूर्णरूपेण आन्तरिक अर्थ समझा जा सकता है.

देऊं हरफ हरफ की आयतें, जो हादिएं खोले द्वार ।

सब सिफत खास गिरोह की, लिखी विध विध बेसुमार ॥ २

सद्गुरु (हादी) ने तारतम ज्ञानकी कुञ्जीद्वारा मूलधर-परमधामका वर्णन किया

है. इसके प्रमाण हेतु मैं कुरानकी आयतें भी प्रस्तुत कर सकता हूँ. इन सब आयतोंमें ब्रह्मात्माओंके समुदायकी ही असंख्य विशेषताएँ विभिन्न रूपमें लिखी हुई हैं.

**कलाम अल्लाकी इसारतें, खोल दैयां खसम ।**

**महामत पर मेहेर मेहेबूबें, करी ईसे के इलम ॥ ३**

कुरानकी आयतोंके सम्पूर्ण सङ्केत सद्गुरु धनीने स्पष्ट कर दिए हैं. वस्तुतः प्यारे सद्गुरुने अपना दिव्य ज्ञान देकर महामति पर अपार कृपा की है.

**ब्रह्म सृष्टि वेद पुरान में, कही सो ब्रह्म समान ।**

**कै विध की बुजरकियां, देखो साहेदी कुरान ॥ ४**

वेदों और पुराणोंमें भी ब्रह्मसृष्टिको ब्रह्मके समान माना गया है, उसी प्रकार कुरानमें भी ब्रह्मसृष्टियोंकी विशेषताओंकी अनेक साक्षियाँ देखी जा सकती हैं.

**कहे छता मगज मुसाफ के, जिनस जंजीरा जोर ।**

**सब सिफत खास गिरोह की, ए समझें एही मरोर ॥ ५**

छत्रसाल कहते हैं कि कुरानमें दी गई आयतोंको क्रमशः एकत्रित करके समझने पर ज्ञात होगा कि ब्रह्मसृष्टिकी प्रशंसा करनेवाली इन आयतोंके रहस्यमय (शब्दोंके) अर्थ भी मात्र ब्रह्मप्रियाएँ ही समझ सकेंगी.

**प्रकरण ७२ चौपाई ९१३**

**सास्त्रों की प्रनालिका-राग श्री**

**जो कोई सास्त्र संसार में, निरने कियो आचार ।**

**त्रिगुन त्रैलोकी पांच तत्व, ए मोह अहंको विस्तार ॥ १**

संसारमें जितने भी शास्त्र हैं, उनके आचार्योंने यही निर्णय लिया कि स्वर्ग, मृत्यु और पाताल इन तीनों लोकोंमें सत, रज और तम इन तीन गुणोंका एवं पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश, इन पाँच तत्वोंका सर्वत्र विस्तार है. वस्तुतः यह सब मोह अहंकारका ही विस्तार है.



निराकार निरंजन सुन की, पाई न काल की विध ।

ना सुध प्रकृति पुरुष की, ना मोह अहं की सुध ॥ २

शून्य, निरञ्जन या निराकारकी तथा कालनिरञ्जन शक्तिकी जानकारी किसीको प्राप्त नहीं हुई. इसी प्रकार प्रकृति-पुरुष तथा मोह और अहङ्कारकी भी सुधि किसीको नहीं हुई.

उपज्या याको केहेवहीं, कहें प्रले होसी ए ।

ब्रह्म बतावें याही में, कहे ए सब माया के ॥ ३

सभी शास्त्रज्ञ कहते हैं कि इस संसारमें जिनकी उत्पत्ति हुई है, वे प्रलयके समय नष्ट होंगे. फिर इसी नश्वर संसारमें सर्वत्र ब्रह्मको व्याप्त मानते हैं और कहते हैं कि यह सब उसी ब्रह्मकी मायाका विस्तार है.

उझे सब याही में, पार सबद न काढे एक ।

कथ कथ ग्यान जुदे पडे, द्वैत में देख देख ॥ ४

इस प्रकार वे सभी इसी मायामें ही उलझ गए, इसके परेका वर्णन कोई न कर सका. वे स्वार्थवश अपने ज्ञानद्वारा भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय स्थापित कर अलग हो गए और द्वैतके ज्ञानमें ही स्वयं भी खो गए.

किन माया पार न पाइया, किन कह्यो ना मूल वतन ।

सरूप न कह्यो काहूं ब्रह्म को, कहे उत चले ना मन वचन ॥ ५

इस मायाके मर्मको कोई भी समझ नहीं पाया है और पूर्णब्रह्म परमात्माके मूल घर-परमधामके विषयमें भी कोई वर्णन नहीं कर पाया. किसीने भी ब्रह्मके स्वरूपका वर्णन नहीं किया, सभी कहते हैं कि इसके लिए मन, वचन भी असमर्थ हैं.

जो सास्त्रों की प्रनालिका, कहिएत हैं विध इन ।

सो कर देऊं जाहेर, समझो चित चेतन ॥ ६

शास्त्रोक्त पद्धतिमें इस प्रकार कहा गया है. मैं यहाँ उसका ही विवेचन कर रहा हूँ, उसे एकाग्र होकर सुनो.

जो सुख पर आतम को, सो आतम ना पोहोंचत ।

जो अनभव होत है आतमा, सो नहीं जीव को इत ॥ ७

परमधाममें हमारे चिन्मय स्वरूप पर आत्माको जिस प्रकारके सुखोंका अनुभव होता है, उन सुखोंका अनुभव सुरतारूप आत्माको नहीं हो सकता और आत्माको जिन सुखोंका अनुभव प्राप्त होता है, उनका अनुभव शरीरमें स्थित जीवको यहाँ मिल नहीं पाता।

जो कछू सुख जीव को, सो बुध ना अंतसकरन ।

सुख अंतसकरन इन्द्रियनको, उतर पोहोंचावे मन ॥ ८

इसी प्रकार जिन सुखोंका अनुभव जीवको होता है, वह अन्तःकरण तक पहुँच नहीं पाता। अन्तःकरणके सुखको ही मन इन्द्रियों तक पहुँचाता है।

जो सुख मन में आवत, सो आवे ना जुबां मों ।

और जो सुख जुबां से निकसे, सो क्यों पोहोंचे पर आतम को ॥ ९

जो सुख मनमें उतर आता है, उसकी व्याख्या भी रसना नहीं कर सकती। इस प्रकार जो सुख शब्दोंके द्वारा व्यक्त होता है, वह परमात्मा तक भला कैसे पहुँच सकता है ?

तो कह्या तीत सबद से, जो कछू इतका पोहोंचत नाहें ।

असत ना मिले सत को, ऐसा लिख्या सास्त्रों माहें ॥ १०

इसलिए पूर्णब्रह्म परमात्माको शब्दातीत तथा अवर्णनीय कहा गया है, क्योंकि इस मायावी संसारकी कोई भी वस्तु परमधाम तक पहुँच नहीं सकती। शास्त्रोंमें इस प्रकारका उल्लेख है कि असत्य कदापि सत्यको पा नहीं सकता।

जो कछू पिंड ब्रह्मांड की, सब फना कही सास्त्रन ।

अखंड के पार जो अखंड, तहां क्यों पोहोंचे झूठ सुपन ॥ ११

शास्त्रोंमें इस पिण्डसे ब्रह्माण्ड तककी सभी वस्तुओंको नाशवान कहा गया है। इसलिए इस नाशवान ब्रह्माण्डसे सम्बन्धित ज्ञान, अक्षरब्रह्मके पार अखण्ड अक्षरातीत परमधाम तक किस प्रकार पहुँच पाएगा ?

पंडित पढ़े सब इत थके, उत चले ना सबद बुध मन ।

निरंजन के पार के पार, पोहोँचाऊं याही सास्त्रन ॥ १२

कई ज्ञानी पण्डितजन पढ़ते हुए थक गए. उनके मन, वचन और बुद्धि को वहाँ प्रवेश नहीं मिला. किन्तु उन्हीं शास्त्रोंके आधार पर मैं शून्य, निरञ्जन, निराकारके पार अक्षरब्रह्म और अक्षरातीत ब्रह्मका परिचय करवा रहा हूँ.

मेरा अंग पाँच तत्व का, इन अंतसकरन विचार ।

केहेनी लीला अक्षरातीत की, जो पर आत्म के पार ॥ १३

यद्यपि मेरा शरीर भी पाँच तत्वोंसे बना हुआ है, तथापि इस शरीरके अन्तःकरण और हृदय द्वारा ही मुझे अक्षरातीतकी लीलाओंका वर्णन करना है, जो पर आत्मासे भी परे (श्रेष्ठ) है.

ए देह मेरी हृद की, इसी देह की अकल ।

धाम धनी सुख वरनन, केहेने चाहे असल ॥ १४

मेरा यह शरीर पंचमहाभूतोंसे निर्मित है. इसलिए इसकी बुद्धि भी सीमित है तथापि मैं पूर्णब्रह्म अक्षरातीत धनीके अखण्ड सुखोंका वर्णन करना चाहता हूँ.

आत्म मेरी हृद में, जीव कहे बुधें उतर ।

बुध मन पैं कहावे जुबानसों, सो जुबां कहे क्यों कर ॥ १५

मेरी आत्मा इस सीमित संसारमें है. यहाँ पर इससे जीवको प्राप्त ज्ञान पुनः बुद्धिमें प्रवेश करता है. वह ज्ञान बुद्धि द्वारा मनमें उतरता है. मन जिह्वा द्वारा इसका वर्णन करता है. इसलिए यह जिह्वा पूर्णब्रह्म परमात्माके अखण्ड सुखोंका वर्णन किस प्रकार कर सकेगी ?

असलें आत्म न पोहोँचहीं, तो क्यों पोहोँचे जीव ग्यान ।

जो मन देत जुबान को, सो जुबां करत बयान ॥ १६

जब वास्तविक सुख आत्मा तक पहुँच नहीं पाता, तो जीवको ज्ञान कैसे प्राप्त हो सकेगा ? मन, जिह्वाको जितना देता है, जिह्वा वाणी द्वारा उतना ही व्यक्त करती है.

मैं बैठ सुपन की सृष्टि में, बोलूँ इन जुबान ।

जीव सृष्टि क्यों मानहीं, तो भी कर देऊँ नेक पेहेचान ॥ १७

मैं इस झूठे संसारमें रहकर इसी झूठी जिह्वा द्वारा बोल रहा हूँ. जीवसृष्टि तो मेरी बात नहीं मानेगी, तथापि उन्हें अखण्ड सुखोंकी थोड़ी-सी पहचान करवा दूँ.

आतम रोग मिटावने, ए सुख कहों माहें सबद ।

बेहद के पार के पार सुख, सो नेक बताऊँ माहें हद ॥ १८

आत्म-रोग (परआत्माकी विस्मृति) को मिटानेके लिए ही इन सुखोंको मैं शब्दोंके द्वारा व्यक्त कर रहा हूँ. बेहदके पारके पार परमधामके इन सुखोंको इस स्वप्नवत् संसारमें लेशमात्र प्रकट कर देता हूँ.

मेरे केहेना ब्रह्म सृष्टि को, इन मन जुबां माफक ।

झूठी जिमिएं याही सास्त्रनसों, जाहेर कर देऊँ हक ॥ १९

मुझे अपने मन और जिह्वाकी शक्तिके अनुसार ब्रह्मसृष्टिको जागृत करनेके लिए कुछ कहना है. इन्हीं शास्त्रोंके ज्ञान द्वारा इस नश्वर संसारमें मैं पूर्णब्रह्म परमात्माको प्रकट करनेका प्रयत्न करता हूँ.

साथ मेरा ब्रह्मसृष्टि का, तिन हिरदे साफ करन ।

सो निरमल ना होवहीं, धाम अखंड देखाए बिन ॥ २०

मेरे सुरन्दरसाथ ब्रह्मसृष्टि हैं, उनके हृदयको पवित्र बनाना है. अखण्ड परमधामका दर्शन करवाए बिना उनका हृदय निर्मल नहीं हो पाएगा.

सो हिरदे साफ हुए बिना, क्योंकर पोहोंचे धाम ।

हम भेजे आए धनी के, एही हमारा काम ॥ २१

जब तक हृदय पवित्र नहीं बनेगा, तब तक ब्रह्मसृष्टि मूल घर-परमधाममें कैसे पहुँच सकेंगी ? इन ब्रह्मसृष्टियोंके लिए ही अक्षरातीत धनीने मुझे भेजा है. मुझे अब यही कार्य करना है.

सास्त्रों तीनों सृष्टि कही, जीव ईश्वरी ब्रह्म ।

तिनके ठौर जुदे जुदे, ए देखियो अनूकरम ॥ २२

शास्त्रोंमें तीन प्रकारकी सृष्टिका वर्णन है-जीवसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि और ब्रह्मसृष्टि। इन तीनों सृष्टियोंके मूल स्थान भी पृथक्-पृथक् हैं, जिनका क्रम इस प्रकारसे है :-

जीव सृष्टि वैकुण्ठ लों, सृष्टि ईश्वरी अक्षर ।

ब्रह्मसृष्टि अक्षरातीत लों, कहे सास्त्र यों कर ॥ २३

जीवसृष्टिका उद्गम स्थान वैकुण्ठ धाम है, ईश्वरी सृष्टिका अवतरण अक्षरधामसे हुआ है तथा ब्रह्मसृष्टि अक्षरातीत दिव्य परमधामसे (सुरता रूपमें) इस जगतमें अवतरित हुई हैं, इस प्रकार शास्त्रोंमें वर्णन किया गया है।

जो सृष्टि आई जिन ठौर से, घर पोहोंचे आप अपनी ।

पार दरवाजे खोल के, आखर पोहोंचे कर करनी ॥ २४

जो सृष्टि जिस स्थानसे आई है, उसे अपने अपने मूल स्थानमें लौटना होता है। इस प्रकार वापस जाना है। इस संसारमें अपने-अपने कर्मानुसार पारके द्वार खोल कर वे अपने स्थानमें पहुँचेंगीं।

आप अपने वतन पोहोंचते, अटकाव न होवे किन ।

जो जहां से आइया, धनी तहां पोहोंचावें तिन ॥ २५

अपने मूल स्थान पर पहुँचनेमें उन्हें किसी भी प्रकारकी बाधा नहीं होगी, क्योंकि जिस स्थानसे जो आई हैं, धामधनी उन्हें उसी स्थान पर पहुँचा देंगे।

जिन जानो सास्त्रों में नहीं, है सास्त्रोंमें सब कुछ ।

पर जीव सृष्टि क्यों पावहीं, जिनकी अकल है तुछ ॥ २६

ऐसा नहीं समझना कि शास्त्रोंमें अखण्ड परमधामका वर्णन नहीं है, वस्तुतः शास्त्रोंमें इस विषयमें सब कुछ वर्णन है। परन्तु मायामें फँसी हुई जीवसृष्टि उन्हें कैसे समझ पाएगी, जिनकी बुद्धि ही तुच्छ है।

लोक जिमी आसमान के, ए सुपन की अकल ।

सो पांच तत्त्व को छोड़ के, आगे ना सके चल ॥ २७

इस धरतीसे लेकर आकाश तकके सभी जीवोंमें स्वप्नकी बुद्धि है, इसलिए वे पाँच तत्त्वोंसे बने हुए इस संसारको छोड़कर आगे नहीं जा सकते.

जो सुध आचारजों नहीं, सो जीवों नहीं वरतत ।

जाग्रत बुध ब्रह्मसृष्टि में, लिख्या जाहेर होसी आखरत ॥ २८

जो ज्ञान (समझ) धर्मके आचार्योंको ही नहीं है, वह सामान्य जीवोंमें कैसे होगा ? वस्तुतः जाग्रत बुद्धि तो ब्रह्मसृष्टियोंमें ही है. उनके लिए शास्त्रोंमें कहा है कि वे अन्तिम समयमें प्रकट होंगी.

ऐसा सास्त्रों में लिख्या, ब्रह्म ब्रह्मसृष्टि सों ।

इत आए करसी अदल, दे दीदार सब कों ॥ २९

शास्त्रोंमें यह भी बताया गया है कि विजयाभिनन्द निष्कलङ्क बुद्ध ब्रह्मसृष्टियोंके साथ इस जगतमें प्रकट होंगे और सभी जीवोंको दर्शन देकर उनका न्याय करेंगे.

ब्रह्मसृष्टि धाम पोहोंचावसी, और मुक्ति देसी सबन ।

कलजुग असुराई मेटके, पार पोहोंचावसी त्रिगुन ॥ ३०

बुद्धजी ब्रह्मसृष्टियोंको परमधाम पहुँचाएँगे तथा सभी जीवोंको मुक्ति देंगे. कलियुगकी आसुरी वृत्तिका संहार कर त्रिगुणके अधिपतियों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) को भी इस संसारसे पार (अपने मूल स्थान पर) पहुँचा देंगे.

और भी साख नीके देऊं, कर देखो विचार ।

आखर अथर्वन वेद पर, सब सृष्टि का मुदार ॥ ३१

मैं और भी साक्षी देता हूँ, इस पर भी ध्यानपूर्वक विचार करो. धर्म ग्रन्थोंके अनुसार अन्तिम समयमें अथर्ववेद पर ही सभी सृष्टियोंका दृष्टिकोण रहेगा.

तीनों वेदों ने यों कहा, वेद अथर्वन सबको सार ।

ए वेद कुली में आखर, त्रिगुन को उतारे पार ॥ ३२

ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद इन तीनों वेदोंमें स्पष्ट रूपसे बताया गया है

कि अथर्व वेदमें ही सर्व ज्ञानका सार है. यह वेद कलियुगके अन्तिम चरणमें त्रिगुणात्मक सृष्टिको पार पहुँचा देगा. (यहाँ पर अथर्व वेदका तात्पर्य स्वसंवेद्य ज्ञान तारतम सागरसे है).

ऐसा जाहेर कर लिख्या, पर जिनको नहीं यकीन ।

सो कैसे कर मानहीं, जिनकी मत मलीन ॥ ३३

इस प्रकार वेदोंमें स्पष्ट वर्णन है. परन्तु जिनको वेदोंके इस वर्णन पर श्रद्धा ही नहीं है, वे इस बातको कैसे मानेंगे ? उनकी बुद्धि ही मलीन है.

कहे रसूल खुदा मैं देखिया, और ले आया फुरमान ।

कौल किया आखर आवने, दीदार होसी सब जहान ॥ ३४

रसूल साहेबने भी कुरानमें बताया है कि 'मैंने खुदाके दर्शन किए और उनकी आज्ञासे कुरान लेकर यहाँ आया हूँ.' स्वयं खुदाने ही वचन दिया है कि वे अन्त समय पर प्रकट होंगे तथा समस्त विश्वको उनके दर्शन होंगे.

लिख्या है फुरमान में, खुदा काजी होसी आखर ।

जरे जरे हिसाब लेयके, पोहोंचावे किसमत कर ॥ ३५

कुरानमें यह भी लिखा है कि अन्तिम समयमें परमात्मा (खुदा) न्यायाधीश (काजी) बनकर यहाँ आएँगे और सभीके छोटे-से छोटे कर्मोंका भी हिसाब कर, उन्हें कर्मानुसार अभीष्ट स्थान पर पहुँचाएँगे.

मोमिन मुतकी वास्ते, इत आवसी खुदाए ।

भिस्त देसी सबन को, लिख्या है इसदाए ॥ ३६

धर्मशास्त्रोंमें ऐसा पहलेसे ही लिखा था कि ब्रह्मात्माएँ (मोमिन) और ईश्वरी सृष्टि (मुतकी-फरिश्ते) के लिए यहाँ परमात्मा (खुदा) प्रकट होंगे. वे नश्वर जीवों पर भी दया कर उन्हें मुक्तिस्थलोंका अधिकार देंगे.

सो समया सरतें सब, लिखी बीच अथर्वन ।

कहावें पढे महंमद के, पर पावें ना यकीन बिन ॥ ३७

जिस प्रकार चार वेदोंमें-से अथर्ववेदमें बताया गया है, उसी प्रकार चारों आसमानी किताबोंमेंसे कुरानमें भी ईश्वरीय सत्ताके प्रकट होनेके समयका

स्पष्ट उल्लेख है परन्तु रसूल मुहम्मदके धर्मको समझनेका अधिकार जताने वाले लोग भी उनके वचनोंमें पूर्ण विश्वास रखे बिना कुछ भी समझ नहीं सकते.

**रब एक राह चलावसी, दे कर अपना इलम ।**

**करसी कायम सबन को, अपना चलाए हुकम ॥ ३८**

कुरानमें यह भी लिखा हुआ है कि अन्त समय पर परमात्मा अपने अखण्ड ज्ञान द्वारा सबको एक ही मार्ग पर ले आएँगे और अपने आदेश द्वारा सबको अखण्ड करेंगे.

**सरीयत सो माने नहीं, खुदा बेचून बेचगून ।**

**कहे खुदाए की सूरत नहीं, बेसबी बेनिमून ॥ ३९**

मुसलमान शराअका मात्र बाह्य अर्थ ही करते हैं, उसके गूढार्थको नहीं समझते. वे परमात्माको निराकार (बेचून), निर्गुण (बेचगून), अप्रतिम (बेशब्बीह-बिना सूरतका), अनुपम (बेनिमून-नमूना रहित अद्वितीय) मानते हैं और कहते हैं कि परमात्माका कोई आकार नहीं है.

**कहे यकीन महंमद पर, ऊपर कयामत और फुरमान ।**

**और कहा न माने महंमद का, बडा देख्या ए ईमान ॥ ४०**

वे हजरत मुहम्मद साहब, कयामत और कुरान पर विश्वास करनेकी बात करते हैं, तथापि मुहम्मदके कहे हुए वचनोंको नहीं स्वीकारते, कैसी हास्यास्पद स्थिति है इनकी ? इनका विश्वास तो देखो (मुहम्मद कहते हैं 'मैंने खुदाको देखा है' और ये कहते हैं कि खुदाका स्वरूप ही नहीं है).

**नास्तिक कर बैठे हते, देख वेद कतेब के माहें ।**

**पांच तत्व त्रिगुन बिना, कहे और कछुए नाहें ॥ ४१**

ऐसे कई लोग वेद और कतेबके अर्थोंको पढ़ कर भी समझे बिना नास्तिक बन बैठे हैं (अर्थात् परमात्मा नहीं हैं, ऐसा कहने लगे हैं). वे पाँच तत्व और तीन गुणोंके अतिरिक्त अन्य किसी भी वस्तुका अस्तित्व नहीं मानते हैं.



और कहे नासूत मलकूत, और तिन पर ला मकान ।

पढके वेद कतेब को, करत माएने एह निदान ॥ ४२

ऐसे लोग यह भी कहते हैं कि मृत्युलोक और वैकुण्ठसे ऊपर शून्य निराकार है। वे वेद तथा कतेब ग्रन्थोंका अध्ययन करने पर भी अन्तमें इस प्रकारका बाह्य अर्थ ही समझते हैं।

ना तो ए सबद सास्त्रों के, हुती सबों को सुध ।

तो भी पकडे ला मकान सुन को, ऐसी जीवों नास्तिक बुध ॥ ४३

अन्यथा, जो मैं परमधामकी बात कह रहा हूँ, ये शब्द भी तो शास्त्रोंके ही हैं और सभीको इन शब्दोंकी तो सुधि थी ही, तथापि वे निरञ्जन निराकार शून्यको ही सर्वस्व मान बैठे हैं; क्योंकि इन जीवोंकी बुद्धि ही नास्तिक है।

अब जाहेर हुई सृष्टि ब्रह्म की, और जाहेर वतन ब्रह्म ।

अरस उमत जाहेर हुई, हुई जाहेर सूरत खसम ॥ ४४

अब तो ब्रह्मसृष्टि प्रकट हो गई हैं और पूर्णब्रह्म अक्षरातीत तथा परमधाम भी प्रकट हो गए हैं। परमधाम और ब्रह्मसृष्टिके साथ-साथ अक्षरातीतका स्वरूप भी व्यक्त हो गया है।

खेल देखाया ब्रह्म सृष्टि को, करके हुकम आप ।

ए झूठा खेल कायम किया, करके इत मिलाप ॥ ४५

अक्षरातीत परमात्माने अपनी आज्ञा द्वारा ब्रह्मसृष्टिको संसारका यह झूठा खेल दिखाया है तथा इसी संसारमें ब्रह्मसृष्टियोंको प्रत्यक्ष दर्शन देकर इस स्वप्नवत् संसारको भी अखण्ड कर दिया।

महामत कहे ब्रह्मसृष्टि को, ऐसा हुआ न होसी कब ।

गुझ सब जाहेर किया, ए जो लीला जाहेर हुई अब ॥ ४६

महामति ब्रह्मसृष्टियोंसे कहते हैं कि इस प्रकारका प्रसङ्ग इससे पहलेकी सृष्टिमें कभी नहीं बना था और भविष्यमें भी ऐसा कभी नहीं होगा। यह परमधामकी ब्राह्मी लीला प्रकट हुई है, इसलिए सभी धर्मग्रन्थोंके रहस्य स्पष्ट हो गए।

प्रकरण ७३ चौपाई ९५९

भवजल चौदे भवन, निराकार पाल चौफेर ।

त्रिगुन लेहेरी निरगुन की, उठे मोह अहं अंधेर ॥ १

इस भवसागरमें चौदह लोकोंके चारों ओर निराकारका पाल (आवरण) है तथा निर्गुण द्वारा उत्पन्न लेहेरें ही सत, रज, तम हैं। इनके द्वारा ही संसारमें मोह और अहंका अन्धकार छाया हुआ है।

तान तीखे ग्यान इलम के, दुंद भमरियां अकल ।

बहे पंथ पैडे आडे उलटे, झूठ अथाह मोह जल ॥ २

इस भवसागरके ज्ञानमें अनावश्यक खींचातानी चल रही है। कई पन्थ या सम्प्रदाय भी यहाँ उलटे-सीधे ज्ञान लेकर अपना कार्य कर रहे हैं। इस झूठे अथाह सागरके भँवरमें फँसे हुए ये लोग कभी बाहर निकल नहीं सकते।

तामें बडे जीव मोह जल के, मगर मछ बिक्राल ।

बडा छोटे को निगलत, एक दूजे को काल ॥ ३

इस भवसागरमें विकराल मगरमच्छकी भाँति बड़े जीव छोटे निर्बलोंको निगल जाते हैं अर्थात् एक-दूसरेके लिए कालरूप बने हुए हैं।

घाट न पाई बाट किने, दिस न काहूं द्वार ।

ऊपर तले माहें बाहेर, गए कर कर खाली विचार ॥ ४

इस भवसागरको पार करनेका मार्ग कोई भी पा नहीं सका। उसे पार करनेके लिए किसीको दिशा और द्वार भी नहीं मिले। ऊपर नीचे, अन्दर और बाहर ब्रह्मके विषयमें विचार करते हुए सब लोग खाली ही चले गए।

जीवे आतम अंधी करी, मिल अंतसकरन अंधेर ।

गिरदवाए अंधी इन्द्रियां, तिन लई आतम को घेर ॥ ५

शरीरमें स्थित जीवने अन्तःकरणके साथ मिलकर आत्माको अन्धा बना दिया है। अन्धी इन्द्रियोंने भी आत्माको चारों ओरसे घेर लिया है।

पांच तत्त्व तारा ससि सूर फिरें, फिरें त्रिगुन निरगुन ।

पुरुष प्रकृति यामें फिरें, निराकार निरंजन सुन ॥ ६

पाँचों तत्त्व, तारे, नक्षत्र, सूर्य, चन्द्रादि तथा तीनों गुणोंके देवता ब्रह्मा, विष्णु, महेश सगुण निर्गुण सभी इस विराट संसारमें परिभ्रमण कर रहे हैं। इतना ही नहीं, पुरुष प्रकृति, निराकार, निरञ्जन, शून्य, ये सभी यहाँ चलायमान हैं।

ए चौदे पलमें पैदा किए, पांच तत्त्व गुन निरगुन ।

याही पलमें फना हुए, निराकार सुंन निरंजन ॥ ७

अक्षर ब्रह्मके पल भरमें ही चौदह लोक, पाँच तत्त्व, तीन गुण, निर्गुण, निरञ्जन, निराकार तथा शून्य, इन सबका सर्जन होता है और उसी क्षण नाश भी हो जाता है।

ए चौदे चुटकी में चल जासी, गुन निरगुन सुंन तत्त्व ।

निराकार निरंजन सामिल, उड जासी ज्यों असत ॥ ८

अक्षरब्रह्मके एक पलकमें (पलक झपकते ही) चौदह लोकों सहित ब्रह्माण्ड सगुण, निर्गुण, निराकार, निरञ्जन और शून्य सहित पाँचों तत्त्व स्वप्नकी भाँति मिट जाएंगे।

देत काल परकरमा इनकी, दोऊ तिमर तेज देखाए ।

गिनती सरत पोहोंचाए के, आखर सबे उडाए ॥ ९

इस संसारमें दिन-रातका यह काल-चक्र प्रकाश तथा अन्धकार बनाकर सदैव परिक्रमा करता है। यह कालचक्र श्वासोंकी गिनती पूरी होते ही अन्तमें सबका नाश कर (उड़ा) देता है।

ए इंड जो पैदा किया, ए जो विस्व चौदे भवन ।

इनमें सुध न काहूं को, ए उपजाए किन ॥ १०

परमात्माकी आज्ञासे ही इस संसारकी रचना हुई है। चौदह लोकोंकी इस सृष्टिमें किसीको भी सुधि नहीं हुई कि इस संसारकी रचना किसने की है।

हम भी आए इन खेलमें, बुध ना कछुए सुध ।

धनी आए अक्षरातीत, मोहे जगाई कै विध ॥ ११

हम ब्रह्मसृष्टि भी इस संसारके खेलमें आकर अपनी सुधि, बुद्धि खो बैठी हैं। ऐसेमें अक्षरातीत धामधनीने सद्गुरुके रूपमें पधारकर मुझे विभिन्न प्रकारसे समझाकर जागृत किया।

कह्या खेल किया तुम कारने, ए जो माग्या तुम ।

खेल देख के घर चलो, आए बुलावन हम ॥ १२

सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीने मुझे कहा, संसारके इस खेलकी रचना तुम्हारे (ब्रह्माङ्गनाओंके) लिए ही की गई है। तुमने परमधाममें (प्रेम-सम्वाद द्वारा) ऐसा खेल देखनेकी माँग की थी। अब इसे देखकर तुम अपने मूलघर परमधामको चलो, पूर्णब्रह्म परमात्मा अक्षरातीतकी आज्ञानुसार मैं तुम्हें बुलानेके लिए यहाँ आया हूँ।

निबेरा खीर नीर का, सास्त्र सबों का सार ।

अठोतर सौ पख का, कर दियो निरवार ॥ १३

सद्गुरुने क्षीर और नीर अर्थात् ब्रह्म और मायाका निर्णय कर सम्पूर्ण शास्त्रोंका सार बताया और एक सौ आठ पक्षोंका भी निरूपण कर दिया।

कै साखें सास्त्र साधन की, दे दे कराई पेहेचान ।

मूल सरूप देखाए धाम के, कर सनमंध दियो ईमान ॥ १४

सद्गुरुने कई शास्त्रों और साधुओंकी वाणियोंकी साक्षियाँ दे-देकर मुझे अपनी पहचान कराई और परमधामका मूल स्वरूप दिखाकर उनके साथ मेरा सम्बन्ध होनेका पूर्ण विश्वास दिलाया।

अंतसकरन में रोसनी, और रोसन करी आतम ।

गुन पख इन्दी रोसन, ऐसा वरस्या नूर खसम ॥ १५

सद्गुरुने मेरे अन्तःकरणमें ज्ञानका प्रकाश फैलाया और मेरी आत्माको जागृत किया। ब्रह्मज्ञानकी ऐसी रोशनी हुई कि उसके प्रकाशसे मेरे समस्त गुण, पक्ष, इन्द्रियाँ आदि झिलमिला उठे।

बोहोत सोर किया मुझ ऊपर, रोए रोए कहे वचन ।

अपनाइत अपनी जान के, मोहे खोल दिए द्वार वतन ॥ १६

मुझे समझानेके लिए उन्होंने अनेकों प्रयत्न किए. द्रवित होकर, रो-रोकर मुझे उपदेश दिए. उन्होंने मुझे अपना समझकर मेरे लिए परमधामके द्वार भी खोल दिए.

क्यों कर कहूं मैं हेत की, जो धनिएं किए भांत भांत ।

जगाई धाम देखावने, कै विध करी एकांत ॥ १७

सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीने मुझपर विविध प्रकारसे प्रेमकी वर्षा की. उनकी इस असीम कृपाका वर्णन मैं किन शब्दोंमें करूँ ? उन्होंने मुझे अखण्ड परमधामका अनुभव करवानेके लिए मेरी आत्माको जागृत किया तथा मेरे साथ एकान्त (गादीस्थान) में कई चर्चाएँ की.

जिनसों सब विध समझिए, ऐसी दै मोहे सुध ।

शास्त्रों आगूं यों लिख्या, धनी ले आवसी जागृत बुध ॥ १८

उन्होंने मुझे ऐसी बुद्धि (तारतम) प्रदान की, जिससे पूर्वका सम्बन्ध सहज ही समझमें आ गया. धर्म शास्त्रोंमें पहलेसे ही लिखा हुआ था कि स्वयं पूर्णब्रह्म परमात्मा जाग्रत-बुद्धि लेकर अवतरित होंगे.

अनेक लिखी निसानियां, करावने हमारी पेहेचान ।

जाने सब कोई सेवें इनको, कै किए साख निसान ॥ १९

शास्त्रोंमें ब्रह्मसृष्टियोंके आगमनकी बातें सङ्केतोंमें लिखी गई थीं. वह सब हमारी पहचान करवानेके लिए ही किया गया था, जिससे संसारके लोग ब्रह्मसृष्टियोंकी सेवा कर भवसागर पार कर सकें.

यों कै विध समझाई दुनियां, देने हम पर ईमान इसक ।

धनी नाम खिताब दे अपनों, मुझे बैठाई कर हक ॥ २०

इस प्रकार सद्गुरु धनीने संसारके लोगोंके मनमें ब्रह्माङ्गनाओंके प्रति विश्वास स्थिर करने तथा प्रेम प्रकट करनेके लिए उन्हें विविध प्रकारसे समझाया तथा शास्त्रोंमें उल्लेखित प्रमाणोंके अनुसार अन्त समयमें आविर्भूत

विजयाभिनन्द बुद्ध तथा इमाम महदीका पद देकर मुझे परमात्माके समान बैठा दिया.

कै दिन सुनाई मुझ को, श्री मुखकी चरचा ।

और सबे विध समझी, पर लग्या न कलेजे घा ॥ २१

सद्गुरुने अपने स्वमुखसे मुझे कई दिनों तक विविध प्रकारसे तारतम ज्ञान समझाया. उस समय मैंने भी सभी बातें समझ लीं किन्तु हृदयमें उनकी चोट नहीं लगी.

चौदे भवन के जो धनी, विस्व पूजत सब ताए ।

ए सुध नहीं काहूं को, कोई और है इसदाए ॥ २२

चौदह लोकोंके मानव भगवान विष्णुको ही ब्रह्म मानकर उनकी पूजा (आराधना) करते हैं. उन्हें यह भी ज्ञात नहीं कि भागवान विष्णुसे भी परे मूलमें कोई परम सत्ता विद्यमान है.

त्रिगुन ईस ब्रह्मांड के, तिनको भी ए सुध नाहें ।

कहां से आए हम कौन हैं, कौन इन जिमी माहें ॥ २३

इस ब्रह्माण्डके स्वामी (ईश) कहलाने वाले त्रिगुणाधिपति ब्रह्मा, विष्णु और महेशको भी यह ज्ञात नहीं है कि हम कौन हैं, कहाँसे आए हैं, तथा इस संसारमें किसकी सत्ता है ?

महाविस्नु सुन प्रकृति, निराकार निरंजन ।

ए काल द्वैत को कोहे, ए भी सुध नहीं त्रिगुन ॥ २४

महाविष्णु, प्रकृति, शून्य, निराकार और निरञ्जन आदिको समाप्त करनेवाला महाकाल कौन है, तथा द्वैत कहाँ तक है ? इतनी सुधि भी त्रिगुणको नहीं है.

प्रले पैदा की सुध नहीं, तो ए क्या जाने अक्षर ।

लोक जिमी आसमान के, इनकी याही बीच नजर ॥ २५

इनको जब उत्पत्ति और प्रलयकी भी सुधि नहीं, तो वे अक्षरब्रह्मके विषयमें भला क्या जानेंगे ? इनकी दृष्टि तो स्वर्ग, मृत्यु और पाताल तक ही सीमित है.

अक्षर सरूप के पलमें, ऐसे कै कोट इंड उपजे ।

पलमें पैदा करके, फेर वाही पलमें खपे ॥ २६

अक्षरब्रह्मके पल मात्रमें ऐसे करोड़ों ब्रह्माण्ड उत्पन्न होते हैं। वे उनको पल मात्रमें उत्पन्न कर दूसरे ही पल मिटा भी देते हैं।

ए जो न्यारा पारब्रह्म, इन की भी करी रोसन ।

ए जो अक्षर अद्वैत, भी कहे तिनके पार वचन ॥ २७

जो क्षर, अक्षरसे परे अक्षरातीत हैं, सद्गुरुने उनको भी प्रकट कर दिया। ये अक्षर ब्रह्म भी स्वयं अद्वैत हैं किन्तु उनसे भी परे परमधामकी बात सद्गुरुने मुझे समझाई है।

सो अक्षर मेरे धनी के, नित आवें दरसन ।

ए लीला इन भांत की, इत होत सदा वरतन ॥ २८

ऐसे अक्षरब्रह्म भी मेरे धनीके दर्शनार्थ नित्यप्रति आते हैं। अक्षरातीतकी किशोरलीला परमधाममें नित्य-निरन्तर चलती रहती है।

अक्षरातीत के मोहोल में, प्रेम इसक वरतत ।

सो सुध अक्षर को नहीं, जो किन विध केल करत ॥ २९

अक्षरातीत धनीके रंगमहलमें निरन्तर प्रेममयी लीलाएँ होती हैं। अक्षरब्रह्मको भी वह सुधि नहीं है कि अक्षरातीत धामधनी कैसी लीला करते हैं ?

सो धाम वतन मोहे कर दियो, मेरो अक्षरातीत धनी ।

ब्रह्मसृष्टि मिनें सिरोमन, मैं भई सोहागनी ॥ ३०

मेरे धामधनी सद्गुरुने मुझे सब सुधि देकर जाग्रत किया और परमधामकी सभी निधि प्रदान की। इस प्रकार धनीने मुझे ब्रह्मसृष्टियोंका शिरोमणि बना दिया और मुझे धामधनीकी अर्धाङ्गिनी होनेका अनुभव करवाया।

साख गुन पख इन्द्रियां, आतम पर आतम साख ।

सास्त्र सब ब्रह्मांड के, देत भाख भाख कै लाख ॥ ३१

मेरे गुण, अङ्ग, इन्द्रियाँ, आत्मा तथा पर-आत्मा सभी इसके साक्षी हैं। संसारके सभी शास्त्र भी विभिन्न भाषाओंमें यही बात कह रहे हैं।

ऐसा सूछम सरूप देखाए के, दे धाम करी चेतन ।

इत विलास कै विध के, माहें सिरदारी सैयन ॥ ३२

सद्गुरुने मेरे परात्म स्वरूपका अनुभव करवा कर परमधामकी निधि देते हुए मुझे जागृत किया और इस संसारमें भी ब्रह्मात्माओंमें शिरोमणि बनाकर विविध प्रकारका सुख प्रदान किया।

ऐसी साख देवाई कर सनमंध, आतम करी जाग्रत ।

सो आए धनी मेरे धाम से, कही विवेकें कयामत ॥ ३३

सद्गुरुने मेरे साथ सम्बन्ध स्थापित कर (मेरे हृदयमें विराजमान होकर) शास्त्रोंकी साक्षी देते हुए मेरी आत्माको जागृत किया। ऐसे धामधनी सद्गुरु परमधामसे आए हुए हैं। उन्होंने ही विवेकपूर्वक आत्मजागृति (कयामत) की वेलाको स्पष्ट किया।

ऐसे कै सुख पर आतम के, अनभव कराए अंग ।

तो भी इसक न आइया, नेहेचल धनीसों रंग ॥ ३४

उन्होंने मेरे अंग-अंगमें पर आत्माके विविध सुखोंका अनुभव कराया, तथापि मेरे अन्दर अखण्ड धनीका प्रेम उमड़ न सका।

इन धामकी लीला मिने, इन धनी की अरधंग ।

तो भी प्रेम ना उपज्या, कोई आतम भई ऐसी अंध ॥ ३५

सद्गुरु धनीने मुझे कहा, ब्रह्मधामकी लीला विहारमें तुम धामधनीकी अङ्गना हो, तथापि मेरे हृदयमें प्रेम उत्पन्न नहीं हुआ। वस्तुतः मेरी आत्मा ही ऐसी अन्धी हो गई।

तब आप अंतरधान होएके, भेज दिया फुरमान ।

हमको इसक उपजावने, इत कै विध लिखे निसान ॥ ३६

तब सद्गुरुने स्वयं अन्तर्धान (मेरे हृदयमें विराजमान) होकर मुझे प्रेरणा दी कि संदेशपत्र कुरानमें भी हमारे प्रेमको उत्पन्न (उद्दीप्त) करनेके लिए कई प्रकारके संकेत मिलते हैं।



इन विध देने ईमान, उपजावने इसक ।

सो इसक बिना न पाइए, ए जो नूर तजल्ला हक ॥ ३७

इस प्रकार मुझमें श्रद्धा (विश्वास) और प्रेम उत्पन्न करनेमें सद्गुरुने कोई कमी नहीं रखी. वस्तुतः प्रेमके बिना परब्रह्मको पाया नहीं जा सकता.

प्रकरण ७४ चौपाई ९९६

राग साखी

[निजानन्दाचार्य सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी महाराजके अन्तर्धानको याद करते हुए श्रीप्राणनाथजीका हृदय व्यथित हुआ तब वे सद्गुरुसे इस प्रकार प्रार्थना करते हैं.]

मेरे धनी धामके दुलहा, मैं कर ना सकी पेहेचान ।

सो रोऊं मैं याद कर कर, जो मारे हेत के बान ॥ १

हे मेरे धामधनी ! मैं आपको पहचान न सकी. आपकी प्रेमभरी वाणीको याद करते हुए मैं रोती हूँ, क्योंकि वह मेरे दिलमें चुभ रही है.

सोई दरद अब आइया, लग्या कलेजें घाए ।

अब ए अचरज होत है, जो मुरदे रेहेत अरवाए ॥ २

आपके वचनोंने मेरे हृदयको आहत कर दिया. अब वह वेदना बढ़ने लगी है. किन्तु मुझे आश्चर्य होता है कि मृतकके समान अचेतन शरीरमें यह आत्मा कैसे टिकी हुई है ?

अपनाइत केती कहूं, जो करी हमसों तुम ।

नींद उडाई बुलावने, पोहोंचाया कौल हुकम ॥ ३

हे धनी ! आपने जिस प्रकार अपनत्व प्रदान किया, उसका मैं कितना वर्णन करूँ ? परमधाममें बुलानेके लिए अज्ञानरूपी नींदको उड़ा कर अपना वचन पूर्ण किया.

क्या रोई क्या रोऊंगी, उठी आग इसक ।

थिर चर सारा जलिया, जाए झालां पोहोंची हक ॥ ४

मैं अभी तक कितनी रोती रही और कितनी रोती रहूँगी. अब तो विरह (प्रेम)

की आग धधक उठी है। यह सचराचर जगत उसी आगकी लपेटमें आ गया एवं उसकी ज्वालाएँ परमात्मा तक पहुँच गई हैं।

जो साहेब मैं देखिया, सो मिलें होए सुख चैन ।

तब लग आतम रोवत, सूके लोहू पानी नैन ॥ ५

आपकी कृपासे मैंने जिन धामधनीको देखा, अब उनसे मिलकर ही सुख-शान्ति मिलेगी। तब तक मेरी आत्मा रोती रहेगी और इस शरीरका रक्त और आँसू भी सूख जाएँगे।

जो पट आडे धाम के, मैं ताए देऊं जार बार ।

कोई विध करके उडाइए, ए जो लाग्यो देह विकार ॥ ६

परमधामके मार्गमें जो बाधाएँ खड़ी हैं, उन्हें जलाकर मैं राख कर दूँ। इस देहके विकारोंको भी अनेक प्रकारसे दूर करना है।

वन वेली सब रोइया, और जंगल जानवर ।

कै पसु पंखी केते कहूं, जले जो दरदा कर ॥ ७

हे धनी ! आपके विरहमें इस शरीररूप वनकी सभी वेलियाँ (नसें) काम, क्रोध आदि जानवर सब रो रहे हैं। गुण, अङ्ग, इन्द्रियाँ आदि पशु-पक्षी भी विरहाग्निसे पीड़ित हो रहे हैं।

जंगल रोया जलिया, जल बल हुआ खाक ।

इनमें पंखी क्यों रहे, जो पर जल हुए पाक ॥ ८

इस विरहाग्निमें जलकर शरीररूपी वन तो राख हो गया है। अब आत्मारूपी पक्षी इसमें कैसे रहेगा जब उसके प्रेम (इश्क) और श्रद्धा (ईमान) रूपी पंख भी विरहाग्निमें जलकर पवित्र हो गए हैं।

पहाड रोए टूटे टुकडे, हुए हैं भूक भूक ।

भवजल रोया सागर, सो गया सारा सूक ॥ ९

हे धनी ! आपके विरहमें पर्वतके समान शरीरके अस्थि-पञ्जर भी टुकड़े-टुकड़े हो रहे हैं। शरीरके रक्त तथा जलके साथ-साथ यह सारा भवसागर ही सूखने लगा है।

भोम रोई भली भांतसों, टूट गई रसातल ।

नाग लोक सब रोइया, सो पड्या जाए पाताल ॥ १०

हे धनी ! मेरे हृदयरूपी भूमि भी आपके विरहमें रो-रोकर रसातलमें पहुँच गई है. नखसे शिखा तक यह सम्पूर्ण शरीर शिथिल होकर पातालकी ओर धस गया है.

रोए पांच तत्व तीन गुन, निरंजन निराकार ।

रोई द्वैत पुरुष प्रकृति, पट उड्यो अंतर आकार ॥ ११

विरहसे पीड़ित आत्मा संसारके पञ्चमहाभूत, त्रिगुणसे लेकर निर्गुण निराकार प्रकृति पुरुष सभीको रोते हुए देखती है. उसके अन्तःकरणके सभी मायावी आवरण नष्ट हो गए हैं.

आकास रोया सब अंगों, मोह अहं गल्यो चहुं ओर ।

निराकार निरंजन गलिया, जाए रह्या अंतर ठोर ॥ १२

विरहिणी आत्माको आकाश तत्त्व भी रोता हुआ दिखाई देता है. उसके समक्ष मोहतत्त्व, अहङ्कार (ज्योतिस्वरूप), निराकार और निरञ्जन किसीका भी अस्तित्व नहीं रहता. उसकी सुरता सीधा परमधाम पहुँच जाती है.

इसके आग फूंक दई, लाग्यो सब ब्रह्मांड ।

जब पोहोंची झालां अंतर लों, तब क्यों रहे ए पिंड ॥ १३

प्रेमने ऐसी आग लगा दी कि समस्त ब्रह्माण्ड जल उठा. जब विरहाग्निकी लपटें आत्मा तक पहुँचीं, तब यह शरीर कैसे टिक सकता है ?

आग इसक ऐसी उठी, लोहू रोया वैराट ।

खाक हुआ जल बल के, उड गया सब ठाट ॥ १४

प्रेमकी आग अब ऐसी भड़क उठी कि समस्त चराचर जगत रक्तके आँसू रोने लगा. सब कुछ जलकर राख हुआ और सारा ठाट-बाट ही उड़ गया.

महामत कहे मेहेबूब जी, खेल देख्या चाह्या दिल ।

हांसी करी भली भांतसों, अब उठो सुख लीजे मिल ॥ १५

महामति कहते हैं, हे मेरे प्रियतम धनी ! हृदयकी चाहना अनुरूप यह खेल

भलीभाँति देख लिया. इसे दिखाकर आपने भी हमारी हँसी पूर्णरूपसे की. अब तो जागृत कर लीजिए जिससे आपसे मिलकर अखण्ड आनन्दका अनुभव कर लूँ.

प्रकरण ७५ चौपाई १०११

राग श्री

निजनाम सोई जाहेर हुआ, जाकी सब दुनी राह देखत ।

मुक्ति देसी ब्रह्मांड को, आए ब्रह्म आतम सत ॥ १

अब वह निजनाम (तारतम मन्त्र) प्रकट हो गया है, जिसकी प्रतीक्षा सारा संसार कर रहा था इसी निजनामको लेकर परमधामकी ब्रह्मात्माएँ प्रकट हुई हैं. अब वे (तारतम ज्ञानके द्वारा) ब्रह्माण्डके जीवोंको मुक्ति देंगीं.

हो मेरी सत आतमा, तुम आओ घर सत खसम ।

नजर छोडो री झूठ सुपन, आए देखो सत वतन ॥ २

हे मेरी सत्य आत्माओ ! तुम सब अपने धनीके अखण्ड (सत्य) घर (परमधाम) आ जाओ. स्वप्नवत् नश्वर संसारसे अपनी दृष्टि हटाकर (सांसारिक भावनाओंको दूर कर आध्यात्मिक भावनाओंसे) सत्य घर अखण्ड परमधामको देखो.

तुम निरखो सत सरूप, सत श्यामाजी रूप अनूप ।

साजोरी सत सिनगार, विलसो संग सत भरतार ॥ ३

तुम सत्य स्वरूप अक्षरातीत धनीको देखो और श्यामाजीके अनुपम सत्य स्वरूपको निहारो. सत्य (प्रेम, दया, क्षमा, सन्तोष, धैर्य) का शृङ्गार सजाकर अपने प्रियतम धनीसे आनन्द-विहार करो.

सत धनीसों करो हांस, पीछे करो प्रेम विलास ।

सत वरनन कीजो एह, उपजे सत प्रेम सनेह ॥ ४

अपने प्रियतम धनीके साथ हास (परिहास) पूर्ण प्रेम विलास करो. मैंने दिव्य ब्रह्मपुर धामका वर्णन इसलिए किया जिससे तुम्हारे अन्दर परब्रह्म परमात्माके प्रति प्रेम अङ्कुरित हो.

सत साथ देत देखाई, सत आनन्द अंग न माई ।

सत साथसों करो प्रीत, देखो सत घरकी ए रीत ॥ ५

जिन आत्माओंको प्रियतमधनीके दर्शन होते हैं, उनके अङ्गोंमें सच्चा आनन्द उमड़ आता है. इसलिए अपनी सत्य आत्माओंसे प्रेम करो, क्योंकि यही अपने सत्य घर परमधामकी रीति है.

सत रेहेस सत रंग, सत साथ को सुख अभंग ।

तुम संग करो सत बातें, सत दिन और सत रातें ॥ ६

परमधामकी सभी लीलाएँ सत्य स्वरूप हैं. उन लीलाओंका अखण्ड सुख लेने वाले साथ भी अखण्ड हैं. तुम परस्पर सत्य स्वरूप श्रीराजजीकी लीलाओंकी ही बातें करो. वहाँके दिन और रातकी सभी लीलाएँ सत्य हैं.

सत चांद और सत सूर, हिसाब बिना सत नूर ।

सत सोभा सत मन्दर, सत सुख सेज्या अंदर ॥ ७

वहाँके सूर्य एवं चन्द्रमा भी सत्य हैं तथा उनकी अपार किरणें भी सत्य हैं. मन्दिर व उसकी शोभा भी सत्य है और पाँचवीं भोमकी सुख-शय्या भी सत्य है.

सत जिमी सत वन, खुसबोए सत पवन ।

लेहेरी लेवे सत जल, सत आकास निरमल ॥ ८

परमधामकी भूमि तथा वन-उपवन सब सत्य हैं. उनसे उत्पन्न सुगन्धि लेकर बहनेवाला पवन भी सत्य है. यमुनाजीका लहराता हुआ जल तथा चिन्मय आकाश भी सत्य है.

सत पसू पंखी अलेखें, सत खेल राज साथ देखें ।

सत खेलें बोलें बन माहें, सत सुख हिसाब काहूं नाहें ॥ ९

परमधामके असंख्य पशु-पक्षी भी सत्य हैं. समस्त साथ श्री धनीजीके साथ उनकी नित्य लीलाएँ देखते हैं. वे धनीजीके साथ सत्य बोलते हैं और वनमें क्रीड़ा करते हैं. इस प्रकार परमधामके असंख्य अखण्ड (सत्य) सुखोंका वर्णन नहीं हो सकता.

रूत रंग रस नए नए, अलेखें सदा सुख कहे ।

सत जमुना त्रट किनारें, दोऊ तरफ बराबर हारें ॥ १०

दिव्य परमधाममें ऋतुएँ, उनका रङ्ग तथा रस अनुपम होता है। इस प्रकार वहाँके सुखोंकी कोई सीमा नहीं है। यमुनाजीके दोनों किनारों पर समान रूपसे खड़े वृक्षपङ्क्तियोंकी शोभा भी अपरिमित है।

सत डारी झलूबे ऊपर जल, खुसबोए हिडोले सीतल ।

सत सुख तलाव के त्रट, खोल देखो नैना पट ॥ ११

यमुनाजीके तट पर खड़े वृक्षोंकी शाखाओंके प्रतिबिम्ब यमुनाजीके पावन जलमें हिलोरें लेकर शोभा बढ़ाते हैं। वृक्षोंकी शाखाओं पर सुशोभित झूलों पर झूलती हुई सखियाँ शीतलताका अनुभव करती हैं। इस प्रकार हे सुन्दरसाथजी ! हौजकौसर तालके तटके अखण्ड सुखोंको भी अपनी अन्तर्दृष्टिसे देखो।

पसू गाए लगावें रट, गिरदवाए देहुरी निकट ।

बडा अचरज मोहे एह, ए सुन क्यों रहे झूठी देह ॥ १२

हौजकौसर तालके चारों ओर स्थित मन्दिरोंके निकट पशु-पक्षी धनीका गुणगान कर रहे हैं। परमधामकी इन सभी वास्तविकताओंको जाननेके पश्चात् भी यह झूठा शरीर क्यों नहीं छूटता है, इसका मुझे बड़ा आश्चर्य होता है।

ए खेल झूठा तो छोड्या जाए, जो सत सुख अंग में भराए ।

जब सत सुख देखोगे केल, तब झूठा दुख देओगे ठेल ॥ १३

हे साथजी ! जब तुम्हारे हृदयमें धनीजीके अखण्ड सुख उभरने लगेंगे, तभी तुम इस झूठे संसारके खेलसे मुक्त हो पाओगे। जब अखण्ड सुखोंमें खेलने लगोगे, तब इन झूठे दुःखोंको तुम छोड़ सकोगे।

सत साईंसीं करो विलास, तब टूट जाए झूठी आस ।

ज्यों ज्यों लेओगे सत सुख, त्यों त्यों छूटे असत दुख ॥ १४

इसलिए तुम अक्षरातीत धनीके साथ आनन्द विलास करो, तभी तुमसे झूटे

संसारके सुखोंकी लालसा छूट जाएगी. जैसे-जैसे तुम अखण्ड सुख प्राप्त करते जाओगे, वैसे-वैसे इस संसारके झूठे दुःख तुमसे दूर भागते जाएँगे.

**ज्यों ज्यों उठे सत सुख के तरंग, त्यों त्यों उडे सुपन को संग ।**

**जब याद आवे सुख अपनों, तब छूटेगो झूठो सुपनो ॥ १५**

जैसे-जैसे तुम्हारे हृदयमें अखण्ड सुखोंकी लहरें उठने लगेंगी, वैसे-वैसे स्वप्नवत् संसारका संझ छूटता जाएगा. जब तुम्हें अखण्ड परमधामके सुख याद आने लगेंगे, तब यह झूठा स्वप्न (संसार) तत्काल छूट जाएगा.

**देखो मन्दिर मोहोल झरोखे, ज्यों छूट जाए दुख धोखे ।**

**देखो झूठी फेर फेर मारे, सत सुख बिना कोई न ऊबारे ॥ १६**

परमधामके महल, मन्दिर, झरोखे आदिके दर्शन करो जिससे संसारके झूठे दुःख छूट जाएँगे. देखो, यह झूठी माया कैसे हमें वारंवार अपने फन्देमें फँसाती रहती है. धनीजीके अखण्ड सुखोंके बिना इस मायासे कोई भी उबार नहीं सकता.

**छोड घर को सुख अलेखे, आतम काहे को दुखडा देखे ।**

**आतम पर आतम पेखे, सुख उपजे सत अलेखे ॥ १७**

हे सुन्दरसाथजी ! तनिक विचार करो कि परमधामके इन असीमित सुखोंको छोड़कर तुम्हारी आत्मा इस संसारके मायावी दुःखोंसे क्यों लिपटी हुई है ? जब तुम्हारी आत्मा पर आत्माको पहचान लेगी, तभी उसे अखण्ड सुख प्राप्त होगा.

**जब आत्मने दई साख, साथें भी कही बेर लाख ।**

**सत धनीएं साख आए दई, सो तो सत वतन वालों ने लई ॥ १८**

इस विषयमें जब आत्माने साक्षी दी तभी सुन्दरसाथने भी लाखों बार इन्हीं बातोंकी पुष्टि की. सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीने यहाँ आकर सुन्दरसाथको प्रमाण सहित परमधामकी साक्षी दी है. परमधामकी ब्रह्मआत्माओंने ही सद्गुरुका उपदेश ग्रहण किया.

आतमने सत परचे पाए, तो भी झूठा दुख छोड़्या न जाए ।

जब सत सुख पाया रस, जीवरा तबहीं चल्या निकस ॥ १९

सद्गुरुके ज्ञानके द्वारा आत्माको अखण्ड सुखोंका परिचय प्राप्त हो गया तथापि संसारके झूठे दुःख छोड़े नहीं जा सकते. जब अखण्ड सुखोंके रसका अनुभव होने लगेगा, तब जीव इस नश्वर देहको तत्काल छोड़ देगा.

जब सत सुख लाग्यो रंग, तब क्यों रहे झूठे को संग ।

जब धनीसों उपज्यो सत सनेह, तब क्यों रहे झूठी देह ॥ २०

आत्माको जब अखण्ड सुखोंका रङ्ग लग जाएगा, तब इस संसारके झूठे दुःखोंके साथ वह कैसे रह पाएगी ? जब धनीजीके साथ सत्य स्नेह उत्पन्न होगा, तब यह झूठा शरीर कैसे टिका रहेगा ?

जब सत सुख हिरदे में आवे, अरवा तबहीं निकस के जावे ।

जब सत सुख धनी पाया, तब जीवरा क्योंकर पकड़े काया ॥ २१

जब परमधामके अखण्ड सुख बार-बार हृदयमें आने लगेंगे, तब यह आत्मा शरीरको छोड़कर तत्क्षण निकल जाएगी. जब प्रियतम धनीका सच्चा सुख प्राप्त होगा, तब आत्मा झूठे शरीरको पकड़कर कैसे रह सकेगी ?

जब अंतर आंखा खुलाई, तब तो बाहेर की मुदाई ।

जब अंतर में लीला समानी, तब अंग लोहू रह्या न पानी ॥ २२

जब अन्तरकी आँखें खुल जाएँगी, तब बाह्यचक्षु बन्द हो जाएँगे. जब हृदयमें अखण्ड लीला समा जाएगी, तब विरहाग्निसे इस शरीरमें रक्त व जल कुछ भी शेष नहीं रहेंगे.

जब देख्या हांस विलास, गल गया हाड मांस स्वांस ।

जब अंतर आया सुमरन, रह्यो अंग ना अंतसकरन ॥ २३

जब हृदयमें अखण्ड आनन्द-विलासका अनुभव होगा, तब शरीरके हाड, माँस गल जाएँगे तथा श्वासकी गति भी रुक जाएगी. जब हृदयसे धामधनीका स्मरण होने लगेगा, तब झूठे शरीर तथा झूठे मनकी सुधि नहीं रहेगी.



जब याद आयो सुख अखंड, तब रहे ना पिंड ब्रह्मांड ।

जब चढे विकट घाटी प्रेम, तब चैन ना रहे कछू नेम ॥ २४

जब परमधामके अखण्ड सुख याद आएँगे, तब शरीर तथा ब्रह्माण्डका भान नहीं रहेगा. जब आत्मा प्रेमकी विकट घाटी पर चढ़ जाएगी, तब उसे धामधनीके बिना शान्ति नहीं मिलेगी तथा उसके सभी नियम भी छूट जाएँगे.

महामत कहे सुनो साथ, देखो खोल बानी प्राननाथ ।

धनी ल्याए धामसे वचन, जिनसे न्यारे ना होए चरन ॥ २५

महामति कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी ! तुम सुनो, प्राणनाथ सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीकी दिव्य वाणी पर हृदयपूर्वक विचार करो एवं समझो. सद्गुरु धनी हमारे लिए ही परमधामसे दिव्य वाणी लाए हैं. उसका अनुसरण करने पर उनके चरण कमलोंसे हम दूर नहीं होंगे.

प्रकरण ७६ चौपाई १०३६

राग श्री

वतन बिसारियां रे, छलें किए हैरान ।

धनी आप बुध भूलियां, सुध ना रही बृध हान ॥ १

परमधामको भूलनेवाली हे आत्माओ ! इस मायाने तुम्हें बहुत दुःखी किया है. तुम अपने धामधनी तथा अपनी आत्माको भी भूल गई हो, इसलिए तुम्हें लाभ अथवा हानिका भी ज्ञान नहीं है.

ब्रह्मसृष्टि सखियां धाम की, आईयां छल देखन ।

जुदे जुदे घर कर बैठियां, खेलें भूलाए दिया वतन ॥ २

परमधामकी ब्रह्मात्माएँ इस झूठे संसारका खेल देखनेके लिए सुरतारूपमें यहाँ आई हैं. वे इस संसारमें देह धारण करके अलग-अलग घर बनाकर बैठ गई हैं. संसारके झूठे खेलने उन्हें अपना मूलघर परमधाम भी भुलवा दिया है.

धाम से रबद करके, हम कब आवें दूजी बेर ।

सब भूले सुध हार जीत की, तो मैं कह्या फेर फेर ॥ ३

हम सब ब्रह्मात्माएँ परमधामके प्रेम सम्वादमें यह कह रही थीं कि प्रेमकी

परीक्षामें हमें पुनः संसारमें कब आना होगा अर्थात् इसी बार ही हम खरी उतरेंगी. किन्तु यहाँ आने पर ऐसी भूल गई कि हमें हमारे प्रेम परीक्षाकी पराजय-विजयकी भी सुधि नहीं रही, इसीलिए मैं वारंवार सचेत कर रहा हूँ.

**माहों माहें कै प्रीत रीतसों, खेलें हंसें रस रंग ।**

**पेहेचान जिनों को पेड की, धनी को रिझावें सेवा संग ॥ ४**

जिनको अपने मूलघर परमधामकी पहचान हो गई है. वे आत्माएँ परस्पर अत्यन्त प्रेमसे खेलती हैं, हँसती हैं, आनन्द करती हैं तथा धनीजीको प्रेम सेवासे प्रसन्न करती हैं.

**कै मिनों मिने काल क्रोध सों, लडाई करते दिन जाए ।**

**सेवा धनी न प्रीत सैयन सों, सो डारी आसमान से पटकाए ॥ ५**

सुन्दरसाथमें कई ऐसे भी सम्मिलित हैं जो परस्पर दिन-रात लड़ते-झगड़ते रहते हैं. उन्हें धनीजीकी सेवाका ध्यान नहीं है तथा सुन्दरसाथके प्रति प्रेमभाव भी नहीं है. ऐसे लोगोंकी दशा आकाशसे नीचे गिरा दिए गए लोगोंके समान हो रही है.

**कै सेवें धनीय को, करके प्रेम सनेह ।**

**हम सखियों को पेहेचान पेड की, होसी धाम में धन धन एह ॥ ६**

कई सुन्दरसाथ प्रेमभाव पूर्वक प्रियतम धनीकी सेवा करते हैं. हममेंसे जिन आत्माओंको अपने मूलघर परमधामकी पहचान है, वे परमधाममें भी धन्य-धन्य होंगी.

**कै अवगुन लेवें धनीय का, करें आप भी अवगुन ।**

**नाहीं सनेह सुख साथसों, यों वृथा खोवें रात दिन ॥ ७**

सुन्दरसाथमें कई ऐसे भी हैं जो धनीजीमें भी अवगुण देखते हैं और स्वयं भी अवगुण करते हैं. उनमें सुन्दरसाथके प्रति प्रेम भावना भी नहीं है, ऐसे लोग रात-दिन (पूरा समय) निरर्थक गँवा रहे हैं.

तुम सूती धनिएं जगाइया, कहा आगे मौत का दिन ।

कै साख पुराई आपे अपनी, तो भी छूटे ना दुख अगिन ॥ ८

हे सुन्दरसाथजी ! जब तुम अज्ञानकी निद्रामें सोए हुए थे, उस समय धनीजीने मृत्युका भय दिखाकर तुम्हें जागृत किया। अपनी बातकी पुष्टिके लिए उन्होंने कई साक्षियाँ भी दीं, तथापि इस अनित्य संसारके अग्निके समान दुःख तुमसे नहीं छूटते हैं।

सुख देखाए वतन के, सो भी कायम सुख अलेखे ।

तो भी छल छूटे नहीं, जो आपे आंखें अपनी देखे ॥ ९

धनीजीने परमधामके अखण्ड सुखोंका अनुभव कराया। तुमने स्वयं अपनी आत्म-दृष्टि द्वारा उन्हें देखा तथापि तुमसे यह झूठा संसार छूटता नहीं है।

देखके अवसर भूलहीं, बोहोर न आवे ए अवसर ।

जानत हैं आग लगसी, तो भी छूटे ना छल क्योंकर ॥ १०

यह अवसर पुनः आने वाला नहीं है। यह जानकर भी तुम इस अवसरको भूल रहे हो। तुम्हें यह भी ज्ञात है कि पश्चात्तापकी अग्नि लगेगी, तथापि तुमसे यह झूठा छल किसी प्रकार नहीं छूट रहा।

पीछे पछतावा क्या करे, जब गया समया चल ।

ऐसे क्यों भूलें अंकूरी, जाके सांचे घर नेहेचल ॥ ११

यह अवसर बीत जाने पर पछतानेसे क्या होगा ? जो परमधामकी अङ्कुरी आत्माएँ हैं, वे इस प्रकार कैसे भूलेंगी ?

जो जाग बातें करें उमंगसों, सो हंस हंस ताली दे ।

जिन नींद दई सुख इन्द्रियों, सो उठी उंघाती दुख ले ॥ १२

जो जागृत होकर उमङ्गके साथ परमधामकी बातें करेंगी, वे परमधाममें भी ताली देकर हँसते हुए उठेंगी। जो इन्द्रियोंके झूठे सुखोंमें पड़ी रहेंगी, वे दुःखी होती हुई नीचा सिर कर उठेंगी।

क्या बल केहेसी काएर माया को, जो गए सागरमें रल ।

सामें पूर जो चढ्या होसी, सो केहेसी तिखाई मोह जल ॥ १३

जो भवसागरके प्रवाहमें बह गए, ऐसे कायर लोग मायाकी प्रबल शक्तिको क्या पहचानेंगे ? जो प्रवाहके विरुद्ध दिशामें (भक्तिमार्गमें) चलेंगे, वे ही मायाके तीक्ष्ण प्रवाहके विषयमें कह सकेंगे.

दे साख धनिएं जगाइया, दई विध विध की सुध ।

भांत भांत दई निसानियां, तो भी ठौर न आवे निज बुध ॥ १४

सद्गुरुने शास्त्रों तथा सन्त महात्माओंकी वाणीकी विभिन्न साक्षी देकर तुम्हें जागृत किया परमधामके विविध चिह्न भी दिखाए तथापि तुम्हारे पास जागृत बुद्धि नहीं आई.

महामत कहे जो होवे धामकी, सो पेहेचान के लीजो लाहा ।

ले सको सो लीजियो, फेर ऐसा न आवे समया ॥ १५

महामति कहते हैं, जो परमधामकी आत्माएँ हैं, वे मूल सम्बन्धको पहचानकर धनीजीके अखण्ड सुखका लाभ लें. ये सुख जितने अधिक लिए जा सकें उतने ले लो क्योंकि पुनः ऐसा अवसर प्राप्त नहीं होगा.

प्रकरण ७७ चौपाई १०५१

राग श्री

सखी री जान बूझ क्यों खोइए, ऐसा अलेखे सुख अखंड ।

सो जाग देख क्यों भूलिए, बदले सुख ब्रह्मांड ॥ १

हे सुन्दरसाथजी ! परमधामके ऐसे असंख्य सुखोंको जान-बूझकर क्यों गँवा रहे हो ? जागृत होकर तो देखो. इस नाशवान ब्रह्माण्डके नश्वर सुखोंके बदलेमें अखण्ड सुखोंका परमानन्द क्यों भूल रहे हो ?

कै कोट राज वैकुण्ठ के, न आवे इतके खिन समान ।

सो जनम वृथा जात है, कोई चेतो सुबुध सुजान ॥ २

वैकुण्ठके करोड़ों राज (श्रेष्ठ) सुख भी मनुष्य जीवनके एक क्षणके समान

नहीं हो सकते. ऐसा अमूल्य जीवन व्यर्थ ही व्यतीत हो रहा है. इसलिए हे बुद्धिमान, विचारशील आत्माओ ! सावधान हो जाओ.

एक खिन न पाइए सिर साटें, कै मोहोरों पदमों लाख करोड ।

पल एक जाए इन समे की, कछू न आवे इन की जोड ॥ ३  
लाखों, करोड़ों और पद्मों स्वर्ण मुद्राएँ खर्च की जाएँ अथवा अपने सिरको भी समर्पित कर दिया जाए तथापि मनुष्य जीवनका एक क्षण प्राप्त नहीं हो सकता. इस मूल्यवान् अवसरके एक पलकी तुलनामें अन्य कोई वस्तु नहीं आ सकती.

इन समे खिन को मोल नहीं, तो क्यों कहूं दिन मास वरस ।

सो जनम खोया झूठ बदले, पीउसों भई ना रंग रस ॥ ४

इस अवसरके एक क्षणका भी मूल्य आँका नहीं जा सकता फिर दिन, मास या वर्षकी तो बात ही क्या रही ? धनी मिलनके आनन्दमें मग्न न होकर ऐसे अमूल्य मनुष्य जीवनको संसारके नश्वर सुखके लिए तुम खो रहे हो.

काहूं बदले न पाइए, कै दौडत मुझ देखत ।

पर रास न आया किनको, जोलों धनी नहीं बकसत ॥ ५

परमधामके अखण्ड सुखको प्राप्त करनेके लिए संसारके लोगोंको अथक प्रयत्न करते हुए मैंने देखा है, तथापि उन्हें किसी भी सांसारिक वस्तुओंके बदलेमें अखण्ड सुख नहीं मिला. जब तक धनीकी कृपा प्राप्त नहीं होती, तब तक किसीको भी परमधामके अखण्ड सुखोंका अनुभव नहीं हो सकता.

सुख अखंड अक्षरातीत को, इन समे पाइएत हैं इत ।

कहा कहूं कुकरम तिनके, जो माहें रहे के खोवत ॥ ६

अक्षरातीतके अखण्ड सुखोंका अनुभव इसी समय इसी जीवनमें प्राप्त हो सकता है तथापि सुन्दरसाथके साथ रहकर भी जो अखण्ड सुख गँवा रहे हैं, उनके दुष्कर्मोंकी बात क्या करें ?

कैयों खोया जनम अपना, रहे धनीके जमाने माहें ।

हाए हाए कहा कहूं मैं तिनको, जो इन में से निरफल जाए ॥ ७

कई लोगोंने तो सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजके समयमें उनके साथ रहकर

भी अपना मूल्यवान समय व्यर्थ ही गँवा दिया. ऐसे लोगोंके विषयमें मैं क्या कहूँ ? हाय ! हाय ! ये लोग प्रियतम धनीके सान्निध्यमें रहकर भी निष्फल ही चले गए.

**कैयों जनम सुफल किए, ऐसा पीउका समया पाए ।**

**सेवा सनमुख जनम लों, लिया हुकम सिर चढाए ॥ ८**

कई लोगोंने सद्गुरु धनीके साथ रहनेका ऐसा अमूल्य समय पाकर अपना मनुष्य जन्म सफल किया. उन्होंने जीवन पर्यन्त धनीजीकी सेवा की तथा उनकी आज्ञाका पालन किया.

**एक साइत वृथा न गई, धनी किए सनकूल ।**

**चले चित पर होए आधीन, परी ना कबहूँ भूल ॥ ९**

उन्होंने धनीजीको प्रसन्न रखकर जीवनका एक भी क्षण व्यर्थ जाने नहीं दिया. वे धनीजीकी इच्छानुसार कार्य करते रहे, कभी भी सेवामें त्रुटि आने नहीं दी.

**सो इत भी होए चले धन धन, धाम धनी भी कहे धन धन ।**

**साथ में भी धन धन हुइयां, याके धन धन हुए रात दिन ॥ १०**

ऐसे सुन्दरसाथ इस संसारमें भी धन्य हुए और धामधनीने भी उन्हें धन्यवाद देकर उनकी प्रशंसा की. सुन्दरसाथसे भी उन्हें धन्यता प्राप्त हुई. इस प्रकार उनका समग्र जीवन धन्य-धन्य हो गया.

**कै छिपे रहे माहें दुसमन, और मारे राह औरन ।**

**चाल उलटी चल देखावहीं, तो भी धनी ना तजे तिन ॥ ११**

कई लोग ऐसे भी थे जो सुन्दरसाथमें रहकर भी शत्रुके रूपमें अन्यलोगोंको पथभ्रष्ट करनेका प्रयत्न करते थे. वे स्वयं विपरीत मार्ग पर चलकर दिखाते थे तथापि सद्गुरुने उनका परित्याग नहीं किया.

**द्रष्टि उपली सजन हो रहे, बोल देखावे मीठे वैन ।**

**जनम सारा धनी संग रहे, कबूँ दिल न दिया सुख चैन ॥ १२**

ऐसे कई लोग बाह्य दृष्टिसे सज्जन बनकर मीठे वचन बोलते रह परन्तु

जीवन भर सद्गुरुके पास रहने पर भी उन्होंने धनीको कभी चैनसे रहने नहीं दिया तथा स्वयं भी शान्तिसे रह नहीं सके.

**इन विध कै रंग साथमें, यों बीते कै वीतक ।**

**सब पर मेहेर मेहेबूब की, पर पावे करनी माफक ॥ १३**

इस प्रकार सद्गुरुके समयमें भी विभिन्न प्रकारके स्वभाव वाले सुन्दरसाथ होते थे. ऐसी कई घटनाएँ घटीं, परन्तु सद्गुरुकी कृपा सभी आत्माओं पर समान होती थी. सुन्दरसाथ ही अपने-अपने कर्मोंके अनुसार कृपाका लाभ प्राप्त करते रहे.

**दुख माया धनीपें मांग के, हम आए जिमी इन ।**

**सो छल सरूप अपनो देखावहीं, तो भी भूलें नहीं सोहागिन ॥ १४**

हम ब्रह्मात्माएँ परमधाममें धामधनीसे मायाका दुःख देखनेकी माँग कर इस नश्वर संसारमें आई हैं. यह संसार तो अपना छल (कपट) रूप (खेल) दिखाता है तथापि सुहागिनी आत्माएँ इसमें कदापि नहीं भूलतीं.

**और भी देखो विचार के, तो हुकुमें सब कछू होए ।**

**बिना हुकम जरा नहीं, हार जीत देखावे दोए ॥ १५**

और भी विचारपूर्वक देखोगे तो ज्ञात होगा कि जो कुछ हो रहा है, वह सब धनीजीकी आज्ञासे ही हो रहा है. क्योंकि उनकी आज्ञाके बिना कुछ भी सम्भव नहीं है. धनीजीकी आज्ञासे ही विजय अथवा पराजय प्राप्त होती है.

**महामत कहे लिया माग के, ए धनिएं देखाया छल ।**

**जो सनमुख रहेसी धनी धामसों, सो केहेसी छलको बल ॥ १६**

महामति कहते हैं, हमारी माँगके अनुसार ही धनीजीने इस झूठे संसारका खेल हमें दिखाया. जो ब्रह्मात्मा धामधनीकी ओर सम्मुख रहेगी, वही इस मायाके बलका वर्णन कर सकेगी.

साथजी पेहेचानियो, ए बानी समया फजर ।  
हुई तुमारे कारने, खोल देखो निज नजर ॥ १

हे सुन्दरसाथजी ! आत्म-जागृतिकी प्रभात वेलाकी इस ब्रह्मवाणीको पहचान लो. आत्म-दृष्टिसे देखो, यह दिव्य वाणी तुम्हारे लिए ही प्रकट हुई है.

त्रिविध दुनी तीन ठौर की, चले तीन विध माहीं ।  
कोई छोडे न अंकूर अपना, होवे करनी तैसी ताहीं ॥ २

जीवसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि और ब्रह्मसृष्टि इस प्रकार तीन प्रकारकी सृष्टि क्रमशः वैकुण्ठ, अक्षरधाम और परमधाम इन तीन स्थानोंसे यहाँ पर आई हुई हैं और तीनों ही अलग-अलग आचरण करती हैं. कोई भी अपने मूल सम्बन्ध (अङ्कुर) को नहीं छोड़ती. इसलिए उनके आचरण (करनी) भी उसी अनुरूप होते हैं.

सुरता तीनों ठौर की, इत आई देह धर ।  
ए तीनों रोसन नासूत में, किया बेवरा ईमामें आखर ॥ ३

तीनों स्थानोंकी आत्माओंने इस मृत्युलोकमें आकर देह धारण किया है. सद्गुरु (इमाम) ने अन्तिम समयमें इस संसारमें आकर इन तीनोंके आगमनका विवरण दिया.

इन विध जाहेर कर लिख्या, सास्त्रों के दरम्यान ।  
तीन सृष्टि आई जुदी जुदी, पोहोंचे आप अपने ठौर निदान ॥ ४

शास्त्रोंमें इस प्रकार स्पष्टरूपसे कहा गया है कि संसारमें तीन प्रकारकी सृष्टियाँ अलग-अलग स्थानोंसे आई हैं और वे सब अन्ततः अपने-अपने मूलस्थानमें पहुँच जाएँगी.

त्रिगुन से पैदा हुई, ए जो सकल जहान ।  
सो खेले तीनों गुन लिए, नाहीं एक दूजे समान ॥ ५

सत, रज और तम इन तीन गुणोंके द्वारा जीव सृष्टिकी उत्पत्ति (भगवान नारायणसे) हुई है. वे संसारमें भी तीनों गुणोंके अनुसार आचरण करती हैं.



इनमें आचरण अनुसार कोई भी एक दूसरेके समान नहीं लगती.

आतम एक्यासी पख ले, सब दुनियां में खेलत ।

मोह अहं मूल इन को, सब याही बीच फिरत ॥ ६

यह जीव सृष्टि इस ब्रह्माण्डके इक्यासी पक्षोंमें रमण करती हैं. इनकी उत्पत्तिका मूल मोह और अहङ्कार है इसलिए ये मोह और अहङ्कारमें मग्न होकर खेल रही हैं.

[इक्यासी पक्षका विवरण प्रकाश हि. प्र. ३४ में देखें.]

मोह अहं गुन की इन्द्रियां, करें फैल पसू परवान ।

फिरे अवस्था तीन में, ए जीव सृष्टि पेहेचान ॥ ७

मोह, अहङ्कार, गुण और इन्द्रियोंके वशीभूत होकर ये जीव पशु जैसा आचरण करते हैं तथा जागृत, स्वप्न और सुषुप्ति इन तीनों अवस्थाओंमें विहार करते हुए जीते हैं. यही जीव सृष्टिकी पहचान है.

सुबुध निकट न आवहीं, चले बेहेर द्रष्टि ।

आतम द्रष्ट न लेवहीं, तो कही सुपन की सृष्टि ॥ ८

ऐसे लोगोंके निकट सद्बुद्धि नहीं आती है. उनका समग्र जीवन बाह्य कर्मकाण्डमें ही व्यतीत होता है. वे अन्तरदृष्टिके द्वारा विचार करके गूढ़ रहस्योंको समझ नहीं पाते. इसलिए उन्हें स्वप्नसृष्टि कहा गया है.

जाग्रत तरफ दुनीयकी, सोवत सुपना ले ।

देखत सुपना नीदमें, ए तीनों अवस्था जीवके ॥ ९

ऐसे जीव जागृत अवस्थामें सदैव सांसारिक कार्योंमें मग्न रहते हैं, सोते हुए भी संसारका ही स्वप्न देखते हैं और सुषुप्तिमें भी संसारके ही सुख प्राप्त करते हैं. जीवसृष्टिकी इस प्रकार तीन अवस्थाएँ मानी गई हैं.

और सृष्ट जो ईश्वरी, कही जागृत सृष्टि आतम ।

सुबुध अंग करनी सुध, चले फुरमान हुकम ॥ १०

ईश्वरीसृष्टिकी जागृत आत्मा कहा गया है. उनके अन्तःकरणमें सद्बुद्धि रहती

है और उनका आचरण (करनी) भी पवित्र होता है। वे सदैव शास्त्रवचन एवं गुरु आज्ञाके अनुसार अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

एही सृष्टि ईश्वरी जागृत, आई अक्षर नूर से जे ।

मेहेर ले मेहेबूब की, रहे तुरी अवस्था ए ॥ ११

ईश्वरीसृष्टिकी ये जागृत आत्माएँ, अक्षरब्रह्मकी सुरताके रूपमें आई हैं। वे सदैव धामधनीकी कृपा प्राप्त कर तुरीयावस्था (चौथी अवस्था) में रहती हैं।

ब्रह्म सृष्टि आई अरससे, जीत इन्द्री सुध अंग ।

छोड माहें बाहेर द्रष्टि अंतर, पर आतम धनी संग ॥ १२

ब्रह्मसृष्टि परमधामसे आई हैं। उन्होंने अपने गुण, अङ्ग और इन्द्रियों पर विजय प्राप्त की हुई होती है। वे संसारकी अन्तः और बाह्य दृष्टिको छोड़कर अपनी सुरताको परआत्मा तथा धामधनीके साथ लगाए रहती हैं।

एक सुख नेहेचल धामको, और सुख अखंड अक्षर ।

तीसरो वैकुण्ठ सुपनो, ए त्रिधा सृष्टि यों कर ॥ १३

ब्रह्मसृष्टिको परमधामके अखण्ड सुख, ईश्वरीसृष्टिको अक्षरधामका सुख एवं जीवसृष्टिको स्वप्नवत् वैकुण्ठ धामका सुख मिलता है। इस प्रकार तीनों सृष्टिकी गति है।

कृपा है कै विध की, ए जो तीनों सृष्टि ऊपर ।

एक एक पर कै विध, इनका बेवरा सुनो दिल धर ॥ १४

इस प्रकार पूर्णब्रह्म परमात्माकी कृपा दृष्टि तीनों सृष्टियों पर भिन्न-भिन्न प्रकारसे पड़ती है। प्रत्येक सृष्टिपर विविध रीतिसे उनकी कृपा होती है, उसका विवरण ध्यानपूर्वक सुनो।

कृपा करनी माफक, कृपा माफक करनी ।

ए दोऊ माफक अंकूर के, कै कृपा जात ना गिनी ॥ १५

प्रत्येकको कर्मानुसार धनीजीकी कृपा प्राप्त होती है एवं धनीजीकी कृपाके अनुसार उनके कर्म होते हैं। परन्तु ये दोनों बातें मूल सम्बन्ध (अङ्कुर) के

अनुसार ही होती हैं। धनीजीकी कृपा कितनी मात्रामें और किस प्रकार प्राप्त होती है, उसकी गणना नहीं हो सकती।

**धाम अंकूर एक विध को, कै विध कृपा केल ।**

**ए माफक कृपा करनी भई, करने खुसाली खेल ॥ १६**

सभी ब्रह्मसृष्टियोंमें परमधामका मूल सम्बन्ध (अङ्कुर) एक ही प्रकारका है। परन्तु खेलमें उन पर धनीजीकी कृपा कई प्रकारकी है। इस खेलको अधिक सुखदायी बनानेके लिए यहाँ पर धनीजीकी कृपाके अनुसार ब्रह्मसृष्टिका रहन-सहन (करनी) होता है।

**सृष्टि ईश्वरी कही अंकूरी, औरों अंकूर दिए कै ।**

**तिन जुदा जुदा ठौर नेहेचल, कृपा अंकूर से भई ॥ १७**

ईश्वरीसृष्टिको अक्षरब्रह्मके सम्बन्धी (अङ्कुरी) कहा गया है। ब्रह्मात्माओंने संसारके अन्य जीवोंको भी अङ्कुर दिए हैं। उनके अखण्ड मुक्तिस्थल अलग-अलग हैं। इस प्रकार अङ्कुरके अनुसार उन पर कृपा हुई है।

**भिस्त होसी आठ विध की, और आठ विध का अंकूर ।**

**हर अंकूर कृपा कै विध की, ले उठसी नेहेचल नूर ॥ १८**

इस प्रकार जीवोंको अखण्ड सुख देनेके लिए आठ प्रकारके मुक्तिधाम होंगे और सम्बन्ध (अङ्कुर) भी आठ प्रकारके निर्धारित होंगे। प्रत्येक सम्बन्ध पर धनीजीकी विभिन्न प्रकारकी कृपा होती है। यही कृपा उन्हें अखण्ड मुक्तिस्थलोंमें पहुँचाएगी।

**करनी देखाई अंकूर की, हुई तीनों की तफावत ।**

**सो तीनों रोसन भाए, चढते त्राजू बखत ॥ १९**

मूल सम्बन्ध (अङ्कुर) के अनुसार यहाँपर तीनों सृष्टिके कर्मोंमें अन्तर दिखाया गया है। इस प्रकार तुलना करने पर तीनों सृष्टियोंके आचरण स्पष्ट दिखाई दिए।

**करनी छिपी ना रहे, ना कछू छिपे अंकूर ।**

**मेहेर भी माफक अंकूर के, उदे होत सत सूर ॥ २०**

सत्यज्ञान (तारतम ज्ञान) रूपी सूर्यके उदय होने पर किसीके कर्म छिपे नहीं

रहेंगे और किसीका मूल सम्बन्ध भी छिपा नहीं रहेगा. धनीजीकी कृपा भी उन्हें मूल सम्बन्धके अनुसार ही प्राप्त होगी.

**क्या गरीब क्या पातसाह, क्या नजीक क्या दूर ।**

**निकस आया सबन का, तीन विध का अंकूर ॥ २१**

दिव्य तारतम ज्ञानका प्रकाश फैलाने पर राजा हो या रङ्ग, निकट हो या दूर, सबके तीनों प्रकारके अङ्कुर (मूल सम्बन्ध) स्पष्ट हुए.

**हर एक के तीन तीन, तिन तीनों के सताइस ।**

**यों चढते त्राजू चढे, नफा नसल न नाते रीस ॥ २२**

इस प्रकार ब्रह्म, ईश्वरी और जीव इन तीनों सृष्टियोंमें प्रत्येकके सत्, रज और तम इन तीन गुणोंके कारण नौ और पुनः पुष्ट, प्रवाह, मर्यादा इन तीन भावोंसे गुणा करने पर सब मिलाकर २७ प्रकारके भाव स्पष्ट होते हैं. इस प्रकार सबको तुला पर तौला जाए तो उस समय जाति, ईर्ष्या और अहङ्कार कोई भी काम नहीं आएँगे.

**दया भी तिन पर होएसी, जिनके असल अंकूर ।**

**अवल मध और आखर, सनमुख सदा हजूर ॥ २३**

जिनका मूल सम्बन्ध पूर्णब्रह्म परमात्मा अक्षरातीतके साथ है और जो आदि, मध्य और अन्ततक उनके सान्निध्यमें रहते हैं, उन्हीं पर धामधनीकी कृपादृष्टि होती है.

**ए छल जिमी करम करावहीं, आपको बुरा न चाहे कोए ।**

**तो भी मेहेर न छोडे मेहेबूब, पर करनी छल वस होए ॥ २४**

यह छलवती माया ही लोगोंसे भले-बुरे कर्म करवाती है. कोई भी व्यक्ति अपना बुरा नहीं चाहता. तथापि प्रियतम धनी उन पर कृपा करना नहीं छोड़ते किन्तु उनके कर्म ही मायाके वशीभूत होते हैं.

**जाहेर हुई सबन की, आखर गिरो आकल ।**

**अंदर की उदे हुई, समे पावने फल ॥ २५**

अब सब प्रकारके लोगोंके भले-बुरे कर्म प्रकट हो गए हैं. उनमें ब्रह्मसृष्टि

सर्वाधिक बुद्धिमान है. आत्मजागृतिके समय (कयामतके दिन) अखण्ड फलके लिए ब्रह्मात्माओंके हृदयमें ज्ञानकी ज्योति प्रदीप्त हुई.

**छिपी किसी की ना रहे, करना धनी अदल ।**

**सांच झूठ जैसा जिनों, चढ आया तराजू दिल ॥ २६**

अन्त समयमें धनीजीको ही कर्मोंके अनुसार सबको न्याय देना है. इसलिए अब किसीके कर्म छिपे नहीं रहेंगे. सत्य अथवा असत्य जैसे जिसके आचरण होंगे, तुला पर चढ़ते ही उन सबका विवरण दिलमें आ जाएगा.

**वतन के अंकूर बिना, इत दुनी करे कै बल ।**

**मुक्त सुख इत होएसी, पर पावे न धाम नेहेचल ॥ २७**

परमधामके सम्बन्ध (अङ्कुर) के बिना यह दुनियाँ अनेक प्रयत्न करने पर भी केवल मुक्तिस्थलों (बहिशतों) का सुख ही प्राप्त कर सकती है, किन्तु अखण्ड परमधाम प्राप्त नहीं हो सकता.

**कै आए अनभव लेयके, सो पीछे दिए पटकाए ।**

**धनी दया अंकूर बिना, किन सत सुख लियो न जाए ॥ २८**

परमधामको पानेके लिए कई लोग अपनी-अपनी साधनाका अनुभव लेकर सामने आए परन्तु मायावी स्वार्थोंने उन्हें सत्य धर्मके मार्गसे विचलित कर दिया, क्योंकि धनीजीकी कृपा तथा मूल सम्बन्ध (अङ्कुर) के बिना किसीको भी परमधामका अखण्ड सुख प्राप्त नहीं हो सकता.

**कदी सौ बरस रहो साथ में, धनी अनभव सौ बेर ।**

**मूल अंकूर दया बिना, ले करमें डाले अंधेर ॥ २९**

कदाचित् सौ वर्ष तक ब्रह्म आत्माओंके साथ रहनेका अवसर भी मिल जाए और कई वर्षोंतक धनीजीके सान्निध्यका अनुभव भी प्राप्त हो जाए, तथापि धामधनीकी कृपा एवं परमधामका मूल सम्बन्ध न होने पर कर्मके बन्धन अन्धकारमें धकेल देते हैं.

**दया और अंकूर की, छिपे न करनी नूर ।**

**मन वाचा करम बांधके, दूजा ऐसा कर ना सके जहूर ॥ ३०**

जिन पर पूर्णब्रह्म परमात्माकी कृपा हो और जो परमधामके मूल सम्बन्धी

हैं, उनके कर्मोंका प्रकाश किसीसे भी छिपा नहीं रह सकता. ब्रह्माङ्गनाओंके अतिरिक्त अन्य कोई भी व्यक्ति मन, वचन और कर्मको वशमें करे तथापि ज्ञानका प्रकाश फैला नहीं सकता.

महामत कहे तिन वास्ते, ए तीनों हैं सामिल ।

करनी कृपा अंकूर, वाके छिपे ना अमल ॥ ३१

महामति कहते हैं, इन तीनों सृष्टियोंकी पहचानके लिए व्यक्तिके कर्म, परमात्माकी कृपा और मूल वतनके सम्बन्ध, ये तीनों बातें अनिवार्य हैं. इन तीनोंको अपने आचरणानुसार प्राप्त होनेवाला परिणाम छिपा नहीं रह सकता.

प्रकरण ७९ चौपाई १०९८

राग श्री

मेरे मीठे बोले साथ जी, हुआ तुमारा काम ।

प्रेमैं में मगन होइयो, खुल्या दरवाजा धाम ॥ १

सखी री धाम जैये ॥ टेक ॥

हे सुन्दरसाथजी ! मेरे (सद्गुरुके) मीठे वचनोंके द्वारा तुम्हारे सब कार्य (मनोरथ) पूर्ण हो गए हैं. तुम अपने धनीके प्रेममें मगन रहो. तुम्हारे लिए परमधामके द्वार खुल गए हैं. इसलिए हे सुन्दरसाथजी ! अब परमधाम चलें.

दौड सको सो दौडियो, आए पोहोंच्या अवसर ।

फुरमानमें फुरमाइया, आया सो आखर ॥ २

जागनीके लिए अन्तिम समय आ पहुँचा है, इसलिए जितना दौड़ सकते हो उतना दौड़ो (अज्ञानको छोड़कर जागृत हो जाओ). आत्म-जागृतिका शास्त्रोक्त समय आ गया है.

वरनन करते जिनको, धनी केहेते सोई धाम ।

सेवा सुरत संभारियो, करना एही काम ॥ ३

सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्रजी महाराज जिस मूलघरका वर्णन करते थे, वही

अपना परमधाम है. इसलिए तुम धनीजीकी सेवा करते हुए अपनी सुरताको परमधामकी ओर केन्द्रित करो, क्योंकि हमें यही कार्य करना है.

वन विसेखे देखिए, माहें खेलन के कै ठाम ।

पसु पंखी खेलें बोलें सुन्दर, सो मैं केते लेऊं नाम ॥ ४

परमधामके विभिन्न वन-उपवनकी शोभाको देखो. वहाँ पर अनेक क्रीडास्थल हैं. उनमें असंख्य पशु-पक्षी विभिन्न प्रकारके खेल करते हुए सुन्दर कलरव करते हैं. मैं उनमेंसे कितनोंका नाम लूँ ?

स्याम स्यामाजी सुन्दर, देखो करके उलास ।

मनके मनोरथ पूरने, तुम रंग भर कीजो विलास ॥ ५

अपने हृदयमें प्रेम और उल्लास भरकर अपने प्राणाधार श्याम-श्यामाजीके सुन्दर स्वरूपके दर्शन करो और अपने मनोरथोंको पूर्ण करनेके लिए उनके साथ आनन्द-विलास करो.

इसक आयो पीउ को, प्रेम सनेही सुध ।

विविध विलास जो देखिए, आई जागनी बुध ॥ ६

अब हमारे हृदयमें धामधनीका प्रेम प्रकट हुआ है, उसीसे हमें परमधामके प्रेमकी सुधि हुई. अब परमधामके विभिन्न प्रकारके प्रेम विलासको देखो, क्योंकि तारतम ज्ञानरूपी जागृत बुद्धि प्रकट हो गई है.

आनंद वतनी आइयो, लीजो उमंग कर ।

हंसते खेलते चलिए, देखिए अपनों घर ॥ ७

परमधामका आनन्द प्रकट हो गया है, उसे उत्साह पूर्वक ग्रहण करो. हँसते-खेलते चलो और अखण्ड परमधामको देखो.

सुख अखंड जो धाम को, सो तो अपनों अलेखें ।

निपट आयो निकट, जो आंखा खोलके देखे ॥ ८

परमधामके अखण्ड सुख तो असीम हैं. अब वे हमारे निकट आ चुके हैं. तुम उन्हें अन्तर्दृष्टिसे देखो एवं अन्तरात्मामें उनका अनुभव करो.

अंग अनभवी असल के, सुखकारी सनेह ।

अरस परस सबमें भया, कछू प्रेमें पलटी देह ॥ ९

तुम्हारी आत्मा तो परमधामके वास्तविक प्रेमका अनुभव कर रही है जो अखण्ड सुख देनेवाला है. वह प्रेम तुम सबमें आत्मा-परात्माके सम्बन्ध द्वारा जागृत हो चुका है. इसके कारण तुम्हारे शरीरका व्यवहार ही बदल गया है.

मंगल गाड़ए दुलहे के, आयो समे स्यामा वर स्याम ।

नैनों भर भर निरखिए, विलसिए रंग रस काम ॥ १०

इसलिए अब प्रियतम परमात्माके शुभगुणोंका गायन करो, क्योंकि सुन्दरवर श्याम-श्यामाको मिलनेका समय आ गया है. अब नयन भरकर युगल स्वरूपके दर्शन करो और प्रेमानन्द लेते हुए उनके साथ विलास करो.

धामके मोहोलों सामग्री, माहें सुखकारी कै विध ।

अंदर आंखें खोलिए, आई है निज निध ॥ ११

परमधामके महल और मन्दिर विभिन्न प्रकारकी आनन्ददायी सामग्रियोंसे परिपूर्ण हैं. इसलिए अन्तःदृष्टिको खोलकर देखो, वह अखण्ड निधि स्वरूप तारतम ज्ञान यहाँ आ पहुँचा है.

विलास विसेखें उपज्या, अंदर कियो विचार ।

अनभव अंगे आइया, याद आए आधार ॥ १२

इस प्रकार अन्तर हृदयसे विचार करो, प्रियतम धनीके साथ विशेष आनन्द-विलास करनेकी कामना उत्पन्न हुई है. अब धामधनीका स्मरण होते ही परमधामके अखण्ड सुखोंका अनुभव होने लगा.

दरदी विरहा के भीगल, जानों दूरथें आए विदेसी ।

घर उठ बैठे पलमें, रामत देखाई ऐसी ॥ १३

इस संसारमें आकर हम सबके हृदय धनीजीके प्रेम और विरहके कारण रो रहे हैं. मानों हम दूर आकर विदेशी बन गए हैं. परन्तु धनीजीने ऐसा खेल दिखाया कि हम क्षणभरमें ही जागृत होकर परमधाममें बैठ जाएँगे.



उठके नहाइए जमुनाजी, कीजे सकल सिनगार ।

साथ सनमंधी मिलके, खेलिए संग भरतार ॥ १४

इसलिए अब भ्रमकी निद्राको छोड़कर जागृत हो जाओ तथा यमुनाजीके शीतल जलमें स्नान करो. तत्पश्चात् परमधामके सम्पूर्ण शृङ्गार धारण कर सभी ब्रह्मात्माएँ एक साथ मिलकर प्रियतम धनीके साथ रमण करो.

महामत कहें मलपतियां, आओ निज वतन ।

विलास करो विध विध के, जागो अपने तन ॥ १५

महामति कहते हैं, प्रेममें मस्त रहने वाली हे आत्माओ ! तुम सब साथ मिलकर परमधाम आओ और परात्मामें जागृत होकर प्रियतम धनीके साथ विभिन्न प्रकारके आनन्द-विलास करो.

प्रकरण ८० चौपाई १११३

राग मारु

सुंदर साथजी ए गुन देखो रे, जो मेरे धनिएं किए अलेखे ॥ टेक ॥

क्योंए न छोडे माया हम को, हम भी छोड़ी न जाए ।

अरस परस यों भई बज्रमे, सो मेरे धनिएं दई छुटकाए ॥ १

हे सुन्दरसाथजी ! धनीजीके द्वारा हम पर किए हुए उपकार एवं उनके गुणोंको तुम देखो. झूठे संसारकी यह माया हमें छोड़ती नहीं थी तथा हमसे भी यह माया छोड़ी नहीं जाती थी. इस प्रकार माया तथा हमारे बीचका बन्धन वज्रलेप तुल्य हो गया था. ऐसी बलवती मायाके बन्धनसे धनीजीने हमें छुड़ा दिया.

कोई ना निकस्या इन माया से, अवलसेंती आज दिन ।

सो धनिएं बल ऐसो दियो, हम तारें चौदे भवन ॥ २

सृष्टिके आदिकालसे लेकर आज तक इस मायाके वज्रलेपी बन्धनसे कोई भी छूट नहीं सका है. परन्तु धनीजीने हमें अखण्ड ज्ञानद्वारा ऐसी शक्ति दी है कि हम सरलता पूर्वक उससे छूट सकते हैं और चौदह लोकोंके जीवोंको भी तार सकते हैं.

आगे हुई ना होसी कबहूँ, हमें धनिए ऐसी सोभा दई ।

सब पूजें प्रतिबिंब हमारे, सो भी अखंड में ऐसी भई ॥ ३

सद्गुरु धनीने (ब्रह्मज्ञान देकर) हमें ऐसी प्रतिष्ठा दिलाई कि ऐसी शोभा आज तक किसीको भी नहीं मिली है और न ही भविष्यमें मिलेगी. धनीजीकी इस कृपाके कारण मुक्तिस्थलों (बहिश्तों) में हमारे प्रतिबिम्ब पूजे जाएंगे. इस प्रकार अखण्ड मुक्तिस्थलोंमें भी हमारी शोभा हुई.

धनिए भिस्त कराई हमपें, किल्ली हाथ हमारे ।

लोक चौदे हम किए नेहेचल, सेवें नकल हमारी सारे ॥ ४

सद्गुरु धनीने दिव्य तारतम ज्ञानकी कुञ्जी देकर संसारके जीवोंको भी हमारे द्वारा मुक्ति दिलाई. इसलिए इस तारतम ज्ञानके द्वारा हमारे माध्यमसे चौदह लोकोंके प्राणी अखण्ड हुए. इस प्रकार ये सारे जीव हमारे प्रतिबिम्बोंकी सेवा करेंगे.

ऐसी बडाई दई हम गिरोह को, और किए औरों के आधीन ।

फेर कहे इन पीउ पेहेचाने, याही में यकीन ॥ ५

सद्गुरुने हम (ब्रह्मसृष्टियों) को इतनी बड़ी प्रतिष्ठा देकर हमारा सन्मान किया. तत्पश्चात् हमें दूसरोंको मुक्ति दिलानेका उत्तरदायित्व भी सौंपा और कहा कि इन्हीं ब्रह्मात्माओंको पूर्णब्रह्मकी पहचान है तथा इनको ही पूर्णब्रह्म परमात्मा पर सम्पूर्ण विश्वास है.

चौदे भवन को दिया यकीन, सो भी कहे गिरो बल दिया ।

सोभा अलेखें कहूँ मैं केती, ऐसा धनिए हमसों किया ॥ ६

सद्गुरु धनीने चौदह लोकोंके जीवोंको एक परमात्माके प्रति विश्वास दिलाया तथा ब्रह्मात्माओंको शोभा दी कि यह कार्य करनेकी शक्ति ब्रह्मात्माओंमें ही है. इस प्रकार सद्गुरु धनीके द्वारा हमें प्रदान की गई अपार शोभाका वर्णन किस प्रकार करूँ ?

बिन जाने बिन पेहेचाने कै सुख, ऐसे धनिए हमको देखाए ।

अबलों गिरो न जाने धनी गुन, सो जागनी हिरदे चढ आए ॥ ७

जिन सुखोंको हमने कभी जाना तथा पहचाना नहीं था, ऐसे अनेक सुख

धनीजीने हमें दिखाए. अब तक ब्रह्मसृष्टियाँ भी धनीजीके ऐसे गुणोंको जानती नहीं थी. जागनीकी इस पावन वेलामें जागृत होनेसे ये सब गुण हमारे हृदयमें उमड़ रहे हैं.

**ऐसे ब्रह्मांड अलेखें अक्षरथें, पल में पैदा फना होत ।**

**ऐसे इंडमें चींटी बराबर, हम गिरो हुई उदोत ॥ ८**

अक्षरब्रह्म एक क्षणमें ऐसे अनेक ब्रह्माण्डोंका सर्जन करते हैं तथा दूसरे क्षणमें ही उनका विनाश करते हैं. ऐसे विराट ब्रह्माण्डमें हम ब्रह्मात्माओंका आकार एक चींटीके समान होने पर भी धनीजीकी कृपा द्वारा हम सम्पूर्ण रूपसे प्रकाशमान हो गई.

**सो चींटी सहूर दे समझाई, धनिएं आप जैसे कर लिए ।**

**कर सनमंध अक्षरातीतसों, ले धनी धामके किए ॥ ९**

चींटी समान हम ब्रह्मात्माओंको अखण्ड तारतम ज्ञान देकर सद्गुरुने हमें अपने समान बना दिया तथा अक्षरातीत धनीके साथ हमारा सम्बन्ध स्थापित कर हमें परमधामका दायित्व सौंपा.

**अवगुन अलेखें हम किए पीउसों, तापर ऐसे धनी के गुन ।**

**कै विध सुख ऐसे धनीयके, क्योंकर कहूं जुबां इन ॥ १०**

हमने तो सद्गुरु धनीके प्रति अनेक अवगुन किए हैं. उसके स्थान पर हम पर उनकी असीम कृपा है. सद्गुरुने हमें इस प्रकारके अनेक सुख दिए हैं, उनका वर्णन इस जिह्वा द्वारा कैसे करूं ?

**इन विध सुख दिए अलेखें, ऐसे गुन मेरे पीउ ।**

**तामें एक गुन जो याद आवे, तो तबहीं निकस जाए जीउ ॥ ११**

इस प्रकार सद्गुरु धनीने अपार सुख देकर हमपर ऐसी असीम कृपा की. इनमें-से यदि एक गुण भी याद आ जाए, तो यह जीव तत्काल शरीरको छोड़ देगा.

**महामत कहें गुन इन धनी के, सो इन मुख कहे न जाए ।**

**एक गुन जो याद आवे, तो तबहीं उडे अरवाए ॥ १२**

महामति कहते हैं, धनीजीके गुण इतने अधिक हैं कि इस जिह्वा द्वारा उनका

वर्णन ही नहीं हो सकता. उन गुणोंमें-से एक गुण भी यदि याद करें, तो उसी समय इस शरीरसे आत्मा निकल जाएगी.

### प्रकरण ८१ चौपाई ११२५

राग श्री

सखी री मेहेर बडी मेहेबूब की, अखंड अलेखे ।

अंतर आंखा खोलसी, ए सुख सोई देखे ॥ १

हे आत्माओ ! प्रियतम धनीकी कृपा असीम, अखण्ड और अवर्णनीय है. जो हृदयकी आँखें खोलकर देखेगा, वही धनीजीकी कृपाके इन अपरिमित सुखोंका अनुभव कर पाएगा.

न था भरोसा हम को, जो भवजल उतरें पार ।

इन जुबां केती कहूं, इन मेहेर को नहीं सुमार ॥ २

हमें विश्वास नहीं था कि हम इस भवसागरसे पार उतर पाएँगे. इस जिह्वा द्वारा कितनी प्रशंसा की जाए, परन्तु धनीकी इस कृपाका कोई पारावार नहीं है.

मेरे दिल की देखियो, दरद न कछू इसक ।

ना सेवा ना बंदगी, एह मेरी वीतक ॥ ३

मेरे हृदयकी स्थितिको तो देखो इसमें न धनीजीके विरहकी पीड़ा थी तथा न ही उनके प्रति प्रेम ही था. न सेवा भावना थी और न ही भक्तिभाव था, ऐसी मेरी आपबीती है.

मेहरें हमको ऐसा किया, करी वतन रोसन ।

मुक्ति दे सचराचर, हम तारे चौदे भवन ॥ ४

परन्तु धनीजीकी कृपाने ऐसा चमत्कार किया कि हमारे हृदयमें परमधाम प्रकाशित होने लगा. उनकी कृपाके कारण ही हमने चौदह लोकोंके सचराचर जीवोंको मुक्ति देकर पार उतारा.

क्यों मेहेर मुझ पर भई, ए थी दिल में सक ।

मैं जानी मौज मेहेबूब की, वह देत आप माफक ॥ ५

मेरे मनमें यह शङ्का रहती थी कि इन सभी ब्रह्मात्माओंमें-से धनीजीकी कृपा मुझपर ही अधिक क्यों हुई ? उन्हींकी कृपासे मुझे उनकी सदृच्छा (उमङ्ग) ज्ञात हुई कि वे अपनी इच्छानुसार किसीको भी अपने समान महत्त्व दे सकते हैं.

बढत बढत मेहेर बढी, वार न पाइए पार ।

एक ए निरने मैं ना हुई, वाको वाही जाने सुमार ॥ ६

मुझ पर धनीजीकी कृपा बढ़ते-बढ़ते इतनी बढ़ गई कि उसकी कोई सीमा ही न रही, परन्तु इतनी अधिक कृपाका कारण मेरी समझमें न आया. स्वयं धनीजी ही अपनी कृपाका पार पा सकते हैं.

और मेहेर ए देखियो, कर दियो धाम वतन ।

साख पुराई सबों अंगों, यों कै विध कृपा रोसन ॥ ७

उनकी कृपाको और देखो, उन्होंने हमारे हृदयको परमधाम बना दिया. उन्होंने वेद, कतेबकी साक्षी देकर हमारे मन, चित्त, बुद्धि आदि अङ्गोंको जागृत कर दिया. इस प्रकार उनकी कृपा अनेक प्रकारसे प्रकट हुई है.

अंदर सब मेरे यों कहे, धाम से आए माहें सुपन ।

है सनमंध धनी धामसों, ए साख मेहेर से उतपन ॥ ८

मेरा अन्तःकरण यह मानता है कि हम ब्रह्मसृष्टि परमधामसे इस स्वप्नवत् संसारमें आई हैं. धनीजीकी कृपा द्वारा ही यह सिद्ध हुआ कि हमारा सम्बन्ध धामधनीके साथ है.

मेरे सतगुरु धनिएं यों कहा, और कहा वेद पुरान ।

सो खोल दिए मोहे माएने, कर दई आतम पेहेचान ॥ ९

मेरे सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्रजीने हमें यह सम्बन्ध बताया तथा वेदों और पुराणोंमें भी इसी प्रकार कहा गया है. उन्होंने वेद, पुराणके इन सब सङ्केतोंका स्पष्टीकरण कर मुझे मेरी आत्माकी पहचान करवाई.

सब मिल साख ऐसी दई, जो मेरी आतम को घर धाम ।

सनमंध मेरा सब साथसों, मेरो धनी सुन्दर वर स्याम ॥ १०

इन सबने मिलकर ऐसी साक्षी दी कि हमारी आत्माका घर परमधाम है। सब ब्रह्मात्माओंके साथ हमारा सम्बन्ध है तथा हमारे आत्माके धनी पूर्णब्रह्म परमात्मा सुन्दरवर श्याम-श्री कृष्ण हैं।

इत अक्षर आवें नित्याने, मेरे धनी के दीदार ।

ए निसबत भई हम गिरोह की, क्यों कहूं इन सुख को पार ॥ ११

अखण्ड परमधाममें अक्षरब्रह्म मेरे प्रियतम धनीके दर्शन करनेके लिए नित्यप्रति आया करते हैं। ऐसे धामधनीके सम्बन्धकी पहचान प्राप्त करके ब्रह्मसृष्टियाँ धन्य हुई हैं। इन अपार सुखोंका वर्णन किस प्रकार हो सकता है ?

ए आतम को नेहेचे भयो, संसे दियो सब छोड ।

पर आतम मेरी धाम में, तो कही सनमंध संग जोड ॥ १२

इस वास्तविकताका ज्ञान होने पर मेरी आत्माको विश्वास हुआ तथा सभी शङ्काएँ दूर हो गईं। मेरी पर-आत्मा परमधाममें है, अतः सद्गुरु धनीने मुझे आदेश दिया कि तुम उस परात्माके साथ अपना सम्बन्ध जोडो।

पर आतम के अन्तसकरन, जेती वीतत बात ।

तेती इन आतम के, करत अंग साख्यात ॥ १३

पर-आत्माके हृदयमें जो बीत रहा है, सद्गुरुकी कृपा द्वारा वह सम्पूर्ण मेरी आत्मामें प्रत्यक्ष अनुभव होने लगा।

ए भी धनिएं श्रीमुख कहा, और दई साख फुरमान ।

ए दोऊ मिल नेहेचे कियो, यों भई द्रढ परवान ॥ १४

धनी श्रीदेवचन्द्रजीने अपने श्रीमुखसे यही बातें कहीं और कुरान आदि धर्मग्रन्थोंने भी यही साक्षी दी। इस प्रकार दोनों ओरसे साक्षी मिलने पर मेरे मनमें दृढ़ निश्चय हुआ कि हमारी आत्माका सम्बन्ध अक्षरातीत धनीके साथ है।

और मेहेर ए देखियो, ऐसा कर दिया सुगम ।

बिन कसनी बिन भजन, दियो धाम धनी खसम ॥ १५

सद्गुरु धनीकी इस अपार कृपाको देखो, उन्होंने मेरे लिए इतना सरल बना दिया कि तप या भजन जैसी कठोर साधना किए बिना ही मुझे परमधाम तथा धामधनीका अनुभव होने लगा।

ना जप तप ना ध्यान कछू, ना जोगारंभ कष्ट ।

सो देखाई ब्रज रास में, एही वतन चाल ब्रह्मसृष्ट ॥ १६

मैंने जप, तप तथा ध्यान कुछ भी नहीं किया था, योग साधनाके कष्ट भी सहन नहीं किए, तथापि सद्गुरुने मुझे ब्रज और रासलीलाकी प्रेमलक्षणा भक्तिका दृष्टान्त देकर परमधामकी ब्रह्मात्माओंकी रीति समझाई।

चलत चाल घर अपने, होए न कसाला किन ।

आयस कछू न आवहीं, सब अपनीमें मगन ॥ १७

अब अपने परमधामके मार्ग पर चलते हुए किसीको भी किसी प्रकारका कष्ट नहीं होगा, कोई परिश्रम भी नहीं होगा, सभी अपने में ही मस्त होकर चल सकेंगे।

सोई गुन पख इन्द्रियां, धाम वतन की देह ।

सोई मिलना पर आतम का, सब सुखै के सनेह ॥ १८

सद्गुरुकी कृपासे हमें ऐसा अनुभव होने लगा कि हमारी गुण, अंग तथा इन्द्रियाँ भी वही हैं जो परमधाममें परआत्मा की हैं और हमारी देह भी वही है जो परमधाममें परआत्माके रूपमें है। इसी प्रकार, जैसे परमधाममें परआत्मा धामधनीसे मिलकर अपार सुखोंका अनुभव करती है, वैसे ही हम भी यहाँ अपने सद्गुरु धनीसे मिलकर अपार स्नेहका अनुभव करने लगीं।

सोई सेहेज सोई सुभाव, सोई अपना वतन ।

सोई आसा लज्या सोई, सोई करना न कछू अन ॥ १९

अब हम ब्रह्मात्माओंका स्वभाव भी वैसा ही सरल बन गया, जैसा परमधाममें

परआत्माका है. हमारी आशा, लज्जा तथा आचरण भी सब परमधामके अनुरूप ही होने लगे इसलिए हमें अब और कुछ करना शेष ही न रहा.

सोई लोभ सोई लालच, सोई अपनी अहंकार ।

सोई काम प्रेम करतब, सोई अपना बेहेवार ॥ २०

परआत्माके समान अब हमें भी वही धनीके दर्शनका लोभ-लालच तथा स्वयंको धनीकी अंगना होनेका अहंभाव जागृत होने लगा. अब तो धनीके प्रेममें मग्न रहना ही हमारा कार्य तथा व्यवहार होने लगा.

सोई मन बुध चितवन, सोई मिलाप सैयन ।

सोई हांस विलास अपना, करते रात दिन ॥ २१

हमारे मन, चित्त, और बुद्धिमें भी वही परमधामका चिन्तन होने लगा और सुन्दरसाथका मिलन भी वैसा ही प्रेममय हो गया. हम परमधाममें दिन-रात जिस प्रकारका आनन्द लेते थे, उसी प्रकारका आनन्द यहाँ भी लेने लगे.

धाम लीला जाहेर करी, विध विध की रोसन ।

दिया सुख अखंड दुनी को, और कायम किए त्रिगुन ॥ २२

इस प्रकार सद्गुरुने परमधामकी सम्पूर्ण लीलाओंको प्रकट कर संसारमें प्रकाशित किया तथा संसारके जीवोंको अखण्ड सुख देकर त्रिगुणको भी अखण्ड कर दिया.

जो जागो सो देखियो, ए लीला सबदातीत ।

मेहरें इत प्रगट करी, मूल धाम की रीत ॥ २३

जो आत्माएँ जाग्रत होंगी, वे इसका अनुभव कर पाएँगी, यह लीला परमधामकी लीलाके समान साक्षात् शब्दातीत है. सद्गुरु धनीकी कृपाके द्वारा ही परमधामकी यह रीति इस संसारमें प्रकट हुई है.

हुकम सरत आए मिली, जो फुरमाई थी फुरमान ।

महामत साथ को ले चले, कर लीला निदान ॥ २४

धर्मग्रन्थोंमें निश्चयपूर्वक जो कहा गया था, वह समय आ पहुँचा है. अब



महामति जागनी रास पूर्ण कर सुन्दरसाथको परमधाम ले कर चल रहे हैं.

प्रकरण ८२ चौपाई ११४९

राग श्री

धन धन ए दिन साथ आनंद आयो ॥ टेक ॥  
अखंड में याद देने, ए जो बेन बजायो ।  
चित दे साथ को ले, आप में समायो ॥ १

हे सुन्दरसाथजी ! ऐसी आनन्दमयी धन्य घड़ी आ गई है कि अखण्ड परमधामको याद दिलानेके लिए सद्गुरुने यह ज्ञानकी वंशी बजाई. इस प्रकार सद्गुरुने अपना प्रेम देकर सुन्दरसाथको अपनी ओर खींच लिया तथा स्वयंमें समाहित किया.

अखंड में याद देने, ए जो खेल बनायो ।  
ब्रज रास जागनी में, ए जो खेल खेलायो ॥ २

अखण्ड परमधाममें इसकी स्मृति दिलानेके लिए ही इस अनित्य संसाररूप खेलकी रचना की और इसमें ब्रज, रास एवं जागनीकी ये लीलाएँ कीं.

पीउने प्रकास्यो पेहेले, आयो सो अवसर ।  
ब्रज ले रास में खेले, खेले निज घर ॥ ३

सद्गुरु धनीने पहले ही कहा था अब वही आत्म जागृतिका अवसर आ पहुँचा है. जैसे ही हम परमधाममें जागृत होंगे, तब वहाँ तो खेलेंगे ही किन्तु ब्रज एवं रासमें भी खेलते हुए दिखाई देंगे.

विध विध विलास हांस, अंग थें उतपन ।  
नए नए सुख सनेह, हुए हैं रोसन ॥ ४

विभिन्न प्रकारके लीला-विलासका आनन्द हमारे अङ्गोंमें प्रकट हुआ है. इसी प्रकार नवीन सुख और स्नेह भी प्रकाशित होने लगा.

चेहेन चरित्र चातुरी, ब्रज रास की लई ।  
अनभव असलू अंग में, आए चढी धाम की सही ॥ ५

ब्रज एवं रासकी लीलाओंके विभिन्न लक्षण हृदयङ्गम करने पर परमधामके

अखण्ड आनन्दका अनुभव हृदयमें उभरने लगा.

बढत बढत प्रीत, जाए लई धामकी रीत ।

इन विध हुई है इत, साथ की जीत ॥ ६

परमधामके प्रति प्रेम बढ़ते-बढ़ते इतना बढ़ा कि हमने परमधामकी पद्धति, नीति-रीतिको सहज रूपसे ग्रहण कर लिया. इस प्रकार जागनी लीला द्वारा इस संसारमें हमारी विजय हुई है अर्थात् इस झूठे खेलमें फँसनेके बाद भी हम जागृत हो सकें.

झूठी जिमी में बैठाए के, देखाए सुख अपार ।

कौन देवे सुख दूजा ऐसे, बिना इन भरतार ॥ ७

इस प्रकार झूठी मायामें बैठाकर भी हमें अपरिमित सुखोंका अनुभव करवाया. सद्गुरु धनीके अतिरिक्त इस प्रकारके सुख अन्य कौन दे सकता है ?

मैं सुन्यो पीउजीपें, श्री धामको बरनन ।

सो भेद्यो रोम रोम माहें, अंग अंतसकरन ॥ ८

मैंने सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजसे परमधामका दिव्य वर्णन सुना एवं वह वर्णन मेरे अन्तःकरण सहित रोम-रोमको बाँध गया.

छक्यो साथ प्रेम रस मातो, छूटे अंग बिकार ।

पर आतम अंतसकरन उपज्यो, खेले संग आधार ॥ ९

अब उन्हीं सद्गुरुकी कृपा द्वारा समस्त सुन्दरसाथ धामधनीके प्रेमानन्दमें मग्न हो गया है. सबके हृदयसे झूठी मायाके विकार हट गये हैं, उनके अन्तःकरणमें पर आत्माका भाव जागृत हुआ तथा सुन्दरसाथ अपने धनीके साथ आनन्द विलास करने लगा.

दुलहेने दिल हाल दे, खँच लिए दिल सारे ।

कहा कहूं सुख इन विध, जो किए हाल हमारे ॥ १०

इस प्रकार अक्षरातीत धनीने अपना दिल देकर हमारा दिल अपनी ओर

खींच लिया. सद्गुरुने हमें जिस स्थितिमें पहुँचा दिया, अब उन सुखोंका वर्णन किस प्रकार किया जाए ?

मद चढ्यो महामत भई, देखो ए मस्ताई ।

धाम स्याम स्यामाजी साथ, नख सिख रहे भराई ॥ ११

मेरी मस्तीको तो देखो, यह प्रेममद चढ़ने पर मैं महामति कहलाया. अब परमधाम, श्याम-श्यामाजी एवं सुन्दरसाथका स्वरूप मेरे रोम-रोममें अङ्कित हो गया है.

अंतसकरन निसान आए, ले आतम को पोहोंचाए ।

इन चोटें ऐसे चुभाए, नींद दई उडाए ॥ १२

मेरे हृदयमें परमधामके सभी सङ्केत उभर आए और वे मेरी आत्मा तक पहुँचे. परमधाम तथा धामधनीके विरहकी चोट हृदयमें ऐसी लगी कि मेरी अज्ञानरूपी निद्रा सदाके लिए उड़ गई.

चढते चढते रंग सनेह, बढ्यो प्रेम रस पूर ।

वन जमुना हिरदै चढि आए, इन विध हुए हजूर ॥ १३

प्रेम रसका प्रवाह इतना अधिक बढ़ने लगा कि परमधामके कुञ्जवन, यमुना तट आदि मेरे हृदयमें अङ्कित हो गए. इस प्रकार मैं प्रियतम धनीके अति निकट पहुँच गया.

पिए हैं सराब प्रेम, छूटे सब बंधन नेम ।

उठ बैठे माहें धाम, हंस पूछे कुसल छेम ॥ १४

अब तो हमने धनीजीकी प्रेम-सुराका पान कर लिया है. इसके कारण संसारके सब बन्धन छूट गए हैं. अब हम परमधाममें जागृत हो कर बैठ गए और हँसते हुए परस्पर कुशल-क्षेम पूछने लगे.

महामत महामद चढ्यो, आयो धाम को अहंमद ।

साथ छक्यो सब प्रेम में, पोहोंचे पार बेहद ॥ १५

महामति कहते हैं, अब धनीजीके प्रेमका महामद इस प्रकार चढ़ा कि परमधामका अहंभाव जागृत हो गया. जिससे सब सुन्दरसाथ भी प्रेममग्न

हो गए और इस हृदके संसारको छोड़कर बेहदभूमि परमधाममें पहुँच गए.

### प्रकरण ८३ चौपाई ११६४

#### राग धनासरी

धन धन सखी मेरे सोई रे दिन, जिन दिन पियाजीसों हुआ रे मिलन ।

धन धन सखी मेरे हुई पेहेचान, धन धन पीउ पर मैं भई कुरबान ॥ १

हे ब्रह्मात्माओ ! जिस दिन सद्गुरु धनीके साथ मेरा मिलाप हुआ, वह दिन धन्य है. वह दिन भी धन्य है जिस दिन मैंने अपने धनीको पहचाना तथा उनपर स्वयंको समर्पित कर दिया.

धन धन सखी मेरे नेत्र अनियाले, धन धन धनी नेत्र मिलाए रसाले ।

धन धन मुख धनीको सुन्दर, धन धन धनी चित चुभायो अंदर ॥ २

मेरी नुकीली आँखें धन्य हैं क्योंकि उन्हें धनीजीके दिव्य चक्षुके दर्शन प्राप्त करनेका सद्भाग्य मिला. धनीजीका सुन्दर मुख कमल धन्य है क्योंकि वह मेरे हृदयमें स्थायीरूपसे अङ्कित हो गया है.

धन धन धनी के वस्त्र भूषण, धन धन आतम से न छोड़ूँ एक खिन ।

धन धन सखी मैं सजे सिनगार, धन धन धनिएं मोकों करी अंगीकार ॥ ३

धनीजीके वस्त्राभूषण धन्य हैं, जिनकी शोभाका आनन्द लेनेके एक क्षणको भी मैं भूल नहीं सकती. हे सखी ! प्रियतम धनीको प्रसन्न करनेवाले मेरे शील, सन्तोष आदि शृङ्गार भी धन्य हैं और वह क्षण भी धन्य है, जब धामधनीने मुझे स्वीकारा है.

धन धन सखी मैं सेज बिछाई, धन धन धनी मोकों कंठ लगाई ।

धन धन सखी मेरे सोई साइत, धन धन विलसी मैं पीउसों आईत ॥ ४

धन्य है, धनीजीने मेरे हृदयरूपी शय्यामें विराजमान होकर मुझे कण्ठसे लगाया और धन्य बनाया. वह घड़ी भी धन्य है, जब मैंने अपने धनीसे मिलनका अपार सुख प्राप्त किया.

धन धन सखी मेरी सेज रसभरी, धन धन बिलास मैं कै विध करी ।

धन धन सखी मेरे सोई रस रंग, धन धन सखी मैं किए स्याम संग ॥ ५

हे सखी ! मेरी प्रेम-रससे भरी हुई हृदयरूपी शय्या धन्य है, जिस पर मैंने अपने प्रियतम धनीके साथ विभिन्न प्रकारके विलास किए। मैंने अपने रङ्गीले प्रियतम धनीके साथ रस-रङ्ग, आनन्द-विनोदके अखण्ड सुखोंका अनुभव किया, वे सभी खेल धन्य हैं।

धन धन सखी मोकों कहे दिलके सुकन, धन धन पायो मैं तासों आनंदधन ।

धन धन मनोरथ किए पूरन, धन धन स्याम सुख दिए वतन ॥ ६

धन्य है, सद्गुरु धनीने मुझसे अपने दिलकी बातें कीं जिससे मुझे अपार आनन्द हुआ। ऐसे श्यामसुन्दर स्वरूप सद्गुरु धन्य हैं, जिन्होंने मुझे परमधामके सुखोंका अनुभव करवा कर मेरी सम्पूर्ण मनोकामनाएँ पूर्ण कीं।

धन धन सखी मेरे पीउ कियो विलास, धन धन सखी मेरी पूरी आस ।

धन धन सखी मैं भई सोहागिन, धन धन धनी मुझ पर सनकूल मन ॥ ७

हे सखी ! प्रियतम धनीने मेरे साथ आनन्द-विलास कर मेरी सभी आशाएँ पूरी कीं। इस प्रकार धनीने प्रसन्न चित्तसे मुझे सुहागिनी बनाया जिससे मैं धन्य-धन्य हो गई।

धन धन सखी मेरे मन्दिर सोभित, धन धन सरूप सुन्दर प्रेम प्रीत ।

धन धन चौक चबूतरे सुन्दर, धन धन मोहोल झरोखे अंदर ॥ ८

हे सखी ! सद्गुरुकी कृपासे मेरे हृदय मन्दिरमें अङ्कित श्याम-श्यामाका सुन्दर स्वरूप, उनका प्रेम, प्रीति, परमधामके चाँदनी चौक, लाल चबूतरा, रङ्गमहल एवं अन्दरके झरोखे ये सभी धन्य हैं।

धन धन जवेर नकस चित्रामन, धन धन देखत कै रंग उत्पन ।

धन धन शंभ गलियाँ दिवाल, धन धन सखियाँ करें लटकती चाल ॥ ९

जवाहरातोंसे भरी रङ्गमहलकी नक्काशी और चित्रकारीके दर्शन हमारे हृदयमें धनीजीके अपरिमित प्रेम सुखका अनुभव कराते हैं। रङ्गमहलके स्तम्भ, गलियाँ, हवेलियोंकी दीवारें आदिके बीच नृत्य करती हुई, मटकती चालसे

चलनेवाली सखियाँ सभी धन्य हैं.

धन धन सखी मेरे भयो उछरंग, धन धन सखियों को बाढ्यो रस रंग ।

धन धन सखी मैं जोवन मदमाती, धन धन धामधनीसों रंगराती ॥ १०

हे सखी ! मेरे मनमें प्रियतमके प्रति प्रेम उमड़ रहा है. उसमें आनन्द रसका आवेग छलक रहा है. अपने यौवनकी मस्तीमें मग्न होकर प्रियतमके रङ्गमें रंगी हुई मैं धन्य हो गई.

धन धन साथ मुख नूर रोसन, धन धन सुख सदा धाम वतन ।

धन धन सखी मेरे भूषण झलकार, कौन विध कहूं न पाइए पार ॥ ११

ब्रह्मात्माओंके मुखारविन्दकी अनुपम शोभा एवं परमधामके अखण्ड सुख धन्य हैं. मेरे देदीप्यमान आभूषणोंकी शोभाका भी कोई पारावार नहीं है.

धन धन नूर सबमें रह्यो भराई, देखे आतमसों मुख कह्यो न जाई ।

धन धन साथ छक्यो अलमस्त, धन धन प्रेम माती महामत ॥ १२

सभी ब्रह्मात्माओंमें धामधनीका एक-सा ही प्रकाश विद्यमान है, आत्मा ही उसका अनुभव कर सकती है, मुखसे वर्णन नहीं हो सकता. सभी ब्रह्मात्माओंके साथ महामति भी धनीजीके प्रेममें मस्त होकर धन्य-धन्य हो गई.

प्रकरण ८४ चौपाई ११७६

राग श्री

तीन विध का चलना

ए जो कही जागन, सखी री जाग चलो ॥ टेक ॥

बचन नीके बिचारियो, जो कोई सोहागिन ।

जाग चलो पीउसों मिलो, सुख अखंड आनंद अति घन ॥ १

हे सुन्दरसाथजी ! यहाँ पर जागनीकी बात कही जा रही है. इसलिए जागृत होकर परमधाम चलो. जो सुहागिनी आत्माएँ हैं, वे भली-भाँति विचार कर लें कि अब जागृत होकर धनीजीसे मिलना है तथा अखण्ड सुखोंका अनुभव

करना है.

जागृत सबद धनीयके, ततखिन करे मकसूद ।

सोई सबद लिए बिना, होए जात नाबूद ॥ २

आत्म-जागृतिके लिए दिए गए धनीजीके उपदेश वचन तत्काल मनोरथ (उद्देश्य) पूर्ण करते हैं. उन वचनोंको ग्रहण किए बिना दुनियाँ अस्तित्वहीन होती चली जा रही है.

कै किताबें या बानियां, कही मैं साथ कारन ।

इनमें से मैं मेरे सिर, लिया ना एक वचन ॥ ३

मैंने सुन्दरसाथको जागृत करनेके लिए अनेक ग्रन्थों एवं महात्माओंकी वाणीकी चर्चा की है. परन्तु इनमें से मैंने स्वयं एक वचन भी शिरोधार्य नहीं किया.

ए जो जागृत वचन, सुपन रहे ना आगूं जाग ।

पर लिया ना सिर अपने, तो रही सुपन देह लाग ॥ ४

इन जागृत वचनोंके सामने संसारका स्वप्न (शरीर) टिक नहीं सकता. परन्तु इन वचनोंको मैंने शिरोधार्य नहीं किया, इसीलिए आत्माने स्वप्नके शरीरको अभी तक धारण कर रखा है.

अबहीं जो सिर लीजिए, एक वचन जागृत ।

तो तबहीं जाग के बैठिए, उड जाए सुपन सुरत ॥ ५

यदि अब भी सद्गुरुके इन जागृत वचनोंमें से एकको भी शिरोधार्य कर लिया जाए, तो आत्मा तत्काल जागृत हो जाएगी तथा अज्ञानका यह स्वप्न भी उड जाएगा.

ए वचन ऐसे जागृत, जगावत ततखिन ।

जो न लीजे सिर अपने, तो कहा करे वचन ॥ ६

ये ऐसे जागृत वचन हैं जो आत्माको उसी समय जागृत कर देते हैं. यदि आत्मा इन्हें शिरोधार्य ही नहीं करेगी, तो उसे ये वचन क्या कर पाएँगे ?

मैं न लिया सिर अपने, तो कहा देऊं दोस औरन ।

जागे सुपना क्यों रहे, पर हुआ हाथ इजन ॥ ७

जब स्वयं मैंने ही इन वचनोंको ग्रहण नहीं किया, तो फिर अन्य लोगोंको क्या दोष दूँ ? आत्माके जागृत होने पर इस स्वप्नवत् देहका अस्तित्व ही नहीं रहता. परन्तु यह सब धामधनीकी आज्ञाके अधीन है.

जागृत वचन अनभवें, अखंड घर वतन ।

अचरज बडो होत है, देह उडत ना झूठ सुपन ॥ ८

जागृत ज्ञानके वचनों द्वारा अखण्ड परमधामके आनन्दका अनुभव होता है. किन्तु मुझे आश्चर्य होता है कि इतना होने पर भी यह स्वप्नवत् संसारका शरीर क्यों नहीं छूटता ?

साख देवाई सब अंगों, दया और अंकूर ।

अनभव वतनी होत है, देह होत न झूठी दूर ॥ ९

सद्गुरुने मन, वचन, कर्म और बुद्धि इन सभी अङ्गोंको सब प्रकारसे साक्षी बनाया और मुझ पर कृपा कर मुझे परमधामके सम्बन्धका परिचय कराया. इसके कारण मुझे परमधामका अनुभव तो होता है, किन्तु झूठे शरीरका मोह छूटता नहीं है.

मैं विध विध करके वचनों, मारे तरवारों घाए ।

टूक टूक जुदे करहीं, तो भी उडत नहीं अरवाए ॥ १०

मैंने सद्गुरुके वचनोंको याद करते हुए शब्दरूपी तलवारके द्वारा अपने इस शरीर पर अनेक प्रहार किए. इस प्रकार इस शरीरके टुकड़े-टुकड़े भी कर डालूँ तो भी मेरी आत्मा इस झूठे शरीरको नहीं छोड़ती.

सबद वान सतगुरु के, रोम रोम निकसे फूट ।

बडा अचंभा होत है, देह जात ना झूठी टूट ॥ ११

सद्गुरुके शब्दवाणोंने मेरे रोम-रोमको छेद डाला, तथापि बड़े आश्चर्यकी बात है कि इस झूठी देहका अन्त क्यों नहीं आता ?



मैं जान्या अपने तन को, मारों भर भर बान ।

तिनसे झूठी देह को, फना करों निदान ॥ १२

इसलिए मैंने विचार किया कि इस झूठे शरीर पर सद्गुरुके उपदेशात्मक शब्द वाण वारंवार चलाऊँ और उनसे इस झूठे शरीरका नाश कर डालूँ.

ए सबद धनी फुरमान के, भी ले अनभव आतम ।

तिनसे उडाऊँ सुपना, पर कोई साईत हाथ हुकम ॥ १३

सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीके आदेशको ग्रहण कर मैं आत्माका अनुभव भी करूँ और इसके द्वारा इस झूठे शरीरको छोड़ दूँ, परन्तु यह सब भी पूर्णब्रह्म परमात्माकी आज्ञाके अधीन है.

अब तो आतमने ए द्रढ किया, देह उडे ना बिना इसक ।

जोस इसक दोऊ मिलें, तब उडे देह बेसक ॥ १४

अब मेरी आत्माने यह निश्चय किया कि पूर्णब्रह्म परमात्माके प्रेमके बिना यह झूठा शरीर नहीं छूटेगा. जब जोश (संसारके प्रति क्रोध) और (धनीके प्रति) प्रेम एक साथ उभर आएँगे, तब यह शरीर अवश्य छूट जाएगा.

दुख ना दीजे देह को, सुखें छोडिए सरीर ।

ए सिध इन विध होवहीं, जो जोस इसक करे भीर ॥ १५

इस शरीरको कष्ट दिए बिना ही इसे सुख पूर्वक छोड़ देना है. जब जोश और प्रेम एक साथ उत्पन्न होंगे, तभी यह कार्य सिद्ध होगा.

अब दौडे जोस इसक को, याद कर साथ धनी धाम ।

ए धनी बिना न आवहीं, जोस इसक प्रेम काम ॥ १६

अब सभी सुन्दरसाथ धामधनी एवं परमधामको याद करते हुए जोश और प्रेमको प्राप्त करनेके लिए दौड़ रहे हैं. ये प्रेम, जोश और मनोरथकी पूर्ति धनीजीकी कृपा बिना नहीं होती.

तामस राजस स्वांतस, चलें माहें गुन तीन ।

वचन अनभव इसक, हुआ जाहेर यकीन ॥ १७

तामस, राजस एवं सात्विक स्वभाववाली ब्रह्मात्माएँ तीनों गुणोंको लेकर

क्रमशः धनीजीके वचन, अनुभव और प्रेमके द्वारा अपना विश्वास दृढ़ करती हैं.

हंसें खेलें विध तीनमें, छोड़ें देह सुपन ।

महामत कहे सुख चैनमें, धनी साथ मिलन ॥ १८

महामति कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी ! तम, रज एवं सत्व इन तीनों गुणों द्वारा धामधनीके साथ हँसते, खेलते हुए इस झूठे शरीरको त्याग देना है जिससे धनीजीके साथ आनन्दपूर्वक मिलन हो जाए.

प्रकरण ८५ चौपाई ११९४

राग श्री

साथजी जागिए, सुनके सबद आखर ।

सकल आउध अंग साज के, दौड़ मिलिए धनी निज घर ॥ १

हे सुन्दरसाथजी ! अन्तिम समयके इन वचनोंको सुनकर जागृत हो जाओ. प्रेम, दया, क्षमा, शील, सन्तोष रूपी अस्त्र-शस्त्रोंसे सजकर प्रियतम धनीसे मिलनेके लिए परमधामकी ओर दौड़ लगाओ.

धनीके केहेलाए मैं कहे, तुम को चार सबद ।

किन ज्यादा किन कम लिए, किन कर डारे रद ॥ २

सद्गुरु धनीकी आज्ञासे ही मैंने तुम्हें आत्म-जागृतिके दो-चार वचन कहे हैं. इनमें से किसी सुन्दरसाथने अधिक ग्रहण किया, किसीने कम तथा किसीने इन्हें ठुकरा दिया.

किन कम किन ज्यादा जीतिया, कोई हाथ पटक चल्या हार ।

साथजी यों बाजी मिने, कोई जीत्या बेसुमार ॥ ३

हे सुन्दरसाथजी ! इस संसाररूपी नाटकमें किन्हीं लोगोंने थोड़ी विजय प्राप्त की है तो किन्हींने अधिक. कई लोग पराजित होकर हाथ पटकते हुए चले गए. कई महापुरुषोंने तो इस खेलमें अत्यधिक सफलता प्राप्त की है.

अब सो समया आए पोहोंचिया, मेरे तो लेना सिर ।

धनिएं बानी करता मुझे किया, सो मैं मुख फेरों क्यों कर ॥ ४

अब धनीजीके वचनोंको चरितार्थ करनेका समय आ पहुँचा है। इसलिए मुझे तो इन वचनोंको शिरोधार्य करना ही है। धनीजीने मुझे यह दिव्यवाणी कहने योग्य बनाया। इसलिए मैं उनके वचनोंसे कैसे पीछे हट सकता हूँ ?

कोई सिर ल्यो तो लीजियो, धनिएं केहेलाए साथ कारन ।

ना तो मेरे सिर जरूर है, एही सबद बल वतन ॥ ५

यदि किसीको शिरोधार्य करना हो तो करें, धनीजीने तो सुन्दरसाथके लिए ही यह कहलवाया है, अन्यथा ये वचन मुझे तो शिरोधार्य हैं ही। ये ही वचन परमधाम जानेके लिए शक्ति देते हैं।

ए नीके मैं जानत हों, करी है तुम पेहेचान ।

तुममें से बिरला कोई पीछे पड़े, आखर ल्योगे सिर निदान ॥ ६

मैं भली-भाँति जानता हूँ कि तुमने स्वयंको पहचाना है, इसलिए तुममेंसे कोई बिरला ही पीछे रहेगा। अन्तमें तो सभीको स्वीकार करना ही पड़ेगा।

मेरे तो आगूं होवना, धनिएं दिया सिर भार ।

समझ सको सो समझियो, कर आतम अंतर विचार ॥ ७

मुझे तो इन वचनोंको धारण कर आगे चलना ही है, क्योंकि निजानन्दाचार्य सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीने सुन्दरसाथको जागृत करनेका दायित्व मुझे सौंपा है। यदि तुम आत्म-दृष्टिसे विचार कर समझना चाहो, तो समझ सकते हो।

अब मैं दिल विचारिया, लिया न सिर सबद ।

तो झूठी देह लग रही, जो बांधी मांहे हद ॥ ८

अब मैं अपने हृदयसे स्वीकार (विचार) करता हूँ कि सद्गुरुके सान्निध्यमें मैंने उनके वचनोंको शिरोधार्य नहीं किया, तभी मेरी आत्मा इस झूठी देहमें बँधकर संसारमें रह गई।

एक सबद जो जागृत, अंतर आतम चुभाए ।

तो देह झूठी सुपन की, तबहीं देवे उडाए ॥ ९

जागृत ज्ञानका एक शब्द भी यदि अन्तरात्मामें चुभ जाए, तो यह स्वप्नकी झूठी देह तत्काल छूट जाएगी.

आगूं जाग्रत वचन के, क्यों रहे देह सुपन ।

मोहे अचरज आगूं सांचके, देह झूठी राखी किन ॥ १०

जागृत वचनोंके आगे यह झूठा शरीर कैसे टिक पाएगा. आश्चर्यकी बात है कि सत्य (आत्म-ज्ञान) के आगे इस झूठे स्वप्नवत् शरीरको किसने टिकाए रखा है ?

ए भी फेर विचारिया, सांच आगे ना रहे अनित ।

एह बल हुकम के, देह सुपन रही इत ॥ ११

मैंने पुनः यह भी विचार किया कि सत्यके आगे अनित्य वस्तु नहीं टिकती किन्तु धनीकी आज्ञासे ही यह स्वप्नकी देह यथावत् टिकी हुई है.

सोई हुकम आए पोहोंचिया, जो करी थी सरत ।

सबद भी सिर पर लिए, आया वतन बल जागृत ॥ १२

अब धामधनीकी आज्ञानुसार आत्म-जागृतिका वह समय आ पहुँचा है, जिसके लिए हम सभीने परमधाममें निश्चय किया था इसलिए मैंने धनीकी आज्ञा शिरोधार्य की है. अब मुझमें परमधामकी जागृत बुद्धि (शक्ति) आ गई है.

अब हुकम धनीय के, सब विध दई पोहोंचाए ।

चेत सको सो चेतियो, लीजो आतम जगाए ॥ १३

अब सद्गुरुकी आज्ञानुसार मैंने यह ज्ञान सब सुन्दरसाथ तक पहुँचा दिया है. इसलिए इन वचनों पर विचार कर सचेत हो जाओ तथा अपनी आत्माको जागृत करो.

अब भली बुरी इन दुनीय की, ए जिन लेओ चित ल्याए ।

सुरत पकी करो धाम की, पर आतम धनी मिलाए ॥ १४

अब संसारकी भली-बुरी अपने मनमें मत रखो. अपनी सुरताको परमधाममें स्थिर कर आत्म-परआत्माको धनीके साथ मिला दो.

दुख सुख डारो आग में, ए जो झूठी माया के ।

पिंड ना देखो ब्रह्मांड, राखो धाम धनी सुरत जे ॥ १५

इस मायावी संसारके झूठे सुख-दुःखोंको धामधनीके विरहाग्निमें जला दो. झूठे संसार और शरीरकी चिन्ता किए बिना अपनी सुरताको धाम धनीके चरण-कमलमें पहुँचा दो.

कोई देत कसाला तुम को, तुम भला चाहियो तिन ।

सरत धाम की न छोडियो, सुरत पीछे फिराओ जिन ॥ १६

इस संसारिक व्यवहारमें यदि कोई तुम्हें दुःख देता हो, तो भी तुम उसका भला चाहो. क्योंकि इस झूठे खेलमें आनेसे पूर्व हम सब ब्रह्मसृष्टियोंने एक दूसरेको जागृत करनेकी प्रतिज्ञा की थी, उसे मत भूलो और अपनी सुरताको परमधामसे पीछे मत हटाओ.

जो कोई होवे ब्रह्मसृष्टि का, सो लीजो वचन ए मान ।

अपने पोहोरे जागिए, समया पोहोँच्या आन ॥ १७

जो कोई भी ब्रह्मसृष्टिकी सुरता हो, वह इन वचनोंको मानकर चले. अब जागृत होनेका समय आ पहुँचा है, इसलिए अपने ही समयमें (शरीरमें शक्ति रहते ही) जाग्रत हो जाओ.

सूता होए सो जागियो, जागा सो बैठा होए ।

बैठा ठाढा होइयो, ठाढा पाँऊ भरे आगे सोए ॥ १८

जो कोई अज्ञानकी निद्रामें सो रहे हैं, वे अखण्ड ज्ञान द्वारा अपनी आत्माको जागृत करें. जिन्होंने अपनी आत्माको जागृत किया है, वे बैठकर धनीजीका चिन्तन करें. जो बैठे हुए हैं, वे खड़े हो जाएँ तथा जो खड़े हुए हैं, वे आगे जानेके लिए पाँव बढ़ाएँ.

यों तैयारी कीजियो, आगूं करनी है दौड ।

सब अंग इसक लेय के, निकसो ब्रह्मांड फोड ॥ १९

इस प्रकार परमधाम जानेकी तैयारी कर लो, क्योंकि आगेकी दौड़ लगानी है. सर्वप्रथम अपने अङ्ग-अङ्गमें धनीजीके प्रेमको प्रकट करो तथा पूरे ब्रह्माण्डको भेदकर आगे निकलो.

महामत कहे मेरे साथ जी, लीजो आखर के वचन ।

हुकम सरत पोहोंची दया, कछू अंग अपने करो रोसन ॥ २०

महामति कहते हैं, हे मेरे सुन्दरसाथजी ! अन्तिम समयके इन वचनोंको ग्रहण करो. धनीजीकी आज्ञानुसार जागृत होनेका समय आ पहुँचा है. धनीजीकी कृपा भी उतर आई है. अब अपने हृदयमें अखण्ड ज्ञानका प्रकाश भर दो.

प्रकरण ८६ चौपाई १२१४

राग श्री

आग परो तिन काएरों, जो धाम की राह न लेत ।

सरफा करे जो सिर का, और सकुचे जीव देत ॥ १

उन कायरोंको पश्चात्तापकी अग्निमें जलना पड़ेगा, जो परमधामके मार्ग पर नहीं चलते हैं तथा अपने शरीर तथा प्राणोंको समर्पित करनेमें सङ्कोच करते हैं.

पाइएत झूठ के बदलें, सत सुख अखंड ।

सो देख पीछे क्यों होवहीं, करते कुरबानी पिंड ॥ २

इस झूठे शरीरको समर्पित करने पर ही धनीजीके अखण्ड सुख प्राप्त होते हैं. इस वास्तविकताको जानते हुए भी अपने शरीरको समर्पित करनेसे पीछे क्यों हट रहे हो ?

इन विध कहे संसार में, धनी रंचक दिलासा दे ।

टूक टूक हो जाए फना, सब अंग आसिक के ॥ ३

संसारमें भी ऐसा कहा जाता है कि यदि संसारके धनी (पति) का थोड़ा-

सा भी आश्वासन प्राप्त हो जाए, तो प्रेमिका अपने शरीरको समर्पित कर देती है.

**धनिएं दर्ई दिलासा मुझको, कै पदमों लाख करोड ।**

**तब आतमने यों कहा, पर आतम धनी संग जोड ॥ ४**

सद्गुरु धनीने मुझे लाखों करोड़ों प्रकारसे आश्वासन दिया. पश्चात् मेरी आत्माने कहा, मैं परात्माको धनीके साथ जोड़ दूँ.

**देख दिलासा धनीय की, भी साख दर्ई सबन ।**

**माहें बाहेर अंतर मिने, सब अंग किए रोसन ॥ ५**

सद्गुरु धनीके ऐसे आश्वासनको सुनकर एवं शास्त्रोंकी साक्षियोंको देखकर मैंने अपने हृदय, बाह्यशरीर एवं अन्तरात्माको दिव्य ज्ञानसे प्रकाशित किया.

**तू पूछ मन चित बुध को, और गुन अंग इन्द्री पख ।**

**देख तत्व सब शास्त्रोंका, फेर कर नीके लख ॥ ६**

हे आत्मा ! तू अपने मन, चित तथा बुद्धिसे पूछ ले एवं शास्त्रोंके तत्त्वोंको भी देख ले. फिर अपने गुण, अङ्ग इन्द्रियोंको लौटाकर धनीजीको भली-भाँति पहचान ले.

**तू बल कर कछू अपना, चल राह तामसी सूर ।**

**ब्रह्मसृष्टि निकसी ब्रजसे, देख क्यों कर पोहोंची हजूर ॥ ७**

तू अपने पूरे बलके साथ उस राह पर चल, जिस पर चलकर तामसी सखियाँ ब्रजसे रासमें पहुँची थीं अर्थात् वे अपना सब कुछ त्याग कर अपने प्रियतमके पास पहुँची थीं.

**कर कबीला पार का, अंकूर बल सूर धीर ।**

**एक धनी नजर में लेय के, उडाए दे सरीर ॥ ८**

तू परमधामसे आई हुई ब्रह्मसृष्टियोंको स्वजन (परिवारजन) बनाकर परमधामके अङ्कुर, बल, शौर्य और धैर्यको धारण कर. अक्षरातीत धनीको दृष्टिमें स्थिर कर इस नश्वर देहको उड़ा दे.

पूछ नीके अपने धनी को, भी नीके देख तारतम ।

नीके देख फुरमान को, भी पूछ नीके आतम ॥ ९

अपने सद्गुरु धनीके वचनोंको समझकर उन पर विचार कर तथा उनके दिए हुए अखण्ड तारतम ज्ञानको समझ. धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको भी समझ एवं अपनी आत्माको भी साक्षी बना ले.

भी पूछ संगी तूं अपने, जो हुए पिंडर्थें दूर ।

कै साखें अजूं ले खडी, देख रोसन अपना नूर ॥ १०

जो ब्रह्मात्माएँ तेरे सामने शरीर छोड़कर चली गई, उनके विषयमें भी विचार कर. ऐसी कई साक्षियोंको लेकर तथा अपने परात्माके चिन्मय प्रकाशको देखकर भी तू अभी तक क्यों खड़ी है ?

एती साखें लेय के, कहा लगत झूठे अंग ।

अजूं ना लगे तोकों धाम को, सांचो सनमंध संग ॥ ११

इतनी साक्षियोंको पाकर भी तू अभी तक इस झूठे शरीरके साथ क्यों रह रही है ? क्या अभी तक तुझे धामका सच्चा सम्बन्ध प्राप्त नहीं हुआ ?

सास्त्र संगी सब यों कहें, विचार देख महामत ।

जैसी होए हिरदे मिने, तैसी पाइए गत ॥ १२

शास्त्रज्ञ और सत्सङ्गी भी इस प्रकार कहते हैं, इसलिए हे महामति ! तू इस पर विचार कर. जिसकी जैसी भावना होगी, उसको वैसी ही गति प्राप्त होगी.

महामत कहें पीछे न देखिए, नहीं किसी की परवाहे ।

एक धाम हिरदे में लेय के, उडाए दे अरवाहे ॥ १३

महामति कहते हैं, हे आत्मा ! अब पीछे मुड़कर मत देख और संसारमें किसीकी भी चिन्ता (परवाह) मत कर. एक मात्र परमधामको हृदयमें लेकर इस झूठे शरीरको त्याग दे.

प्रकरण ८७ चौपाई १२२७



सैयां हम धाम चलें ॥ टेक ॥

जो आओ सो आइयो, पीछे रहे ना एक खिन ।

हम पीठ दई संसार को, जाए सुरत लगी वतन ॥ १

हे सुन्दरसाथजी ! अब हम परमधाम चलते हैं. जिन्हें मेरे साथ चलना हो, वे आ जाएँ. मैं एक क्षणके लिए भी इस संसारमें रहना नहीं चाहता. अब मैंने इस संसारसे मुख मोड़ लिया है तथा मेरी सुरता परमधाममें लग गई है.

सुध मुहूरत ले कूच किया, साएत देखी अति सारी ।

अब दौड सको सो दौडियो, न रहे दौड पकडी हमारी ॥ २

शुभ मुहूर्त देखकर मैं प्रस्थान कर रहा हूँ, प्रस्थानके लिए यह अतिशुभ घड़ी है. अब जो जितना दौड़ सकते हैं, वे दौड़कर आ जाएँ, अब हमारी गतिको कोई पकड़ नहीं पाएगा.

कोई दिन राह देखी साथ की, पीछे नजर फिराए ।

पोहोंचे दिन आए आखर, अब हम रह्यो न जाए ॥ ३

कुछ दिनों तक मैंने सुन्दरसाथकी प्रतीक्षा की फिर अपनी सुरताको परमधामकी ओर लौटाया. अब तो अन्त समय निकट आ पहुँचा है. इसलिए अब अधिक समय तक मुझसे रहा नहीं जा सकता.

हम संग चलो सो ढील जिन करो, छोडो आस संसार ।

सुरत हमारी कछू ना रही, हम छोडी आस आकार ॥ ४

अब जिनको मेरे साथ परमधाम चलना हो, वे विलम्ब न करें तथा मायाके झूठे सुखोंकी आशा छोड़ दें. अब इस संसारमें मेरी सुरता तनिक भी नहीं है. मैंने इस शरीरकी आशा भी छोड़ दी है.

नेक बसे हम ब्रज में, नेक बसे रास माहें ।

आगे तो धाम आइया, तब तो आंखें खुल जाए ॥ ५

अब यह अनुभव होने लगा कि हम सर्वप्रथम परमधामसे आकर कुछ समय

तक ब्रजमें रहे, पश्चात् कुछ समय तक रासमें रहे. अब इससे आगे तो साक्षात् परमधाम है इतना समझने पर तो तुम सबकी आत्म-दृष्टि खुल जानी चाहिए.

**साथ चले जो ना चलिया, ताए लगसी आग दोजक ।**

**तलफ तलफ जीव जाएसी, जिन जानो यामें सक ॥ ६**

अन्त समय आ गया है, यह जानकर सुन्दरसाथ मेरे साथ धाम चल रहे हैं. जो नहीं चल पाए, उन्हें नरकाग्निके समान पश्चात्तापकी आगमें जलना पड़ेगा. इसमें कोई सन्देह नहीं है कि उनकी आत्मा तड़फ-तड़फकर शरीरसे निकलेगी.

**पीछे अटकाव न राखो रंचक, जो आओ संग हम ।**

**तुम जानोगे वह नेक है, पर जरा होसी जुलम ॥ ७**

जिन्हें मेरे साथ परमधाम आना हो, वे इस संसारकी मोह-मायाको छोड़ दें. तुम समझोगे कि यह मायाका लगाव तो थोड़ा सा ही है किन्तु जरा-सा बन्धन भी कष्टदायी होगा.

**जो न आओ सो जुदा होइयो, ना तो होसी बडी जलन ।**

**हम तो चलें धाम को, तुम रहियो माहें करन ॥ ८**

जिन्हें मेरे साथ परमधाम न आना हो, वे अभीसे पृथक् हो जाएँ. मेरेसे पृथक् होनेके पश्चात् उन्हें पश्चात्तापकी आगमें जलना पड़ेगा. मैं तो अब परमधाम जा रहा हूँ, तुम भले अपने कर्म बन्धनमें पड़े रहो.

**हम छोडे सुख सुपन के, आए नजरो सुख अखंड ।**

**विरहा उपज्या धाम का, पीछे हो गई आग ब्रह्मांड ॥ ९**

मैंने तो स्वप्नवत् संसारके निरर्थक सुख छोड़ दिए हैं. मेरी दृष्टि तो अखण्ड परमधामके दिव्य सुखोंकी ओर केन्द्रित हो चुकी है. क्योंकि मेरे हृदयमें धामधनीके विरहकी ज्वाला जल रही है, बादमें तो समस्त ब्रह्माण्ड ही अग्निके समान दाहक बन जाएगा.

**मैं आग देऊं तिन सुख को, जो आडी करे जाते धाम ।**

**मैं पिंड न देखूं ब्रह्मांड, मेरे हिरदें बसे स्यामा स्याम ॥ १०**

परमधाम जाते हुए जो सुख मुझे बाधा डालते हैं, मैं उन सुखोंको प्रियतमके

विरहकी आगमें जला देता हूँ. अब मुझे इस झूठे शरीर या झूठे ब्रह्माण्डकी ओर नहीं देखना है, क्योंकि मेरे हृदयमें तो अब श्यामा-श्याम ही बस गए हैं.

कै किताबें करी साथ कारन, सो भी गाई जगावन ।

ए सुनके जो न दौडिया, जिमी ताबा होसी तिन ॥ ११

सुन्दरसाथको जागृत करनेके लिए मैंने कई ग्रन्थ (चौदह ग्रन्थ) तैयार किए. सुन्दरसाथको जगानेके लिए ही मैंने उन ग्रन्थोंका गायन किया. किन्तु इन वचनोंको सुनकर भी जो परमधामकी ओर नहीं आएँगे, उनके लिए यह भूमि तपे हुए तवेकी भाँति दाहक सिद्ध होगी.

कै लोभें लिए लज्जा लिए, कै लिए अहंकार ।

यों छलें पीछे कै पटके, जो केहेते हम सिरदार ॥ १२

सुन्दरसाथमेंसे जो स्वयंको श्रेष्ठ मानते थे, उनमें-से भी अनेक लोभके कारण, कई लज्जाके कारण एवं अनेक अपने मिथ्या ज्ञानके अभिमानके कारण सांसारिक छल-कपटसे ठगे गए.

विषे स्वाद जिन लग्यो, सो लिए इंद्रियों घेर ।

जो एक साएत साथ आगे चल्या, पीछे पडे माहें करन अंधेर ॥ १३

जिन्हें मायाके विषयोंका स्वाद लग गया, वे तो इंद्रियोंसे ही घेर लिए गए. ऐसे लोग क्षणमात्रके लिए सुन्दरसाथके साथ आगे-आगे चलते हुए दिखाई दिए, किन्तु बादमें अज्ञानके अन्धकारमें ही पड़ गए.

गुन अवगुन सबके माफ किए, जो रहो या चलो हम संग ।

हम पीछे फेर न देखहीं, पीउसों करें रस रंग ॥ १४

जो सुन्दरसाथ मेरे साथ धाम आएँगे अथवा जो इस संसारमें ही रह जाएँगे, उन सबके गुण (पुण्य) और अवगुण (पाप) मैंने क्षमा कर दिए हैं. अब मैं इस सांसारिक मायाकी ओर दृष्टिपात भी नहीं करूँगा. अब तो मुझे अपने धनीके साथ प्रेम विहार ही करना है.

साथ होवे जो धामको, सो भूले नहीं अवसर ।

सनमंधी जब उठ चले, तब पीछे रहे क्यों कर ॥ १५

जो परमधामकी ब्रह्मसृष्टि होंगी, वे इस अवसरको नहीं भूलेंगी. जब मूल सम्बन्धी ही जाते रहे, तो इस संसारमें कैसे रहा जा सकेगा ?

महामत केहे मेहेबूब का, सांचा स्वाद आया जिन ।

परख्या तिनकी प्रगट, छेद निकसे बान बचन ॥ १६

महामति कहते हैं, जिन्हें प्रियतम धनीके अखण्ड सुखोंका वास्तविक अनुभव हो चुका है, उनके लिए यह परीक्षाकी घड़ी है. ये वचन उनके हृदयको अवश्य बींध डालेंगे.

प्रकरण ८८ चौपाई १२४३

राग बसंत

चलो चलो रे साथजी, आपन जैए धाम ।

मूल वतन धनिएं बताया, जित ब्रह्म सृष्टि स्यामाजी स्याम ॥ १

हे सुन्दरसाथजी ! चलो, हम सब साथ मिलकर परमधाम जाएँ. परमधामकी बात सद्गुरुने हमें बताई है, जहाँ ब्रह्मसृष्टि और श्यामाजी सहित श्री श्याम (अक्षरातीत श्रीकृष्णजी) विराजमान हैं.

मोहोल मंदिर अपने जो देखिए, देखिए खेलन के सब ठौर ।

जित है लीला स्याम स्यामाजी, साथजी बिना नहीं कोई और ॥ २

अब तुम अपने महल-मन्दिरोंकी शोभा एवं सभी क्रीडास्थलोंको ध्यानसे देखो, जहाँ पर श्री राजश्यामाजी तथा सुन्दरसाथके अतिरिक्त अन्य कोई भी नहीं है.

रेत सेत जमुनाजी तलाब, कै ठौर बन करे बिलास ।

इसक के सारे अंग भीगल, रेहेस रंग विनोद कै हांस ॥ ३

श्रीयमुनाजी, हौजकौसर ताल तथा विभिन्न वन-उपवनोंमें मोतियोंकी भाँति चमक रहे श्वेत रेत कण हैं, जहाँ पर विभिन्न प्रकारके क्रीडास्थल बने हुए

हैं. उनमें प्रेमसिक्त (प्रेमसे सींचे हुए) अंगोंसे हम श्रीराजजीके साथ एकान्तमें आनन्द विलासका अनुभव करें.

**पसु पंखी माँहें सुन्दर सोभित, करत कलोल मुख मीठी बान ।**

**अनेक विध के खेल जो खेलत, सो केते कहूं मुख इन जुबान ॥ ४**

उन सुन्दर वनोंमें भाँति-भाँतिके पशु पक्षी शोभायमान हैं तथा वे अपनी मीठी वाणीसे धनीजीका गुणानुवाद करते हुए क्रीड़ा कर रहे हैं. वे अनेक प्रकारके ऐसे खेल खेलते हैं, जिनका वर्णन इस जिह्वा द्वारा कहाँ तक करूँ ?

**एही सुरत अब लीजो साथजी, भुलाए देओ सब पिंड ब्रह्मांड ।**

**जागे पीछे दुख काहेको देखे, लीजे अपना सुख अखंड ॥ ५**

हे सुन्दरसाथजी ! परमधामकी इन लीलाओंमें अपनी सुरता (ध्यान) लगाओ तथा इस नश्वर शरीर व संसारके सुखोंको छोड़ दो. जागृत होनेके पश्चात् इस संसारके कष्टोंको क्यों भोग रहे हो ? अब तो परमधामके अखण्ड सुखोंका ही अनुभव करो.

**साथ मिल तुम आए धाम से, भूल गए सो मूल मिलाप ।**

**भूलियां धाम धनी के वचन, ना कछू सुध रही जो आप ॥ ६**

तुम सब मिलकर परमधामसे इस नश्वर संसारके खेल देखनेके लिए आए हो. परन्तु यहाँ आने पर परमधामके मूल सम्बन्ध और पारस्परिक मिलनको भी भूल गए हो. इतना ही नहीं, इस खेलमें आनेसे पूर्व धामधनीजीने जो वचन कहे थे, उनको भी तुम भूल गए हो. तुम्हें तो स्वयंकी सुधि भी नहीं रही.

**धनी भेज्या फुरमान बुलावने, कहा आइयो सरत इन दिन ।**

**खेलमें लाहा लेयके आपन, चलिए इत होए धन धन ॥ ७**

धामधनीने तुम्हें परमधाम बुलानेके लिए शास्त्रोंके द्वारा अपना सन्देश भेजा तथा कहा कि निश्चित समय पर जागृत होकर पुनः परमधाम लौट आओ. इस लिए धनीजीकी आज्ञानुसार इस खेलमें उनकी पहचानका लाभ लेकर यहाँ भी धन्य होते हुए परमधाम चलो.

चौदे लोक में झूठ बिस्तरयो, तामें एक सांचे किए तुम ।

हंसते खेलते नाचते चलिए, आनंद में बुलाइयां खसम ॥ ८

चौदह लोकोंमें झूठी मायाका ही विस्तार है। इस मायामें सद्गुरुने मात्र तुम (सुन्दरसाथ)को ही सत्य माना है। इसलिए अब इस खेलसे प्रसन्न चित्त होकर, हँसते, खेलते, नाचते तथा विनोद करते हुए परमधाम चलो। धामधनी परमधामके आनन्दमें हमें बुला रहे हैं।

अब छलमें कैसे कर रहिए, छोड़ देओ सब झूठ हराम ।

सुरत धनीसों बांध के चलिए, ले ब्रह्म रस प्रेम काम ॥ ९

अब इस मिथ्या जगतमें कैसे रहा जाए ? इस झूठे संसारके कपट और प्रपञ्चपूर्ण व्यवहारको छोड़ दो। धनीके विरह रसका आस्वाद लेते हुए प्रेममिलनकी कामना सहित धनीजीसे अपनी सुरता बाँधकर परमधाम चलो।

जो जो खिन इत होत है, लीजो लाभ साथ धनी पेहेचान ।

ए समया तुमें बहुर न आवे, केहेती हों नेहेचे बात निदान ॥ १०

हे सुन्दरसाथजी ! यहाँ पर जितने पल व्यतीत हो रहे हैं, उनमें धामधनीकी पहचानका लाभ प्राप्त करो। ऐसा सुअवसर बार-बार नहीं मिलेगा। यह मैं तुम्हें निश्चयपूर्वक कह रहा हूँ।

अब जो घडी रहो साथ चरने, होए रहियो तुम रेन समान ।

इत जागे को फल एही है, चेत लीजो कोई चतुर सुजान ॥ ११

अब तुम जितने समय तक सुन्दरसाथके बीचमें रहो, तब तक चरण-रजके समान विनम्र होकर रहो। यहाँ पर जागृत होनेका यही तो लाभ (फल) है। कोई चतुर सज्जन यह रहस्य समझकर चेत जाए।

ज्यों ज्यों गरीबी लीजे साथ में, त्यों त्यों धनी को पाइए मान ।

इत दोए दिन का लाभ जो लेना, एही वचन जानो परवान ॥ १२

तुम सुन्दरसाथके साथ जितना अधिक विनम्र व्यवहार करोगे, उतना ही धनीजीका प्रेम और मान प्राप्त करोगे। यहाँ थोड़े ही दिन रहकर उसका लाभ लेना है। मेरे इन वचनोंको प्रमाणरूप समझो।

अब जो साइत इत होत है, सो पीउ बिना लगत अगिन ।

ए हम सह्यो न जावहीं, जो साथ में कहे कोई कुटक वचन ॥ १३

अब यहाँ पर जागृत होने पर धनीके बिना जो भी समय व्यतीत होगा, वह अग्निके समान दाहक सिद्ध होगा। यदि सुन्दरसाथ परस्पर व्यवहारमें कटु वचन बोलने लगें, तो वह मुझसे सहन नहीं हो सकेगा।

ज्यों ज्यों साथ में होत है प्रीत, त्यों त्यों मोही को होत है सुख ।

ज्यों ज्यों ब्रोध करत हैं साथ में, अंत वाही को है जो दुख ॥ १४

ज्यों-ज्यों सुन्दरसाथमें पारस्परिक प्रेमभाव बढ़ता जाता है, त्यों-त्यों मुझे उत्तरोत्तर सुखका अनुभव होता है। परन्तु यदि सुन्दरसाथमें कोई विरोध पैदा करता है, तो अन्तमें उसे ही दुःख भोगने पड़ेंगे।

इत खिनका है जो लटका, जीत चलो भावे जो हार ।

महामत हेत कर कहें साथ को, विध विध की करत पुकार ॥ १५

यह संसार क्षणभङ्गुर है, इसलिए यहाँ पर धनीजीकी आज्ञानुसार चलकर इच्छित सफलता प्राप्त करो अथवा आज्ञाका उल्लङ्घन कर असफलताके भागी बनो। इस प्रकार महामति प्रेम पूर्वक कहकर सुन्दरसाथको जागृत करनेके लिए विभिन्न प्रकारसे पुकार रहे हैं।

प्रकरण ८९ चौपाई १२५८

राग मारु

साथ जी सोभा देखिए, करें कुरबानी आतम ।

वार डारों नख सिख लों, ऊपर धाम धनी खसम ॥ १

हे सुन्दरसाथजी ! धामधनीकी शोभायुक्त छविके दर्शन कर अपनी आत्माको उनके चरणकमलोंमें समर्पित कर दो। इतना ही नहीं, नखसे शिख तक सभी अङ्गोंको धामधनीके चरणोंमें समर्पित कर दो।

लिख्या है फुरमान में, करसी कुरबानी मोमिन ।

अग्यारे सै साल का, सो आए पोहोंच्या दिन ॥ २

कुरानमें भी बताया गया है कि आत्म-जागृति (कयामत) की घड़ीमें

ब्रह्मात्माएँ परमात्माके मार्ग पर न्योछावर होंगी. ग्यारहवीं शताब्दीका वही शुभ दिन आ पहुँचा है.

देख्या मैं विचार के, हम सिर किया फरज ।

बडी बुजरकी मोमिनो, देखें कौन क्यों देत करज ॥ ३

विचार करने पर मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि सद्गुरु धनीने सुन्दरसाथको जगाकर परमधाम ले जानेका उत्तरदायित्व मुझे सौंपा है. धर्मग्रन्थोंमें सुन्दरसाथकी अत्यधिक प्रशंसा की गई है. अब देखते हैं कि धर्मके मार्ग पर चलकर जागनीका कार्य करते हुए कौन कितना कर्तव्य निभाता है.

करी कुरबानी तिन कारने, परख्या सबकी होए ।

करे कुरबानी जुदे जुदे, सांच झूठ ए दोए ॥ ४

इसलिए जागनीके कार्यमें मैंने स्वयंको समर्पित किया है. अब सबकी परीक्षा होगी. सत्य आत्माएँ तथा मायाके जीव विभिन्न प्रकारसे समर्पित होंगे (इसीसे ब्रह्मसृष्टि तथा जीवसृष्टिके रूपमें सबकी पृथक्-पृथक् पहचान हो जाएगी).

कस न पाइए कसोटी बिना, रंग देखावे कसोटी ।

कची पकी सब पाइए, मत छोटी या मोटी ॥ ५

जिस प्रकार कसोटीके बिना किसी भी वस्तुकी परख नहीं हो सकती, उसी प्रकार धनीजीके प्रति ब्रह्मात्माओंका प्रेम रङ्ग कच्चा है अथवा पक्का, इसकी परख समर्पण (कुर्बानी) की कसोटी द्वारा ही होती है.

कसोटी कस देखावहीं, कसनी के वखत ।

अबहीं प्रगट होएसी, जुदे झूठ से निकस के सत ॥ ६

परीक्षाके समय ब्रह्मात्माएँ साधना (समर्पित हो) कर दिखाएँगी. झूठसे पृथक् होकर सत्य किस प्रकार बाहर आता है (ब्रह्मात्माएँ अन्य जीवोंसे कैसे श्रेष्ठ हैं), वह परिणाम अभी प्रकट हो जाएगा.

करत कुरबानी सकुचे, मोमिन करे न कोए ।

तिन गिरोकी परख्या, अब सो जाहेर होए ॥ ७

ब्रह्मात्माएँ धर्म (परमधाम) के मार्ग पर स्वयंको समर्पित करनेमें सङ्कोचका



अनुभव नहीं करेंगी. इसी समय जीवसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि और ब्रह्मसृष्टि, इन तीनोंकी परीक्षाके परिणाम प्रसिद्ध हो जाएँगे.

कहा कहूँ वतन सैयां, जो मगज लगे अरथ ।

कुरबानी समे देख्या चाहिए, सांचे सूर समरथ ॥ ८

परमधामकी ब्रह्मात्माओंके विषयमें मैं क्या कहूँ ? वे तो सदैव गूढ़ार्थ समझकर ही समर्पित होती हैं (इसके द्वारा ही उनकी कसौटी होती है). इसलिए समर्पणके समय शूरवीर ब्रह्मात्माओंके सामर्थ्यका परिचय प्राप्त हो जाता है.

कुरबानी को नाम सुन, मोमिन उलसत अंग ।

पीछे हुते जो मोमिन, दौड लिया तिन संग ॥ ९

समर्पण (कुरबानी) का नाम सुनते ही ब्रह्मात्माओंके अङ्ग-प्रत्यङ्ग उत्कण्ठित होते हैं. जो ब्रह्मात्माएँ समर्पित होनेमें पीछे रह गईं, वे भी दौड़कर सुन्दरसाथमें सम्मिलित हो रही हैं.

मोमिन एही परख्या, जोस न अंग समाए ।

बाहेर सीतलता होए गई, माहें मिलाप धनीको चाहे ॥ १०

ब्रह्मात्माओंकी यही परीक्षा है कि उनके अङ्गोंमें समर्पणका उमङ्ग समाता नहीं है. वे बाहरसे अर्थात् गुण, अंग, इन्द्रियोंसे भले शान्त प्रतीत होती हों, किन्तु अन्दरसे धनी मिलनके लिए तड़पती हैं.

सुनत कुरबानी मोमिन, होए गए आगे से निरमल ।

इत एक एक आगे दूसरा, जाने कब जासी हम चल ॥ ११

समर्पणकी बात सुनते ही ब्रह्मात्माएँ पहलेसे ही निर्मल हृदय होकर आतुर रहती हैं. वे एक-दूसरेसे आगे रहती हैं कि कब हम चलकर धनीके पास पहुँचें.

मोमिन बडा मरातबा, सो अब होसी जाहेर ।

छिपे हुते दुनियां मिने, सो निकस आए बाहेर ॥ १२

ब्रह्मात्माओंका पद बहुत ऊँचा है, वह अब प्रकट हो जाएगा. अभी तक

ब्रह्मात्माएँ संसारमें छिपी हुई थीं, वे सब अब (समर्पणके समयमें) बाहर निकल आई हैं।

सांचे छिपे ना रहें, अपने समे पर ।

दोस्त कहे धनी के, सो छिपे रहें क्यों कर ॥ १३

सच्ची ब्रह्मात्माएँ अपने (समर्पणके) समय पर छिपी नहीं रहेंगीं. जो धामधनीकी अङ्गना (सखियाँ) कहलाती हैं, वे (ऐसे समय पर) कैसे छिपी रहेंगीं ?

जो होए आत्म धाम की, सो अपने समे पर ।

अपना सांच देखावहीं, भूले नहीं अवसर ॥ १४

जो परमधामकी आत्मा होगी, वह अपने समय पर अपनी सत्यता अवश्य दिखाएगी. समर्पणके इस समयको नहीं भूलेगी.

जो भूले अब को अवसर, सो फेर न आवे ठौर ।

नेहेचे सांचे ना भूलहीं, इत भूलेंगे कोई और ॥ १५

जो इस अमूल्य अवसरको भूल जाएँगीं, उन्हें पुनः ऐसा समय प्राप्त नहीं होगा. निश्चय ही सत्य ब्रह्मात्माएँ नहीं भूलेंगीं. ऐसे समयपर भूलनेवाले तो कोई अन्य (जीवसृष्टि) ही होंगे.

आया दरवाजा धाम का, सांचो बाढ्या बल ।

आए गए छाया मिने, धनी छाया निरमल ॥ १६

परमधामके द्वार खुले हुए देखकर सच्ची ब्रह्मात्माओंका आत्मबल बढ़ गया. वे सब सद्गुरु धनीकी निर्मल (शीतल) छत्रछायामें आ गईं.

साफ सेहेजे हो गए, करने पड्या न जोर ।

रात मिटी कुफर अंधेरी, भयो रोसन वतनी भोर ॥ १७

वे सरलतासे निर्मलहृदया हो गईं. इसके लिए उन्हें प्रयत्न करना नहीं पड़ा. अज्ञान-अन्धकार रूपी रात मिट गई. परमधामके (तारतम) ज्ञानके प्रकाशका प्रभात हो गया.

कुरबानी सुन सखियां, उलसत सारे अंग ।

सुरत पोहोँची जाए धाम में, मिलाप धनी के संग ॥ १८

समर्पण (कुरबानी) की बात सुनते ही ब्रह्मात्माओंके अङ्गोंमें उमङ्ग भर जाता है। उनकी सुरता परमधाममें पहुँचकर धामधनीके साथ मिल जाती है।

मोमिन बल धनीय का, दुनी तरफ से नाहें ।

तो कहे धनी बराबर, जो मूल सरूप धाम माहें ॥ १९

ब्रह्मात्माओंके पास धामधनीका आवेश बल है, उनको सांसारिक शक्तिकी आवश्यकता नहीं होती। इसलिए उनको धामधनीके समान माना गया है, क्योंकि उनके मूलस्वरूप (परआत्मा) परमधाममें सदैव धामधनीके साथमें ही हैं।

लडकपने सुध ना हुती, तो भी मोमिन मूल अंकूर ।

कोई कोई बात की रोसनी, लिए खडे थे जहूर ॥ २०

भले ही ब्रह्मात्माओंको सद्गुरुके सान्निध्यमें भी अज्ञानावस्थाके कारण परमधामकी सुधि न रही हो, किन्तु उनका मूल सम्बन्ध (अङ्कुर) तो परमधामका ही हैं। इसलिए उस समय भी ज्ञानका कुछ प्रकाश लेकर तो वे सद्गुरुकी शरणमें खड़ी ही थीं।

अब तो किए धनिएं जागृत, दर्ई भांत भांत पेहेचान ।

तोड दर्ई आसा छल की, क्यों सकुचें करत कुरबान ॥ २१

अब तो सद्गुरुने मेरे हृदयमें बैठकर सब सुन्दरसाथको जागृत कर दिया है तथा विभिन्न प्रकारसे पहचान भी करवाई है। उन्होंने मायाकी झूठी आशाएँ भी तोड़ दीं। इसलिए अब समर्पित होनेमें क्यों सङ्कोच करें ?

अब तो धनी बल जाहेर, आयो अलेखें अंग ।

ए जिन दिया सो जानहीं, या जिन लिया रस रंग ॥ २२

अब तो सद्गुरु धनीकी अपार आवेश शक्ति मेरे हृदयमें आकर प्रकट हो गई है। धनीजीकी इस कृपाको या तो स्वयं धनीजी ही जानते हैं जिन्होंने प्रदान की है अथवा इसे अनुभव करनेवाली मेरी आत्मा ही जानती है।

ए दुनी न जाने सुपन की, न जाने मलकूती फिरस्तन ।

ए अक्षर को भी सुध नहीं, जाने स्याम स्यामा मोमिन ॥ २३

धामधनीकी आवेश शक्तिको स्वप्नकी दुनियाँ (जीवसृष्टि) तथा वैकुण्ठके देवता (फरिश्ते) भी नहीं जानते हैं. अक्षरब्रह्मको भी इसकी सुधि नहीं है. स्वयं श्याम-श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ ही इस रहस्यको जानती हैं.

मैं मेरे धनीय की, चरन की रेन पर ।

कोट बेर वारों अपना, टूक टूक जुदा कर ॥ २४

ऐसे कृपालु सद्गुरुधनीकी चरण रज पर मैं अपने शरीरको टुकड़े-टुकड़े कर करोड़ों बार समर्पित कर दूँ.

अंग अंग सब उलसत, कुरबानी कारन ।

जरे जरे पर वार हूँ, ए जो बीच जरे राह इन ॥ २५

समर्पणके लिए मेरे अङ्ग-प्रत्यङ्ग उल्लसित हो रहे हैं. धामधनीके मार्गमें कण-कण पर मैं मेरे तनको समर्पित कर दूँ.

जिन दिस मेरा पीउ बसे, तिन दिस पर होऊं कुरबान ।

रोम रोम नख सिख लों, वार डारों जीव से प्रान ॥ २६

जिस दिशामें मेरे धनी रहते हैं, मैं उस दिशा पर समर्पित हो जाऊँ. नखसे लेकर शिख तक शरीरके सभी अङ्ग-प्रत्यङ्ग, रोम-रोमको प्राणों सहित समर्पित कर दूँ.

सूरा तन सखियन का, मुखथें कह्यो न जाए ।

महामत कहें सो समया, निपट निकट पोहोंच्या आए ॥ २७

ब्रह्मात्माओंकी शूर-वीरताका वर्णन इस मुखसे नहीं हो सकता. महामति कहते हैं, समर्पणका वह समय अति निकट आ पहुँचा है.

प्रकरण १० चौपाई १२८५

आगूं आसक ऐसे कहे, जो माया थें उतपन ।

कोट बेर मासूक पर, उडाए देवे अपना तन ॥ १

मायासे उत्पन्न जीवोंमें भी पहले ऐसे प्रेमीजन हुए हैं, जिन्होंने अपने इष्टकी प्राप्ति हेतु अपने शरीरको करोड़ों बार समर्पित करनेमें भी संकोच नहीं किया.

जीव माया के ऐसी करे, कैयों देखे द्रष्ट ।

ओ भी उन पर यों करे, तो हम तो हैं ब्रह्मसृष्ट ॥ २

मायाके कई जीव इस प्रकार समर्पित होते हुए देखे गए हैं. जब वे अपने प्रेमीके लिए इतना कर सकते हैं, तो हम तो ब्रह्मसृष्टि हैं (हमें तो उनसे अधिक करना चाहिए).

धिक धिक पडो तिन समझको, जो पीछे देवे पाए ।

कुरबानी को नाम सुन, क्यों न उडे अरवाए ॥ ३

उन लोगोंकी बुद्धिको धिक्कार है, जो समर्पित होनेमें पीछे हटते हैं. समर्पणकी बात सुनते ही आत्मा इस नश्वर देहको क्यों नहीं छोड़ देती ?

जो नकल हमारे की नकल, तिनका होत ए हाल ।

तो पीछे पांड हम क्यों देवें, हम सिर नूरजमाल ॥ ४

जब हमारे प्रतिबिम्ब स्वरूप ईश्वरीसृष्टि एवं उनके भी प्रतिबिम्बित स्वरूप जीवसृष्टिकी भी यह दशा है, तो हम ब्रह्मआत्माएँ अपने धनीके प्रति समर्पित होनेमें क्यों पीछे रहें ? क्योंकि हमारे सिर पर तो साक्षात् अक्षरातीत धनी हैं.

जो आसक असल अरसकी, सो क्यों सकुचे देते जीउ ।

करे कुरबानी कोट बेर, ऊपर अपने पीउ ॥ ५

जो सचमुच परमधामकी प्रेमी आत्माएँ हैं, वे समर्पित होनेमें क्यों सझोच करेंगी ? वे अपने धनीके ऊपर करोड़ों बार स्वयंको समर्पित कर देंगी.

सो भी पीउ अक्षरातीत, इत कायर न होवे कोए ।

सुनत कुरबानी के आगे ही, तन रोम रोम जुदे होए ॥ ६

जब धामधनी साक्षात् अक्षरातीत हैं, तो उनके प्रति समर्पित होनेमें किसीको भीरु (कायर) नहीं होना चाहिए. समर्पणकी बात सुनते ही उनके शरीरके रोम-रोम पृथक् हो जाएँगे.

इन खसम के नाम पर, कै कोट बेर वारों तन ।

टूक टूक कर डार हूं, कर मनसा वाचा करमन ॥ ७

ऐसे धामधनीके नाम पर मैं मन, वचन और कर्मसे अपने शरीरको करोड़ों बार टुकड़े-टुकड़े कर समर्पित कर दूँ.

जो आसक अरस अजीम के, तिन सिर नूरजमाल ।

परख्या तिनकी जाहेर, सबद लगेँ ज्यों भाल ॥ ८

जो परमधामकी प्रेमी आत्माएँ हैं, उन्हें तो स्वयं परब्रह्म परमात्माका संरक्षण प्राप्त है. उनकी यही प्रत्यक्ष परीक्षा (पहचान) है कि धनीके वचन उनके हृदयमें भालेकी भाँति चुभ जाते हैं.

जो सोहागिन वतनी, ताकी प्रगट पेहेचान ।

रोम रोम सब अंगों, जुदी जुदी दे कुरबान ॥ ९

जो परमधामकी सुहागिनी आत्माएँ हैं, उनकी प्रत्यक्ष पहचान यही है कि वे अपने शरीरके रोम-रोम सहित प्रत्येक अंगसे अपने धनी पर समर्पित होती हैं.

कुरबानी को सब अंग, हंस हंस दिल हरषत ।

पीउ पर फना होवने, सब अंगों नाचत ॥ १०

सभी अङ्गों सहित समर्पित होनेके लिए उनका दिल हर्षित होता है. अपने धनी पर मर मिटनेके लिए उनके सब अङ्ग नाचने लगते हैं.

आसक कबूं ना अटके, करत अंग कुरबान ।

ना जीव अंग आसक के, जीव पीउ अंग में जान ॥ ११

अपने अङ्गोंको समर्पित करनेके लिए प्रेमी आत्माएँ कभी नहीं अटकतीं

(पीछे नहीं हटतीं) क्योंकि प्रेमियोंकी आत्मा तो उनके स्थूल शरीरमें न होकर प्रीतमके अंगोंमें ही लीन रहती है.

अंग आसक आगूंहीं फना, जीवत मासूक के माहें ।

डोरी हाथ मेहेबूब के, या राखे या फनाए ॥ १२

प्रेमी आत्माका शरीर पहलेसे ही मृतप्रायः होता है. वह अपने प्रियतममें ही रत होकर जीता है. उसकी जीवन डोरी प्रीतमके हाथमें रहती है. उसे जीवित रखना अथवा न रखना सब प्रीतमके अधीन है.

तो अंग आधा अरधांग, मासूक का आसक ।

तो दोऊ तन एक भए, जो इसक लाग्या हक ॥ १३

इसलिए प्रेमी आत्माको धामधनीकी अर्धाङ्गिनी कहा गया है. यदि सच्चा प्रेम जागृत हो जाय, तो दोनोंके शरीर एकरूप हो जाएँगे.

सोई कहावत आसक, जिन अंग जोस फुरत ।

अहेनिस पीउके अंगमें, रेहेत आसक की सुरत ॥ १४

वही आत्मा प्रेमी कहलाती है, जिसके अङ्ग-अङ्गमें धामधनीका जोश प्रस्फुटित होता है. ऐसे प्रेमीकी सुरता दिन-रात प्रियतम धनीके स्वरूपमें लीन रहती है.

मासूक की नजर तले, आठों जाम आसक ।

पिए अमीरस सनकूल, हुकम तले बेसक ॥ १५

प्रेमी आत्माएँ आठों प्रहर प्रियतम धनीकी कृपा दृष्टिकी छत्र-छायामें रहती हैं. निश्चय ही वे उनकी आज्ञामें ही प्रसन्न रहकर सदैव प्रेमरस पीती रहती हैं.

न्यारा निमख न होवहीं, करने पडे न याद ।

आसक को मासूक का, कोई इन विध लाग्या स्वाद ॥ १६

वह अपने धनीसे पलभर भी पृथक् नहीं होती. प्रेमी आत्माको प्रियतम धनीका ऐसा स्वाद लग गया है कि उसे धनीको याद करना ही नहीं पड़ता.

रोम रोम बीच रम रह्या, पीउ आसक अंग ।  
 इसकें ले ऐसा किया, कोई हो गया एकै रंग ॥ १७

ऐसे प्रेमीके रोम-रोममें प्रियतम परमात्मा रमण करते हैं. प्रेमका ऐसा रङ्ग चढ़ गया कि वे धामधनीके ही रङ्गमें रङ्ग गए.

इन जुबां इन आसक का, क्यों कर कहूं सो बल ।  
 धाम धनी आसकसों, जुदा होए ना सके एक पल ॥ १८

इस नश्वर जिह्वासे प्रेमीके प्रेमबलका वर्णन कैसे करूँ ? क्योंकि ऐसे प्रेमियोंसे धामधनी क्षण भरके लिए भी पृथक् नहीं हो सकते.

महामत कहे मेहेबूब के, रोम रोम लगे घाए ।  
 इन अंग को अचरज होत है, अजूं ले खडा अरवाए ॥ १९

महामति कहते हैं, धामधनीके विरहकी चोट मेरे रोम-रोममें लगी हुई है, तथापि मुझे आश्चर्य होता है कि यह आत्मा अभी तक इस नश्वर शरीरको लेकर क्यों खड़ी है ?

प्रकरण ११ चौपाई १३०४

राग श्री

अब हम धाम चलत हैं, तुम हूजो सबे हुसियार ।  
 एक खिनकी बिलम न कीजिए, जाए घरों करें करार ॥ १

हे सुन्दरसाथजी ! अब हम परमधाम चलते हैं, तुम सब सावधान हो जाओ. एक क्षणका भी विलम्ब न करो अब तो अपने घर पहुँचकर ही शान्तिका अनुभव करेंगे.

साथ देखो ए अवसर, वासना करो पेहेचान ।  
 आए पोहोंचे ब्रज में, याद करो निसान ॥ २

हे सुन्दरसाथजी ! इस अवसरको देखकर अपनी आत्माको पहचानो. सर्व प्रथम जब हम ब्रजमें आ पहुँचे थे (ब्रजकी लीलाकी थी), उन स्मृति चिह्नोंको याद करो.



धनिं देखाया नजरों, सुरतां दैयां फिराए ।

अब पैठे हम रास में, उछरंग हिरदै चढ आए ॥ ३

धामधनीने हमारी सुरताको लौटाकर ब्रजलीलाके दर्शन करवाये. अब हम पुनः अपनी सुरतासे रासलीलामें प्रवेश कर गए. हमारे हृदयमें अति उमङ्ग भर आया है.

जाग्रत बुध हिरदै आई, अब रहे ना सकें एक खिन ।

सुरत टूटी नासूत से, पोहोँची सुरत वतन ॥ ४

जाग्रत बुद्धि हृदयमें आ गई है, इसलिए अब एक क्षण भी रहा नहीं जा सकता. हमारी सुरता नश्वर संसारसे हटकर दिव्य परमधाममें पहुँच गई है.

चिन्हार भई सब साथ में, आई धामकी खुसबोए ।

प्रेम उपज्या मूल का, सुपन रेहेना क्यों होए ॥ ५

अब सभी सुन्दरसाथकी पहचान हो गई और परमधामके अखण्ड सुखोंकी सुगन्ध भी आ गई. अब तो मूल परमधामका प्रेम उत्पन्न हो गया है, इसलिए इस स्वप्नवत् संसारमें रहना कैसे सम्भव होगा ?

अब नींद हमारी क्यों रहे, इन वखत दिए जगाए ।

जागे पीछे झूठी भोम में, क्यों कर रह्यो जाए ॥ ६

जागनीके इस समयमें सद्गुरु धनीने हमें जब जाग्रत किया तो अब अज्ञानरूपी नींद कैसे रह पाएगी ? जाग्रत होने पर इस झूठे संसारमें कैसे रहा जाएगा ?

देख तैयारी साथ की, ओ समया रह्या न हाथ ।

अवसर नया उदे हुआ, उमंगियो सब साथ ॥ ७

सुन्दरसाथकी परमधाम जानेकी तैयारी देखकर अब मायामें रहनेका समय ही हाथमें नहीं रहा. परमधामके अखण्ड सुखोंका अनुभव करनेका नया अवसर उदय हुआ है, इसलिए सब सुन्दरसाथ हर्षित हो रहे हैं.

क्यों रहे सुरतें पकड़ी, एक दुजे के आगे होए ।

दौडा दौड ऐसी हुई, पीछे रहे न कोए ॥ ८

अब ब्रह्मात्माओंकी सुरता कैसे रोकी जाएगी ? वे तो एक दूसरेसे आगे बढ़ रही हैं. ऐसी दौड़ होने लगी कि कोई भी पीछे नहीं रहा.

कै हुती देस परदेस में, ए बातें सुनियां तिन ।

तिनकी सुरतें इत बांधियां, तित रहे ना सकें एक खिन ॥ ९

कई आत्माएँ परदेशमें थीं, उन्होंने भी परमधाम जानेकी बातें सुनीं. उनकी सुरता भी मुझसे बँध गई, इसलिए वे वहाँ एक क्षण भी नहीं रह सकेंगी.

परदेसैं साथ पसर्यो हुतो, तित सबे पड्यो सोर ।

यों ठौर ठौर रंग फैलिया, हुआ महंमदी दौर ॥ १०

देश-विदेशमें सुन्दरसाथ फैला हुआ है, वहाँ भी ये समाचार पहुँच गए. इस प्रकार विभिन्न स्थानों पर सुन्दरसाथमें परमधाम जानेका उत्साह बढ़ता गया. अब रसूल मुहम्मद द्वारा बताया गया आत्म-जागृतिका समय आ गया है.

पीछला साथ आए मिलसी, पर अगले करें उतावल ।

केताक साथ बिचारनीका, सो जानें चलें सब मिल ॥ ११

भविष्यमें जागृत होनेवाले सुन्दरसाथ भी आकर मिलेंगे, परन्तु पहले जागृत हुए सुन्दरसाथ शीघ्रता कर रहे हैं. कितने सुन्दरसाथ सद्बिचार कर रहे हैं कि सब मिलकर एक साथ ही चलें.

इन विध सोर हुआ साथ में, ठौर ठौर पडी पुकार ।

एक आए एक आवत हैं, एक होत हैं तैयार ॥ १२

इस प्रकार देश-विदेशमें फैले हुए सुन्दरसाथमें शोर मच गया, सर्वत्र धाम चलनेकी पुकार होने लगी. कई आ चुके हैं, कई आ रहे हैं और कई आनेके लिए तैयार हो रहे हैं.

ऐसा समया इत हुआ, आए पोहोंचे इन मजल ।

कोई कोई लाभ जो लेवहीं, जिन जाग देखाया चल ॥ १३

ऐसा समय आ पहुँचा कि सब सुन्दरसाथ परमधाम जानेकी स्थितिमें आ

गए हैं. जो आत्माएँ जागृत होकर आगे बढ़ी हुई हैं, ऐसी ही कोई-कोई (आत्माएँ) इस अवसरका लाभ लेती हैं.

सुध बुध आई साथ में, सुरता फिरी सबन ।  
कोई आगे पीछे अव्वल, सबे हुए चेतन ॥ १४

सुन्दरसाथमें ऐसी सुधि एवं बुद्धि आई कि सबकी सुरता परमधामकी ओर लौटने लगी. कोई आगे हैं, कोई पीछे हैं, तो कोई सबसे आगे हैं; इस प्रकार सब सावचेत हो गए.

कोई कोई पीछे रहे गई, तिनकी सुरत रही हम माहें ।  
ढील करी ज्यों स्वांतसियों, आए अंग पोहोंचे नाहें ॥ १५

कोई-कोई आत्माएँ पीछे रह गई, उनकी सुरता भी मुझमें प्रविष्ट हो गई है. जैसे ब्रजसे रासमें जाते हुए (विलम्ब होने पर) सात्विक स्वभाववाली सखियाँ शरीर छोड़कर सबसे पहले पहुँची थीं.

कहें महामत परख्या तिनकी, जो पेहेलें हुए निरमल ।  
छूटे विकार सब अंग के, आए पोहोंचे इसक अवल ॥ १६

महामति कहते हैं, यह उन ब्रह्मात्माओंके लिए परीक्षाकी घड़ी है, जिनके हृदय पहलेसे ही निर्मल हो चुके हैं. उनके सभी विकार छूट गए एवं वे प्रेममें प्रथम स्थान प्राप्त कर सकीं.

प्रकरण १२ चौपाई १३२०

राग श्री

अब हम चले धाम को, साथ अपना ले ।  
लिख्या कौल फुरमान में, आए पोहोंच्या ए ॥ १

अब हम अपने सुन्दरसाथको लेकर परमधाम चल रहे हैं. कुरानमें लिखी हुई भविष्य वाणीका समय आ पहुँचा है.

सखी हम तो हमारे घर चले, तुम हूजो हुसियार ।  
सुरता आगे चल गई, हम पीठ दर्ई संसार ॥ २

हे आत्माओ ! हम अपने घर चल रहे हैं, तुम सब सावधान हो जाओ. हमारी

सुरता परमधामकी ओर आगे बढ़ गई, इसलिए हमने संसारको पीठ दे दी है.

हममें पीछे कोई ना रहे, और रहो सो रहो ।  
गुन अवगुन सब के माफ किए, जिन जो भावे सो कहो ॥ ३  
अब हममेंसे कोई भी आत्मा पीछे नहीं रहेगी और जिनको रहना हो वे रहें. सबके गुण (पुण्य) अवगुण (पाप) को क्षमा कर दिया है. जिनको जो कहना है वह निःसङ्कोच कहें.  
अब हम रह्यो न जावहीं, मूल मिलावे बिन ।  
हिरदें चढ चढ आवहीं, संसार लगत अगिन ॥ ४

अब हम मूल मिलावामें पहुँचे बिना नहीं रह सकते. परमधामकी स्मृति हृदयमें बार-बार आ रही है, इसलिए यह संसार अग्निके समान लगने लगा है.

सोई वस्तर सोई भूषण, सोई सेज्या सिनगार ।  
सोई मेवा मिठाइयां, अलेखें अपार ॥ ५

अब हमें परमधामके वही वस्त्राभूषण, रमणीय शय्या, दिव्य शृङ्गार, अनन्त मेवा-मिठाइयाँ याद आ रही हैं.

सोई धनी सोई वतन, सोई मेरो सुंदर साथ ।  
सोई विलास अब देखिए, दोरी खँची उनके हाथ ॥ ६

वही धामधनी, वही दिव्यधाम, वही अपने सुन्दरसाथ तथा परमधामका वही आनन्द-विलास दिखाई देने लगा है. धामधनीने हमारी सुरतारूपी डोरीको अपने हाथोंसें खींच ली है.

सोई चौक गलियां मंदिर, सोई थंभ दिवालें द्वार ।  
सोई कमाड सोई सीढियां, झलकारों झलकार ॥ ७

वही परमधामके चौक, गलियाँ, मन्दिर, स्तम्भ, भीत (दीवारें), द्वार, किवाड़, सीढियाँ दृष्टिगोचर हो रही हैं. सर्वत्र उनका ही प्रकाश जगमगा रहा है.

सोई मोहोल सोई मालिए, सोई छज्जे रोसन ।

सोई मिलावे साथ के, सोई बोलें मीठे वचन ॥ ८

वही ऊँचा रङ्गमहल, उसकी ऊँची भौमें, वही तीसरी भौमका छज्जा प्रकाशमान है, जहाँ पर सुन्दरसाथ मिलकर बैठते हैं और धामधनीसे मीठे वचन बोलते हैं. ये सब मुझे अब याद आ रहे हैं.

सोई झरोखे धाम के, जित झाँकत हम तुम ।

सो क्यों ना देखो नजरोँ, बुलाइयां खसम ॥ ९

वही तीसरी भौमका झरोखा याद आ रहा है, जहाँसे हम तुम नीचे झाँकते थे. जब धामधनी स्वयं हमें बुला रहे हैं तब तुम इन दृश्योंको क्यों नहीं देखते ?

सोई खेलना सोई हंसना, सोई रस रंग के मिलाप ।

जो होवे इन साथ का, सो याद करो अपना आप ॥ १०

परमधाममें हमारा वही खेलना, हँसना तथा प्रेमानन्दमें मिलना, यह सब हमें याद आ रही है. जो परमधामकी इन ब्रह्मात्माओंमेंसे हैं, वे सभी अपनी लीलाओंको स्वयं याद करें.

सोई चाल गत अपनी, जो करते माहें धाम ।

हंसना खेलना बोलना, संग स्यामाजी स्याम ॥ ११

हम परमधाममें जिस प्रकार चलते थे तथा श्याम-श्यामाजीके साथ हँसते, खेलते व बोलते थे, उन प्रसङ्गोंको याद करो.

सोई बातें प्रेम की, सोई सुख सनेह ।

सुख अखंड को भूलके, क्यों रहे झूठी देह ॥ १२

वे ही प्रेम भरी बातें, स्नेहपूर्ण सुख याद आ रहे हैं, ऐसे अखण्ड सुखोंको भूलकर इस झूठे शरीरके मोहमें क्यों पड़े हो ?

सोई सेज्या सोई मंदिर, सोई पीउजी को विलास ।

सोई मुख के मरकलडे, छूटी अंग की आस ॥ १३

वही रङ्गपरवाली मन्दिर एवं वही सुख-शय्या, धनीजीका वही हाँस-

विलास, वही मन्दमुस्कान, इन सबको याद करते हुए इस झूठी देहकी आशा छूट गई है.

सोई रसीले रंग भरे, निरखें नेत्र चढाए ।

सुंदर मुख सनकूल की, भर भर अमृत पिलाए ॥ १४

धामधनी उन्हीं रसीले तथा आनन्द भरे नेत्रोंसे हमें निहार रहे हैं. प्रसन्न मुखारविन्दसे शोभायमान होकर हमें प्रेमके प्याले भर-भर कर पिला रहे हैं.

सोई कटाक्षे स्यामकी, सींचत सुरत चलाए ।

बंके नैन मरोर के, द्रष्टे द्रष्ट मिलाए ॥ १५

श्यामसुन्दर-धनीके वही कटाक्षपूर्ण नेत्र हैं, जिनसे वे हमारी सुरताको अपनी ओर खींचते हुए हमारे हृदयमें स्नेहका सिंचन करते हैं तथा तिरछी दृष्टिसे हमारी आँखसे आँख मिलाते हैं.

कहां कहूं सुख साथ को, देखें भृकुटी भौंह चढाए ।

सुखकारी सीतल सदा, सुख कहा केहेसी जुबांए ॥ १६

सुन्दरसाथके उस सुखका क्या वर्णन करूँ जब धनी अपनी भौंहें चढ़ाकर प्रेमपूर्वक उन्हें निहारते हैं. धामधनीकी ऐसी सदा सुखदायी शीतल नयनोंके सुखका वर्णन यह जिह्वा कैसे कर पाएगी ?

सूक्ष्म सरूप ने सुंदरता, उनमद सारे अंग ।

बराबर एकै भांत के, और कै विध के रस रंग ॥ १७

सुन्दरसाथके सूक्ष्म चिन्मय स्वरूपकी सुन्दरता तथा उनके अङ्ग-प्रत्येङ्गोंमें भरा हुआ प्रेम-उन्माद सबमें एक ही प्रकारका होता हुआ भी उससे विभिन्न प्रकारके आनन्दकी अनुभूति होती है.

एक दूजे के चित पर, चाल चले माहों माहें ।

पात्र प्रेम प्रीत के, हांस विनोद बिना कछू नाहें ॥ १८

ब्रह्मात्माएँ परस्पर एक दूसरीके मनोनुकूल चाल चलती हैं. प्रेम-प्रीतिके पात्र इन ब्रह्मात्माओंमें हास्य-विनोदके अतिरिक्त अन्य कोई व्यवहार नहीं है.

बोए नेक आवे इन घर की, तो अंग निकसे आहे ।

सो तबहीं ततखिन में, पीउजी पें पोहोंचाए ॥ १९

ऐसे परमधामकी थोड़ी-सी भी सुगन्धि यदि आ जाए, तो हमारी आत्मा तत्क्षण इस देहको त्याग देती और धामधनीके चरणोंमें पहुँच जाती.

याद करो जो मागिया, धनिएं खेल देखाया कर हेत ।

महामत कहे मेहेबूब के, सुखमें हो सावचेत ॥ २०

हे सुन्दरसाथजी ! याद करो कि धामधनीसे तुमने जैसा खेल देखनेकी माँग की थी, धनीने उसे स्नेह पूर्वक दिखा दिया. इसलिए महामति कहते हैं कि धामधनीके आनन्दको पानेके लिए तैयार हो जाओ.

प्रकरण १३ चौपाई १३४०

राग गौरी

सुनो साथजी सिरदारो, ए कीजो वचन विचार ।

देखो बाहेर माहें अंतर, लीजो सार को सार जो सार ॥ १

हे शिरोमणि सुन्दरसाथजी ! सुनो तथा इन वचनों पर विचार करो. इन वचनोंको बाहरसे श्रवण कर अन्दरसे मनन भी करो एवं इनके सारके भी सारतत्त्वको अन्तर आत्मामें धारण करो.

सुंदरबाई कहे धाम से, मैं साथ बुलावन आई ।

धाम से ल्याई तारतम, करी ब्रह्मांड में रोसनाई ॥ २

सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज (सुन्दरबाई) ने कहा था कि मैं परमधामसे सुन्दरसाथको बुलानेके लिए आया हूँ. उन्हीं सद्गुरुने परमधामसे तारतम ज्ञान लाकर पूरे विश्वको प्रकाशित कर दिया है.

सो सुंदरबाई धाम चलते, जाहेर कहे वचन ।

आडी खडी इन्द्रावती, कहे मैं रहे ना सकों तुम बिन ॥ ३

सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी (सुन्दरबाई) ने धाम चलते समय स्पष्ट कहा था कि परमधामके द्वार पर इन्द्रावती खड़ी होकर कह रही है कि मैं आपके बिना इस संसारमें नहीं रह सकती.

दर्ई दिलासा बुलाए के, मैं लई सिखापन ।

रूहअल्ला के फुरमान में, लिखे जामें दोए तन ॥ ४

उन्होंने मुझे बुलवाकर सान्त्वना दी. मैंने उनके उपदेश भरे वचन ग्रहण किए. उन्होंने कतेब ग्रन्थोंका प्रसङ्ग उल्लेख करते हुए कहा कि श्यामाजी (रूहअल्लाह) संसारमें आकर दो तन (जामे) धारण करेंगी.

मूल सरूप बीच धामके, खेल में जामें दोए ।

हरा हुल्ला सुपेत गुदरी, कहे रूहअल्ला के सोए ॥ ५

ब्रह्मात्माओंके मूल स्वरूप श्रीश्यामाजीने इस खेलमें आकर दो तन (एक सदगुरु श्री देवचन्द्रजीका और दूसरा मेरा शरीर) धारण किए. कतेब ग्रन्थोंमें इन दो जामों (वस्त्रों) को ईसाके हरे रङ्गके दिव्य वस्त्र (हरा हुल्ला) और सफेद रङ्गकी गुदडी बताई है.

हदीसों भी यों कहा, आखर ईसा बुजरक ।

इमाम ज्यादा तिनसैं, जिन सबों पोहेंचाए हक ॥ ६

हदीसोंमें भी ऐसा कहा गया है कि आत्मजागृति (कयामत) के समय ब्रह्मात्माओंकी शिरोमणि (सर्वश्रेष्ठ) श्री श्यामाजी श्री देवचन्द्रजीके रूपमें प्रकट होंगी. जब वह दूसरा शरीर धारण कर इमाम महदी (अन्तिम समयके धर्मगुरु) के रूपमें प्रसिद्ध होंगी, तब उनको और अधिक ख्याति प्राप्त होगी. क्योंकि वे सभी जीवोंको परमात्माके मार्ग पर पहुँचाएँगी.

खासी गिरो के बीच में, आखर इमाम खावंद होए ।

ए जो लिख्या फुरमान में, रूहअल्ला के जामें दोए ॥ ७

विशिष्ट समुदाय-ब्रह्मात्माओंमें अन्तिम धर्मगुरु (आखरी इमाम) सबके स्वामीके रूपमें विराजमान होंगे. इनको ही कतेब ग्रन्थमें श्यामाजी (रूहअल्लाह) का दूसरा जामा (दूसरा शरीर) कहा गया है.

भी कहा बानीय में, पांच सरूप एक ठौर ।

फुरमान में भी यों कहा, कोई नाहीं या बिन और ॥ ८

सदगुरुने अपनी वाणीमें भी कहा था कि पाँचों शक्तियाँ (जोश, आत्मा, तारतम, आदेश, मूलबुद्धि) एक ही स्थान पर प्रकट होंगी. कतेब ग्रन्थोंमें



भी ऐसा कहा गया है कि अन्य कोई भी इन (धर्मगुरु-इमाम) से श्रेष्ठ नहीं होंगे.

कहे सुन्दरबाई अक्षरातीत से, आया खेल में साथ ।

दोए सुपन ए तीसरा, देखाया प्राननाथ ॥ ९

सद्गुरुने यह भी कहा कि अक्षरातीत धामसे ब्रह्मात्माएँ इस नश्वर खेलमें सुरता रूपसे आई हैं. धामधनीने इस स्वप्न जगतमें ब्रज और रास तथा यह तीसरी जागनी लीला दिखाई है.

कहे फुरमान नूर बिलंद से, खेल में उतरे मोमन ।

खेल तीन देखे तीन रात में, चले फजर इनका इजन ॥ १०

कुरानमें कहा गया है कि नूरबिलन्द-उच्चधाम (परमधाम) से ब्रह्मात्माएँ मायावी खेलमें उतर आई हैं. उन्होंने लैल-तुल-कद्र (महिमामयी रात्रि) के तीन खण्डोंमें तीन लीलाएँ देखी हैं. प्रभातके समय (जागनी लीला) में उनका ही आदेश चलेगा.

यों विध विध द्रढ कर दिया, दे साख धनी फुरमान ।

अपनी अकल माफक, केहे केहे मुख की बान ॥ ११

इस प्रकार सद्गुरु धनीने कतेब ग्रन्थोंकी अनेक साक्षियाँ देकर उक्त तथ्यको दृढ़ कर दिया. संसारके अन्य लोगोंने भी अपनी बुद्धिके अनुसार सद्गुरुके इन वचनोंकी पुष्टि की है.

धनी फुरमान साख लेय के, देखाय दई असल ।

सो फुरमाया छोड के, करें चाह्या अपने दिल ॥ १२

सद्गुरुने कतेब ग्रन्थोंकी साक्षी देकर पूर्णब्रह्म परमात्मा एवं ब्रह्मात्माओंके वास्तविक स्वरूपका दर्शन करवा दिया. कतेब ग्रन्थोंको माननेवाले लोग उनके ऐसे वचनोंको छोड़कर अपने मनोनुकूल अर्थघटन करते हैं.

तोडत सरूप सिंघासन, अपनी दौडाए अकल ।

इन बातों मारे जात हैं, देखो उनकी असल ॥ १३

ऐसे लोग परमात्माके स्वरूप तथा उनके स्थान (सिंहासन-परमधाम) की

अवगणना करते हैं और अपनी बुद्धिको परमात्माके प्रति दौड़ाते हैं. वे इन्हीं रहस्यों पर धोखा खा जाते हैं. यही उनकी वास्तविकता है.

**बिना दरद दौडावे दानाई, सो पडे खाली मकान ।**

**इसक नाही सरूप बिना, तो ए क्यों कहिए ईमान ॥ १४**

परमात्माके विरहकी पीड़ाके बिना ही वे अपना बुद्धिचातुर्य दौड़ाते हैं. इसलिए वे लोग शून्य-निराकारमें ही फँस जाते हैं. परमात्माका स्वरूप न हो तो उनके प्रति प्रेम उत्पन्न नहीं होता है. (जब परमात्माके स्वरूपको ही नहीं मानते) तो फिर वे किसके प्रति विश्वास (ईमान) रखेंगे ?

**दरदी जाने दिलकी, जाहेरी जाने भेख ।**

**अन्तर मुस्किल पोहोंचना, रंग लाग्या उपला देख ॥ १५**

धामधनीके विरहका अनुभव करनेवाली विरही आत्मा ही सद्गुरुके दिलकी बात समझ सकती है, बाह्य दृष्टिवाले लोग मात्र उनकी वेश-भूषाको ही महत्त्व देते हैं. जिन्होंने मात्र बाह्य रूप पर ही विश्वास किया है, उनको अन्तर्हृदय तक पहुँचना कठिन होता है.

**इन विध सेवें स्याम को, कहे जो मुनाफक ।**

**कहावें बराबर बुजरक, पर गई न आखर लों सक ॥ १६**

इस प्रकार बाह्यदृष्टिसे परमात्माकी उपासना करनेवाले लोग मिथ्याचारी कहलाते हैं. स्वयंको तो वे ज्ञानी कहलवाते हैं, किन्तु अन्त तक उनके हृदयसे दुविधा नहीं मिटती.

**मूल ना लेवें माएना, लेत उपली देखादेख ।**

**असल सरूप को दूर कर, पूजत उनका भेख ॥ १७**

लोग मूल अर्थको समझे बिना मात्र ऊपरी (बाह्य) दृष्टि रखते हैं तथा चिन्मय स्वरूपको छोड़कर मात्र उनके बाह्य वेश (मूर्ति आदि)की पूजा करते हैं.

**इत बात बडी है समझ की, और ईमान का काम ।**

**साथजी समझ ऐसी चाहिए, जैसा कहा अल्ला कलाम ॥ १८**

यहाँ पर तो विशेष समझनेकी बात है तथा श्रद्धा एवं विश्वासकी ही

आवश्यकता है। हे सुन्दरसाथजी ! समझ ऐसी होनी चाहिए जैसे रसूलने कुरानमें कहा है।

जेती बातें कहूँ साथजी, तिनके देऊँ निसान ।

और मुख थें न बोल हूँ, बिना धनी फुरमान ॥ १९

हे सुन्दरसाथजी ! मैं जितनी बातें कह रहा हूँ, उन सबके लिए प्रमाण भी देता हूँ। शास्त्रवचन एवं सद्गुरुके वचनोंके अतिरिक्त मैं अन्य एक भी बात अपने मुखसे नहीं कह रहा हूँ।

इन फुरमान में ऐसा लिख्या, करे पातसाही दीन ।

बडी बडाई होएसी, पर उमराओं के आधीन ॥ २०

कतेब ग्रन्थोंमें ऐसा लिखा है कि भविष्यमें एक ही सत्यधर्मका शासन चलेगा। उसका महत्त्व बहुत बढ़ेगा, परन्तु वह धनवानों (प्रतिष्ठितों) के अधीन रहेगा।

कहे कुरान बंद करसी, इनके जो उमराह ।

एक तो करसी बन्दगी, और जो कहे गुमराह ॥ २१

कुरानमें यह भी कहा है कि ऐसे अग्रणी-धनवान लोग कुरानके गूढ़ अर्थोंको छिपा देंगे। एक ओर सच्ची आत्माएँ सत्यकी उपासना करेंगी तथा दूसरी ओर ऐसे लोग सबको पथभ्रष्ट (गुमराह) करेंगे।

मैं करूँ खुशामद उनकी, मैं डरता हों उनसे ।

जो कहावें मेरे उमराह, और मेरे हुकम में ॥ २२

रसूल मुहम्मदने कहा था कि मैं ऐसे अग्रणी व्यक्तियोंसे डरता हूँ। इसलिए ऐसे लोगोंकी चाटुकारिता (खुशामद) करता हूँ कि ऐसे लोग मेरे आदेशके नाम पर लोगोंको पथभ्रष्ट करेंगे।

ऐसा ना कोई उमराह, जो भाने दिल का दुख ।

जब करसी तब होएसी, दिया साहेब का सुख ॥ २३

ऐसे कोई भी अग्रणी नहीं हुए जो किसीके भी दिलके दुःखको दूर कर सकें। जब वे दूसरोंका दुःख दूर करेंगे, तब उन्हें परमात्माका अखण्ड सुख प्राप्त होगा।

एही बडा अचरज, जो कहावत हैं बंदे ।

जानों पेहेचान कबू ना हुती, ऐसे हो गए दिल के अंधे ॥ २४

यह आश्चर्यकी बात है कि जो खुदाके बन्दे (सेवक) कहलाते हैं उन्हें मानों कभी परमात्मा (खुदा) की पहचान ही नहीं हुई हो, ऐसे वे दिलके अन्धे हो गए हैं।

मैं बुरा न चाहूँ तिनका, पर वे समझत नहीं सोए ।

यार सजा दे सकत हैं, पर सो मुझसे न होए ॥ २५

रसूल मुहम्मदने यह भी कहा कि ऐसे लोगोंका भी मैं बुरा नहीं चाहता, किन्तु वे समझते ही नहीं। उनके मित्र उन्हें दण्ड (सजा) दे सकते हैं, किन्तु यह मुझसे नहीं हो सकता।

मेरे दिल के दरद की, एक साहेब जाने बात ।

ऐसा तो कोई ना मिलया, जासों करों विख्यात ॥ २६

मेरे दिलकी वेदना एक परमात्मा ही जान सकते हैं। मुझे ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिला, जिससे मैं अपने दिलकी बात कह सकूँ।

जो कोई साथ में सिरदार, लई धाम धनी रोसन ।

खैच छोड सको सो छोडियो, ना तो आपे छूटे हुए दिन ॥ २७

इसलिए जो अग्रणी सुन्दरसाथ धामधनीके ज्ञानका प्रकाश लेकर चल रहे हैं, वे पारस्परिक खींचातानीको छोड़ दें, अन्यथा समय आने पर स्वतः ही यह छूट जाएगा अर्थात् इसे छोड़ना ही पड़ेगा।

मेरे तो गुजरान होएसी, जो पड्या हों बंध ।

जो कदी न छूट्या रात में, तो फजर छूटसी फंद ॥ २८

मेरा तो इसी भाँति निर्वाह हो ही जाएगा क्योंकि मैं सुन्दरसाथकी जागृतिके लिए बँधा हुआ हूँ जो खींचातानी अज्ञानरूपी रात्रिमें नहीं छूटी, वह तारतम ज्ञानका प्रभात होने पर तो अवश्य छूट जाएगी।

धाम धनी दई रोसनी, जो बडे जमातदार ।

सोभा दई अति बडी, जिनके सिर मुद्दार ॥ २९

ब्रह्मात्माओंके अग्रणी धामधनी सद्गुरुने मुझे तारतम ज्ञानके प्रकाश द्वारा जाग्रत किया एवं जागनीका दायित्व सौंपकर सुन्दरसाथमें मेरी शोभा बढ़ाई.

मैं इन सुख दुख से ना डरूं, मेरे धनी चाहिए सनमुख ।

मोहे एही कसाला होत है, जब कोई देत साथ को दुख ॥ ३०

अब मैं इन सांसारिक सुख-दुःखोंसे नहीं डरता. मैं तो मात्र यही चाहता हूँ कि धामधनी ही मेरे सम्मुख होने चाहिए. जब कोई सुन्दरसाथको कष्ट पहुँचाता है, मुझे मात्र इसीसे दुःख होता है.

मेरी एक दृष्टि धनीय में, दूजी साथ के माहें ।

तो दुख आवे मोहे साथ को, ना तो दुख मोहे कहूं नाहें ॥ ३१

मेरी एक दृष्टि धनीके प्रति है, तो दूसरी दृष्टि सुन्दरसाथकी ओर लगी हुई है. इसलिए सुन्दरसाथको दुःखी देखकर मुझे पीड़ा होती है, अन्यथा मुझे किसी प्रकारका दुःख नहीं है.

कोई कोई अपनी चातुरी, ले खँच करे मूढ मत ।

अकल ना दौडी अंतर लों, खँचें ले डारे गफलत ॥ ३२

कई लोग मूर्खोंकी भाँति अपनी बुद्धि चातुर्यसे परस्पर खींचातानी करते हैं. उनकी बुद्धि शास्त्रोंकी गहराइयों (गूढ़ार्थों) तक नहीं पहुँचती. उनकी अज्ञानता ही उन्हें खींचकर भ्रममें डालती है.

ए तो गत संसार की, जो खँचाखँच करत ।

आपन तो साथी धाम के, है हममें तो नूर मत ॥ ३३

संसारका व्यवहार ही ऐसा है कि यहाँ पर लोग परस्पर खींचातानी ही करते रहते हैं. हम तो परमधामकी ब्रह्मात्माएँ हैं, हमारे अन्दर तो जाग्रत बुद्धिका प्रकाश है.

मोमिन बडे आकल, कहे आखर जमाने के ।

इनकी समझ लेसी सबे, आसमान जिमी के जे ॥ ३४

ऐसा कहा गया है कि अन्तिम समयमें प्रकट होनेवाली ब्रह्मात्माएँ बड़ी बुद्धिशाली होंगी, स्वर्गादिके देवतागण तथा पृथ्वीके मानव सभी इनसे ही ज्ञान प्राप्त करेंगे.

जो कोई निज धाम की, सो निकसो रोग पेहेचान ।

जो सुरत पीछी खँचहीं, सो जानो दुसमन छल सैतान ॥ ३५

जो परमधामकी आत्माएँ हैं, वे राग-द्वेषरूपी रोगको पहचानकर उससे मुक्त हो जाएँ. परमधामकी ओर जा रही सुरताको जो मायाकी ओर खींचते हैं, उन्हें ही छल-कपट वाले शत्रु समझना.

अब बोहोत कहूँ मैं केता, करी है इसारत ।

दिल आवे तो लीजो सलूक, सुख पाए कहे महामत ॥ ३६

अब मैं अधिक क्या कहूँ ? मैंने तो मात्र सङ्केत ही किया है. अच्छा लगे तो उसे व्यवहारमें उतार लेना. महामति कहते हैं, ऐसा करने वालोंको अखण्ड सुख प्राप्त होगा.

प्रकरण ९४ चौपाई १३७६

राग श्री

सोई सोहागिन धाममें, जो करसी इत रोसन ।

तौल मोल दिल माफक, देसी सुख सबन ॥ १

वही आत्मा परमधामकी सुहागिनी है, जो इस संसारमें परमधामके ज्ञानको प्रकाशित करे. वह सभी आत्माओंका सही मूल्याङ्कन कर सभीको अपनी-अपनी योग्यतानुसार अखण्ड सुख प्रदान करेगी.

साथ माहें सैयां धामकी, ईमान वाली सिरदार ।

सो धन धामको तौलसी, करसी द्रढ निरधार ॥ २

सुन्दरसाथमें भी परमधामकी आत्माएँ ही विश्वासी तथा शिरोमणि कहलाएँगी.

वे परमधामकी सम्पदाका मूल्याङ्कन करेंगी और उसे अपने हृदयमें दृढ़ करेंगी.

पेहेले तौले बुध जागृत, पीछे तौले धनी आवेस ।

और तौले इसक तारतम, तब पलटे उपलो भेस ॥ ३

वे सर्वप्रथम जागृत बुद्धिका और धनीके आवेशका मूल्याङ्कन करेंगी. पश्चात् प्रेम और तारतमका भी मूल्याङ्कन करेंगी. तब उनकी बाह्य (लौकिक) मान्यताएँ बदल जाएगी.

तब तौलासी वासना, और तौलासी हुकम ।

सब बल तौलें बलवंतियां, और तौलें सरूप खसम ॥ ४

तब ब्रह्मवासनाओं एवं धनीजीकी आज्ञाका मूल्याङ्कन होगा. ऐसी शक्तिशाली ब्रह्मात्माएँ ही अपने धनीके स्वरूपके साथ-साथ सभी वस्तुओंका मूल्याङ्कन कर सकेंगी.

रोसन करसी आपे अपना, जो सैयां जमातदार ।

ए कौल अव्वल जोस का, जो किया है करार ॥ ५

ऐसी जो अग्रणी ब्रह्मात्माएँ होंगी, वे स्वयं ही अपना महत्त्व प्रकट करेंगी. संसारमें जाकर न भूलनेकी जो प्रतिज्ञा परमधाममें की थी, उसे वे ही निभाएँगी.

जो सैयां हम धाम की, सो जानें सब को तौल ।

स्याम स्यामाजी साथ को, सब सैयोपे मोल ॥ ६

परमधामकी हम ब्रह्मात्माएँ ही सबका मूल्याङ्कन कर सकती हैं. श्याम-श्यामाजी एवं ब्रह्मसृष्टिका मूल्याङ्कन (महत्त्व) भी हम ब्रह्मात्माओंको ही ज्ञात है.

नूर रोसन बल धाम को, सो कोई न जाने हम बिन ।

अंदर रोसनी सो जानहीं, जिन सिर धाम वतन ॥ ७

परमधामके दिव्य ज्ञानके प्रकाशके सामर्थ्यकी जानकारी हम ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त किसीको नहीं है. जिनको परमधामका दायित्व प्राप्त है, वे ही उसके

अन्दरके प्रकाशको जान सकती हैं.

इसक ईमान धनी धाम को, और जोस जागृत पेहेचान ।

तौले धनी धन धाम का, यों कहे कुरान निसान ॥ ८

ब्रह्मात्माएँ ही धामधनीका प्रेम, उनके प्रति विश्वास, धनीका जोश, आत्म-जागृति एवं धनीकी पहचान तथा परमधामका महत्त्व समझ सकती हैं, ऐसे सङ्केत कुरानमें दिए गए हैं.

साथ अंग सिरदार को, सिरदार धनी को अंग ।

बीच सिरदार दोऊं अंग के, करे न रंग को भंग ॥ ९

सभी ब्रह्मात्माएँ श्यामाजीकी अङ्गरूपा हैं तथा श्यामाजी श्रीराजजीकी अङ्गरूपा हैं. इसीलिए श्रीश्यामाजी दोनों अङ्गों (श्रीराजजी एवं ब्रह्मात्माओं) के प्रेम रसको न्यून (कम) होने नहीं देतीं.

साथ धाम के सिरदार को, मोमिन मन नरम ।

मिलावे और धनीय की, दोऊ इनके बीच सरम ॥ १०

सुन्दरसाथके लिए श्यामाजीका हृदय द्रवित (नरम) रहता है. सभी सुन्दरसाथको जागृतकर धामधनीकी पहचान करवानेके दायित्वको निभानेमें ही श्यामाजीका गौरव है.

इत परीख्या प्रगट, उठावें अपना भार ।

और बोझ निबाहे साथ को, और बोझ मसनंद भरतार ॥ ११

उनकी यही प्रत्यक्ष परीक्षा है कि उन्होंने अपने दायित्वका वहन किया. उन्होंने सुन्दरसाथको जागृत करनेका दायित्व एवं धामधनीके वर्चस्व (पदवी) को बनाए रखनेका कर्तव्य निभाया.

ए तो पातसाही दीन की, सो तो गरीबी से होए ।

और स्वांत सबूरी बिना, कबहूँ न पावे कोए ॥ १२

धर्मके साम्राज्यका वहन तो विनम्रतासे ही हो सकता है. शान्ति (सन्तोष) और धैर्यके बिना ऐसे साम्राज्यको कोई भी प्राप्त नहीं कर सकता.



ए लसकर सारा दिल का, सो दिलबरी सब चाहे ।

दिल अपना दे उनका लीजिए, इन विध चरणों पोहोंचाए ॥ १३

ये सारी सेनाएँ (शान्ति, धैर्य आदि) हृदयकी ही हैं, इसलिए सबलोग हृदयकी उदारता (दिलबरी) चाहते हैं. अतः अपने दिलको देकर दूसरोंका दिल जीत लीजिए, इसीके द्वारा धामधनीके चरणोंमें पहुँचा जा सकता है.

जो कोई उलटी करे, साथी साहेब की तरफ ।

तो क्यों कहिए तिन को, सिरदार जो असरफ ॥ १४

जो व्यक्ति धामधनीकी ओर उन्मुख आत्माओंको उनसे विमुख करनेका प्रयत्न करता है, तो ऐसे व्यक्तिको प्रतिष्ठित अथवा अग्रणी कैसे माना जाए ?

कह्या कुराने बंद करसी, इन के जो उमराह ।

आधीन होसी तिन के, जो होवेगा पातसाह ॥ १५

कुरानमें कहा है कि ऐसे अग्रणी (प्रतिष्ठित) व्यक्ति ही धनीके आदेशकी अवहेलना करेंगे. धर्मके सम्राटको भी ऐसे लोगोंके अधीन रहना पड़ेगा.

लटी तिन से न होवहीं, जो कहे सिरदार ।

सबों सिरदार एक होवहीं, मिने बारे हजार ॥ १६

सभी ब्रह्मात्माओंमें शिरोमणि कहलाने वाली श्यामाजीसे किसी भी प्रकारकी भूल नहीं होगी, क्योंकि सभी ब्रह्मात्माओंके शिरोमणि तो एक श्यामाजी ही हैं.

लिख्या है कुरान में, छिपी गिरो बातन ।

सो छिपी बातून जानही, ए धाम सैयां लछन ॥ १७

कुरानमें लिखा है कि ब्रह्मात्माएँ छिपी हुई हैं. वे ही कुरानके गूढ़ रहस्योंको समझेंगी. परमधामकी आत्माओंके ये ही लक्षण हैं.

भी लिख्या कुरान में गिरो की, सोहोबत करसी जोए ।

निज बुध जागृत लेय के, साहेब पेहेचाने सोए ॥ १८

कुरानमें और भी लिखा है कि जो ऐसी आत्माओंका सङ्ग करेंगे, वे भी उनसे जागृत बुद्धि प्राप्त कर अपने धनीको पहचानेंगे.

फुरमान कहे गिरो साहेदी, देसी कारन पैगंमर ।

सब केहेसी महंमद का देखिया, तब कुफर तोडसी मुनकर ॥ १९

कुरानका कहना है कि आत्माओंका यह समुदाय ही पैगम्बरकी साक्षी देगा. वे आत्माएँ ही रसूल मुहम्मदके म्याराजकी बातें करेंगी, तब इन बातोंसे नास्तिकोंका भ्रम टूट जाएगा.

करे पाक जिमी आसमान को, ऐसी बुजरक गिरो सोए ।

होसी रुजू माएने सब इन से, इन जैसी दूजी न कोए ॥ २०

वे ब्रह्मात्माएँ ऐसी महान होंगी कि वे पृथ्वी तथा आकाशके लोगों (मानव तथा देवों) को भी पवित्र बनाएँगी. इनसे ही सभी धर्मग्रन्थोंके रहस्य स्पष्ट होंगे. अतः इनके समान अन्य कोई नहीं होंगे.

गिरो माफक सिरदार चाहिए, जैसा कहा रसूल ।

खैच लेवें दिल साथ को, सब पर होए सनकूल ॥ २१

रसूलने कहा है कि ऐसी महान आत्माओंके समुदायका शिरोमणि भी ऐसा ही महान होना चाहिए, जो प्रसन्नचित्त रहकर सभी सुन्दरसाथके हृदयको अपनी ओर खींच सके.

ए मैं कही तुम समझने, ए है बडो विस्तार ।

बोहोत कहा मेरे धनी ने, तुम करोगे केता विचार ॥ २२

तुम्हें समझानेके लिए ही मैंने यह संक्षेपमें कहा है, परन्तु इसका विस्तार अत्यधिक है. धामधनी सद्गुरुने तो बहुत कुछ कहा है, किन्तु तुम उस पर कितना विचार कर पाओगे ?

ले साख धनी फुरमान की, महामत कहें पुकार ।

समझ सको सो समझियो, या यार या सिरदार ॥ २३

धामधनी सद्गुरु तथा धर्मग्रन्थोंकी साक्षीके आधारपर महामति पुकार कर कह रहे हैं. ब्रह्मात्माएँ अथवा शिरोमणि सखियाँ इस रहस्यको जितना समझ सकें, उतना समझ लें.

प्रकरण ९५ चौपाई १३९९

तो भी घाव न लग्या रे कलेजे ।  
ना लग्या रे कलेजें, जो एते देखे धनी गुन ।  
कोट ब्रह्मांड जाकी पलथें पैदा, सो चाहे हमारा दरसन ॥ १

धनीजीके इतने गुण (उपकार) देखने पर भी मेरे हृदयमें कोई चोट नहीं लगी. जिनकी इच्छासे ऐसे करोड़ों ब्रह्माण्ड एक पलमें उत्पन्न होते हैं, ऐसे अक्षरब्रह्म भी हमारे (ब्रह्मात्माओंके) दर्शनकी चाहना रखते हैं.

अचरज एक साथ जी, सुनो कहूं अपनी वीतक ।  
धनिएं मोकों मेहेर कर, ले पोहोंचाई हक ॥ २  
हे सुन्दरसाथजी ! एक आश्चर्यकी बात है सुनो, मैं आपबीती कहता हूँ. सद्गुरु धनीने मुझ पर कृपा कर मुझे अक्षरातीत परमात्मा तक पहुँचा दिया है.

ईमान ल्याओ सो ल्याइयो, कहूं अनभव की बात ।  
मोकों मिले इन विधसों, श्री धाम धनी साख्यात ॥ ३  
मैं अपने अनुभवकी बात कहता हूँ, इस पर जिसको विश्वास करना हो वे करें. मुझे इस प्रकार साक्षात धामधनी मिले हैं.

पीछे ईमान सब ल्यावसी, ए जो चौदे तबक ।  
अव्वल यकीन ब्रह्मसृष्टि का, जिनमें ईमान इसक ॥ ४  
इन चौदह लोकोंके सभी जीव तो बादमें विश्वास करेंगे, किन्तु सर्वप्रथम ब्रह्मसृष्टियाँ ही मेरी बात पर विश्वास करेंगी, क्योंकि इनमें ही प्रेम एवं आस्था है.

ए बात नीके विचारियो, ज्यों तुमें साख देवे आतम ।  
पीछे साख दुनी सब देयसी, ऐसा किया खसम ॥ ५  
इस बात पर भली-भाँति विचार कर लेना, जिससे तुम्हें अपनी आत्मा साक्षी दे. पश्चात् तो संसारके सभी लोग इसकी साक्षी देंगे, क्योंकि धामधनीने इस प्रकारकी व्यवस्था की है.

मैं तो कछू न जानती, श्री स्यामाजी दर्ई खबर ।

आपन आए खेल देखने, धाम अपना घर ॥ ६

मुझे तो कुछ ध्यान ही नहीं था। श्रीश्यामाजी स्वरूप सद्गुरुने ही मुझे जानकारी दी कि हम सब इस मायावी खेलको देखनेके लिए आए हैं तथा हमारा घर परमधाम है।

मोहे भेजी धनीने, तुम को बुलावन ।

साथ जी मिलके चलिए, जाइए अपने वतन ॥ ७

सद्गुरुने यह भी कहा कि मुझे धामधनीने तुम्हें बुलानेके लिए भेजा है। इसलिए हे सुन्दरसाथजी ! हम सब मिलकर अपने घर परमधामकी ओर चलें।

हम ब्रह्मसृष्टि आई धाम से, अक्षर खेल देखन ।

खेल देख के जागिए, घर असलू अपने तन ॥ ८

हम सभी ब्रह्मात्माएँ अक्षरब्रह्मका खेल देखनेके लिए परमधामसे इस जगतमें आई हैं। अब इस खेलको देखकर जागृत हो जाइए, अपने मूल स्वरूप (तन) परआत्मा तो परमधाममें ही हैं।

साहेब तो पूरा मिलया, तब थी मैं लडकपन ।

पेहेचान करावने अपनी, बोहोतक कहे वचन ॥ ९

मुझे पूर्णज्ञानी सद्गुरु तो मिले, किन्तु तब मैं अबोध बालककी भाँति था। उन्होंने मुझे अपनी पहचान करवानेके लिए अनेक उपदेश दिए।

सो मैं कछू ना दिल धरे, भूल गई अवसर ।

कै विध करी जगावने, पर मैं जागी नहीं क्योंकर ॥ १०

उन उपदेशोंको मैंने अपने हृदयमें धारण ही नहीं किया। इसलिए मैंने ऐसे सुअवसरको भुला दिया। सद्गुरुने मुझे जागृत करनेके लिए अनेक प्रयास किए, तथापि मैं नहीं जाग सका।

मोहे चलते वखत बुलाए के, जाहेर करी रोसन ।

धाम दरवाजे इन्द्रावती, ठाढी करे रुदन ॥ ११

कहे मोहे अकेली छोड के, तुम धाम चलो क्यों कर ।

पीछे मैं दुनियां मिने, क्यों रहूंगी तुम बिगर ॥ १२

सद्गुरुने धाम चलते समय मुझे बुलाकर यह रहस्य स्पष्ट किया कि परमधामके द्वार पर इन्द्रावती खड़ी-खड़ी रो रही है। वह कहती है कि मुझे अकेली छोड़कर आप कैसे धाम जा रहे हैं ? आपके बिना मैं इस संसारमें कैसे रह पाऊँगी ?

एह वचन स्यामाजीएं, सब साथ को कहे सुनाए ।

इन्द्रावती आए बिना, हम धाम चल्थो न जाए ॥ १३

श्रीश्यामाजी (सद्गुरु) ने ये बातें सभी सुन्दरसाथको बतायीं और कहा कि इन्द्रावतीके आए बिना मुझसे परमधाम जाया नहीं जाता।

एक रस आतम करके, आप हुए अंतराए ।

अनभव कराए जुदे हुए, पर लग्या न कलेजें घाए ॥ १४

इस प्रकार मेरी आत्मामें एकाकार हो कर सद्गुरु अन्तर्धान हो गए। मुझे अपनी आत्मा एवं धामधनीका अनुभव करवाकर वे शरीरसे अलग हो गए तथापि मेरे हृदयमें कोई चोट नहीं लगी।

अंतरगत में रहे गए, धनीके दो एक सुकन ।

ए दरद न काहूं बांटिया, सो मैं कहा न आगे किन ॥ १५

सद्गुरुधनीके उन उपदेश वचनोंमें-से दो-एक वचन ही मेरे हृदयमें अङ्कित रह गए। उनके वियोगकी वेदनाको मैं किसीमें भी बाँट नहीं सका तथा किसीके समक्ष भी नहीं कह सका।

मोहे बोहोत कही समझाए के, पर पेहेचान ना हुई पूरन ।

तब आप अंदर आए के, बहु विध करी रोसन ॥ १६

सद्गुरुने मुझे समझाते हुए बहुत कुछ कहा, किन्तु मुझे उनके स्वरूपकी पूर्ण

पहचान नहीं हुई. तब उन्होंने मेरे हृदयमें विराजकर अनेक प्रकारसे तारतम ज्ञानका प्रकाश फैलाया.

अंदर मेरे बैठ के, कै विध कियो विस्तार ।

सो रोसनी जुबां क्यों कहे, वाको वाही जाने सुमार ॥ १७

मेरे हृदयमें बैठकर उन्होंने अनेक प्रकारसे इस तारतम ज्ञानका (वाणीके रूपमें) विस्तार किया. मैं इस नश्वर जिह्वासे उस दिव्य प्रकाशका कहाँ तक वर्णन करूँ ? उसका मर्म तो स्वयं सद्गुरु ही जानते हैं.

तब कछुक मोकों सुध भई, कछुक भई पेहेचान ।

ए दरद कहूं मैं किन को, धनी हो गए अंतरधान ॥ १८

तब मुझे थोड़ी सुधि हुई तथा तनिक पहचान भी हुई. पश्चात् सद्गुरु धनी अन्तर्धान हो गए, इस विरहवेदना को मैं किससे कहूँ ?

मोहे दिल में ऐसा आइया, ए जो खेल देख्या ब्रह्मांड ।

तो क्या देखी हम दुनियां, जो इनको न करें अखंड ॥ १९

तब मेरे दिलमें ऐसा विचार आया कि हम ब्रह्मसृष्टियोंने इस ब्रह्माण्डमें आकर जो खेल देखा है, यदि यहाँके जीवोंको अखण्ड मुक्ति न दिलाएँ, तो इस संसारको देखनेकी सार्थकता ही क्या रहेगी ?

बडी बडाई अपनी, सुनी हमारी हम ।

हम दें मुक्ति सबन को, जाए मिलें खसम ॥ २०

हमने सद्गुरुके मुखारविन्दसे अपनी बड़ी महिमा सुनी है. इसलिए हम सभी जीवोंको अखण्ड स्थलोंमें मुक्ति देकर अपने धनीसे जा मिलेंगे.

वचन हमारे धाम के फैले हैं भरत खंड ।

अब पसरसी त्रैलोक में, जित होसी मुक्त ब्रह्मांड ॥ २१

हमारे परमधामकी बातें पूरे भरतखण्डमें फैली हैं. अब चौदह लोकोंमें इसका विस्तार होगा, जिससे ब्रह्माण्डके समस्त जीव मुक्त हो जाएँगे.

धनी भेजी किताब हाथ रसूल, जाए कहियो होए अमीन ।

आखर धनी आवसी, तब ल्याइयो सब यकीन ॥ २२

धामधनीने रसूल साहेबके हाथ अपना सन्देश भेज कर कहा कि तुम अग्रणी (अमीन) बनकर वहाँ जाओ और यह कहो कि अन्तिम समयमें परमात्मा स्वयं आएँगे, उस समय तुम सब उनके प्रति विश्वास लाना।

ए बंध धनिएं पेहेले बांधे, सो लिखे माहें फुरमान ।

इन जिमी साहेब आवसी, दीदार होसी सब जहान ॥ २३

धामधनीने ऐसी व्यवस्था पहलेसे ही की है, ऐसा कुरानमें लिखा है। इस संसारमें पूर्णब्रह्म परमात्मा आएँगे तथा सारे संसारको उनके दर्शन होंगे।

ले हिसाब सबन पैं, करसी कजा अदल ।

भिस्त देसी सचराचर, कर साफ सबन के दिल ॥ २४

वे (परमात्मा) सबका हिसाब लेकर सबको न्याय देंगे। सबके हृदयको निर्मल बनाकर सचराचर प्राणीमात्रको मुक्ति स्थलों (बहिश्तों) में पहुँचा देंगे।

जो साहेब किन देख्या नहीं, ना कछू सुनिया कान ।

सो साहेब इत आवसी, करसी कायम सब जहान ॥ २५

जिन अक्षरातीत ब्रह्मको न किसीने देखा है और न ही उनके विषयमें किसीने कानोंसे सुना है, वे स्वयं यहाँ प्रकट होंगे तथा सम्पूर्ण सृष्टिको अखण्ड कर देंगे।

फुरमान महंमद ल्याइया, किया अति घना सोर ।

कह्या रब आलम का आवसी, रात मेट करसी भोर ॥ २६

रसूल मुहम्मदने कुरानके रूपमें परमात्माका आदेश लाकर इस संसारमें बहुत पुकार की कि पूरे ब्रह्माण्डके स्वामी (रब्ब आलम) आएँगे तथा वे अज्ञानरूपी रात्रिका अन्धकार मिटाकर ज्ञानके प्रभातका प्रकाश फैलाएँगे।

रूहअल्ला की आवहीं, जो ईस्वरों का ईस ।

सो इन जिमी में पातसाही, करसी साल चालीस ॥ २७

ईश्वरोंके भी ईश (स्वामी) के रूपमें पूर्णब्रह्म परमात्माकी अङ्गना

(रूहअल्लाह) श्रीश्यामाजी सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीके रूपमें इस संसारमें आएँगी और चालीस वर्षोंतक राज्य करेंगी।

**मारेगा कलिजुग को, ए जो चौदे तबक अंधेर ।**

**तिनको काट काढसी, टालसी उलटो फेर ॥ २८**

ईश्वरोंके भी ईश श्री देवचन्द्रजी कलियुग (नास्तिकता) रूपी शैतानको मारेंगे। इस ब्रह्माण्डके चौदह लोकोंमें फैले हुए अज्ञानरूप अन्धकारको मिटाकर वे सभी जीवोंके जन्म-मृत्युरूपी उलटे बन्धनोंको तोड़ डालेंगे तथा संसारके प्राणियोंको उलटे मार्गसे हटाकर सीधे सत्य (एक परमात्माके) मार्ग पर ले जाएँगे।

**दजाल सरूप अंधेर को, आखर ईसा मारसी ताए ।**

**पेहेले निरमल करके, लेसी कदमों सुरत लगाए ॥ २९**

अन्तिम समयमें पधारे हुए सद्गुरु (ईसा) अज्ञान अन्धकाररूपी शत्रुको मार डालेंगे तथा संसारके जीवोंके हृदयको निर्मल बनाकर उनकी सुरता (ध्यान) को धनीके चरणोंमें लगा देंगे।

**पीछे प्रले करके, लेसी तुरत उठाए ।**

**चौदे तबक सचराचर, देसी भिस्त बनाए ॥ ३०**

पश्चात् इस संसारका प्रलय (स्वप्नवत् अस्तित्व समझा) कर उन्हें अपनी शरणमें लेंगे और चौदह लोकोंके सचराचर जीवोंको जागृत कर उन्हें मुक्ति स्थलोंमें पहुँचाएँगे।

**खासी उमत जो महंमदी, आई अरस से उतर ।**

**ताए अपना इलम देयके, ले चलसी अपने घर ॥ ३१**

रसूल मुहम्मदने कुरानमें जिनको विशिष्ट समुदाय (खासी उमत) कहा है, ऐसी ब्रह्मात्माएँ परमधामसे इस संसारमें आई हुई हैं। उनको अपना दिव्य (तारतम) ज्ञान देकर सद्गुरु उन्हें अपने घर (परमधाम) ले चलेंगे।



यों लिख्या फुरमान में, आखर बीच हिंदुअन ।

मुलक होसी नबियन का, धनी दर्ई बडाई इन ॥ ३२

कुरानमें ऐसा भी लिखा है कि अन्तिम समयमें पूर्णब्रह्म परमात्मा हिन्दुओंके बीच आएँगे. तब यह भारतवर्ष अवतारों (नबियों) का देश होगा. इस प्रकार धामधनीने इन ब्रह्मात्माओंकी प्रशंसा की है.

फुरमान जाहेर पुकारहीं, बीच हिंदुओं भेष फकर ।

पातसाही करसी महंमद, आखरी पैगंमर ॥ ३३

कुरान स्पष्ट शब्दोंमें पुकार रहा है कि हिन्दुओंके बीच फकीरी (त्यागी संत) वेशमें आखरी पैगम्बर आकर धर्मका साम्राज्य फैलाएँगे.

सो महंमद आगूं भेजिया, केहेने वचन आगम ।

सो खास उमत आई इत, ए जो लेने आए हम ॥ ३४

इस प्रकारकी भविष्यवाणी कहनेके लिए परमात्माने पहलेसे ही रसूल मुहम्मदको भेजा. रसूलने जिस विशिष्ट समुदाय (ब्रह्मसृष्टि) की चर्चा की है, वे इस जगतमें आई हुई हैं, उन्हीं ब्रह्मात्माओंको लेनेके लिए हम आए हैं.

ए सबद सारे महंमदें, आए पेहेले किया पुकार ।

महंमद मेहेदी रूहअल्ला, आखर वाही सिर मुद्दार ॥ ३५

रसूल मुहम्मदने पहलेसे आकर ये सारी बातें बताई कि आखरी मुहम्मद इमाम मेहदी एवं रूहअल्लाह (श्रीदेवचन्द्रजी) के सिरपर ही अन्तिम समय (कयामत) के न्यायका दायित्व होगा.

खोल हकीकत मारफत, बताए कयामत के दिन ।

कै विध बंध धनिएं बांधे, अपनी उमत के कारन ॥ ३६

कुरानके गूढ़ रहस्यों (हकीकत और मारफत) को स्पष्ट कर सद्गुरुने आत्म-जागृति (कयामत) का दिन बता दिया. इस प्रकार अपनी आत्माओंके लिए धामधनीने ऐसी कई व्यवस्थाएँ कीं.

विजिया अभिनंद बुधजी, और नेहेकलंक इत आए ।

मुक्ति देसी सबन को, मेट सबे असुराए ॥ ३७

शास्त्रोंमें भी कहा है कि विजयाभिनन्द निष्कलङ्क बुधावतार प्रकट होकर सबकी आसुरी वृत्तियोंको समाप्त करेंगे एवं उनको अखण्ड स्थलोंमें मुक्ति देंगे।

दिन भी लिखे जाहेर, बीच किताब हिंदुआन ।

जो साख लिखी इनमें, सोई साख फुरमान ॥ ३८

हिन्दू धर्मग्रन्थोंमें उस दिनका स्पष्ट उल्लेख भी किया गया है। इसी प्रकार कतेब ग्रन्थोंमें भी इसकी साक्षी लिखी गई है।

कै विध धनिएं ऐसा लिख्या, देने चौदे तबकों ईमान ।

सो धामधनी इत आए के, कराई सबों पेहेचान ॥ ३९

चौदह लोकोंके जीवोंको विश्वास दिलानेके लिए धामधनीने इस प्रकारसे अनेक साक्षियाँ भेजी हैं। उन्हीं धाम धनीने यहाँ आकर उन साक्षियोंके द्वारा सबको अपनी पहचान करवाई।

यों साख आतम देवहीं, वचन आगम के देख ।

देने ईमान सबन को, यों विध विध लिखे विसेख ॥ ४०

इस प्रकारकी भविष्य वाणियोंको देखकर आत्मा साक्षी देती है कि समस्त संसारको विश्वास दिलानेके लिए ही उनमें विभिन्न प्रकारसे विशेष बातें लिखी गई हैं।

महामत कहे धनी धाम के, मुझसों कियो मिलाप ।

आखर सुख इन साथमें, मोहे कर थापी आप ॥ ४१

महामति कहते हैं, ऐसे धनी सद्गुरुके रूपमें आकर मुझे मिले तथा इस अन्तिम समयमें सुन्दरसाथको अखण्ड सुख देनेके लिए मुझे यह दायित्व सौंपा।

प्रकरण ९६ चौपाई १४४०

इन धनीके बान मोकों ना लगे ।

मोकों ना लगे, कहा कियो करम अधम ।

तो भी इसक न आया मोको, ए कैसा हुआ जुलम ॥ १

ऐसे सद्गुरु धनीके वचनोंके वाण भी मेरे हृदयमें नहीं चुभे. मैंने ऐसा कौन-सा अधम कार्य किया है ? तब भी मुझे धामधनीके प्रति प्रेम जागृत नहीं हुआ, यह कैसा अनर्थ हो रहा है ?

रंचक इसारत धनी की, जो पावे आसक जीउ ।

सो जीव खिन एक लों, रहे ना सके बिना पीउ ॥ २

यदि प्रियतम धनीके प्रेमका तनिक भी सङ्केत प्रेमी जीवको प्राप्त हो जाए, तो वह एक क्षणके लिए भी अपने धनीके बिना नहीं रह सकता.

सो भी पीउ जीउ इन जिमी के, ए जो फना ब्रह्मांड ।

मेरो तो जीउ पीउ धामको, ए जो अक्षरातीत अखंड ॥ ३

यह स्थिति भी इस नश्वर ब्रह्माण्डके जीव और उनके स्वामीकी है, किन्तु मेरे तो आत्मा एवं धामधनी दोनों ही अखण्ड अक्षरातीत परमधामके हैं.

ऐसी प्रीत जीव सृष्टि की, जाके पीउ विस्तु सेषसाई ।

वाको रटत जात अहेनिस, ब्रह्म अक्षर सुध न पाई ॥ ४

जीवसृष्टिमें भी ऐसी प्रीति है, जिनके इष्ट भगवान विष्णु अथवा शेषशायी नारायण हैं. वे रात-दिन उनके नाम रटते हैं तथापि उन्हें अक्षरब्रह्मकी भी सुधि नहीं हुई.

कोट ब्रह्मांड अक्षर के पल थें, यों कहे सास्त्र त्रिगुन ।

सो अक्षर किने ना द्रढ किया, ना द्रढ किया इनों वतन ॥ ५

शास्त्रोंमें पाया जाता है कि अक्षरब्रह्म (कूटस्थ अक्षर) के एक पलमें अनेक ब्रह्माण्ड उत्पन्न होकर लय हो जाते हैं. ऐसे अक्षरब्रह्म तथा उनके धामको किसीने भी आज तक निश्चय कर नहीं बताया.

सो अक्षर अक्षरातीत के, आवें दरसन नित ।

तले झरोखे आए के, कर मुजरा घरों फिरत ॥ ६

ऐसे अक्षरब्रह्म भी अक्षरातीतके दर्शनके लिए प्रतिदिन आते हैं। वे तीसरी भोमके झरोखेके नीचे चाँदनी चौकमें खड़े होकर अक्षरातीतके दर्शन करते हैं तथा अपने घर (अक्षरधाम) लौट जाते हैं।

सोए धनी अक्षरातीत, इत आए मुझ कारन ।

अंग दियो मोहे जान अंगना, दिल सनमंध आन वतन ॥ ७

ऐसे अक्षरातीत धनी मेरे लिए सद्गुरु बनकर इस संसारमें आए हैं। उन्होंने मुझे अपनी अङ्गना जान कर अपना जोश प्रदान किया एवं मेरे हृदयमें परमधामका सम्बन्ध स्थापित कर दिया।

मोहे दर्ई सिखापन, धोखे दिए सब भांन ।

अंतर पट उडाए के, कर दर्ई सब पेहेचान ॥ ८

उन्होंने मुझे उपदेश देकर मेरे सभी संशयोंको दूर किया एवं हृदयसे अज्ञानके परदेको हटाकर पूर्ण पहचान करवाई।

अक्षर पार द्वार जो हुते, सोए दिए सब खोल ।

ऐसी कुंजी दर्ई कृपा की, जो किनहूं न पाया मोल ॥ ९

इस प्रकार उन्होंने अक्षरके परे परमधामके सभी द्वार खोल दिए तथा कृपापूर्वक ऐसी कुञ्जी (तारतम ज्ञान) प्रदान की, जिसका मूल्य कोई भी आंक नहीं सकता।

सब ब्रह्मसृष्टि आई धाम से, अक्षरातीत इन धनी ।

मोकों सबे विध समझाई, आप जान अपनी ॥ १०

सभी ब्रह्मात्माएँ परमधामसे आई हैं तथा इनके धनी अक्षरातीत हैं। इस प्रकार मेरे धनीने मुझे अपनी अङ्गना जानकर सभी बातें समझा दीं।

धनिएं हेत करके मुझको, कै विध दर्ई समझाए ।

साख सास्त्र सब सबद, मोहे विध विध दर्ई जगाए ॥ ११

धनीने मुझे प्रेमपूर्वक कई बातें समझाईं। शास्त्रों तथा सन्तोंकी वाणियोंकी

साक्षियाँ देकर मुझे विभिन्न प्रकारसे जागृत किया।

बोहोत धनिएं मोकों चाह्या, जाने प्रेम उपजे इन ।

सो प्रेम क्योंए न आइया, ऐसा हिरदे निपट कठिन ॥ १२

धामधनीने मुझमें प्रेम उत्पन्न करनेके लिए बहुत प्रयत्न किए, किन्तु मेरा हृदय इतना कठोर था कि उसमें किसी भी प्रकार प्रेम उत्पन्न नहीं हुआ।

तो भी प्रेम ना उपज्या, धनी कर कर थके सनेह ।

ढीठ निपट निठुर भई, धनी क्योंए ना सके लेह ॥ १३

सद्गुरु धनी मुझे स्नेह दे-देकर थक गए, तो भी मेरे हृदयमें प्रेम उत्पन्न नहीं हुआ। मैं ऐसा ढीठ एवं निष्ठुर हो गया कि मैं अपने धनीके उपदेशको किसी भी प्रकार ग्रहण नहीं कर सका।

फुरमान भेज्या जुदे होए, देने को साख दोए ।

सो मेहेर धनीकी मैं ही जानों, और न समझे कोए ॥ १४

पश्चात् अन्तर्धान होकर वे मेरे हृदयमें विराजमान हुए तथा वेद एवं कतेब दोनोंकी साक्षी देनेके लिए उन्होंने मुझे कुरानका ज्ञान करवाया। सद्गुरु धनीकी इस प्रकारकी कृपा मुझे ही ज्ञात है, अन्य लोग इसे समझ नहीं सकते।

सोए सुकन दिए लुदंनी, फुरमान याही से खुले ।

और न कोई खोल सके, जो चौदे तबक मिले ॥ १५

सद्गुरु धनीने मुझे ऐसा तारतम ज्ञान (इल्म लुदनी) दिया, जिससे वेद एवं कतेब ग्रन्थोंके रहस्य स्पष्ट होने लगे। यदि चौदह लोकोंके प्राणी एक साथ मिलकर प्रयत्न करें, तो भी वे शास्त्रोंके रहस्योंको नहीं खोल सकते।

सो मैं समझाऊं साथ को, ले फुरमान वचन ।

फैले हैं भरत खंड में, अब पोहोंचे चौदे भवन ॥ १६

इसलिए मैं कतेब ग्रन्थोंकी भी साक्षी लेकर सुन्दरसाथको समझाता हूँ, यह तारतम ज्ञान अभी तो भरत खण्डमें फैला है, अब चौदह लोकोंमें इसका विस्तार होगा।

ऐसी जगाए खडी करी मुझे, और सब पर मेरी बुध ।

खबर न अक्षर ब्रह्म को, सोए भई मुझे सुध ॥ १७

मुझे इस प्रकार जागृत कर खड़ा कर दिया कि सर्वत्र तारतम ज्ञान (मेरी बुद्धि) छा गया. परमधामकी लीलाओंकी सुधि अक्षरब्रह्मको भी नहीं थी, वह सुधि भी मुझे प्राप्त हो गई.

आप जैसी कर बैठाई, तो भी प्रेम न उपज्या इत ।

सो रोवत हों अंदर, फेर फेर जीव बिलखत ॥ १८

सद्गुरुने मुझे अपने समान बना दिया, तथापि मेरे हृदयमें प्रेमभाव जागृत नहीं हुआ. इसलिए मैं अन्दर ही अन्दर रो रहा हूँ, मेरा जीव वारंवार व्याकुल हो जाता है.

मेहेबूब ऐसी मैं क्यों भई, ले प्रेम न खडी हुई ।

महामत दुष्टाई क्यों करी, ले विरहा माहें ना मुई ॥ १९

हे प्रियतम धनी ! मैं ऐसा निष्ठुर क्यों हो गया कि धनीका प्रेम प्राप्त कर भी खड़ा न हो सका. महामति कहते हैं, मैंने ऐसी दुष्टता क्यों की ? प्रियतम धनीका विरह लेकर क्यों मर नहीं गया ?

प्रकरण १७ चौपाई १४५९

राग श्री

तो भी चोट ना लगी रे आतम को, जो एती साख धनिएं दई ।

कठिन कठोर निपट ऐसी आतमा, एती साखें ले गल ना गई ॥ १

सद्गुरु धनीने इतनी साक्षियाँ दीं, तो भी मेरे हृदयमें उनके उपदेशोंकी चोट नहीं लगी. मेरा हृदय इतना कठोर एवं निष्ठुर हो गया कि इतनी साक्षियोंसे भी द्रवित नहीं हुआ.

कै साखें धनिएं दई मुझे, श्री स्यामाजी आए इत ।

सो तारतम कह्या मैं तुमें, देखो साख देत है चित ॥ २

श्रीश्यामाजीने स्वयं यहाँ आकर ऐसी अनेक साक्षियाँ दीं. उन्हीं श्यामाजी स्वरूप सद्गुरु द्वारा प्रदत्त तारतम ज्ञान मैंने तुम्हें दिया है. देखो, तुम्हारा हृदय

भी इसकी साक्षी देगा.

कह्या साहेब इत आवसी, सो झूठ ना होए फुरमान ।

सब का हिसाब लेय के, कायम करसी जहान ॥ ३

धामधनी इस संसारमें आएँगे, ऐसी साक्षी देनेवाले कुरानकी वाणी भी झूठी नहीं है. वे ही धनी सबका हिसाब-किताब लेकर इस संसारको अखण्ड करेंगे.

पूछो अपनी आत्म को, कोई दूजा है इसदाए ।

रुहअल्ला इलम ल्याए के, केहेलावें इत खुदाए ॥ ४

तुम अपनी आत्माको पूछो, ऐसे धनीके बिना निजधाममें अन्य कोई है ? स्वयं श्यामाजी सद्गुरुके रूपमें यहाँ पर तारतम ज्ञानके साथ आकर ब्रह्मस्वरूप कहलाई हैं ?

सो बिना हिसाबें हदीसों, भी अनभव इत बोलत ।

साथजी दिल दे देखियो, जो हम तुममें बीतत ॥ ५

हदीसोंमें भी ऐसे असंख्य उल्लेख हैं एवं हमारा अनुभव भी ऐसा ही कहता है. हे सुन्दरसाथजी ! हमारी एवं तुम्हारी ऐसी आपबीतीको ध्यान पूर्वक विचार करो.

वसीयतनामे आए दरगाह से, तिन साख दई बनाए ।

अग्यारे सदी जाहेर लिखी, सो कौल पोहोंच्या आए ॥ ६

मक्कासे आए वसीयतनामोंमें भी इन्हीं वचनोंकी साक्षी है. ग्यारहवीं शताब्दीमें आत्म जागृति (कयामत) होनेकी बात उनमें कही गई थी, वह यहाँ पर सिद्ध होती है.

कै किताबें हिन्दुअन की, साखें लिखी माहें इन ।

आए धनी झूठ उडावने, करसी सत रोसन ॥ ७

हिन्दू धर्मग्रन्थोंमें भी इसी प्रकारकी कई साक्षियाँ दी गई हैं. अब पूर्णब्रह्म परमात्मा अज्ञानरूपी अन्धकारको मिटानेके लिए आए हैं, वे यहाँ पर परमधामके ज्ञानका प्रकाश फैलाएँगे.

देखो कै साखें धनीय की, भी देखो अनभव आतम ।

कै साखें देखो फुरमान में, जो मेहेर कर भेज्या खसम ॥ ८

इस प्रकारकी अनेक साक्षियोंको देखकर स्वयं आत्मामें भी उसका अनुभव करो. इसी प्रकार धनीके द्वारा कृपापूर्वक भेजे गए कुरानकी साक्षीको भी देखो.

और हदीसों में कै साखें, कै वसीयतनामें साख ।

कै किताबें हिन्दुअन की, देत भाष भाष कै लाख ॥ ९

हदीसों एवं वसीयतनामोंमें भी अनेक साक्षियाँ हैं. इसी प्रकार हिन्दू धर्मग्रन्थोंमें भी कई भाषाओंमें ऐसी लाखों साक्षियाँ मिलती हैं.

कै साखें दै साधो संतों, बोले बानी आगम ।

केहे ना सकों तुमको साथजी, दोस देख अपना हम ॥ १०

अनेक साधु-सन्तोंने भी अपनी भविष्यवाणीमें इस प्रकारकी साक्षियाँ दी हैं. इन सब बातोंको मैं नहीं कह सकता. मैं तो इसमें भी अपना ही दोष देख रहा हूँ.

एक साखें आवे ईमान, कै साखें देने बांधे बंध ।

तो भी ईमान न आया हमको, कोई हिरदे भया ऐसा अंध ॥ ११

एक ही साक्षीसे विश्वास उत्पन्न हो सकता है, ऐसी अनेक साक्षियाँ सद्गुरुने हमें दी हैं, तथापि हमें विश्वास उत्पन्न नहीं हुआ. हमारा हृदय ही कहीं ऐसा अन्धा हो गया है.

देखो विचार के साथजी, साख दई आतम महामत ।

सो आतम साख सबों की देयसी, पोहोंच्या इलम हमारा जित ॥ १२

हे सुन्दरसाथजी ! विचारपूर्वक देखो, महामति तुम्हें अपनी आत्माकी साक्षी दे रहे हैं. हमारा तारतम ज्ञान जहाँ-जहाँ भी पहुँचेगा, उनकी आत्मा भी सबको इस बातकी साक्षी देगी.

प्रकरण १८ चौपाई १४७१



धिक धिक पडो मेरी बुध को ।  
मेरी सुधको, मेरे तन को, मेरे मन को, याद न किया धनी धाम ।  
जेहेर जिमीसों लग रही, भूली आठों जाम ॥ १

मेरे मन, बुद्धि, चित्त तथा इस शरीरको धिक्कार है, जिन्होंने धामधनीको याद नहीं किया एवं संसारके विषतुल्य विषयोंमें रत होकर आठों प्रहर अपने धनीको भूलती रही.

मूल वतन धनिएं बताइया, जित साथ स्यामाजी स्याम ।  
पीठ दई इन घर को, खोया अखंड आराम ॥ २

धामधनी सद्गुरुने वह मूलघर (परमधाम) बताया, जहाँ श्याम-श्यामाजी तथा सुन्दरसाथ हैं. ऐसे अखण्ड घरको पीठ देकर हमने अखण्ड सुखोंको गँवा दिया.

सनमंध मेरा तासों किया, जाको निज नेहेचल नाम ।  
अखंड सुख ऐसा दिया, सो मैं छोड्या बिसराम ॥ ३

सद्गुरुने मेरा सम्बन्ध उन अनादि अक्षरातीत श्रीकृष्णजीके साथ जोड़ दिया जिनका नाम ही अखण्ड है. उन्होंने तो मुझे ऐसा अखण्ड सुख प्रदान किया, किन्तु मैंने मायावी सुखोंमें रत होकर उन अखण्ड सुखोंको छोड़ दिया.

खिताब दिया ऐसा खसमें, इत आए इमाम ।  
कुंजी दई हाथ भिस्त की, साखी अल्ला कलाम ॥ ४

सद्गुरुने यहाँ आकर मुझे निष्कलङ्क बुद्ध (इमाम महदी) की उपाधि प्रदान की. उन्होंने कतेब ग्रन्थोंकी साक्षी देकर जीवोंके मुक्तिस्थलों (बहिस्तों) के द्वारकी कुंजी मेरे हाथ सौंप दी.

अखंड सुख छोड्या अपना, जो मेरा मूल मुकाम ।  
इसक न आया धनीय का, जाए लगी हराम ॥ ५

तथापि मैंने परमधामके उन अखण्ड सुखोंको छोड़ दिया, जो अपना मूल

स्थान है. मुझे धामधनीके प्रति प्रेम भी उत्पन्न नहीं हुआ एवं मैं झूठे विषयसुखोंकी ओर लग गया.

**खोल खजाना धनिएं सब दिया, अंग मेरे पूरा न ईमान ।**

**सोए खोया मैं नींद में, करके संग सैतान ॥ ६**

धामधनीने अखण्ड निधिका भण्डार खोलकर मुझे लुटा दिया, तथापि मेरे हृदयमें पूर्ण श्रद्धा उत्पन्न नहीं हुई. मैंने दुष्ट मायाका सङ्गकर उस अखण्ड निधिको अज्ञानरूपी नींदमें गँवा दिया.

**उमर खोई अमोलक, मोह मद क्रोध ने काम ।**

**विषया विषे रस भेदिया, गल गया लोहू मांस चाम ॥ ७**

मैंने अपना अमूल्य जीवन काम, क्रोध, मद एवं मोहकी ओर लगकर गँवा दिया. विषयोंके विषमय रसने मेरे शरीरको इतना प्रभावित किया कि रक्त, मांस, चमड़ी सब गल गए.

**अब अंग मेरे अपंग भए, बल बुध फिरी तमाम ।**

**गए अवसर कहा रोड़े, छूट गई वह ताम ॥ ८**

अब मेरे सभी अङ्ग शिथिल हो गए हैं तथा मेरा सम्पूर्ण बल एवं बुद्धि भी मायाकी ओर लग गई. अवसर बीत जाने पर रोनेसे क्या लाभ ? सद्गुरुके धामगमनके साथ-साथ अब तो आत्माका आहार ही छूट गया.

**पार द्वार सब खोल के, कर दई मूल पेहेचान ।**

**संसे मेरे कोई ना रह्या, ऐसे धनी मेहेरबान ॥ ९**

ऐसे कृपालु सद्गुरु धनीने पार (बेहद) के सभी द्वार खोल कर मुझे अपने मूल (पर-आत्मा) की पहचान करवाई, जिसके कारण अब मेरा कोई भी संशय शेष नहीं रहा.

**बोहोत कहा घर चलते, वचन न लागे अंग ।**

**इन्द्रावती हिरदे कठिन भई, चली ना पीउजी के संग ॥ १०**

सद्गुरुने परमधाम जाते समय मुझे बहुत समझाया, किन्तु उनका एक भी वचन मेरे हृदयमें नहीं चुभा. इन्द्रावती ऐसी कठोरहृदया हो गई कि वह

सद्गुरुधनीके साथ परमधाम नहीं जा सकी.

तब हारके धनिएं विचारिया, क्यों छोड़ूँ अपनी अरधंग ।

फेर बैठे माहे आसन कर, महामति हिरदे अपंग ॥ ११

तब हताश होकर धनीने विचार किया कि मैं अपनी अङ्गनाको अकेली कैसे छोड़ दूँ ? पश्चात् वे महामतिके अपङ्ग हृदयमें विराजमान हो गए.

प्रकरण १९ चौपाई १४८२

धनी एते गुन तेरे देखके, क्यों भई हिरदे की अंध ।

कै साखें साहेदियां ले ले, याही में रही फंद ॥ १

हे धनी ! आपके इतने गुणोंको देखकर भी मैं कैसे हृदयका अन्धा हो गया ? कई साक्षियाँ एवं उदाहरण प्राप्त करने पर भी मैं इसी मायाके फन्देमें उलझा रहा.

कै साखें ले धनी की, कै साखें ले फुरमान ।

कै साखें लई सास्त्रन की, अंतसकरन में आन ॥ २

कै साखें साधुन की, कै साखें सबद ब्रह्मांड ।

आतम मेरी अनभव से, लगाए देखी अखंड ॥ ३

मैंने सद्गुरुके उपदेशों, कुरानके वचनों एवं शास्त्रोंकी साक्षियोंको अपने हृदयमें धारण किया. इसी प्रकार इस ब्रह्माण्डके अनेक सन्तोंकी वाणीकी साक्षी लेकर अपने अनुभवके साथ अखण्ड वस्तुको देखनेका प्रयत्न किया.

जो कोई कबीला पार का, सो सारों ने दर्ई साख ।

धनी गुन आए आतम नजरों, सो कहे न जाए मुख भाख ॥ ४

भवसागरके पार पहुँचनेका प्रयत्न करनेवाले कई साधकोंने भी ऐसी ही साक्षियाँ दीं. अब सद्गुरु धनीके गुण मेरे हृदयमें इस प्रकार उतर आए कि उनका वर्णन इस मुखसे नहीं हो सकता.

कै साखें गुन विचार विचार, विध विध करी पुकार ।

तो भी घाव कलेजें ना लग्या, यों गया जनम आकार ॥ ५

कई साक्षियों एवं सद्गुरुके गुणों पर विचार कर मैंने विभिन्न प्रकारसे

सद्गुरुका गुणानुवाद भी किया, तथापि मेरे हृदयमें धनीके विरहकी चोट नहीं लगी. इस प्रकार मैंने अपना जीवन व्यर्थ गँवाया.

कै साखें गुन मुख केहे केहे, उमर खोई मैं सब ।

अजुं आतम खडी ना हुई, क्यों पुकारूं मैं अब ॥ ६

शास्त्रोंकी अनेक साक्षियाँ एवं धनीके ऐसे कई गुणोंकी प्रशंसा अपने मुखसे कह-कहकर मैंने अपनी आयु गँवा दी, तथापि अभी तक मेरी आत्मा जागकर खड़ी नहीं हुई. अब मैं कैसे पुकार करूँ ?

अब दिन बाकी कछू ना रहे, सो भी देखाए दई तुम सरत ।

क्यों मुख उठाऊं आगूं तुम, चरणों लागूं जिन वखत ॥ ७

हे धनी ! अब आत्मजागृतिकी अवधिके दिन शेष नहीं रहे हैं. आत्म-जागृतिके लिए अन्तिम घड़ी भी आपने बता दी. परमधाममें जागृत होकर आपके चरणोंमें प्रणाम करते हुए मैं अपना सिर ऊँचा कर आपको कैसे देख सकूँगी ?

ज्यों ज्यों तुम कृपा करी, मैं त्यों त्यों किए अवगुन ।

तिन पर फेर तुम गुन किए, मैं फेर फेर किए विघन ॥ ८

हे धनी ! आपने ज्यों-ज्यों मुझ पर कृपा की, मैं त्यों-त्यों अवगुण करता गया. तथापि आपने वारंवार कृपा की, किन्तु मैं तो विघ्न ही डालता रहा.

गुन धनीके गाते गाते, गई सारी आरवल ।

अवगुन अपने भाखते, उमर खोई ना सकी चल ॥ ९

धामधनीके गुण गाते-गाते सारी आयु बीत गई तथा अपने अवगुणोंका वर्णन करते-करते जीवन भी बीत गया, तथापि मैं उनके उपदेशों पर नहीं चल सका.

अब हुकम होए धनी सो करूं, मेरा बल ना चले कछू इत ।

सुरखरू तुम करोगे, पुकार कहे महामत ॥ १०

हे सद्गुरु धनी ! अब आप जैसी आज्ञा देंगे, मैं वैसा ही करूँगा. इस संसारमें मेरी अपनी शक्ति कुछ भी काम नहीं कर रही है. महामति पुकार कर कह रहे

हैं, हे धनी ! अब आप ही मुझे दोषमुक्त कर उच्छ्रृण (ऋणमुक्त) करेंगे.

प्रकरण १०० चौपाई १४९२

राग श्री

साथजी सुनो सिरदारो, मुझ जैसी ना कोई दुष्ट ।

धाम छोड झूठी जिमी लगी, चोर चंडाल चरमिष्ट ॥ १

हे शिरोमणि सुन्दरसाथजी ! सुनो, मेरे समान कोई दुष्ट नहीं है. क्योंकि मैं परमधामको छोड़कर इस नश्वर संसारकी ओर लग गया, इसलिए मैं चोर तथा चाण्डालके समान नीच हो गया.

प्रेम खोया मैं बानी कर कर, हो गया जीव कोई भ्रष्ट ।

साथके चरन धोए पीजिए, ताको दिए मैं कष्ट ॥ २

दूसरोंको उपदेश दे-देकर मैंने प्रेम खो दिया तथा मेरा जीव इस प्रकार पतित हो गया. वस्तुतः ब्रह्मात्माओंके तो चरण धोकर पीना चाहिए किन्तु मैंने उनको कष्ट दिया है.

मुख बानी केहेलाई बडी कर, माहें ब्रह्म सृष्ट ।

पंथ पैडे संसार के ज्यों, होए चलाया इष्ट ॥ ३

हे धनी ! आपने मेरे द्वारा वाणी कहलवा कर मुझे ब्रह्मसृष्टियोंमें अग्रणी बनाया. जिस प्रकार संसारमें विभिन्न पन्थ, सम्प्रदाय अपने-अपने इष्ट लेकर चल रहे हैं, उसी प्रकार मैंने भी एक सम्प्रदाय चलाया.

ले पंडिताई पडी प्रवाह में, कर कर ग्यान गोष्ट ।

न्यारा हुआ न नेहेकाम होए के, मैं लिया न निरगुन पुष्ट ॥ ४

पाण्डित्य लेकर मैं भी ज्ञान-गोष्ठी तथा उपदेशके प्रवाहमें बह गया. निष्काम होकर मैं संसारसे पृथक् नहीं हो सका एवं निर्गुण रहकर पुष्ट भावको ग्रहण भी नहीं कर सका.

अनेक अवगुन किए मैं साथसों, सोए प्रकासूं सब ।

छोड अहंकार रहूं चरनों तले, तोबा खैंचत हों अब ॥ ५

मैंने सुन्दरसाथके साथ कई अवगुन किए हैं, उन सबको अब प्रकट कर रहा

हूँ. अब मैं अपने अहंभावको छोड़कर धनीके चरणोंकी छत्र-छायामें रहते हुए अपनी भूलोंका प्रायश्चित करना चाहता हूँ.

एते दिन धनी धाम छोड के, दर्ई साथ को सिखापन ।

अब साथें मोकों समझाई, तिन थें हुई चेतन ॥ ६

इतने दिन तक धामधनीका भजन करना छोड़कर मैं सुन्दरसाथको शिक्षा देनेमें लगा रहा. अब सुन्दरसाथने मुझे समझाया, तब मैं सचेत हो गया हूँ.

कृपा करी साथ सिरदारों, मुझ पर हुए मेहेरबान ।

निरगुन होए न्यारी रहूं, छोड बडाई गुमान ॥ ७

मेरे शिरोमणि सुन्दरसाथने मुझ पर बड़ी कृपा की और वे मेरे लिए अनुग्राही बने. अब मैं अपनी प्रतिष्ठा एवं अहंभावको छोड़कर निर्गुण हो इस संसारसे पृथक् (जीवनमुक्त) रहना चाहता हूँ.

दिन कयामत के आए पोहोंचे, अब कैसी ठकुराई ।

धिक धिक पडो तिन बुध को, जो अब चाहे बडाई ॥ ८

आत्म-जागृतिकी घड़ी आ गई है, अब संसारमें क्या प्रभुत्व जमाना है ? उस तुच्छ बुद्धिको धिक्कार है, जो अब भी प्रतिष्ठाकी चाह रखती है.

अब हुकम चढाऊं सिर साथ को, बकसो मेरी भूल ।

भी दीजो सिखापन मुझको, ज्यों होऊं सनकूल ॥ ९

अब मैं सुन्दरसाथकी आज्ञा शिरोधार्य करता हूँ, मेरी भूलोंको क्षमा कर देना. इस प्रकार मुझे शिक्षा देते रहना जिससे मैं सर्वदा प्रसन्न रह सकूँ.

इन जिमीमें साथ में, जिनों करी सिरदारी ।

पुकार पुकार पछताए चले, जीत के बाजी हारी ॥ १०

इस संसारमें जिन्होंने भी सुन्दरसाथका नेतृत्व किया (अथवा करना चाहा), अन्तमें वे पश्चात्ताप करते हुए यह पुकार कर चले गए कि जीती हुई बाजीको हम हार गए हैं.

सो देखके ना हुई चेतन, मूढमति अभागी ।

अब लई सिखापन साथ की, महामत केहें पाउं लागी ॥ ११

उन सब लोगोंकी ऐसी गति देखकर भी मैं अभागा मूढमति सचेत नहीं हुआ। इस प्रकार महामति चरणों लगकर कहते हैं, अब मैंने सुन्दरसाथसे शिक्षा ग्रहण कर ली है।

प्रकरण १०१ चौपाई १५०३

राग श्री

बुजरकी मारे रे साथजी, बुजरकी मारे ।

जिन बुजरकी लई दिल पर, तिनको कोई ना उबारे ॥ १

हे सुन्दरसाथजी ! मान-बड़ाई सर्वनाश करती है। जिन्होंने तनिक-सी भी मान-बड़ाई अपने दिलमें ले ली है, उनका कोई भी उद्धार नहीं कर सकता।

आगूं कै मारे बुजरकिएं, जिन द्रढ कर लई विस्वास ।

सो देखे मैं अपनी नजरों, निकस चले निरास ॥ २

पहले भी बड़प्पनसे कई लोगोंका विनाश हुआ है, जिन्होंने मान-प्रतिष्ठा पर ही विश्वास रखा था। ऐसे लोगोंको निराश होकर संसारसे जाते हुए मैंने अपनी आँखोंसे देखा है।

कै मारे कैयों मारत है, ऐसी बुजरकी एह ।

न देत देखाई इन माया में, बिना बुजरकी जेह ॥ ३

यह प्रतिष्ठा ही ऐसी है कि इसने कई लोगोंको मार गिराया और कई लोगोंको यह आज भी मार रही है। इस मायामें प्रतिष्ठा न चाहने वाला व्यक्ति कोई भी दिखाई नहीं देता।

जेती बुजरकी बीच दुनी के, सो सब कुफर हथियार ।

कुफरों में कुफर बुजरकी, काम क्रोध अहंकार ॥ ४

संसारमें जितनी भी प्रतिष्ठाएँ हैं वे सब जीवको फँसाने वाली तुच्छ मायाके अस्त्र मात्र हैं। वस्तुतः काम, क्रोध एवं अहङ्कारको पोषण करने वाली ये प्रतिष्ठाएँ अधममें भी अति अधम हैं।

इन माया में कोई बुजरकी, छूट खुदा जो लेवे ।

सो तेहेकीक आपे अपना, पाया फल सो भी खोवे ॥ ५

जो व्यक्ति परमात्माको छोड़कर इस मायामें प्रतिष्ठा चाहता है, वह निश्चय ही अपने हाथमें आए हुए फल (मानवजीवन) को खो देता है।

खोवे जोस बंदगी खोवे, और साहेब की दोस्ती ।

बिना इसक जो बुजरकी, सो सब आग जानो तेती ॥ ६

वह व्यक्ति धनीका जोश, उपासना तथा धनीकी मित्रता, इन सबको खो देता है। क्योंकि धनीके प्रेमके बिना मात्र प्रतिष्ठा आ जाए, तो उसे अग्निके समान समझना चाहिए।

दुनियां में दोऊ लडत हैं, एक कुफर और ईमान ।

जीती कुफरें त्रैलोकी, ईमान दिया सबों भांन ॥ ७

इस संसारमें विश्वास और अविश्वास (आस्था एवं अनास्था तथा आस्तिकता एवं नास्तिकता) की लड़ाई आदिकालसे ही चली आ रही है। इस अनास्था ने तीनों लोकों पर प्रभुत्व जमाकर परमात्माके प्रति सबकी आस्थाएँ ढिगा दीं।

कुफर की हुई पातसाही, चौदे तबक चौफेर ।

सब दुनियां को बेमुख करके, बैठा बुजरकी ले अंधेर ॥ ८

चौदह लोकोंमें चारों ओर अधर्मका ही साम्राज्य फैला हुआ है। इस झूठी प्रतिष्ठाने पूरे संसारको ही परमात्मासे विमुख कर अज्ञानरूप अन्धकारमें डाल दिया है।

मोकों मार छुड़ाई बंदगी, सो भी बुजरकी इन ।

ऐसी दुसमन ए बुजरकी, मैं देखी ना एते दिन ॥ ९

मुझे भी इस झूठी प्रतिष्ठाने मार-मारकर भजन-भक्तिसे पृथक् कर दिया। मैंने इस झूठी प्रतिष्ठानेके समान कोई अन्य शत्रु आज तक नहीं देखा है।



पूरन मेहेर भई धनी की, दोऊ हादिएं करी चेतन ।

सो भी बुजरकी देखी दुसमन, जो भिस्त दई सबन ॥ १०

मुझ पर तो धनीजीकी पूर्ण कृपा हुई है. मुझे सद्गुरुने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष (प्रत्यक्ष-सद्गुरुके रूपमें एवं परोक्ष-हृदयमें विराजमान होकर) दोनों प्रकारसे सचेत कर दिया है. संसारके जीवोंको अखण्ड मुक्तिस्थल (बहिस्त) दिलानेके लिए प्राप्त प्रतिष्ठा भी मुझे अब शत्रुके समान दिखाई दे रही है. [दोनों हादी : सद्गुरु एवं रसूल भी अभीष्ट हैं.]

जो कोई मारे इन दुसमन को, करे सब दुनियां को आसान ।

पोहोंचावे सबों चरन धनी के, तो भी लेना ना तिन गुमान ॥ ११

जो इस झूठी प्रतिष्ठा रूप शत्रुको मार डालेगा, वही इस संसारमें सरलतासे रह पाएगा. सभी जीवोंको धनीके चरणोंमें पहुँचानेकी क्षमता प्राप्त करने पर भी उसे बड़प्पनका अभिमान नहीं लेना चाहिए.

महामत कहे ईमान इसक की, सुकर गरीबी सबर ।

इन विध रूहें दोस्ती धनी की, प्यार कर सके त्यों कर ॥ १२

महामति कहते हैं, अपने धनीका प्रेम और विश्वास पानेके लिए कृतज्ञता (शुक्र), विनम्रता (गरीबी) और धैर्य (सब्र) धारण करना चाहिए. इन गुणोंको धारण कर आत्माएँ धामधनीके साथ प्रेमभाव (मित्रता) रखती हैं इसी अनुरूप धनीजीके प्रति जितना प्रेमभाव रख सको उतना रखो.

प्रकरण १०२ चौपाई १५१५

राग गौरी

जो तू चाहे प्रतिष्ठा, धराए वैरागी नाम ।

साध जाने तोकों दुनियां, वह तो साधों करी हराम ॥ १

यदि तुम प्रतिष्ठाके लिए ही वैरागी बने हुए हो तो यह समझ लो, दुनियाँ भले तुम्हें साधु मान लेगी किन्तु सच्चे सन्तोंने ऐसी प्रतिष्ठाको सर्वथा त्याज्य (हराम) समझकर उसे टुकरा दिया है.

मार प्रतिष्ठा पैजारों, जो आए दगा देत बीच ध्यान ।

एही सरूप दजाल को, उडाए दे इन्हें पेहेचान ॥ २

ऐसी झूठी प्रतिष्ठाको ठोकर (जूते) मारकर भगा दो, जो धामधनीके ध्यानमें बाधा पहुँचाती है। यही दज्जाल-शैतानका स्वरूप है, इसे पहचानकर त्याग दो।

इस दुनियां के बीच में, कोई भला बुरा केहेवत ।

तू जिन देखे तिन को, ले अपनी अरस खिलवत ॥ ३

इस संसारमें यदि कोई तुम्हें भला-बुरा कहता है तो तुम उसकी ओर ध्यान मत दो। तुम तो मूलमिलावा परमधामको ही अपने हृदयमें धारण करो।

दिल दिलगीरी छोड दे, होत तेरा नुकसान ।

जानत है गोविंद भेडा, याको पीठ दिए आसान ॥ ४

तुम हृदयकी हताशाको छोड़ दो, इससे तो तुम्हें हानि हो रही है। यह संसार गोविन्द भेड़ा (भूतनगरी) के समान है। इसको पीठ देनेसे ही परमधामका मार्ग सरल बनेगा।

ए भोम देखे जिन फेर के, एही जान महामत ।

ढील होत तरफ धामकी, जहां तेरी है निसबत ॥ ५

तुम पीछे मुड़कर संसारकी ओर मत देखो, इसीमें बुद्धिमानी है। क्योंकि परमधामकी ओर जानेमें विलम्ब हो रहा है, वहीं पर तो तुम्हारा (आत्माका) सम्बन्ध है।

प्रकरण १०३ चौपाई १५२०

राग श्री

कयामत आई रे साथजी, कयामत आई ।

वेद कतेब पुकारत आगम, सो क्यों न देखो मेरे भाई ॥ १

हे सुन्दरसाथजी ! आत्मजागृति (कयामत) का समय आ गया है। वेद तथा कतेबमें भविष्यवाणी की गई है, उसे तुम क्यों नहीं देखते ?

आए स्यामाजीएं मोहे यों कहा, ए खेल किया तुम कारन ।

तुम आए खेल देखने, मैं आई तुमें बुलावन ॥ २

श्रीश्यामाजीने सदगुरुके रूपमें आकर मुझे ऐसा कहा कि यह खेल तुम्हारे लिए बनाया गया है. तुम यह खेल देखने आए हो तथा मैं तुम्हें बुलानेके लिए आई हूँ.

कागद आया वतन का, कासद हो ल्याए फुरमान ।

आया खातर अपने, देने को ईमान ॥ ३

परमधामका सन्देश-पत्र भी आ गया. रसूल मुहम्मद पत्रवाहक बनकर कुरान ले आए हैं. यह सन्देश हमें विश्वास दिलानेके लिए आया है.

अग्यारे सै साल का, आए साखें लिखी आगम ।

माहें अनभव लिख्या अपना, सो पोहोँचाया खसम ॥ ४

कतेब ग्रन्थोंमें रसूल मुहम्मदके पश्चात् ग्यारह सौ वर्ष बीतने पर परमात्माके अवतरणकी साक्षियाँ दी गई हैं. रसूल मुहम्मदने उसमें अपने अनुभवकी अन्य बातें भी लिखी हैं. धामधनीने आकर इन सब भविष्यवाणियोंको सत्य सिद्ध किया.

जो साहेब किने न देखिया, ना कछू सुनिया कान ।

सो साहेब काजी होए के, जाहेर करसी कुरान ॥ ५

जिस पूर्णब्रह्म परमात्माको आज तक किसीने नहीं देखा तथा न ही कानोंसे सुना वे परमात्मा न्यायाधीशके रूपमें आकर कुरानके गूढ़ रहस्य स्पष्ट करेंगे.

जेते वचन कुरान में, सो सब स्यामाजी दई साख ।

सो सारे इन लीला के, कहूं केते हजारों लाख ॥ ६

श्यामाजीने सदगुरुके रूपमें आकर कुरानकी सभी भविष्यवाणियोंकी साक्षी दी है. इस जागनी लीलाके ऐसे लाखों प्रमाण धर्म ग्रन्थोंमें मिलते हैं, उनका वर्णन मैं कहाँ तक करूँ ?

सो कुंजी स्यामाजी दई, कही हकीकत वतन ।

माणे खुले सब तिन से, जो छिपे हुते बातन ॥ ७

श्यामाजी स्वरूप सद्गुरुने तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी प्रदान की जिसमें परमधामकी वास्तविकताको प्रकट करनेकी शक्ति है। अब इस कुञ्जीके द्वारा धर्मग्रन्थोंके सभी गूढ़ रहस्य स्पष्ट हो गए।

और भी फुरमान में लिख्या, कोई खोल ना सके किताब ।

सोई साहेब खोलसी, जिन पर धनी खिताब ॥ ८

कुरानमें यह भी कहा है कि इसके रहस्यको कोई खोल नहीं सकेगा। इन रहस्योंको वही खोलेंगे, जिनको धनीने अपने पदकी शोभा दी है।

वसीयतनामे आए दरगाह से, जाहेर करी कयामत ।

ए हकीकत तुम पर लिखी, देखाए दिन सरत ॥ ९

मक्कासे आए हुए वसीयतनामोंने भी आत्मजागृति (कयामत) की घड़ीकी स्पष्टता की है। ये सम्पूर्ण वृत्तान्त तुम्हारे लिए लिखे गए हैं तथा उनमें आत्मजागृति (कयामत) के समयके सङ्केत दिखाए गए हैं।

या वेद या कतेब, सब आए तुम खातर ।

सब साख तुमारी देवहीं, जो देखो नीके कर ॥ १०

वेद हों अथवा कतेब, सभी धर्मग्रन्थ तुम्हारे लिए ही आए हैं। ध्यानपूर्वक देखो तो ज्ञात होगा कि ये सभी तुम्हारी ही साक्षी दे रहे हैं।

साख देवे सब दुनियां, वैराट चौदे भवन ।

समझे सारे देखहीं, जिनका दिल हुआ रोसन ॥ ११

इस विराट ब्रह्माण्डके चौदह लोकोंके जीव भी तुम्हारी साक्षी देने लगेंगे। जिनके हृदय ब्रह्मज्ञानसे प्रकाशित हो गए हैं, वे सभी बुद्धिमान लोग भी तुम्हारी लीलाओंको देख रहे हैं।

ए साखें सब पुकारहीं, निपट निकट कयामत ।

आए गई सिर ऊपर, तुम क्यों ना अजूं चेतत ॥ १२

ये सभी साक्षियाँ एक साथ कह रही हैं कि आत्म-जागृतिका समय निश्चित

रूपसे निकट आ गया है. यह घड़ी तो तुम्हारे सिर पर आ गई है, तुम अभी भी क्यों सचेत नहीं होते ?

साथजी साफ हुए बिना, अखंड में क्यों पोहोचत ।

चेत सको सो चेतियो, पुकार कहे महामत ॥ १३

हे सुन्दरसाथजी ! पवित्रहृदय हुए बिना अखण्ड धाममें कैसे पहुँचा जाएगा. महामति पुकार कर कह रहे हैं, जो जितना सचेत हो सकता है वह सचेत हो जाए.

प्रकरण १०४ चौपाई १५३३

राग श्री

मैं पूछत हों ब्रह्मसृष्टि को, तुम दिल की दीजो बताए ॥ टेक ॥

जो कोई ब्रह्मसृष्टि का, सो देखियो दिल विचार ।

कहियो तेहेकीक करके, जिनों जो किया करार ॥ १

मैं ब्रह्मात्माओंसे पूछ रहा हूँ, तुम अपने हृदयकी बात बतला दो. जो कोई भी ब्रह्मात्माएँ हैं, वे दिलमें भली प्रकार विचार कर देखें तथा निश्चय कर कहें कि परमधाममें श्रीराजजीको उन्होंने क्या वचन दिया था.

सब कोई बात विचारियो, देख अपनी अपनी अकल ।

सृष्टि तीनों करम करत हैं, एक दूजे सों मिल ॥ २

सब अपनी-अपनी बुद्धिसे सोच-विचार कर देखो. यहाँ पर तीनों श्रेणीकी आत्माएँ (जीव, ईश्वरी, ब्रह्म) एक दूसरेसे हिल-मिल कर कर्म करती हैं.

सो तीनों अब जुदे होएसी, है हाल तुमारा क्यों कर ।

दिन एते जान्या त्यों किया, अब आए पोहोँची आखर ॥ ३

वे तीनों (सृष्टि) अब पृथक्-पृथक् दिखाइ देंगी. अब इन तीनोंमें तुम्हारी स्थिति कैसी है (तुम कौन-सी सृष्टि हो ?) इस पर विचार करो. इतने दिन तक जैसा जानते थे, वैसा ही किया किन्तु अब तो (आत्म-जागृतिका) अन्तिम समय आ पहुँचा है.

पूजे परमेस्वर करके, दिलमें राखें दोए ।

तिन कारन पूछत हों, कौन विध याकी होए ॥ ४

कतिपय लोग मुझे धामधनी मानकर मेरी सेवा करते हैं किन्तु दिलमें दूसरा ही भाव रखते हैं. इसलिए मैं पूछता हूँ कि ऐसे लोगोंकी क्या दशा होगी ?

कहे परमेस्वर मुख थें, दिल चोरावें जे ।

दगा देवे माहें दुसमन, क्या नहीं देखत हो ए ॥ ५

कुछ लोग ऐसे भी हैं जो मुखसे धामधनी कहकर पुकारते हैं, किन्तु दिलसे बात छिपाते हैं. यह द्वैतभावरूपी शत्रु तुम्हें धोखा दे रहा है, क्या इसे नहीं देखते हो ?

कहावत हैं ब्रह्मसृष्टि में, धनीसों छिपावें बात ।

दिल की करें औरनसों, ए कौन सृष्टि की जात ॥ ६

कई लोग ब्रह्मसृष्टि कहलाते हैं, किन्तु सद्गुरु धनीसे छिपाकर तथा अन्य लोगोंसे दिल खोलकर बातें करते हैं. अब बताओं कि यह कौन-सी सृष्टिका आचरण है ?

ए जो दोए दिल राखत हैं, ए तो दुनियां की रीत ।

माहें मैले बाहेर उजले, ए जीव सृष्टि की प्रीत ॥ ७

जो इस प्रकार दिलमें दो प्रकारके भाव रखते हैं, यह तो संसारकी रीति है. हृदयमें कपट एवं बाहरकी मधुरता, यह तो जीवसृष्टिकी प्रीति (आचरण) है.

एकै बात ब्रह्मसृष्टि की, दोए दिल में नाहें ।

सोई करें धनीसों जाहेर, जैसी होए दिल माहें ॥ ८

ब्रह्मसृष्टियोंके दिलमें दो प्रकारके (आन्तरिक व बाह्य) भाव नहीं होते अपितु एक ही शुद्ध भाव होता है. वे जैसा दिलमें है, वैसा ही धनीके समक्ष प्रकट करती हैं.

मिनो मिने गुझ करें, निस दिन एही चितवन ।

बुरा चाहें तिनका, जिन देखाया मूल वतन ॥ ९

कुछ लोग परस्पर छिपकर बातें करते हैं और निरन्तर (रात-दिन) दूसरोंके

गुण-दोषोंका ही चिन्तन (छिद्रान्वेषण) करते रहते हैं। वे उनका भी बुरा चाहते हैं, जिन्होंने उन्हें परमधामका ज्ञान दिया है।

**पीठ चोरावें धनी सों, करें मिनो मिने खोल ।**

**ए देखो अंदर की जाहेर, देखावें अपना मोल ॥ १०**

जो धनीसे तो छिपाकर एवं आपसमें खुलकर बातें करते हैं, देखो ! ऐसे लोगोंका दिल बाहर प्रकट हो रहा है, वे इस प्रकार अपना मूल्य (स्वयं ही) प्रकट कर रहे हैं।

**करें धनीसों चोरियां, चोरोंसों तेहेदिल ।**

**यों जनम खोवें फितुए मिने, रात दिन हिल मिल ॥ ११**

जो लोग धनीसे बातें चुराते (छिपाते) हैं और दुष्ट लोगोंके साथ दिल खोलकर बातें करते हैं, वे रात-दिन दुष्ट लोगोंसे मिलकर व्यर्थके झगड़ोंमें अपना जीवन नष्ट कर रहे हैं।

**करें लडाइयां आपमें, कहें हम है धाम के ।**

**क्यों ना विचारो चितमें, कैसा जुलम है ए ॥ १२**

ऐसे लोग परस्पर लड़ते-झगड़ते हैं तथा स्वयंको परमधामके होनेका दावा करते हैं। तुम हृदयमें यह विचार क्यों नहीं करते कि यह कैसा अनर्थ है ?

**चरचा सुने वतन की, जित साथ स्यामाजी स्याम ।**

**सो फल चरचा को छोडके, जाए लेवत है हराम ॥ १३**

चर्चा तो परमधामकी सुनती है जहाँ श्याम-श्यामाजी तथा सुन्दरसाथ आनन्दमें रहते हैं, परन्तु ऐसी दिव्य चर्चाके फलको छोड़कर त्याज्य वस्तुको ग्रहण करते हैं।

**बाहेर देखावें बंदगी, माहें करें कुकरम काम ।**

**महामत पूछे ब्रह्मसृष्ट को, ए वैकुण्ठ जासी के धाम ॥ १४**

जो बाहरसे तो भक्तिभाव दिखाते हैं और अन्दर छिपकर दुष्कर्म करते हैं। ऐसी तथाकथित ब्रह्मसृष्टियोंसे महामति पूछते हैं कि वे वैकुण्ठ जाएँगे अथवा परमधाम ? अर्थात् उनकी कौन-सी गति होगी ?

**प्रकरण १०५ चौपाई १५४७**

ए सुच कैसे होवहीं, तुम देखो याकी विध ।

अनेक आचार कर कर थके, पर हुआ न कोई सुध ॥ १

यह नश्वर देह कैसे निर्मल होगी ? तुम इसकी रचना पर जरा विचार कर देखो. कई लोग अनेक आचार-विचार करते हुए थक गए, किन्तु कोई भी पवित्र न हो सका.

निस दिन ग्रहिए प्रेमसों, जुगल सरूपके चरन ।

निरमल होना याहीसों, और धाम बरनन ॥ २

श्रीयुगलस्वरूप (राजश्यामाजी) के चरणकमलको निशदिन प्रेमपूर्वक ग्रहण करनेसे तथा परमधामका वर्णन (चितवन) करनेसे ही हृदय निर्मल हो सकता है.

इन विध नरक जो छोडिए, और उपाए कोई नाहें ।

भजन बिना सब नरक है, पच पच मरिए माहें ॥ ३

इस प्रकार दुःखरूप नरक (जन्ममृत्यु) से छुटकारा पाया जा सकता है, इसके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं है. भजन (भक्ति) बिना सब कुछ नरकके समान दुःखदायी है. इसलिए जीव बार-बार जन्ममृत्युके चक्रमें थपेड़े खाता है.

धनी बिना अंग निरमल चाहे, सो देखो चित ल्याए ।

क्यों निरमल अंग होवहीं, जो इन विध रच्यो बनाए ॥ ४

धामधनी (परमात्मा) के भजनके बिना जो इस शरीरको निर्मल बनाना चाहते हैं, वे ध्यानपूर्वक विचार करें. यह शरीर पवित्र कैसे होगा, जिसकी रचना ही इस प्रकार की है.

दोऊ मैले जब मिले, बांध गोली मांस रचाए ।

नरक उदर दस मास लों, पूरो कियो पचाए ॥ ५

जब स्त्री और पुरुषके दो विकार (रज और वीर्य) मिल जाते हैं, तब माँस पिण्ड बनता है. उस माँस पिण्डको दश महीने पर्यन्त पेटकी नरकाग्निमें तपाया जाता है.



जठरा अग्नि तले करी, ऊपर ऊंधे मुख लटकाए ।

बोल न सके ठौर संकडी, काढ्यो मुर्दे ज्यों छुटकाए ॥ ६

उसे माताकी जठराग्निमें उलटे रूपमें (सिर नीचे और पाँव ऊपर) तपाया जाता है। गर्भाशय इतनी सँकरी कोठरी है कि वहाँ पर वह बोल भी नहीं सकता। ऐसे स्थानसे उसे शवकी भाँति बाहर निकाला जाता है।

हाड मांस लोहू रगा, ऊपर चाम मढाए ।

नव द्वार रचे नरक के, निस दिन बहे बलाए ॥ ७

जीवके इस शरीरमें तो हड्डी, माँस, रक्त तथा नसोंको ऊपरसे चमड़ीसे ढक दिया गया है तथा इसके नव द्वारों (दो कान, दो आँखें, दो नाक, एक मुँह और दो मल मूत्र द्वार) से गन्दी नालियाँ दिन रात बहती रहती हैं।

ऊपर बंध बालन के, जलस गुदा अंदर छल ।

चले नदी मल मूत्र की, कहूँ के तो नरक को हाल ॥ ८

पायु और उपस्थके साथ विभिन्न माँसपेशियोंके बन्धनमें जकड़े हुए तथा मल-मूत्रकी नदियाँ जहाँ बहती हों, ऐसे नरकतुल्य स्थानमें गर्भस्थ शिशुको कष्ट भोगते हुए रहना पड़ता है।

पंचामृत पाक बनायो, भोजन भयो रूच आए ।

अंग संग ले निकस्यो, कौन हाल भयो ताए ॥ ९

शरीरके पोषणके लिए बनाया गया दूध, दधि, घी, मधु एवं शर्करा मिश्रित रुचिकर भोजन (इस शरीरके) पेटमें पहुँचते ही किस रूपमें परिणत होकर शरीरसे बाहर निकलता है ?

अंत आहार सूकर कूकर को, या कौआ कीडा खाए ।

या तो अग्नि जलाए के, करके खाक उडाए ॥ १०

इस प्रकार पोषण पाकर हृष्टपुष्ट बना हुआ शरीर भी प्राण निकलने पर अन्तमें तो सुअर, कुत्ते, कीड़े, कौवे आदिका आहार बनता है अथवा इसे अग्निमें जलाकर राख तथा मिट्टी बना कर उड़ा दिया जाता है।

ए नरक निरमल क्यों होवहीं, जो ऊपर से अंग धोए ।

अंग धोए मन निरमल, कबहूँ न हुआ कोए ॥ ११

इस प्रकार नरकके समान यह शरीर बाहरसे धोने (स्नान) मात्रसे कैसे निर्मल हो सकता है. शरीरको धो लेने मात्रसे आजतक किसीका भी मन निर्मल नहीं हुआ है.

धिक धिक नीची चातुरी, बिचार न अंतसकरन ।

त्रैलोकी इन अंग संग, गई खोए अखंड वतन ॥ १२

ऐसी बाह्यदृष्टि (चतुराई) को धिक्कार है, जो अन्तःकरण पूर्वक विचार करने नहीं देती. तीनों लोकोंके जीव इस नश्वर शरीरका सङ्ग पाकर अखण्ड वस्तु (परमधाम) को खो देते हैं.

ए सुच क्योंए न होवहीं, जो सौ बेर अन्हाए ।

ए तो पिंड नरकै भरयो, देखो अन्तर नजर फिराए ॥ १३

सौ बार स्नान करने पर भी यह अपवित्र शरीर कभी पवित्र नहीं होगा. तनिक इसके अन्दर दृष्टि डालकर तो देखो, यह शरीर तो नरकसे ही भरा हुआ है.

विवेक विचार न पाइए, ऊपर टेढ़ी पाग लटकाए ।

आप देखे माहें आरसी, सिर आसमान लों ले जाए ॥ १४

जिनके हृदयमें विवेक और विचार नहीं हैं, वे मस्तक पर टेढ़ी पगड़ी बाँधकर अपनी धाक जमाते हैं. वे अपने शरीरके सौन्दर्यको दर्पणमें देखकर इतने गर्वित होते हैं, मानो उनका शीश आकाशको छूने लगा हो.

नहीं भरोसो खिन को, वरस मास और दिन ।

ए तो दम पर बाँधिया, तो भी भूल जात भजन ॥ १५

इस प्रकारके नाशवान शरीरके जीवित रहनेका एक क्षणका भी भरोसा नहीं है, तो फिर दिन, मास अथवा वर्षके विषयमें कैसे कहा जा सकता है ? समग्र शरीर स्वास-उच्छ्वास पर निर्भर है (यह साँस कब रुक जाएगी, इसका भी पता नहीं है), तथापि अभिमानी लोग प्रियतम धनीकी उपासना व भजन भूल जाते हैं.

आत्म धनी पेहेचानिए, निरमल एही उपाए ।

महामत कहे समझ धनी के, ग्रहिए सो प्रेमें पाए ॥ १६

महामति कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी ! अपनी आत्मा एवं धामधनीको पहचानो. हृदयको निर्मल (पवित्र) बनानेका यही एक मात्र उपाय है. इसलिए शरीरकी नश्वरताको समझकर धामधनीके चरण कमलोंको प्रेमपूर्वक ग्रहण करो.

प्रकरण १०६ चौपाई १५६३

राग श्री

झूठ सबद ब्रह्मांड में, कहावत याही में सांच ।

ए दोऊ झूठे होत हैं, वास्ते पिंड जो कांच ॥ १

इस नश्वर ब्रह्माण्डके शब्द भी वस्तुतः नाशवान् ही होते हैं, परन्तु इनके माध्यमसे ही सत्य वस्तुका प्रतिपादन किया जाता है. ये शब्द तथा इनको उच्चारण करने वाली जिह्वाको धारण किया हुआ शरीर, ये दोनों ही काँचके पिण्डकी भाँति क्षणिक हैं.

ए लगे दोऊ सुन को, निराकार सामिल ।

निरंजन या निरगुन, सो भी रहे इन भिल ॥ २

इस संसारके शब्द तथा यह शरीर (पञ्चमहाभूत) दोनों ही निराकारमें लीन हो जाते हैं. इससे आगे नहीं जा सकते. इसी शून्य-निराकारमें निरञ्जन अथवा निर्गुण भी समाहित हैं.

एकै साईत पैदा हुए, और फना होसी एक बेर ।

ए क्यों पावें अद्वैत को, जो ढूँढ़ें माहें अन्धेर ॥ ३

अक्षरब्रह्मके एक ही पलमें सृष्टिका सर्जन होता है और एक ही क्षणमें लय हो जाता है. इस नश्वर सृष्टिके प्राणी अद्वैत ब्रह्मको कैसे प्राप्त कर सकते हैं ? क्योंकि उनकी खोज ही माया (अन्धेर) के अन्तर्गत है.

ए न्यारे को क्यों पावहीं, पैदास सारी इन ।

सत सबद ब्रह्मांड में आया, पर ए ना छोडे कोई सुन ॥ ४

इस मिथ्या संसारकी यह सृष्टि इससे परे परमात्माको कैसे पा सकेगी ?

इस संसारमें सत्य वचन (तारतम ज्ञान) तो उतर आया, तथापि यहाँके जीव शून्य-निराकारको छोड़ नहीं सकते.

**जीव विष्णु महाविष्णु लों, याके कै विध नाम धरत ।**

**अग्यान ग्यान ले विग्यान, यों कै विध खेल खेलत ॥ ५**

इस अनित्य जगतके मानव विष्णु भगवान अथवा महाविष्णु तक ही पहुँच सकते हैं तथा उनको ही विविध नामोंसे पुकारते हैं. अज्ञानी, ज्ञानी और विज्ञानी सभी इस मायाके खेलमें विविध प्रकारसे खेल रहे हैं.

**एक अनेक सब इनमें, इत सांच झूठ विस्तार ।**

**अक्षर ब्रह्म क्यों पावहीं, भई आडी निराकार ॥ ६**

ये लोग विष्णु और महाविष्णुके एक अथवा अनेक रूपोंको ब्रह्मका नाम देकर सत्य तथा असत्यका विस्तार करते हैं. ऐसी स्थितिमें वे अक्षरब्रह्मको कैसे प्राप्त कर सकते ? क्योंकि इनके मार्गमें शून्य-निराकारका आवरण व्यवधानरूप पड़ा हुआ है.

**अक्षर अक्षरातीत कहावहीं, सो भी कहियत इत सबद ।**

**सबदातीत क्यों पावहीं, ए जो दुनियां हद ॥ ७**

यद्यपि अक्षर व अक्षरातीत ब्रह्मका वर्णन भी इन्ही शब्दों द्वारा होता है, तथापि मायाके जीव शब्दातीत ब्रह्मको अपनी सीमित बुद्धिसे कैसे प्राप्त कर सकते?

**पांच तत्व गुन तीनों ही, ए गोलक चौदे भवन ।**

**निरगुन सुंन या निरंजन, ज्यों पैदा त्यों ही पतन ॥ ८**

पाँच तत्व और तीन गुण द्वारा इस भूमण्डल और चौदह लोकोंकी रचना हुई है. उनके चारों ओर निर्गुण, शून्य, निराकारका आवरण छाया हुआ है. यह सब जिस प्रकारसे उत्पन्न हुआ है, उसी प्रकारसे नाश भी होगा.

**ए सुपना नींद सुरत का, खेले अक्षर आतम ।**

**हम भी आए देखने, खसम के हुकम ॥ ९**

अक्षरब्रह्मकी सुरतासे स्वप्नवत् संसारकी रचना हुई है, जिसमें स्वयं अक्षरकी आत्मा खेल रही है. हम ब्रह्मात्माएँ भी इस स्वप्नवत् संसारको देखनेके लिए परब्रह्मकी आज्ञासे आई हैं.

ब्रह्मसृष्टि के कारने, खेल जो रचिया ए ।  
खेल देखाए सत वतन, महामत आए ले ॥ १०

ब्रह्मसृष्टियोंको दिखानेके लिए ही धामधनीकी आज्ञा पाकर अक्षरब्रह्मने इस खेलकी रचना की है. इसलिए सब साथको यह खेल दिखाकर उन्हें परमधाम ले जानेके लिए महामति का आगमन हुआ है.

प्रकरण १०७ चौपाई १५७३

राग श्री

फुरमान मेरे मेहेबूब का, ले आया अरस से रसूल ।  
भेज्या अपनी अरवाहों पर, साहेब होए सनकूल ॥ १

परमधामसे मेरे प्रियतम धनीका सन्देश लेकर रसूल यहाँ आए हैं. धामधनीने प्रसन्न होकर अपनी आत्माओंके लिए सन्देश भेजा है.

सोई खोलें अपनी इसारतें, जो अरस की अरवाए ।  
एही परख्या जाहेर, और काहूँ न खोल्या जाए ॥ २

परमधामकी ब्रह्मात्माएँ ही इस सन्देश पत्र (कुरान) में छिपे हुए अपने सङ्केतोंको स्पष्ट कर सकेंगी. यही उनकी प्रत्यक्ष परीक्षा (कसौटी) है. उनके अतिरिक्त अन्य किसीसे भी ये सङ्केत स्पष्ट नहीं होंगे.

बरकत इन रूहन की, भिस्त देसी सबन ।  
ले दे हिसाब फजर को, ले चलसी रूहें वतन ॥ ३

इन ब्रह्मात्माओंके प्रतापसे सभी जीवोंको मुक्ति स्थलोंमें पहुँचाया जाएगा. आत्मजागृति (क्यामत) के समय सभी जीवोंके कर्मोंका लेखा-जोखा कर ब्रह्मज्ञानके प्रभातमें धामधनी ब्रह्मात्माओंको परमधाम ले चलेंगे.

मुझे भेज्या कासिद कर, मैं ल्याया फुरमान ।  
एही जानो तुम तेहेकीक, दिलसों यकीन आन ॥ ४

रसूल साहबने कहा था परमात्माने मुझे अपने संदेश वाहकके रूपमें यहाँ भेजा है. मैं उनका दिव्य सन्देश कुरानके रूपमें लाया हूँ. तुम विश्वास पूर्वक मेरी इस बातको सत्य मानो.

मैं देत हों खुसखबरी, जो रबानी अरवाए ।

वे उतरे अरस अजीम से, जो हमेसगी इसदाए ॥ ५

मैं यह शुभ समाचार देता हूँ कि अनादि कालसे अखण्ड परमधाममें रहनेवाली ब्रह्मात्माएँ इस संसारमें अवतरित होंगी.

रसूल कहे मैं आखरी, मेरे पीछे न आवे कोए ।

कह्या रूहअल्ला की आवसी, और मेहेदी इमाम सोए ॥ ६

रसूल मुहम्मदने यह भी बताया कि मैं अन्तिम सन्देशवाहक हूँ. मेरे पश्चात् दूसरा कोई सन्देशवाहक नहीं आएगा. परन्तु आत्मजागृति (कयामत) के समय श्रीश्यामाजी (अल्लाहकी रूह) आएँगी और इमाम महदी कहलाएँगी.

रूहअल्ला दो जामे पेहेरसी, दूसरे ऊपर मुदार ।

सोई इमाम मेहेदी, याकी बुजरकी बेसुमार ॥ ७

कयामतके समय श्यामाजी (रूहअल्लाह) दो स्वरूप (दो जामे-एक श्रीदेवचन्द्रजी और दूसरा स्वामी प्राणनाथजी) धारण करेंगी. उनमेंसे दूसरे स्वरूप (श्रीप्राणनाथ) पर सभी आत्माओंकी जागनीका दायित्व रहेगा. वे ही इमाम महदी कहे जाएँगे एवं उनकी महिमा अपार होगी.

मैं आया हों अव्वल, आखर आवेगा खुदाए ।

काजी होय के बैठसी, करसी सबों कजाए ॥ ८

रसूलने यह भी कहा कि मैं पहले सन्देशवाहक बनकर आया हूँ, अन्त समयमें स्वयं परब्रह्म परमात्मा आएँगे. वे काजी (न्यायाधीश) बनकर बैठेंगे तथा सबके भले बुरे कार्योंका न्याय (लेखा-जोखा) करेंगे.

साल नव सै नबे मास नव, हुए रसूलको जब ।

रूहअल्ला मिसल गाजियों, मोमिन उतरे तब ॥ ९

रसूल मुहम्मदके पश्चात् नौ सौ नब्बे वर्ष और नौ मास व्यतीत होने पर श्री श्यामाजी (रूहअल्लाह) परमधामसे ब्रह्मात्माओंको अपने साथ लेकर धनी श्रीदेवचन्द्रजीके रूपमें इस संसारमें अवतरित हुई.

गिरो बनी असराईल, सो मिसल गाजियों जान ।

होए कबूल बंदगी उनसे, इन विध कहे फुरमान ॥ १०

कुरानमें बताया गया है कि इस्राईलके वंशजोंके समूहमें ब्रह्मात्माएँ होंगी। उनके द्वारा की गई उपासना (बन्दगी) को ही परमात्मा स्वीकारेंगे। [इस बातका सङ्केत यहाँ इस प्रकार किया गया है कि श्रीदेवचन्द्रजी महाराजके मानसपुत्र श्रीप्राणनाथजीका समुदाय ही ब्रह्मसृष्टिका समुदाय है और इनके द्वारा ही संसारके जीवोंकी प्रार्थना सुनी जाएगी।]

एक निमाज की हजार, एही करसी कबूल ।

कै कही महंमद आखर सिफत, सो भी इन बीच होसी रसूल ॥ ११

इन्हीं ब्रह्माङ्गनाओंसे ही जीवोंको एक बार की गई प्रार्थना (बन्दगी) का हजार गुणा पुण्य प्राप्त होगा। कुरानमें आत्मजागृतिके समयके मुहम्मदकी अनेक प्रकारसे प्रशंसा की गई है। वे भी इन्हीं ब्रह्मात्माओंके मध्य प्रकट होंगे।

एही गिरो रबानी, रूहें बीच दरगाह ।

कै हजारों सिफतें इन की, माहें बुजरक रूहअल्लाह ॥ १२

ये ब्रह्मात्माएँ परमधाममें रहनेवाली हैं। इनकी हजारों प्रकारसे प्रशंसा की गई है। इनमें श्यामाजी स्वरूप सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी (रूहअल्लाह) शिरोमणि हैं।

जाहेर महंमद पुकारहीं, फुरमान ल्याया मैं ।

कै हजारों बातें करी, साहेब की सूरत से ॥ १३

रसूल मुहम्मदने कुरानमें स्पष्ट रूपसे कहा है कि मैं परब्रह्म परमात्माका सन्देश (कुरान) लेकर आया हूँ। उनकी सूरतके साथ मैंने हजारों बातें भी की हैं।

कै रद बदलें करी साहेबसों, अपनी उमत के वास्ते ।

या विध कलाम कै लिखे, सो पढे न मानें ए ॥ १४

रसूलने ब्रह्मात्माओंके लिए परमात्मासे कई चर्चाएँ कीं। इस प्रकारकी कई बातें कुरानमें लिखी गई हैं, किन्तु उन बातोंको पढ़कर भी वे लोग खुदाका स्वरूप नहीं स्वीकारते।

यों लिख्या है कै विध, पर समझे ना बेसहूर ।

दुनी पढ़ पढ़ अपनी अकलें, कै करे मजकूर ॥ १५

ऐसी बातें अनेक प्रकारसे लिखी गई हैं, परन्तु बाह्यार्थ करनेवाले अज्ञानी लोग उनका मर्म नहीं समझ पाते. संसारके (पढ़े-लिखे) लोग उसे पढ़कर अपनी बुद्धिके अनुसार वाद-विवाद करते हैं.

बिना यकीने पढ़हीं, अपनी अकलें करें बयान ।

सो सुनाए सुनाए दुनी को, कै किए बेईमान ॥ १६

ऐसे लोग श्रद्धाके बिना ही पढ़ते हैं और अपनी-अपनी बुद्धिके अनुसार उसका अर्थघटन करते हैं. इन्होंने संसारके लोगोंको कुरानके बाह्य (शाब्दिक) अर्थ सुनाकर नास्तिक और श्रद्धाहीन बनाया है अर्थात् सत्य मार्गसे विचलित कर दिया है.

एक अचरज ए देख्या बड़ा, कहे बेचून बेचगून ।

कुरान देखें पढ़ें यों कहें, बेसबी बेनिमून ॥ १७

मैंने एक और बड़ा आश्चर्य देखा है कि ये लोग कुरानको पढ़कर भी खुदाको निराकार (बेचून), निर्गुण (बेचगून), अप्रतिम (बेशब्बीह) तथा अनुपम (बेनिमून) कहते हैं.

फुरमान जाहेर सूरत देखावहीं, सो माएने ना ले दिल अंध ।

पढ़ें अपनी अकलें, पाडी दुनियां दोजक फंद ॥ १८

कुरानमें परमात्माके स्वरूपका स्पष्ट वर्णन किया गया है, परन्तु आन्तरिक दृष्टिसे अन्धे कुरानके गूढ़ार्थ समझ नहीं पाते. वे अपनी तुच्छ बुद्धिसे कुरान पढ़कर बाह्य अर्थ निकालते हैं तथा संसारको नरकमें डालते हैं.

सिपारे सयकूल में, यों लिख्या जाहेर कर ।

देखाऊं माएने मुसाफ, चीन्हो दिलकी खोल नजर ॥ १९

कुरानके दूसरे सिपारे सैकूलमें परमात्माके स्वरूपके विषयमें स्पष्ट वर्णन है. उस रहस्यको मैं तुम्हें स्पष्ट समझाता हूँ. तुम अपने हृदयकी दृष्टि खोलकर देखो.



ए जानें हरमके मेहेरम, जिनों तेहेकीक करी सूरत ।

मुख ना फेरें सूरतसों, सोई बंदगी हकीकत ॥ २०

परमात्माके स्वरूपकी यथार्थ पहचान परमधामकी आत्माएँ ही कर सकती हैं। उन्होंने ही परमात्माका स्वरूप स्वीकार किया है। इसलिए वे परमात्माके स्वरूपसे विमुख नहीं होंगी। यही उनकी सच्ची प्रार्थना होगी।

एक खूबी चाहें साहेब की, और न कछुए चाहें ।

उनकी एही बंदगी, जो सांचे आरफ अरवाहें ॥ २१

वे तो मात्र परमात्माकी शोभाको ही हृदयमें धारण करना चाहती हैं। वे अन्य कोई भी वस्तु नहीं चाहतीं। सत्य ज्ञानको जानने वाली आत्माओंके लिए यही उनकी उपासना (बन्दगी) है।

जिनों अरथ लिया अंदर का, माएने पेहेचाने तिन ।

खासों की एही बंदगी, जाने दिल रूह वतन ॥ २२

जिन ब्रह्मात्माओंने धर्मग्रन्थोंका गूढ़ार्थ ग्रहण किया है, वे ही रहस्य समझ सकेंगी। धाम दिलवाली ब्रह्मात्माओं (खास बन्दों) की यही उपासना (बन्दगी) है।

आसक अरस अजीम की, चाहें मिलना हमेसगी ।

चाहें साहेब और उमत, उनकी एही बंदगी ॥ २३

परमधामकी आत्माएँ सदा सर्वदा धनीसे मिलन चाहती हैं साथ ही धामधनी एवं ब्रह्मात्माओंका सामीप्य चाहती हैं। यही उनकी प्रार्थना (बन्दगी) कहलाती है।

एही रूहों की बंदगी, जो कही खास उमत ।

एही एहेल किताब हैं, लिख्या दूसरे सिपारे जित ॥ २४

जो परमधामकी ब्रह्मात्माएँ हैं, उनकी यही उपासना है। ये ब्रह्माङ्गनाएँ ही कुरान समझनेकी अधिकारिणी हैं। कुरानके दूसरे सिपारेमें इसका स्पष्ट वर्णन किया गया है।

और देखो दुनीकी बंदगी, ए भी सयकूल में लिखे ।

सो भी देखाऊं बेवरा, जो कर बैठे किबले ॥ २५

दूसरी ओर संसारके जीवोंकी बन्दगीको भी देखो. यह वृत्तान्त भी दूसरे सिपारे (सैकूल) में लिखा हुआ है. उन लोगोंने किसको अपना पूज्य माना है, उसका विवरण भी मैं दूंगा.

पातसाहों एही जानिया, मोती जवेर सिर ताज ।

इनका एही किबला, चाहें ज्यादा अपना राज ॥ २६

संसारके सम्राटोंने मोती-जवाहरातकी शोभाको सर्वश्रेष्ठ समझा. इसलिए वे अपने साम्राज्यको ही बढ़ाना चाहते हैं. उनकी यही पूजा है.

सोना रूपा दुनीका, अर्थ चाहें भरे भंडार ।

इनका एही किबला, कै विध करें विस्तार ॥ २७

संसारके लोग सोना, चाँदी आदि धन-दौलतसे अपना भण्डार भरना चाहते हैं. ऐसी मायावी सम्पत्तिका अनेक प्रकारसे विस्तार करना ही उनकी पूजा है.

जिनकी बदखसलतें, अपना भला मन ल्याए ।

इनका एही किबला, औरों का भला न चाहें ॥ २८

जिनकी प्रवृत्तियाँ बुरी हैं तथा जो सदैव अपने स्वार्थका ही चिन्तन करते हैं, उनकी यही पूजा है कि वे दूसरोंका भला नहीं चाहते.

जो जाहेर परस्त हैं, चाहें मिटी पानी पत्थर ।

इनका यही किबला, जिनकी बाहेर पड़ी नजर ॥ २९

जो लोग मात्र प्रत्यक्ष दिखने वाली वस्तुकी पूजा करते हैं, वे मिट्टी, पत्थर और पानी आदिकी पूजा करना चाहते हैं. उनकी दृष्टि बाह्य जगत पर ही रहती है, यही उनकी पूजा है.

मिटी पत्थर बनाए के, कहे खुदाए का घर ।

मेहेराब को किबला किया, करें निमाज तिन पर ॥ ३०

वे लोग मिट्टी व पत्थरसे मस्जिद बनाकर उसे ही खुदाका घर मानते हैं.

उसी मस्जिद पर बने मेहराब (कमान) को ही पूज्य मानकर वहाँ पर निमाज पढ़ते हैं।

जो यार हैं अपने तनके, भला खावें सोवें पलंग ।

तिनका एही कबला, और न चाहे रंग ॥ ३१

जो लोग मात्र अपने शरीरके ही मित्र (साथी) होते हैं, उन्हें सुन्दर भोजन और सुखदायी शय्या ही अच्छी लगती हैं। उनके लिए तो नाशवान वस्तुएँ ही उपास्य हैं। वे लोग इनके अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं चाहते।

आगूं अपनी दानाई के, और न काहूं देखत ।

इनका एही कबला, अपनी तरफ खँचत ॥ ३२

इस प्रकारके लोगोंको अपने बुद्धि-चातुर्यके समक्ष अन्य कुछ भी दिखाई नहीं देता। चतुराईसे दूसरोंको अपनी ओर खींचना ही उनकी उपासना है।

जिन जैसा कबला सेइया, आगूं आया तैसा तिन ।

दुनी कारन खोवे दीनको, तो आखर कही जलन ॥ ३३

जिन लोगोंने जिसको पूज्य माना, उनको उसी प्रकारका फल प्राप्त हुआ। इस प्रकार सांसारिक सुखोंके लिए धर्म छोड़ने वालोंको तो अन्तमें नरकाग्निमें ही जलना पड़ता है।

इन विध फुरमान फुरमावहीं, जाहेर देत बताए ।

अंदर बैठा जो दुसमन, जो देत माएने उलटाए ॥ ३४

इस प्रकारका कुरानमें स्पष्ट वर्णन मिलता है, तथापि लोगोंके हृदयमें शैतान बैठ कर उन्हें उलटा अर्थ लगाकर पथभ्रष्ट कर रहा है।

आरफ कहावें आपको, होए बुजरक माहें दीन ।

कह्या हादी का रद करें, यों खोवत हैं यकीन ॥ ३५

कुरानको पढ़नेवाले अपने आपको ज्ञानी समझते हैं तथा धर्मके अग्रणी होनेकी धाक जमाते हैं। अपने मार्गदर्शकके वचनोंको ठुकराकर इस प्रकार विश्वास खो देते हैं।

जब जाहेर माएने लीजिए, तब खडे होत हैं घर ।

अंदर माएने सब उडत हैं, सो पढे लेवें क्योंकर ॥ ३६

बाह्य अर्थ लेने पर ही तो पूजाके भिन्न-भिन्न स्थान (मन्दिर-मस्जिद) परमात्माके घर दिखाई देते हैं. यदि गूढ़ार्थ समझा जाए, तो सम्पूर्ण संसारका अस्तित्व ही मिट जाए. इसलिए पढ़े लिखे लोग उन गूढ़ अर्थोंको क्यों समझेंगे ?

पढे सो भी पेट कारने, और पालने कबीले ।

दुनियां को देखावहीं, आगूं चल के ए ॥ ३७

अपरा विद्याके विद्वान् मात्र जीवन निर्वाहके लिए तथा परिवारके पालन-पोषणके लिए ही शिक्षा ग्रहण करते हैं. वे संसारको दिखानेके लिए ही धर्मका नेतृत्व करते हैं.

जब लीजे अंदर के माएने, तब ना कछू साहेब बिन ।

साहेब बिना सब दोजख, चौदे तबक अगिन ॥ ३८

परन्तु जब गूढ़ार्थ समझा जाए, तब परमात्माके अतिरिक्त अन्य किसीका भी अस्तित्व नहीं दिखाई देगा. तब परमात्माको छोड़ अन्य सभी नरकके समान लगने लगेंगे तथा चौदह लोक भी अग्निके समान दाहक सिद्ध होंगे.

दीन इसलाम से जात हैं, कारन सुख सुपन ।

बुजरक आगे होए के, राह मारें औरन ॥ ३९

ऐसे लोग मायाके क्षणिक सुखोंके प्रलोभनमें फँसकर सत्य धर्मसे वञ्चित रह जाते हैं. साथ ही स्वयं अग्रणी होकर सन्मार्ग पर विश्वास रखने वालोंको भी मार्ग-भ्रष्ट कर देते हैं.

कही गरीबी बुजरक, पढ कर सो ना लें ।

कै बंध फंद कर मारहीं, लई मुल्लां गरीबी ए ॥ ४०

कुरानमें सत्य धर्मके मार्ग पर चलनेके लिए सादगी, गरीबी, नम्रता आदि महत्वपूर्ण गुण आवश्यक बताए गए हैं, तथापि कुरानका अभ्यास करनेवाले भी उन्हें ग्रहण नहीं करते. इतना ही नहीं, अन्य लोगोंको कपटपूर्ण बन्धनोंमें

फँसाकर उन्हें दुःखी करते हैं। कई मुस्लिमों ने ऐसी गरीबी धारण की है।

कोई सीधा सबद जो केहेवहीं, तो तोरा देखावें ताए ।

जो गरीब सामें बोलहीं, तो तिनको सूली चढाए ॥ ४१

यदि कोई व्यक्ति दूसरों को सत्यधर्मका अर्थ समझाने लगे, तो मौलवी लोग उन्हें धमकी देते हैं। यदि कोई गरीब व्यक्ति साहस बटोरकर उनके सामने सत्य धर्मकी बात करने लगे, तो वे (औरंगजेब जैसे) लोग उसे फाँसी पर चढ़ा देते हैं।

कहे मुखथें हम मोमिन, और हमहीं पढे सरे दीन ।

हमहीं एहेल किताब हैं, हमहीं में यकीन ॥ ४२

ऐसे लोग मुखसे स्वयंको मोमिन कहते हैं एवं स्वयं ही धर्मके ज्ञाता बनते हैं तथा यह भी कहते हैं कि कुरानके अधिकारी हम ही हैं एवं हममें ही धर्मके प्रति सच्चा विश्वास है।

यों हम हम करते कै गए, अजू योंहीं जाए रात दिन ।

यों करते आखर आए गई, बांधी तोबा लगी अगिन ॥ ४३

इस प्रकार 'मैं मैं' का झूठा दावा करनेवाले कई लोग चले गए तथा अनेकोंके रात-दिन व्यर्थ ही बीत रहे हैं। ऐसा करते-करते अन्तिम घड़ी आ गई जिससे पश्चात्तापकी अग्निमें जलने लगे।

किया टोना लडकी महंमद पर, दर्ई गांठ अग्यारे तिन ।

सो हर सदी गांठें खुलीं, तब महंमद ले चले मोमिन ॥ ४४

कुरानमें वर्णन है कि रसूल मुहम्मद पर एक लड़कीने जादू किया। उसने उनके एक बालको तोड़कर ग्यारह गांठें लगाईं। इसका गूढ़ार्थ यह था कि मुहम्मद साहबके इस संसारसे जानेके पश्चात् प्रत्येक शताब्दी (सदी) के अन्तमें एक गांठ खुलेगी तथा अन्तमें ग्यारहवीं शताब्दीमें अन्तिम मुहम्मद प्रकट होंगे और वे ब्रह्मसृष्टियों (मोमिनों) को साथमें लेकर परमधाम जाएँगे।

ए आएत देख्या चाहे, ताए देखाऊं बेसक ।

इनमें जो सक ल्यावहीं, सो जलसी आग दोजक ॥ ४५

कुरानकी इस आयतको जो देखना चाहे, उसे मैं निश्चय ही दिखा दूँगा। इसके

विषयमें जो शङ्का करेगा, वह नरककी आगमें जलेगा.

जब तमाम सदी अग्यारहीं, ए महंमद उमत यकीन ।

जबराईल मुसाफ ले आए, और बरकत दुनियां दीन ॥ ४६

जब ग्यारहवीं शताब्दी पूर्ण हुई, तब उपरोक्त कथन पर ब्रह्मात्माओंको विश्वास हुआ. जिब्रील फरिश्ता अरब देशसे बरकत, शफकत (दुआ) कुरान एवं विश्वास (श्रद्धा) को लेकर यहाँ (भारत) चले आए.

ए तीनों उठाए दुनी से, जबराईल ले आया अपने मकान ।

खड़ा किया झंडा दीन का, ल्याए लाखों खलक ईमान ॥ ४७

जिब्रील फरीश्ता कुरान, धर्म पर श्रद्धा तथा धर्मका महत्त्व, इन तीनोंको मक्कासे उठाकर अपने घर (हिन्दुस्तान) ले आया इस प्रकार हिन्दुओंके बीच धर्मका झण्डा आरोपित कर दिया. इसके कारण लाखों लोगोंने विश्वासपूर्वक उस सत्यधर्मका अनुसरण किया.

वसीयतनामे साहेदी, आए लिखे बड़ी दरगाहे ।

सो मिलाए दिए कुरान से, महामत हुकम खुदाए ॥ ४८

बड़ी दरगाह (मक्का) से जो चार वसीयतनामे यहाँ आए थे, उनकी साक्षी देकर महामति कहते हैं कि परमात्माकी प्रेरणासे कुरानमें कही गई भविष्यवाणीको मिलाकर यहाँ पर ये बातें दर्शायी गई हैं.

प्रकरण १०८ चौपाई १६२१

राग श्री

मासूक मेरी रूह चाहे सिफत करूं, सो मैं जाए ना कही ।

जब देख्या बेवरा कर, तब तामें उरझ रही ॥ १

हे मेरे प्रियतम धनी ! मेरी आत्मा चाहती है कि मैं आपके असीम गुणोंकी प्रशंसा करूँ. परन्तु यह मेरेसे नहीं बना. जब मैं आपके अपरिमित गुणों पर विचार करने लगा, तो स्वयं ही उसमें उलझ गयी.

सब थें बडी मुझे करी, ऐसी और न दूजी कोए ।

जो मेहेर करी मुझ ऊपर, सो सिफत जुबां क्यों होए ॥ २

हे प्रियतम धनी ! आपने मुझे ब्रह्मात्माओंमें सबसे श्रेष्ठ बनाया कि मेरे समान दूसरा कोई न रहा. इस प्रकार आपने मुझ पर असीम कृपा की है, जिसका वर्णन इस मिथ्या जिह्वा द्वारा नहीं हो सकता.

किन विध मैं तुमको कहूं, क्यों कर दिल धरूं ।

ले आसान तुमारे दिल में, मैं गुजरान क्यों करूं ॥ ३

मैं किस प्रकार आपके गुणोंको आपके समक्ष निवेदन करूं ? आपका अनुग्रह हृदयमें धारणकर मैं किस प्रकार सांसारिक जीवनका निर्वाह करूं ?

मैं चलते देखे मजहब, और सबके परमेस्वर ।

सो सारे बीच फना मिने, नूर बका न काहूं नजर ॥ ४

मैंने संसारमें प्रचलित अनेक धर्म, सम्प्रदाय एवं पन्थको तथा उनके इष्टको देखा. वे सब इसी झूठे संसार तक ही सीमित हैं. किसीको भी अक्षरब्रह्म अथवा अक्षरातीत परमात्माकी सुधि नहीं है.

फना छोड इन परमेस्वरों, नूर बका न पाया किन ।

तिन पर नूर बिलंद, सो किया तुम मेरा वतन ॥ ५

इस नश्वर संसारको छोड़कर इन इष्टों (परमेश्वरों) से भी परे अक्षर ब्रह्मको किसीने नहीं पाया. हे धनी ! आपने ही मुझे कहा कि इनसे परे अक्षरातीत परमधाम ही तुम्हारा अपना घर है.

खेल किया मेरे कारने, दुनियां चौदे तबक ।

मेरे हाथ तिनकी हैयाती, भिस्त पाई मुतलक ॥ ६

हे प्रियतम ! आपने मेरे लिए ही चौदह लोक युक्त इस ब्रह्माण्डका खेल रचाया तथा संसारके जीवोंको मुक्तिस्थलोंमें अखण्ड मुक्ति भी मेरे द्वारा दिलाई.

खेल कर मोहे बैठाई माहें, मुझ पर भेज्या फुरमान ।

माहें लिखी हकीकत मारफत, मुझ बिना न काहूं पेहेचान ॥ ७

आपने संसारका खेल रचाकर उसमें भी मुझे महत्त्व देते हुए मेरे लिए आदेश

(फरमान) भेजा. उसमें आपने अखण्ड परमधामकी यथार्थता (हकीकत) तथा अनुभूति (मारीफत) का वर्णन (सङ्केत द्वारा) किया. इसकी पहचान मेरे अतिरिक्त अन्य किसीको नहीं है.

**कुंजी दई मुझ को, और मेरे सिर खिताब ।  
सास्त्र चौदे तबक के, सब मैं ही खोलों किताब ॥ ८**

आपने मुझे अखण्ड तारतम ज्ञानकी कुञ्जी दे दी और विजयाभिनन्द निष्कलङ्क बुद्धकी उपाधि प्रदान की. पुनः तारतम ज्ञानके द्वारा शास्त्र, पुराण और चौदह लोकोंके ग्रन्थोंका गूढ़ार्थ उद्घाटित (प्रकट) करनेका दायित्व भी मुझे ही दिया.

**राह देखाऊं सबन को, ऐसो बल दियो खसम ।  
सबको फना से बचाए के, लगाए तुमारे कदम ॥ ९**

आपने मुझे ऐसा बल दिया कि जिसके द्वारा मैं सबको सत्य धर्मका मार्ग दिखा सकूँ और सबको नश्वरमार्ग (फना) से बचाकर आपके चरणकमलोंमें पहुँचा सकूँ.

**खेल बनाया मेरे वास्ते, मोहे भेज के आए आप ।  
पट खोल इलम समझाइया, मोसों नीके कियो मिलाप ॥ १०**

आपने मेरे लिए ही यह झूठा खेल रचाकर मुझे भेजा. (पश्चात्) सद्गुरुके रूपमें आपने यहाँ आकर मेरे अज्ञानका परदा हटा दिया तथा मुझे दर्शन देकर दिव्य ज्ञान दिया.

**बका न चौदे तबक में, न पाया त्रैलोकी त्रैगुन ।  
सेहेरगसे नजीक देखाइया, ऐसा इत इलमें किया रोसन ॥ ११**

अखण्ड परमधामका ज्ञान चौदह लोकके जीवों एवं त्रिदेवोंको भी नहीं था. आपने उसे प्राणनलीसे भी निकट बताकर इस नश्वर संसारमें परमधामके दिव्य ज्ञानको प्रकाशित किया.

**ऐसा बेसक चौदे तबक में, कोई न हुआ कबूँ कित ।  
इन नुकते सब बेसक हुए, ऐसी बेसकी आई इत ॥ १२**

चौदह लोकमें आज तक कोई भी सन्देहसे मुक्त होकर दिव्य ज्ञान प्राप्त नहीं



कर सका. आपके तारतम ज्ञानकी एक बूँद द्वारा यहाँ सभी लोग शङ्कामुक्त हो गए हैं. आपकी कृपासे यहाँ ऐसी निःसन्देहता आ गई है.

**ए भी बडाई मुझेको दई, जो सबों देख्या नूर पार ।**

**सबों सेहेरगसे नजीक, कुंजिएं देखाया निरधार ॥ १३**

आपने मुझे ऐसी महत्ता प्रदान की कि मेरे द्वारा संसारके सभी लोगोंने अक्षरके पार अक्षरातीतको देखा. सभीने यह अनुभव किया कि परमात्मा हृदयकी नाड़ीसे भी अति निकट हैं. वस्तुतः इस तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जीने ही ऐसा दिखाया है.

**ए दिलकी बातें कासों कहूं, रूह की जानो सब ।**

**बोलन की कछू ना रही, जो कहो सो करूं मैं अब ॥ १४**

मेरे हृदयकी ये सब बातें मैं किससे करूँ ? आप तो अन्तर्यामी हैं, सभी बातें जानते हैं. इसलिए आपके समक्ष कुछ भी कहना उचित नहीं है. इसलिए अब आपका जैसा आदेश होगा, उसीके अनुसार मैं कार्य करूँगा.

**मोहे करी सबों ऊपर, ऐसी ना करी दूजी कोए ।**

**अजूं रूह माग्या चाहे, ए तुम कैसी बनाई सोए ॥ १५**

मुझे सुन्दरसाथके बीचमें अग्रणी बनाकर आपने सर्वाधिक महत्त्व दिया. इस प्रकारकी प्रतिष्ठा आपने और किसीको भी नहीं दी, तथापि मेरी आत्मा और भी कुछ माँगना चाहती है. आपने यह कैसा विचित्र खेल बनाया ?

**बैठाई आप जैसी कर, सो खोल देखाई नजर ।**

**अजूं मागत मेरे धनी, और ऐसे तुम कादर ॥ १६**

आपने मुझे महत्त्व देकर अपने समान ही प्रतिष्ठित किया. मेरी आत्मदृष्टि खोलकर पच्चीस पक्ष परमधामके दर्शन करवाए तथापि मैं आपसे और (मिलनका सुख) माँग रहा हूँ. मेरी सम्पूर्ण इच्छाओंको पूर्ण करनेमें आप ही समर्थ हैं.

**जो तुम बडे करे खेल में, ताकी दुनी करे सिफत ।**

**सो बडे गिरो के पांउकी, खाक भी न पावत ॥ १७**

आपने जिन देवताओं (ब्रह्मा, विष्णु और महेश) को सांसारिक जीवोंके

लिए बड़ा (पूज्य) बनाया, अब सारी दुनियाँ उनकी महिमा गाती है। इतने बड़े ये देव भी ब्रह्मात्माओंकी चरणरजको पा नहीं सकते।

तिन गिरोमें सिरदारी, ते मुझे दर्ई मेरे खसम ।

ऐसी बडी करी मोहे खेल में, अब इत उरझ रह्या मेरा दम ॥ १८

ऐसी महान ब्रह्मसृष्टियोंका शिरोमणि बनाकर आपने मुझे अत्यधिक महत्त्व दिया। इस खेलेमें आपने मुझे इतना सम्मान दिया कि उसके कारण मेरा श्वास इसीमें उलझ रहा है।

दुनी सिफत पोहोंचे मलकूत लों, सो फिरस्ते खाक भी पावत नाहें ।

तिन गिरो में बुजरक, मोहे ऐसी करी खेल माहें ॥ १९

संसारके जीवोंकी प्रार्थना (पूजा) मात्र वैकुण्ठ तक ही पहुँचाती है। वहाँ रहने वाले देवता भी ब्रह्माङ्गनाओंकी चरण रज पा नहीं सकते। ऐसी ब्रह्मात्माओंमें श्रेष्ठ बनाकर आपने मुझे इस खेलमें ऐसा महत्त्व प्रदान किया।

मैं भटकी बीच दुनी के, घर घर मांगी भीख ।

लौकिक दर्ई मोहे साहेबी, अंतर में अपनी सरीख ॥ २०

लौकिक दृष्टिसे देखें तो मैं इस संसारमें भटकता रहा। घर-घर जाकर भीख माँगी। परन्तु आपने सारे संसारकी दृष्टिमें गौरव देकर बहुत ही ऊँचा चढ़ाया तथा आन्तरिक दृष्टिसे देखें तो आपने मुझे अपने समान बना दिया।

नर नारी बूढा बालक, जिन इलम लिया मेरा बुझ ।

तिन साहेब कर पूजिया, अरस का एही गुझ ॥ २१

इस संसारके स्त्री-पुरुष, बालक और वृद्ध जिसने भी अन्तरसे मेरे तारतम ज्ञानको ग्रहण किया है, उन सबने मुझे आपके समान पूज्य मानकर सम्मानित किया। वस्तुतः ब्रह्मसृष्टिको ब्रह्मस्वरूप मान लेना ही परमधामका गूढ़ रहस्य है।

जब हकें मोहे इलम दिया, तब मोसों कही निसबत ।

सो निसबत बका हक की, ताकी होए ना इत सिफत ॥ २२

सद्गुरुने जब मुझे दिव्य तारतम ज्ञान दिया, तभी मूल सम्बन्धकी बातें भी

समझाई. अक्षरातीत परब्रह्मके साथ के उस सम्बन्धकी प्रशंसा यहाँकी झूठी रसनासे नहीं हो सकती.

**जिन बंदगी मेरी करी, लिया निसबत हिसा तिन ।**

**पाँउ खाक मागी बुजरकों, ए सोई फकीर मोमिन ॥ २३**

इसलिए जिन्होंने पहचानकर मेरी प्रार्थना की, वे सब परमधामके मूल सम्बन्धके सहभागी हुए. इस संसारके महान देवोंने भी जिनकी चरण रज माँगी थी, ये (सन्त-महात्मा) वे ही ब्रह्मसृष्टि हैं.

**ए बुध ना चौदे तबकमें, सो अपनी दई अकल ।**

**समझी सब मैं अरस की, जो सिफत तेरी असल ॥ २४**

जो बुद्धि चौदह लोकके प्राणियोंमें नहीं थी, ऐसी बुद्धि आपने मुझे प्रदान की, जिससे मैं परमधाम और आपकी महिमाको समझ सका.

**मैं बातून तुमारी समझी, तुम अपना दिया इलम ।**

**अब इत केहेना कछू ना रह्या, होसी अरस में आगूं खसम ॥ २५**

हे धनी ! आपने मुझे जो दिव्य तारतम ज्ञान दिया, उसके द्वारा मैं धर्मके गूढ़ रहस्योंको समझ सका. अब यहाँ मुझे कुछ भी कहना नहीं है. अब तो शेष बातें अखण्ड परमधाममें ही धनीजीके साथ होंगी.

**ऐसी बडाई केती कहूं, जो करी अलेखें अपार ।**

**सो नेक कही मैं गिरो समझने, समझेगी रूह सिरदार ॥ २६**

इस प्रकारकी महिमा कहाँ तक कहूँ. आपने तो ऐसी अपार महत्ता प्रदान की है. ब्रह्मात्माएँ समझ लें, ऐसा समझकर मैंने उनमें-से तनिकसी चर्चा की है. वस्तुतः शिरोमणि ब्रह्मात्माएँ ही यह समझेंगी.

**महामत कहे मेहेबूब जी, मोहे खेल देखाया बुजरक ।**

**करो मीठी बातें मुझसों, मेरे मीठे खसम हक ॥ २७**

महामति कहते हैं, हे प्रियतम धनी ! आपने मुझे इस संसारका श्रेष्ठ खेल दिखाया है. हे मेरे मधुर प्रियतम धनी ! आप मेरे साथ मीठी बातें करें.

**प्रकरण १०९ चौपाई १६४८**

कारी कामरी रे, मोकों प्यारी लागी तूं ।

सब सिनगार को सोभा देवे, मेरा दिल बांध्या तुझसों ॥ १

महामति कहते हैं, दिव्य प्रेमके प्रतीक हे काली कामरी ! तू मुझे अति प्रिय है, क्योंकि पियाजीके सम्पूर्ण शृङ्गारकी पूर्ति तेरे द्वारा ही होती है. इसलिए मेरा हृदय तुझसे बँध गया है.

तूं नाम निरगुन कहावहीं, सब सरगुन के सिरे ।

सब नंग मोती तेरे तले, कोई नहीं तुझ परे ॥ २

तू निर्गुणके रूपमें जानी जाती है, परन्तु तू तो सब गुणोंकी शिरोमणि है. संसारके हीरे, मोती, रत्न, जवाहरात आदि तेरे आगे कोई महत्व नहीं रखते. इस संसारमें तुझसे अधिक शोभायमान अन्य कोई वस्तु नहीं है.

कामरी पेहेरी ब्रजवधू, और सुंदरवर स्याम ।

भी पेहेरी महंमद ने, और पेहेरी इमाम ॥ ३

इस दिव्य कामरीको ब्रजमें श्रीकृष्णजीके साथ रहनेवाली गोपिकाओंने तथा सुन्दरवर श्याम श्रीकृष्णजीने धारण किया. पुनः इसे हजरत महम्मद पैगम्बरने और अन्तमे सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी (इमाम) ने धारण किया.

मोल नहीं इन कामरी को, याको ले न सके कोए ।

मोमिन कहे सो लेवहीं, जो रूह अरस की होए ॥ ४

इस कामरीका मूल्य आँका नहीं जा सकता परन्तु इसे कोई भी धनवान व्यक्ति खरीद नहीं सकता. इसे तो मात्र परमधामकी ब्रह्मात्माएँ ही धारण कर सकती हैं.

गोवरधन को ढांपिया, एक बूंद न हुआ दखल ।

आग लोहा पानी प्रले के, सोंस लिया सब जल ॥ ५

श्याम सुन्दरकी इस कामरीने गोवर्धन पर्वतको भी ढँक दिया, जिसके कारण अतिवृष्टि होनेपर भी वर्षाकी एक भी बूँद ब्रजमें प्रवेश न कर सकी. प्रलयके

लिए इन्द्रने अग्नि, लोहा, पानी आदिकी वर्षा की, तथापि काली कामरीके प्रेमाने सारा का सारा जल सोख लिया.

**अहीरों किए धन धन, और आरब कुरेस ।**

**मारू भी धन धन हुई, सोई हमारा भेस ॥ ६**

ब्रजमें रहनेवाले अहीरोंके बीच प्रकट होकर काली कामरी वाले श्रीकृष्णजीने उन्हें धन्य बनाया. अरबस्तानमें कुरेशी जातिमें प्रकट होकर हजरत मुहम्मद साहबने काली कामरी रूपी प्रेम ग्रहण करके अरबस्तानके कुरेशियोंको धन्य किया. मारवाड़ देशके उमरकोटमें प्रकट होकर काली कामरी रूपी प्रेम द्वारा धनी श्रीदेवचन्द्रजीने मारवाड़को धन्य किया. मैं भी प्रेम स्वरूपा उस काली कामरीका वेश धारण कर धन्य हो गया.

**रूहअल्ला पेहेरी अंदर, हुई नहीं जाहेर ।**

**दुनियां हिरदे अंधली, सो देखे नजर बाहेर ॥ ७**

सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीने इस दिव्य प्रेमको अपने हृदयमें धारण किया एवं ब्रह्मात्माओंके लिए ही उसे प्रकट किया इसलिए वह सर्वत्र प्रकट नहीं हो पाया. संसारके प्राणी हृदयके अन्धे होने से केवल बाह्य दृष्टिसे ही देखते हैं, उन्हें आन्तरिक प्रेमकी समझ नहीं होती.

**पट पेहेरे खाए चिकना, हेम जवेर सिनगार ।**

**हक लज्जत आई मोमिनो, तिन दुनी करी मुरदार ॥ ८**

संसारके लोग रेशमी वस्त्रोंको धारण करनेमें, मिष्ठान्न खानेमें, हीरा-मोती और जवाहरातसे जड़ित आभूषणोंके परिधानमें तथा मायावी सुखोंमें डूबे हुए हैं. किन्तु ब्रह्मात्माएँ तो प्रियतम परमात्माका स्वाद प्राप्त करनेके बाद सांसारिक सुखोंको मृतकके समान त्याज्य मानती हैं.

**सोहाग दिया साहेब ने, कामरी सोहागिन ।**

**आगूं बोले बुजरक, सराही साधू जन ॥ ९**

सुन्दरवर श्यामने अपनी सौभाग्यशालिनी आत्माओंको प्रेमकी काली कामरी ओढ़ाकर इस संसारमें अखण्ड सुख दिया है. इसलिए तो साधु महात्माओंने

पहलेसे ही प्रेमरूपी इस काली कामरीकी प्रशंसा की है.

हमारे ताले मिने, लिखे अल्ला कलाम ।

महामत कहे सब दुनी को, प्यारी होसी तमाम ॥ १०

महामति कहते हैं, हमारे भाग्यमें पूर्णब्रह्म परमात्माके प्रेमरूपी वचन लिखे हुए हैं. अब वे वचन संसारके सभी लोगोंको प्रिय लगेंगे.

प्रकरण ११० चौपाई १६५८

राग श्री

फरेबी लिए जाए, मेरी रूह तूं आंखें खोल ।

बीच बका के बैठके, ते किनसों किया कोल ॥ १

हे मेरी आत्मा ! यह कपटपूर्ण माया तुम्हें भुला कर सत्य मार्गसे दूर ले जा रही है. इसलिए तुम आँखें खोलकर देखो. अखण्ड परमधामके मूलमिलावामें बैठकर तुमने किसके साथ क्या प्रतिज्ञा की थी ?

अरस की खिलवतमें, हक की वाहेदत ।

बैठ बातें जो करी, सो कहां गई मारफत ॥ २

परमधाममें धनीजीके अद्वैत मूलमिलावाके एकान्तस्थानमें बैठकर तुमने जो बातें की थीं, उन बातोंकी पूर्ण पहचान अब कहाँ गई ? अर्थात् क्या उन बातोंको भूल गई ?

हकें कहा रूहन को, जिन तुम जाओ भूल ।

इसक ईमान ल्याइयो, मैं भेजोंगा रसूल ॥ ३

श्रीराजजीने ब्रह्मात्माओंसे कहा कि संसारके माया जालमें फँसकर मुझे मत भूलना. जब मैं अपना संदेश देकर संदेशवाहक (रसूल) को भेजूँगा, तब उस पर प्रेम, श्रद्धा और विश्वास रखना.

उतरते अरवाहों सों, कहा अलस्तो बेरब्बकुम ।

मैं लिखूंगा रमूजें, सो जिन भूलो तुम ॥ ४

परमधामसे इस संसारमें आते समय श्रीराजजीने ब्रह्मांगनाओंको पूछा, क्या

मैं तुम्हारा स्वामी नहीं हूँ ? उन्होंने पुनः कहा मैं इस प्रेम सम्वादको सङ्केत रूपसे लिखकर भेजूँगा जिससे खेलमें भी तुम मुझे भूल न सको।

साहेद किए हैं सब को, जेती अरस अरवाए ।

आप भी हुए साहेद, अपनी आप जुबांए ॥ ५

इस प्रकार प्रियतम धनीने सभी ब्रह्माङ्गनाओंको अपने प्रेम वचनोंकी साक्षी बना दिया। पश्चात् अपने प्रेम वचनोंकी साक्षी स्वमुखसे देकर वे स्वयं भी साक्षी बन गए।

मैं भेजी रूह अपनी, सब दिलकी बातें ले ।

तुमें अजू याद न आवहीं, हाए हाए कैसी फरेबी ए ॥ ६

श्रीराजजीने कहा- हे ब्रह्माङ्गनाओ ! मैंने अपने वचनोंको पालनेके लिए मेरी अंग स्वरूपा श्रीश्यामाजीको मेरे हृदयकी सम्पूर्ण बातें लेकर श्रीदेवचन्द्रजीके रूपमें भेजा है। तथापि तुम्हें वह वचन (प्रतिज्ञा) याद नहीं आया। हाय ! यह संसार कैसा भुलवनीका खेल है।

सब बातें मेरे दिल की, और सब रूहों के दिल ।

सो सब भेजी तुम को, जो करियां आपन मिल ॥ ७

मैंने अपने दिलकी तथा आत्माओंके दिलकी सभी रहस्यपूर्ण बातें भेजी थीं। इसके साथ ही परमधाममें हमने मिलकर जो बातें की थीं, वे सब भी तुम्हें भेजी थीं।

फुरमान ल्याए महंमद, किन खोली न इसारत ।

तब रूहें आई न थीं, पीछे फेर करी सरत ॥ ८

रसूल मुहम्मद वह सन्देश लेकर आए, परन्तु उसके गूढ़ रहस्योंको कोई खोल न सका। उस समय संसारमें ब्रह्माङ्गनाओंका अवतरण नहीं हुआ था, इसलिए मुहम्मदने पुनः आनेका वचन दिया।

कहें महंमद मसी आवसी, ले कुंजी लाहूत से ।

एक दीन सब करसी, सब कायम होसी कुंजिए । ९

रसूल मुहम्मदने कहा, मेरे पश्चात् आत्मजाग्रति (क्यामत) के समय रूहअल्ला

(धनी श्रीदेवचन्द्रजी) अखण्ड ज्ञानकी कुञ्जी लेकर परमधाम (लाहूत) से इस संसारमें आएँगे. तारतम ज्ञानकी कुञ्जीद्वारा वे संसारके लोगोंको एक धर्ममें लाकर अखण्ड मुक्ति देंगे.

बका ऊपर बंदगी, करावसी इमाम ।  
हक गिरो हम आए के, करें कजा तमाम ॥ १०

तब सद्गुरु (इमाम) सभी जीवोंको एक परमात्माकी उपासना (बन्दगी) करवाएँगे. तत्पश्चात् परमात्मा ब्रह्मात्माओं सहित हमारे साथ आकर सभी जीवोंको न्याय देंगे.

आगूं आए जाहेर किया, आवने को ईमान ।  
खासी गिरों के वास्ते, कै कहे निसान ॥ ११

रसूल मुहम्मदने आकर पहलेसे ही सूचना इसलिए दी कि उपयुक्त समयपर सबको विश्वास हो. ब्रह्मात्माओंके लिए कुरानमें ऐसे अनेक संकेत (निशान) बताए गए हैं.

ए बातें सब अरस की, जब याद आवे तुम ।  
तब इसक तुमें आवसी, उड जासी तिलसम ॥ १२

जब तुम्हें परमधामकी ये सभी बातें याद आएँगी, तभी तुम्हारे हृदयमें धनीजीके प्रति प्रेम उत्पन्न होगा. पश्चात् नाशवान संसारका ऐन्द्रजालिक भ्रम भी दूर हो जाएगा.

कौन है तेरा मासूक, किनसों है निसबत ।  
देख अपना वतन, अब तूं आई कित ॥ १३

जरा विचार तो करो तुम्हारे प्रियतम धनी कौन हैं, किसके साथ तुम्हारा मूल सम्बन्ध है, तुम कहाँसे आए हो ? इन बातोंको सोच समझकर अपने मूल वतन परमधामकी ओर देखो.

हकें रूहों को दर्ई, अपनी जो न्यामत ।  
इन नासूतें भुलाए दर्ई, हक की हकीकत ॥ १४

प्रियतम धनीने कृपा कर अपने अखण्ड ज्ञानकी पूँजी तुम्हें दी है. किन्तु



इस झूठे नाशवान संसारने तुम्हें मायामें फँसाकर प्रियतम धनीकी यथार्थताको भुला दिया है।

मूल मिलावा खिलवत का, अजुं न आवे याद ।

ए झूठी जिमी जो दोजक, इत कहा लग्यो तोहे स्वाद ॥ १५

अब भी तुम्हें अखण्ड परमधामकी अन्तरंग बैठक एकान्त घर मूलमिलावाकी याद नहीं आ रही है, नरकके समान इस संसारमें तुम्हें कैसा स्वाद आ रहा है ?

मासूके इत आए के, कैसा दिया इलम ।

सक तोहे कोई ना रही, अजुं याद न आवे खसम ॥ १६

प्रियतम धनीने सद्गुरुके रूपमें यहाँ आकर हमें कैसा दिव्यज्ञान दिया, जिससे तुम्हारे मनमें किसी भी प्रकारकी शंका शेष नहीं रही, तथापि अभी तक तुम्हें प्रियतम धनीका स्मरण नहीं आता।

महामत कहें ए मोमिनो, ऐसी क्यों चाहिए रूहन ।

ए मेहेर देखो मेहेबूब की, अरस जिनों वतन ॥ १७

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! परमधामकी आत्माओंके लिए इस प्रकारका व्यवहार शोभा नहीं देता, जरा धामधनीकी इस कृपाको तो देखो।

प्रकरण १११ चौपाई १६७५

राग सिंधूडो

सरूप सुन्दर सनकूल सकोमल, रूह देख नैना खोल नूर जमाल ।

फेर फेर मेहेबूब आवत हिरदे, किया किनने तेरा कौल फैल ए हाल ॥ १

श्रीराजजीका स्वरूप अति सुन्दर, प्रफुल्लित, अतिकोमल, दिव्य प्रकाशयुक्त है। हे मेरी आत्मा ! तू अपनी आँखें खोलकर ऐसे तेजोमय स्वरूपको देख। ऐसे प्यारे धनीका स्मरण हृदयमें बार बार होता है। हे आत्मा ! तू विचार कर कि तेरे वचन, कर्म (चलन) और मनस्थितिको इतने महान किसने बनाया ?

जामा जडाव जुड्या अंग जुगतेँ, चार हारों करी अंबर झलकार ।

जगमगे पाग ए जोत जवेर ज्यों, मीठे मुख नैनों पर जाऊं बलिहार ॥ २

श्रीराजजीका रत्नजड़ित जामा (वस्त्र) उनके अङ्गों पर युक्तिपूर्वक शोभायमान हो रहा है। गलेमें धारण किए हुए सुन्दर (चारु) हारोंके नगोंकी आभा आकाश तक अपना प्रकाश फैला कर झिल-मिला रही है। धनीजीके मस्तकपर धारण की हुई पगड़ी जवाहरातोंकी भाँति चमक रही है। उनके मधुर मुखकमल तथा मोहक नयनों पर मैं वारंवार समर्पित हूँ।

लाल अधुर हंसत मुख हरवटी, नासिका तिलक निलवट भौहें केस ।

श्रवन भूषन मुख दंत मीठी रसना, ए देख दरसन आवे जोस आवेस ॥ ३

श्रीराजजीके लाल अधरोंका मधुर हास्य और सुन्दर ठोड़ी, नासिकासे ललाट तक खींचे हुए तिलककी शोभा, सुन्दर भौहें, घुंघराले बाल, कानके आभूषण तथा मुखारविन्द एवं दन्तावलीकी शोभा, मधुरवाणी उच्चारित करनेवाली जिह्वा आदिके दर्शनसे आत्मामें प्रेमका उन्माद, जोश और आवेश उत्पन्न होते हैं।

बाहें चूडी बाजू बंध सोहें फुमक, पोहोंची कांडों कडी हस्त कमल मुंदरी ।

नखका नूर चीर चढ्या आसमानमें, ज्यों हक चलवन करें सब अंगुरी ॥ ४

चुन्नट तथा भुजाओं पर बँधे हुए बाजूबन्ध एवं उसके लटकते हुए फुन्दन, कलाई पर पहना हुआ कड़ा तथा उसके साथ बँधी हुई पलोंची एवं उँगलियों पर शोभायमान अङ्गुठियाँ अवर्णनीय हैं। जब धनीजी अपने हस्तकमलको हिलाते हैं तब उनकी उँगलियोंके नाखूनसे निकली हुई ज्योतिर्मय किरणें मानों आकाशको बींधकर आगे बढ़ती हैं।

रोसनी पटुकेँ करी अवकासमें, चरन भूषन जामें इजार झांई ।

कहे महामत मोमन रूह दिलको, मासूक खँचें तोहे अरस माहीं ॥ ५

श्रीराजजीके कमरबन्ध (पटुकी) का प्रकाश एवं चरण कमलोंके आभूषण तथा जामा एवं पाजामेकी किरणें परस्पर मिलकर झिलमिलाहट करती हुई आकाशको प्रकाशित करती है। महामति कहते हैं, प्रियतम धनी इस शोभाके

द्वारा ब्रह्माङ्गनाओंके हृदयको परमधामकी ओर आकर्षित करते हैं।

### प्रकरण ११२ चौपाई १६८०

चतुर चौकस चेतन अति चोपसों, कूवत कर सब अंग कमर कसे ।

सुंदर सेज्या सनकूल तन रूह रची, मासूक दिल मोमिन मोहोल माहें बसे ॥ १

श्रीराजजीका स्वरूप चतुर, एकाग्र (चौकस) चेतन तथा अतीव प्रेमयुक्त है। वे अपनी सम्पूर्ण शक्तियोंसे सर्वदा सुसज्जित हैं। ऐसे प्रियतम धनी अपनी ब्रह्माङ्गनाओंके प्रसन्न हृदयधाममें अपनी सुखशय्या बनाकर विराजमान होते हैं।

मन तन जोवन चढता नौतन, आया अमरद आसक इसक गंज ले ।

अधुर अमृत मुख दंत रसना रस, नित नए सुंदर सब देखें चढते ॥ २

ब्रह्माङ्गनाओंके हृदयमन्दिरमें किशोरस्वरूप श्रीराजजी नित्य नूतन तथा प्रतिपल बढ़ते हुए यौवनसे भरा हुआ प्रेमका भण्डार लेकर विराजमान हैं। उनके होठोंसे छलकता हुआ अमृत, मुख कमलकी शोभाको बढ़ाने वाली सुन्दर दन्तावली और मधुर रसपूर्ण रसना नित्य नवीन स्वरूपमें दिखाई देती हैं।

निलवट बंके नैन नासिका श्रवन, कौल फैल हाल नित नवले देखाए ।

रूह भी रंग रस चंचल चपल गत, मोहन मोही मोहनी मह हो जाए ॥ ३

सुन्दर ललाट, नुकिले नयन, नासिका और श्रवणका सौन्दर्य एवं उनके वचन, चर्या (चलना) और मनःस्थिति नित्य नवीन दिखाई देती हैं। प्रेम रङ्गोंमें रङ्गकर चञ्चल तथा चपल बनी हुई मोहनी आत्मा मनमोहन प्रियतमके प्रेममें मोहित (एकरस) हो जाती है।

भाषती महामति अरस रूहें उमती, पूरन कर प्रीत प्रेमें पोहोंचाई ।

अरस वाहेदत खिलवत खसमकी, हुजत निसबत लिए इत आई ॥ ४

महामति कहते हैं, परमधामकी आत्माओंके साथ इस संसारमें भी पूर्ण प्रेम प्रदान कर धामधनीने उन्हें प्रेमपूर्वक दिव्य परमधाम पहुँचाया। अद्वैत परमधामके एकान्त स्थान (मूल-मिलावा) में बैठी हुई ये आत्माएँ अपने

धनीके सम्बन्धका अधिकार (दावा) लेकर इस संसारमें (सुरता रूपसे) आई हुई हैं।

### प्रकरण ११३ चौपाई १६८४

नूरको रूप सरूप अनूप है, नूर नैना निलवट नासिका नूर ।

नूर श्रवन गाल लाल नूर झलकत, नूर मुख हरवटी नूर अधूर ॥ १

प्रियतम धनीके तेजोमय स्वरूपकी शोभा ही अनुपम है। उनके तेजस्वी नेत्र, आभापूर्ण ललाट और प्रकाशयुक्त नासिका भी अनुपम हैं। उनके कानोंका तेज, गालों पर छाई हुई तेजोमयी लालिमा देदीप्यमान मुखारविन्द, सुन्दर चिबुक तथा अधरकी दिव्य शोभा चमक रही है।

नूर मुख चौक माडनी अति नूर में, नूर वस्तर नूर भूषण जहूर ।

नूर जोवन रोसन नूर नौतन, नूर सब अंग उदोत नूर पूर ॥ २

सुन्दरवरके प्रकाशमान मुखमण्डलकी शोभा तेजसे देदीप्यमान है। उनके वस्त्राभूषणकी शोभा सर्वत्र प्रकाशित हो रही है। नित्य नवीन तथा ओजपूर्ण यौवनकी कान्तिसे उनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग इस प्रकार जाज्वल्यमान हैं कि मानों प्रकाशकी लहरें लहरा रहीं हों।

नूर चरन कमल नूर हस्तक, नूर सोभा सबे नूर सिनगार ।

नूर सिर पाग नूर कलंगी दुगदुगी, नूर हिए हार नूर गंज अंबार ॥ ३

उनके पवित्र चरणारविन्द तथा हस्तकमल अत्यन्त तेजोमय हैं। उनकी सम्पूर्ण शोभा एवं शृङ्गार भी तेजोमय हैं। उनके मस्तक पर पगड़ी, कलंगी (शिरोभूषण) एवं दुगदुगी [शिरोभूषण (मुकुट) पर जड़ायमान हीरे] भी प्रकाशमान होकर झलक रही हैं। धनीजीके वक्षस्थलपर सुशोभित हार भी तेज-पुञ्जकी भाँति झिलमिला रहे हैं।

नूर हक सहूर मजकूर नूर महामत, नूर ऊग्या बका नूर का सूर ।

सब नूर रूहे नूर हादी नूर में, नूर नूर में खँच लई हकें हजूर ॥ ४

महामतिने (दिव्य तारतम ज्ञानकी) समझ प्राप्त कर तेजोमय परब्रह्म परमात्माकी बातें कही है एवं दिव्य तेजोमय परमधामका अखण्ड तारतम

ज्ञानरूपी सूर्य उदय हुआ है। तेजोमय परमधाममें श्यामाजी एवं सभी ब्रह्माङ्गनाएँ भी तेजोमय हैं। धामधनीने अपने तेज स्वरूप ब्रह्मसृष्टिको देदीप्यमान परमधाममें अपने निकट बुला लिया।

### प्रकरण ११४ चौपाई १६८८

हुब मेहेबूब की आसक प्यास ले, चाहे साफ सराब सुराही सका ।

पीवते पीवते पीउके प्यालेसों, हुई हाल में लाल पी मस्त बका ॥ १

प्रियतम धनीके प्रेमकी प्यासी प्रियतमा-ब्रह्मात्माएँ, श्रीराजजी (साकी) के हाथोंसे प्रेम भरी मस्ती (मदिरा) का आस्वादन करना चाहती है। पियाके प्रेमरूपी मदिराके प्यालेको पीते-पीते उनके अखण्ड प्रेममें तद्रूप होती हुई ब्रह्मात्माएँ उन्हींके मस्तीमें मस्त होकर लाल हो गई हैं।

दिल परस सरस भयो अरस इलाही, दोऊ चूभ रहे दिलसों दिलमिल ।

न्यारी ना होए प्यारी आपमारी, चल विचल ना होए वाहेदत असल ॥ २

प्रियतम परमात्माके हृदयका मधुर स्पर्श होते ही मेरा हृदय उनका धाम बन गया जिससे मेरा हृदय उनके हृदयके साथ मिलकर एकाकार हो गया। अहं भावको मिटाकर स्वयंको समर्पित करने वाली ब्रह्मात्मा अपने धनीसे कभी भी पृथक् नहीं रह सकती तथा उनका अद्वैत भाव कभी भी विचलित नहीं हो सकता।

लगी सो लगी आतम अंदर लगी, यों अंतर आतम जगी जुदी न होए ।

सरभर भई पर आतम योंकर, यों तेहे दिली मिली छोड सके न कोए ॥ ३

अब ब्रह्माङ्गनाओंकी लगन (प्रेमभाव) उनकी अन्तर आत्मा तक पहुँच गई है, इसके कारण उनकी प्रसुप्त आत्मा जागृत हो गई है। अब वह धामधनीसे कदापि पृथक् न हो सकेगी। इस प्रकार ब्रह्माङ्गनाएँ अपनी पर आत्माके साथ ओत-प्रोत हो गई हैं। वे इतनी एकरस (जागृत) हो गई हैं कि अब पलमात्रके लिए भी कोई उन्हें छुड़ा नहीं सकेगा।

महामत दम कदम न छूटे इन खसम के, हुआ मोहेल मासूक का मेरे दिल माही  
एक अव्वल बीच आई सो एक हुई, आखर एक का एक मोहेल बीच और नाही ॥४

महामति कहते हैं, अब प्रियतम धनीके चरणकमल मेरे हृदयसे एक क्षण भी

पृथक् नहीं हो पाएँगे. क्योंकि मेरा हृदय प्रियतम धनी (माशूक) का धाम बन गया है. परमधाममें हम एक ही थे, बीचमें सुरताके रूपमें खेलमें आकर भिन्न-से प्रतीत हुए, पश्चात् जागृत होकर एक हो गए हैं. अन्ततः दिव्य परमधाममें जागृत होने पर अद्वैत ही होंगे, वहाँ पर द्वैत भाव है ही नहीं.

### प्रकरण ११५ चौपाई १६९२

नूर नगन चेतन भूषण रचे, अंग संग देखे सब चढते रोसन ।

यों खैच खडी करी इलम खसमके, लई जोस फरामोस से होस वतन ॥ १

धनीजीके श्रृङ्गारके लिए दिव्य नगोंसे बने हुए आभूषण चेतनासे परिपूर्ण हैं. श्री राजजीके अङ्गोंमें सुशोभित होनेसे इनकी शोभा अधिक हो रही है. इसी प्रकार धनीजीके अखण्ड ज्ञान (तारतम) ने आत्माको जागृत कर धनीजीके सन्मुख खड़ा कर दिया है. धनीजीने जोश द्वारा आत्माको फरामोसी-मायासे खींचकर बेसुधिकी अवस्थासे सुधिमें लाकर परमधामकी पहचान करा दी है.

सब अंग आसकके इसकसों रस बसे, बढत बढत बीच आए बका ।

यों आई उमत इसक भरी अरस में, पीवे साफ सराब सुराही साईं हाथ सका ॥ २

प्रेमी आत्माओंके सभी अङ्ग श्रीराजजीके प्रेमरसमें सराबोर हो गए. प्रेम रस इतना बढ़ गया कि ब्रह्मात्माएँ अन्ततः अद्वैत परमधाम पहुँच गईं. इस प्रकार प्रियतम धनीके प्रेममें मस्त ब्रह्मात्माएँ दिव्य परमधाममें आ गईं और प्रियतम धनी (साकी) के पावन हाथोंसे उनके दिव्य प्रेमका पान करने लगीं.

हकें अब लिए फेर अंधेर से इन बेर, रूहें मोमिन पोहोचियां अरस माहें तन ।

व्रज रास जागनी तीनों सुख देयके, मोमिन तन किए धन धन ॥ ३

प्रियतम धनीने इस बार ब्रह्माङ्गनाओंको अज्ञानान्धकारसे निकाल लिया जिससे ब्रह्मात्माएँ जागृत होकर दिव्य परमधामके पर आत्मा स्वरूपमें पहुँच गईं. इस प्रकार धामधनीने व्रज रास और जागनी इन तीनों ब्रह्माण्डोंके सुखोंका अनुभव कराकर ब्रह्माङ्गनाओंके तनको भी धन्य बना दिया.

भनत महामति हक दिल मारफत की, पोहोंचाई इन न्यामतें उमत खिलवत ।  
 क्यों कहूं सिफत बरकत वाहेदतकी, लज्जत आई इमामत कयामत ॥ ४

महामति धामधनीके दिलके रहस्यकी बातें करते हैं कि इस तारतम ज्ञानने ब्रह्मात्माओंको परमधाम मूलमिलावाका अनुभव करवाया. परमधामके अद्वैत भावके महत्त्वकी क्या प्रशंसा करें ? जिसके कारण इस संसारमें भी आत्म-जागृतिके अखण्ड आनन्दका अनुभव हुआ.

### प्रकरण ११६ चौपाई १६९६

मिली मासूक के मोहोल में माननी, आसक अंग न माहें अंग ।  
 जानूं जामनी बीच जुदी हुती हक जातसों, पेहेचान हुई प्रात हुए पीउ संग ॥ १

इस प्रकार ब्रह्मसृष्टि प्रियतम धनीके रङ्गमहलमें जाकर उनके साथ एकरस हो गई. इस मिलनका आनन्द उसके अङ्गमें नहीं समाता है. मानों रात्रिके समय प्रियतमसे विछुड़ी प्रियतमा प्रातः होते ही प्रियतमको पहचानकर उसमें एकाकार हो गई हो.

मन सुकन तन भए सब एकै, एकै जात सिफात सब बात ।  
 एकै अंग संग रंग सब एकै, सब एक मता अरस बका बिसात ॥ २

आनन्दमें एकरस होकर प्रियतम और प्रियतमाके तन, मन और वचन एक हो गए. दोनोंका स्वरूप, विशेषता और बातें भी एक समान हो गई. उनके पारस्परिक रङ्ग, सङ्ग और अङ्ग अद्वैत रूप धारण कर एकरस बन गए. उनके प्रेम, प्यार और आनन्द भी एकाकार हो गए. इतना ही नहीं अखण्ड परमधामकी यावत् सम्पदा भी धनीजीमें एकाकार हो जाती है.

नाहीं जुदा कांहीं जांही अरस मांहीं, मिले रूह भेले दिल एक हुए ।  
 तो कलूब किवला भया मकबूल अल्लह कहा, अव्वल आखर मिले एक हुए न जुए ॥ ३

दिव्य परमधाममें कहीं भी वियोग नहीं है. धनीके साथ मिलकर ब्रह्मात्माएँ एक हृदय हो गई इसीलिए ब्रह्मात्माओंके हृदयको धामधनीने अपने धामके रूपमें स्वीकार किया. खेल देखनेसे पूर्व भी ब्रह्मात्माएँ धामधनीके साथ अद्वैत भावमें थीं और खेलमेंसे जागृत होकर भी वे इस प्रकार अद्वैत भावको प्राप्त हो जाएंगी कि मानों वे कभी पृथक् थीं ही नहीं.

हक अरस परस सरस सब एकरस, वाहेदत खिलवत निसबत न्यामत ।

महामत अलमस्त होए आवे उमत लिए, पीवत आवत हक हाथ सरबत ॥ ४

अब तो ब्रह्मात्माएँ (जागृत होकर) प्रियतम धनीके साथ एकरस हो गई हैं। अद्वैत परमधाममें मूल-मिलावा तथा अन्य सभी सम्पदाएँ धामधनीसे ही सम्बद्ध हैं। महामति आनन्दकी मस्तीमें मस्त बनकर ब्रह्माङ्गनाओंको साथ लेकर प्रियतम धनीके हाथों प्रेम रसका पान करते-करते अद्वैत परमधामकी ओर आगे बढ़ते हैं।

### प्रकरण ११७ चौपाई १७००

[मेड़ताके एक सुन्दरसाथ राजाराम भाईने श्रीप्राणनाथजी तथा उनके साथके सुन्दरसाथकी सम्पूर्ण सेवाका दायित्व वहन किया था। स्वामीजीके पन्ना पहुँचने पर यह सेवा छत्रसालजीने माँगी। तब राजाराम भाईने छत्रसालजीको मधुर उपालम्भके साथ एक पत्र लिखा उसका भाव इस प्रकार था- 'यदि आप कहो तो हम भी उधर ही आ जाएँ, आपको सभीकी सेवाका पूर्ण लाभ मिलेगा।' इस प्रसङ्गको इस प्रकरण द्वारा स्पष्ट किया है.]

राग श्री

मोमिन लिखे मोमिन को, कहो तो आवें इत ।

ए अचरज देखो मोमिनो, कैसा समया हुआ सखत ॥ १

एक ब्रह्मात्मा दूसरी ब्रह्मात्माको लिखती है कि यदि आप कहें, तो हम भी वहाँ आ जाएँ। हे ब्रह्मात्माओ ! आश्चर्यकी बात है कि कितना कठिन समय आ गया है ? सुज्ञ ब्रह्मात्माएँ भी सेवाके लिए परस्पर खींचातान करती हैं।

दम दिल तन एकै, बिछुरके भूली वतन ।

जानू के सोहोबत कबू ना हुती, तो यों कहावें सुकन ॥ २

जिनके प्राण, हृदय और तन परमधाममें एक ही हैं, ऐसी ब्रह्मात्माएँ परमधामसे इस संसारमें आकर मूल घर सहित सब कुछ भूल गई और पत्रमें ऐसे वचन लिखती हैं मानो उनकी पारस्परिक पहचान या मूल सम्बन्ध कभी भी नहीं था।



मोमिन रखे मोमिनसों, जो तन मन अपना माल ।

सो अरवा नहीं अरस की, ना तिन सिर नूर जमाल ॥ ३

जो सुन्दरसाथमें ही परस्पर तन, मन, धनका अभिमान या भेद-भाव रखता है, वह परमधामकी आत्मा नहीं हो सकती, न ही उनके सिर पर परब्रह्म परमात्माकी छत्रछाया रहती है।

मता मोमिन का काफर, ले ना सके क्योंकर ।

दिल मोमिनका अरस कहा, दिल काफर इबलीस घर ॥ ४

वास्तवमें ब्रह्माङ्गनाओंकी सम्पत्तिको संसारके नास्तिक लोग कदापि ले नहीं सकते. ब्रह्माङ्गनाओंके हृदयको परमात्माका धाम कहा गया है. इन जीवोंके नास्तिक हृदय पर कलियुग (शैतान) सवार है.

जब मेला होसी मोमिनो, तब देखसी सब कोए ।

और ना कोई कर सके, जो मोमिनो से होए ॥ ५

जब ब्रह्मात्माओंका मेला होगा, तब सभी लोग उनकी शक्तिको समझ पाएँगे. वस्तुतः जो कार्य इन ब्रह्मात्माओंसे होगा, वैसा अन्य कोई नहीं कर सकेगा.

जब लग भूली वतन, तब लग नाही दोस ।

जब जागी हक इलमें, तब भूली सिर अफसोस ॥ ६

जब तक परमधामकी पहचान नहीं थी, तब तक हम निर्दोष थे, परन्तु सद्गुरु प्रदत्त दिव्य तारतम ज्ञानके द्वारा जागृत होने पर भी जो ब्रह्मात्माएं भूल जाती हैं, उन्हें बड़ा पश्चात्ताप होगा.

हकें जगाए मोमिन, अपनी जान निसबत ।

अरस किया दिल मोमिन, बैठाए बीच खिलवत ॥ ७

ब्रह्मस्वरूप सद्गुरुने ब्रह्माङ्गनाओंको अपने मूल सम्बन्धी मानकर जागृत किया. उनके हृदयको परमधाम बनाया तथा उन्हें मूलमिलावाकी बैठकमें बैठी हुई अनुभव करवाया.

जाकी तरफ न पाई किनहूं, इन माहें चौदे तबक ।

ताको ले बैठे दिल में, किया ऐसा अपने हक ॥ ८

जिस अखण्ड परमधामकी सुधि चौदह लोकोंके जीवोंको नहीं थी, ऐसे

परमधामकी सभी सम्पदाओंके साथ धामधनीको ब्रह्माङ्गनाएँ अपने हृदयमें बैठा सकीं. वस्तुतः धामधनीने ही ब्रह्मात्माओंको ऐसी शक्ति प्रदान की है.

और दुनी के दिल पर, किया इबलीस पातसाह ।

सो गुम हुए बीच रात के, क्यों ए न पावें राह ॥ ९

संसारके लोगोंके हृदय पर शैतनाका ही साम्राज्य फैला हुआ है. वे अज्ञानान्धकारमें भूले (फँसे) हुए हैं. उन्हें किसी भी भाँति सन्मार्ग नहीं मिलता.

ऐसा हकें जाहेर किया, ऊपर रूहों मेहेर मुतलक ।

कै विध बताई रसूलें, पर क्या करे हवाई खलक ॥ १०

इस प्रकार प्रियतम धनीने ब्रह्माङ्गनाओं पर असीम कृपा की है. इसका वर्णन रसूलने भी विभिन्न प्रकारसे किया है. परन्तु झूठी इच्छाओंमें फँसे हुए सांसारिक प्राणी इस विषयमें कैसे विचार कर सकते हैं ?

मोमिन सुकन सुन जागसी, जाको अरस वतन ।

जब नूर झंडा खड़ा हुआ, पीछे रहे ना रूहें अरस तन ॥ ११

जिनके मूल तन परमधाममें हैं, ऐसी ब्रह्माङ्गनाएँ तो अपने मूल सम्बन्धके वचन सुनकर जागृत हो जाएँगी. जब दिव्य तारतमज्ञानरूपी झण्डेका आरोहण हो गया, तो परमधामकी मूल आत्माएँ तनिक भी पीछे नहीं रहेंगी.

एह किताबत पढ के, रूहें रहे ना सकें एक खिन ।

झूठीसों लग ना रहे, जो रूह होए मोमिन ॥ १२

अखण्ड परमधामके पूर्णज्ञानसे सम्पन्न ग्रन्थोंको पढ़कर कोई भी ब्रह्माङ्गना एक क्षणके लिए भी इस झूठे संसारमें नहीं टिक सकेगी, क्योंकि जिसकी आत्मा मूल परमधामकी है, वह इस झूठे संसारकी मायामें लिपटी नहीं रहेगी.

सखत वेखत ऐसा हुआ, ईमान छोड्या सबन ।

तब अरवाहें करें कुरबानियां, मह होवें मोमिन ॥ १३

ऐसा कठिन समय आ पहुँचा है कि सबका विश्वास टूट गया. ऐसे समय

सच्ची ब्रह्माङ्गनाएँ धामधनीके चरण कमलोंमें स्वयंको समर्पित कर एकरस हो जाएंगी.

जीव देते ना सकुंचें, मोमिन राह हक पर ।

दुनियां जीव ना दे सके, अरस रूहों बिगर ॥ १४

ब्रह्माङ्गनाएँ परमधामके मार्ग पर जानेके लिए अपने प्राणोंको न्योछावर करनेमें लेशमात्र भी सङ्कोच नहीं करेंगी. परमधामकी आत्माओंके अतिरिक्त अन्य कोई भी इस प्रकार समर्पित नहीं हो सकेंगे.

अरस तन रूह मोमिन, लोभ न झूठा ताए ।

मोमिन जुदागी ना सहें, ज्यों दूध मिसरी मिल जाए ॥ १५

सुन्दरसाथके तनमें परमधामकी आत्मा है, इसलिए उन्हें इस झूठे संसारका लोभ नहीं है. ऐसी ब्रह्माङ्गनाएँ अपने प्रियतमसे पृथक् नहीं रह सकतीं. वे तो दूध और मिश्रीकी भाँति धामधनीके साथ घुल मिल कर रहती हैं.

लिखी फकीरी ताले मिने, अपने हादी के ।

कदम पर कदम धरें, मोमिन कहिए ए ॥ १६

इन आत्माओंके भाग्यमें धनीजी द्वारा फकीरी (त्याग भावना) लिख दी गई है, इसलिए वे सद्गुरुके पद-चिह्नोंका अनुसरण करते हुए उनके इङ्गित मार्ग पर चलेंगी. सच्ची ब्रह्मात्माओंका यही परिचय है.

एक हक बिना कछू ना रखें, दुनी करी मुरदार ।

अरस किया दिल मोमिन, पोहोंचे नूर के पार ॥ १७

ऐसी ब्रह्माङ्गनाएँ अपने दिलमें धामधनीके अतिरिक्त कुछ भी नहीं रखतीं. उन्होंने नश्वर संसारको मृतक तुल्य (तुच्छ) माना है. इसलिए धनीजीने ऐसी ब्रह्माङ्गनाओंके हृदयको परमधाम बना दिया. वे ही अक्षरके परे परमधाममें पहुँच सकीं हैं.

महामत कहे ए मोमिनो, ए है अपनी गत ।

झूठ वास्ते जुदे ना पडें, मोमिन अरस वाहेदत ॥ १८

महामति कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी ! हम ब्रह्माङ्गनाओंके रहन-सहन और

चाल चलनका यही वृत्तान्त है. परमधाममें एक हृदय होकर रहने वाली ब्रह्मात्माएँ संसारकी झूठी मान मर्यादाके लिए एक दूसरेसे पृथक् नहीं होंगी.

**इन महंमद के दीन में, जो ल्यावेगा ईमान ।**

**छत्रसाल तिन ऊपर, तन मन धन कुरबान ॥ १९**

श्रीप्राणनाथजी (अन्तिम मुहम्मद) द्वारा उपदेशित सत्य मार्ग पर विश्वास कर जो इसे ग्रहण करेंगे, छत्रसाल उन पर तन, मन तथा धन न्योछावर कर देंगे.

**प्रकरण ११८ चौपाई १७१९**

[श्री राजाराम भाईकी सुपुत्री ललिताके भावोंको महामतिने इस प्रकरणमें स्थान दिया है.]

**राग परज**

**वारी रे वारी मेरे प्यारे, वारी रे वारी ।**

**टूक टूक कर डारों या तन, ऊपर कुंजविहारी ॥ १**

हे मेरे प्यारे धामधनी ! मैं आप पर वारंवार बलिहारी होती हूँ. मेरे कुंजविहारी श्रीकृष्णजीके चरणोंमें मैं अपने तन (शरीर) को टुकड़े-टुकड़े कर समर्पित होती हूँ.

**सुंदर सरूप स्याम स्यामाजी को, फेर फेर जाऊं बलिहारी ।**

**इन दोऊ सरूपों दया करी, मुझ पर नजर तुमारी ॥ २**

श्री श्याम-श्यामाजीके सुन्दर स्वरूप पर मैं वारंवार बलिहारी होती हूँ. आपकी प्रेम भरी दृष्टिके कारण ही इन युगल स्वरूपकी कृपा मुझे प्राप्त हुई है.

**इन जेहेर ज़िमीसे कोई ना निकस्यो, अमल चढ्यो अति भारी ।**

**मुझ देखते सैयल मेरी, कैयों जीत के बाजी हारी ॥ ३**

इस संसारमें मोह-माया और अहङ्कारका विष इतना अधिक फैल गया है कि उनमेंसे कोई भी बाहर निकल नहीं सकता. मेरे देखते-देखते अनेक लोगोंने यह मानव-तनरूपी शुभावसर प्राप्त करके भी उसे गँवा दिया.

कारी कुमत कूब कुचल, ऐसी कठिन कठोर हूँ नारी ।

आतम मेरी निरमल करके, सेहेजे पार उतारी ॥ ४

मैं स्वयं काली, दुर्बुद्धि, कुबड़ी, पथभ्रष्ट एवं कठोर स्त्री हूँ, तथापि आपने मेरी आत्माको निर्मल और पवित्र बनाया तथा सरलता पूर्वक मुझे इस भवसागरसे पार कर दिया।

सुंदर सरूप सुभग अति उत्तम, मुझ पर कृपा तुमारी ।

कोट बेर ललिता कुरबानी, मेरे धनीजी कायम सुखकारी ॥ ५

हे मेरे धामधनी ! आपका सुन्दरस्वरूप अति उत्तम है। मुझपर आपकी परम कृपा है। इस प्रकार मुझे स्थायी रूपसे अखण्ड सुख देने वाले आप धामधनी पर ललिता करोड़ों बार स्वयंको समर्पित करती है।

प्रकरण ११९ चौपाई १७२४

राग मारु

साथजी ऐसी मैं तुमारी गुन्हेगार ॥ टेक ॥

कर कर बानी सुनाई तुम को, किए खलक खुआर ।

अनेक पख देखाए तुम को, छोडाए के परवार ॥ १

हे सुन्दरसाथजी ! मैं तो तुम्हारा ऐसा दोषी हूँ, क्योंकि मैंने तुम्हें अनेक प्रकारके उपदेश देकर इस प्रकार दर-दर भटकया है। अनेक दृष्टान्तोंके द्वारा मायाके विभिन्न पक्षोंको समझाकर तुम्हें अपने परिवारजनोंसे पृथक् कर दिया है।

कुटम कबीले माहें अपने, बैठे हते करार ।

साख दे दे भांने सोई, दिए दुख अपार ॥ २

तुम अपने परिवारके साथ सुख-शान्ति पूर्वक रहते थे। परन्तु मैंने तुम्हें अनेक प्रकारकी साक्षियोंके द्वारा संसारके सुखोंको मिथ्या बताकर उनसे वञ्चित किया। इस प्रकार मैंने तुम्हें अपरिमित दुःख दिया है।

अनेक अवगुन किए मैं तुमसों, जिनको नाहीं सुमार ।

घर घर के किए मैं तुमको, छुडाए फिराए राज द्वार ॥ ३

मैंने तुम्हारे साथ इतने अधिक अवगुण किए हैं, जिनकी कोई सीमा नहीं

है. तुम्हें अपना घर-बार, राज-द्वार छुड़ा कर भिक्षाटन हेतु दर-दर भटकाया है.

जुदे पहाड़ों रुलाए रलझलाए, दे दे सबदों का मार ।

कर उपारजन खाते अपनी, होए घरमें सिरदार ॥ ४

मैंने तुम्हें कठोर वचन कहकर आघात पहुँचाया तथा अनेक पर्वतोंमें भटकाकर रुलाया. तुम तो अपने परिवारके साथ, अपना व्यवसाय करते हुए, परिवारके सरदार बनकर आनन्दमय जीवन जी रहे थे.

सुख सीतलसों अपने घरमें, कै भांतों करते प्यार ।

सो सारे कर दिए दुसमन, जासों निस दिन करते विहार ॥ ५

तुम अपने घरमें अपने परिवारके साथ प्रेमपूर्वक रह कर विविध प्रकारके सुख भोग रहे थे. जिनके साथ तुम दिन-रात आनन्द विहार करते थे, उन परिवारजनोंसे तुमको पृथक्कर मैंने उन सभीको तुम्हारा शत्रु बना दिया.

बाल गोपाल माहें खूबी खुसाली, करते मिल नर नार ।

सो जेहेर समान कर दिए तुमको, छुड़ाए मीठो रोजगार ॥ ६

तुम अपने बाल बच्चों तथा परिवारजनोंके साथ हिल-मिलकर प्रसन्नतापूर्वक जी रहे थे. तुम्हारे इस मधुर व्यवसायको छुड़ाकर मैंने तुम्हारे उन्हीं परिवारजनोंको विषतुल्य बना दिया अर्थात् मेरे सम्पर्कमें आने पर तुम इन मायावी सम्बन्धोंको विषतुल्य समझने लगे.

विध विध जीत करत माया में, सोए देवाई सब डार ।

कै द्रष्टांत दे दे काढे, कर ना सके विचार ॥ ७

इस संसारमें रहकर तुम विविध प्रकारकी मायावी सफलताएँ प्राप्त करते थे, उन सबको मैंने निष्फल कर दिया. कई दृष्टान्त देकर मैंने तुम्हें अपने घर व्यवहारसे पृथक् कर दिया जिसकी कल्पना भी तुम्हें नहीं थी.

मीठी माया वल्लभ जीवकी, सो छुड़ायो कुटम परवार ।

बडे घराने सब कोई जाने, उठावते तिनका भार ॥ ८

यह माया जीवको अति मीठी लगती है. ऐसी मायाके परिवारसे भी मैंने तुम्हें

पृथक् किया. तुम इस संसारमें बड़े कुलीन माने जाते थे तथा इसके उत्तरदायित्वको भी वहन करते थे.

ऐसे सुख कहूं मैं केते, घर बड़े बड़ो बिस्तार ।

सो सारे अग्नि होए लागे, जब मैं कहे सबद दोए चार ॥ ९

मैं तुम्हारे ऐसे सुखोंका कितना वर्णन करूँ ? तुम तो बड़े कुलीन थे, तुम्हारे परिवारका विस्तार भी अत्यधिक था. जब मैंने उपदेशके दो-चार वचन कहे, तब तुम्हें सम्पूर्ण परिवारका सुख अग्निके समान दाहक लगने लगा.

ले बडाई बैठे थे अपनी, सो छुडाए दिए हथियार ।

ठीक काहूं ना लगने देऊँ, जाको कछुक अंकूर सुध सार ॥ १०

तुम अपने परिवारमें मायावी गौरवके साथ प्रतिष्ठित माने जाते थे. उन सुखोंके शस्त्र-काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहङ्कार आदिको मैंने दिव्य ज्ञानके उपदेश द्वारा छुड़ा दिया. जिन सुन्दरसाथका सम्बन्ध परमधामसे जुड़ गया है, उन्हें मैं संसारके मायावी सुखोंमें फँसे हुए रहने नहीं दूँगा.

यों कै छल मूल कहूं मैं केते, मेरो टोने ही को आकार ।

ए माया अमल उतारे महामत, ताको रंचक ना रहे खुमार ॥ ११

संसारके ऐसे छलपूर्ण सुखोंका मैं कितना वर्णन करूँ ? मेरे इस शरीरका अस्तित्व भी जादूके खेल (टोने) के समान है. महामति जिस किसीके सिरसे मायाका नशा उतार देते हैं, उसको फिर मायाका प्रभाव लेशमात्र भी प्रभावित नहीं कर सकता.

प्रकरण १२० चौपाई १७३५

सिफत तो सारी सबद में, चौदे तबक के माहें ।

कलाम अल्ला न्यारा सबन से, सो क्यों कहूं सिफत जुबांए ॥ १

संसारके सभी धर्मग्रन्थोंमें पूर्णब्रह्म परमात्माकी प्रशंसा की गई है. उनमें एकेश्वरवादको महत्त्व देनेवाला ग्रन्थ कुरान (अल्लाह कलाम) अपना भिन्न अस्तित्व रखता है. इसकी प्रशंसा मैं किन शब्दोंमें करूँ ?

तामें सिफत सोफी महंमद की, याकी गरीब गिरोकी सिफत ।

सो करसी कायम त्रैलोक को, एही खावंद आखरत ॥ २

इसमें परमात्माके मित्र सूफी महम्मद और उनका विनीत समुदाय ब्रह्मात्माओंकी प्रशंसा की गई है और कहा है कि ये ही अन्तिम समयके स्वामी होंगे और तीनों लोकोंके जीवोंको मुक्ति प्रदान करेंगे.

सो वचन लिखे हैं इसारतों, पाइए खुलें हकीकत ।

उपले माएने न पाइए, जो अनेक दौडाओ मत ॥ ३

इस प्रकारके कई वचन कुरानमें सङ्केत रूपमें दर्शाए गए हैं. उनका गूढ़ार्थ समझने पर ही उन वचनोंका रहस्य समझा जा सकता है. कुरानको पढ़नेवाले चाहे जितनी शक्ति एवं बुद्धि लगाएँ, बाह्य अर्थको देखनेके कारण उन्हें यथार्थकी जानकारी नहीं हो पाती.

गोस कुतब पैगंमर, औलिए अंबिए कै नाम ।

ताए कै विध दै बुजरकियां, साहेब के समान ॥ ४

इस प्रकारका महत्त्व रखनेवाले रसूल मुहम्मदके साथियों और अनुयायियोंकी कुरानमें गौस, कुतुब, पैगम्बर, वली, नबी आदि अनेक उपाधियाँ देकर प्रशंसा की गई है तथा उन्हें खुदाके समान ही प्रतिष्ठा दी गई है.

सो सिफत सब महंमद की, सो महंमद कह्या जो स्याम ।

अव्वल आखर दोऊ दीन में, एही बुजरक महंमद नाम ॥ ५

यह सम्पूर्ण प्रशंसा अन्तिम मुहम्मदकी है. श्याम स्वरूप श्रीकृष्ण ही मुहम्मद कहलाए हैं. आदि कालसे ही हिन्दू और इस्लाम दोनों धर्मोंमें इन्हीं मुहम्मदकी महिमाका गान किया गया है.

याही विध गिरोह के, नाम लिखे अनेक ।

जुदे जुदे नामों पर सिफत, पर गिरो एक की एक ॥ ६

इस प्रकार शास्त्रोंमें विविध रूपसे ब्रह्मसृष्टियोंके समुदायका उल्लेख किया गया है. विभिन्न भाषाओंमें विविध प्रकारसे ब्रह्मसृष्टियोंकी प्रशंसाकी गई है, परन्तु समुदाय तो वही एक है.



तिन की भी है तफसीर, सुनियो गिरोह मोमिन ।

मारफत दरवाजा खोलिया, दिल दीजो नजर वतन ॥ ७

उनका भी स्पष्टीकरण करते हैं, हे ब्रह्माङ्गनाओ ! तुम ध्यानसे सुनो. अब (परमधामके) पूर्ण पहचानके सभी द्वार खुल गए हैं. इसलिए हृदयपूर्वक परमधामकी ओर दृष्टि डालो.

गिरो एक बुजरक कही, रूहअल्ला आए तिन पर ।

इत जादे पैगंमर दो भए, एक नसली और नजर ॥ ८

कुरानमें एक समुदाय (ब्रह्मसृष्टि) को श्रेष्ठ कहा गया है. उन्हें उपदेश देकर जागृत करनेके लिए रूहवअल्ला-श्यामाजीका अवतरण (सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीके रूपमें) हुआ. उनके दो पुत्र-एक औरस (नसली) तथा दूसरे मानस (नजरी) हुए. [औरस- श्री विहारीजी तथा मानस- श्री प्राणनाथजी हैं.]

तिनसे राह जुदी हुई, गिरो दोए हुए झगर ।

एक उरझे दीन जहूद के, उतरीं किताबें दूजे पर ॥ ९

इन दोनोंकी मान्यताओंमें समानता न होनेके कारण धर्मके दो भिन्न-भिन्न मार्ग बन गए. सुन्दरसाथ भी दो भागोंमें बँट गया. उनमें-से एक पुत्र धर्मके बाह्य अर्थको लेकर संसार चक्रमें घूमने लगे, जब कि दूसरे (मानस) पुत्र पर अखण्ड वाणीका अवतरण हुआ.

सो भाई न माने किताबको, रोसनाई ढांपे फेर फेर ।

तब आया दूजे पर महंमद, सब किताबें ले कर ॥ १०

उन दोनोंमें पहले भाईने उस ब्रह्मवाणी (रास, प्रकाश, षट्क्रति आदि) को मान्यता नहीं दी एवं वारंवार उस ज्ञानको छिपाए रखना चाहा. तब दूसरे भाईके हृदयमें श्यामाजी स्वरूप सद्गुरु (मुहम्मद) सभी धर्म-ग्रन्थोंके रहस्य स्पष्ट करने हेतु विराजमान हुए.

एही फिरका नाजी कहा, दै साहेदी फुरमान ।

एक नाजी नारी बहत्तर, एही नाजी की पेहेचान ॥ ११

इसी मानस पुत्रके समुदाय (सुन्दरसाथ) को मुक्ति पाने वाला समुदाय

(नाजी) कहा गया है. इसकी साक्षी कुरानमें है. कुरानके अनुसार परमात्मा पर विश्वास रखने वाला यही समूह (नाजी फिरका) अखण्ड सुख प्राप्त करेगा. शेष बहत्तर (नारी फिरका) नारकीय (दोजखी) कहलाएँगे. परमात्माके प्रति विश्वास ही नाजी फिरकाकी पहचान होगी.

**एही गिरो खासी कही, जिनमें महंमद पैगंमर ।**

**हकीकत मारफत खोलके, जाहेर करी आखर ॥ १२**

इस समूहको ही ब्रह्मात्माओंका विशेष समुदाय कहा गया है, जिसमें अन्तिम मुहम्मद प्रकट हुए. उन्होंने ही परमात्मा एवं परमधाम सम्बन्धी ज्ञान (हकीकत) और विज्ञान (मारीफत) को उद्घाटित कर अन्तिम समयमें प्रकाशित किया.

**जब खुली हकीकत मारफत, तब मजहब हुए सब एक ।**

**तब सबके दिल धोखा मिट्या, हुए रोसन पाए विवेक ॥ १३**

जब ज्ञान और विज्ञानके रहस्य स्पष्ट हो गए तब सभी पन्थ एवं सम्प्रदाय एक ही धनीके प्रति श्रद्धावान बन गए. तारतम ज्ञानद्वारा सबका भ्रम मिट गया तथा अन्तर्हृदय प्रकाशमान होनेसे उनमें विवेक जागृत हुआ.

**एती बातें कुरान में, विध विध करी रोसन ।**

**कै नाम धर दै बुजरकियां, सो बल महंमद और मोमिन ॥ १४**

इन सभी विषयोंको कुरानमें विभिन्न प्रकारसे बताया गया है. उसमें कई नामोंसे ब्रह्माङ्गनाओंकी प्रशंसा की गई है. यह सब अन्तिम मुहम्मद तथा ब्रह्मसृष्टियों (मोमिनों) के बलसे ही सम्भव हुआ है.

**कहे महामत मुसाफ उमत की, सिफत न आवे जुबान ।**

**तीनों अरस अजीम के, ईसे किए बयान ॥ १५**

महामति कहते हैं, कुरानमें उल्लेखित परमात्माकी वाणी तथा ब्रह्माङ्गनाओंकी प्रशंसा इस जिह्वा द्वारा नहीं हो सकती. सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी (ईसा) ने बताया है कि आखरी मुहम्मद, ब्रह्मसृष्टि और परमात्माका सन्देश (तारतम वाणी), ये तीनों परमधामसे अवतरित हुए हैं.

**प्रकरण १२१ चौपाई १७५०**

ब्रह्म सृष्टि बीच धाम के, ए देखें खेल सुपन ।

मोहे स्यामाजीएं यों कहा, जो आए धामसे आपन ॥ १

श्री श्यामाजीके अवतार श्रीदेवचन्द्रजी महाराजने मुझे कहा था कि ब्रह्मसृष्टि परमधाममें बैठे-बैठे अपनी सुरताओं द्वारा इस झूठे स्वप्नवत् संसारका खेल देख रही हैं, इस प्रकार हम सभी सुन्दरसाथ परमधामसे इस संसारमें आए हैं.

थे हम दोऊ बंदे स्यामाजी के, एक नसली और नजरी ।

झगड दोऊ जुदे हुए, देने खबर पैगंमरी ॥ २

श्यामाजी स्वरूप धनी श्रीदेवचन्द्रजी महाराजके हम दोनों सेवक (बन्दे) थे जो नसली (औरस) और नजरी (मानस) कहलाए. सद्गुरु प्रदत्त ब्रह्मज्ञानका सन्देश संसारको देनेके विषयमें मत भेद पड़ जानेसे हम दोनोंके मार्ग पृथक्-पृथक् हो गए.

तब केतीक गिरो उधर भई, और केतीक मेरे साथ ।

दर्द जाहेर मसनंद नसलीएं, दूजी बातून मेरे हाथ ॥ ३

तब कुछ सुन्दरसाथ विहारीजीके विचारोंके अधीन होकर उनके साथी बने और कतिपय सुन्दरसाथ मेरे विचारोंसे सहमत होकर मेरे साथ आए. सद्गुरुकी जाहिरी (भौतिक) गद्दी (चाकला मन्दिर) पर श्रीविहारीजीको बैठाया गया एवं बातिन (आध्यात्मिक) गद्दी (नवतनपुरी धाम-खीजड़ा मन्दिर) का सम्पूर्ण दायित्व मुझ पर आया.

उतरी किताबें हमपें, गिरो नसली न माने सोए ।

तब आया पैगंमर हममें, अब कहा महंमद का होए ॥ ४

धनीजीके जोशके द्वारा मुझसे ग्रन्थ अवतरित हुए. उनको विहारीजी तथा उनके समुदायने अस्वीकार कर दिया. तब मेरे हृदयमें सद्गुरु आकर विराजमान हुए, इस प्रकार रसूल मुहम्मदकी भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई.

सो हकीकत सब कुरान में, कै ठौरों लिखी साख ।

जो ग्वाही लिखी आप साहेबें, कहूं केती हजारों लाख ॥ ५

इन सभी विषयोंको कुरानमें कई स्थानों पर साक्षी देकर लिखा है. स्वयं

परमात्माने धर्म ग्रन्थोंके माध्यमसे ऐसी हजारों लाखों साक्षियाँ लिखी हैं, जिनका वर्णन मैं कहाँ तक करूँ ?

हम दोऊ बंदे रूहअल्ला के, दोऊ गिरो जुदी भई ।

तीसरी सृष्ट जो जाहेरी, सब मजकूर इनकी कही ॥ ६

हम दोनों (विहारीजी और मैं) रूहअल्लाह-सद्गुरुके सेवक (बन्दे) हैं। धर्मके प्रचारमें मत-भेदके कारण हम दोनोंके समूह पृथक्-पृथक् हो गए। इसके अतिरिक्त बाह्य अर्थको ग्रहण करने वाली तीसरी सृष्टिका वर्णन भी कुरानमें किया गया है।

ठौर ठौर दई बडाइयां, मिने सब हमारी बात ।

केती कहूं मेहेरबानगी, मेरे धनी करी साख्यात ॥ ७

धर्मग्रन्थोंमें अनेक स्थानों पर ब्रह्माङ्गनाओंकी महिमाका वर्णन किया गया है। वह सब हमारी अपनी बात है। इस प्रकार सद्गुरुने दिव्य ज्ञानके द्वारा समझाकर हम पर असीम कृपा की है। उनकी मैं कितनी प्रशंसा करूँ ?

महामत कहे कोई दिल दे, ए देखेगा मजकूर ।

तिन रूह पर इमाम का, वरसे वतनी नूर ॥ ८

महामति कहते हैं, जो कोई हृदयपूर्वक इन बातों पर विचार करेंगे, उन आत्माओं पर सद्गुरु (इमाम) के दिव्य ज्ञानकी वर्षा होगी।

प्रकरण १२२ चौपाई १७५८

चरचरी छंद

श्यामाजी श्याम के संग, जुवती अति जोर जंग ।

करती पूरन रंग, पर आतम परे ॥ १

श्यामाजी सदैव प्रियतम श्यामके साथ ही रहती हैं तथा सभी सखियाँ भी श्यामके साथ प्रेम भरी लीलाएँ करती हैं। वे अपनी आत्मासे परे पर आत्मासे प्रियतम धनीके रङ्गमें पूर्णतः रङ्ग जाती हैं।

अंग अंग उछरंग, सखी सखी मन उमंग ।

अलबेली अति अभंग, भामनी रस भरे ॥ २

सभी सखियोंके अङ्ग-अङ्गमें मिलनका अपूर्व आनन्द हिलोरें ले रहा है। अलबेली ब्रह्माङ्गनाएँ आनन्द विह्वल हो कर अखण्ड सुखके दिव्य रसमें सराबोर हो गई हैं।

छटके छेल कंठ मेल, हांस खेल रंग रेल ।

बंध बेल ठमके ठेल, कामनी केल करे ॥ ३

श्यामाजी सहित सभी सखियाँ आनन्द विभोर हो रहीं हैं। अत्यन्त प्रेमपूर्वक प्रियतमके गलेमें बाहें डाल कर मस्तीमें झूमती हैं एवं आनन्द भरी हास्य-विनोदकी दिव्य क्रीड़ाएँ करती हैं। श्रीराजजीके साथ बेलड़ीकी भाँति लिपट कर प्रसन्न पूर्वक ठुमक-ठुमक चाल चलती हैं। इस प्रकार आत्माएँ आनन्दमयी लीलाएँ कर रहीं हैं।

कंठ हार सजे सिनगार, नैन समार सोभे मुखार ।

संग आधार करे विहार, महामति काज सरे ॥ ४

उन्होंने कण्ठमें सुन्दर हार पहने हैं और सब अङ्गोंमें दिव्य शृङ्गार सजाया है। मुख मण्डल नेत्रोंके काजलसे अधिक सुशोभित हो रहा है, वे प्रियतम धनीजीके साथ आनन्द विहार कर रहीं हैं। इस प्रकार महामतिके मनोरथ (कार्य) सिद्ध हो गए हैं।

प्रकरण १२३ चौपाई १७६२

राग श्री कालेरो

हम चडी सखी संग रे, रूडा राजसुं राखो रंग, सखी रे हमचडी ॥ टेक ॥

सतगुरु मारो श्री वालोजी, तेह तणे पाए लागुं ।

मूल सगाई जाणी मारा वाला, अखंड सुखडां मागुं ॥ १

हे सखियो ! प्रियतमके साथ हास-विलास एवं प्रेमानन्द भरा खेल खेलनेकी उत्कट अभिलाषा हो रही है। सद्गुरु ही हमारे प्यारे प्रियतम हैं। ऐसे आपके

श्रीचरणोंमें प्रणाम करते हुए कर हे वालाजी ! आपसे धामका अपना मूल सम्बन्ध जानकर अखण्ड सुख माँगती हूँ.

**सुकजीनां वचन सुणावी काने, ततखिण कीधो अजवास ।**

**आटला दिवस कोणे नव जाण्युं, हवे प्रगट थयो प्रकास ॥ २**

हे सद्गुरु धनी ! शुकदेव मुनिके वचन श्रीमद्भागवत सुनाकर आपने हमारे हृदयको प्रकाशित किया. आज दिन तक परमधामका रहस्य किसीको ज्ञात नहीं था. अब इसका प्रकाश सर्वत्र फैल रहा है.

**आंकडियो माहें छे विस्मी, झीणी गूथण जाली ।**

**जेनो कागल जे पर हुतो, तेणे घुंटी सरवे टाली ॥ ३**

श्रीमद्भागवतमें अनेक गूढ़ रहस्य हैं. उनमें बारीक डोरोंसे गुथी हुई जालीके समान अनेक रहस्यपूर्ण बातें गुथी हुई हैं. जिन ब्रह्माङ्गनाओंके लिए ये गूढ़ रहस्य लिखे गए हैं, उन्होंने ही इन गुत्थियोंको सुलझा दिया.

**हवे जेणे ए निध प्रगट कीधी, भली ते बुध प्रकासी ।**

**दीसंतो आकारज दीसे, पण बेहद पुरनो वासी ॥ ४**

ऐसे सद्गुरु धन्य हैं जिन्होंने इस अखण्ड ज्ञानरूपी धनको प्रकट कर उसके दिव्य आलोकसे हमारी बुद्धिको आलोकित किया. भला उनका शरीर पाँच तत्त्वका है, परन्तु वे स्वयं बेहद (अक्षर) के परे अक्षरातीत धामके वासी हैं.

**तारतम लई श्रीराज पधार्या, थयुं ते सरवने जाण ।**

**सखियो कहे अमे आवीने मलसुं, मलिया ते मूल एंधाण ॥ ५**

अखण्ड तारतम ज्ञान लेकर प्रियतम धनी श्रीकृष्णजी हमारे बीच पधारे हैं, तभी सबको परमधामकी यह जानकारी प्राप्त हो गई. अब सभी ब्रह्माङ्गनाएँ कहने लगी हैं कि अब हमें हमारे मूलाधार प्रियतमके सम्पूर्ण सङ्केत प्राप्त हो चुके हैं. इसलिए अब हम सब परमधाममें पिउजीकी शरणमें आकर उनके मिलनका महासुख प्राप्त करेंगी.

सखियो सरवे आवी जुजवी, एक बीजीने खोले ।

आ लीला केम छनी रहेसे, सखियो मली सहू टोले ॥ ६

सम्पूर्ण सखियाँ (सुन्दरसाथ) विभिन्न स्थानोंसे आकर एक दूसरेको ढूँढती हैं और अखण्ड ज्ञानका विस्तार करती हैं। प्रियतम धनीजीकी यह लीला अब छिपी नहीं रहेगी, क्योंकि सभी ब्रह्मात्माएँ समूहमें एकत्र हो रही हैं।

रास रच्यो रमसुं रूडी भांते, प्रगटियां परमाण ।

ए सुख सोभा आंणी जिभ्याए, केम करी करुं वखाण ॥ ७

अब जागनी रासका आयोजन भलिभाँति हो चुका है। उसमें हम भली प्रकारसे खेलकर आनन्द लेंगी, क्योंकि यह रास पिउजीके प्राकट्यका प्रमाण है। इस जागनी रास लीलाकी शोभाका वर्णन इस जिह्वासे कैसे करूँ ?

पेहेली वृन्दावनमां रामत, वली ते आंहीं उतपन ।

आ लीलाओने प्रगट करसे, सुकजी तणे वचन ॥ ८

सर्वप्रथम हमने वृन्दावनमें रासकी लीलाएँ कीं। वे ही लीलाएँ पुनः यहाँपर उत्पन्न हुई हैं। शुकदेव मुनिके वचन, इन लीलाओंका स्पष्टीकरण करेंगे।

ब्रज रास आंहीं तेह ज लीला, ते वालो ते दिन ।

तेह घडी ने तेह ज पल, वैराट थासे धन धन ॥ ९

ब्रज और रासमें जिस प्रकार लीलाएँ हुई हैं, ठीक वे ही लीलाएँ इस जागनीमें भी हो रही हैं। इन लीलाओंमें भी वही वालाजी (श्रीकृष्णजी) का स्वरूप, वही दिन, वही घड़ी और वही पल है। इन लीलाओंके कारण यह वैराट धन्य-धन्य हो जाएगा।

अमे मागी रामत राज कने, ते तां पेहेली दाण देखाडी ।

काईक मनोरथ रह्यो मन माहें, ते रंग भर आंहीं रमाडी ॥ १०

हे ब्रह्माङ्गनाओ ! हमने परमधाममें धनीजीके समक्ष संसारके झूठे खेल देखनेकी माँग की थी। इसे धनीजीने हमें सर्वप्रथम ब्रज-रासके रूपमें दिखाया। तथापि कुछ और देखनेकी इच्छा मनमें शेष रहनेके कारण, धनीजीने इस खेलको दिखाकर उस इच्छाको भी पूर्ण किया।

श्री श्रीजीने चरण पसाय, जसियो हमची गाए ।

थोडा दिनमां चौदे लोके, आ निध परगट थाए ॥ ११

स्वामीश्रीप्राणनाथजीके चरण-कमलोंकी कृपा प्राप्तकर जसिया भाईने यह 'हमची रामत' कालेरा रागमें गाया है. अब कुछ दिनोंमें अखण्ड ज्ञानकी यह निधि चौदह लोकोंमें प्रकट हो जाएगी.

प्रकरण १२४ चौपाई १७७३

राग श्री मारु

वृथा कां निगमो रे, पामी पदारथ चार ।

उतम मानखो खंड भरथनो, श्रेष्ठ कुली सिरदार ॥ १

इस संसारमें आकर उत्तम मनुष्य शरीर, नवों खण्डोंमें श्रेष्ठ भरत-खण्ड, युगोंमें उत्तम कलियुग एवं श्रेष्ठ सद्गुरु ये चार महत्त्वपूर्ण पदार्थ मिले हैं, इनको क्यों व्यर्थमें गँवा रहे हो ?

सेठें तमने सारी सनंधे, सोंप्युं छे धन सार ।

अनेक जवेर जतन करी, तमे लाव्या छे आणीवार ॥ २

पूर्णब्रह्म परमात्माने तुम्हें सारी सामग्रियाँ प्रदान की हैं. उनमें भी साररूप यह मानव जीवन दिया है. तुम अनेक जन्म-जन्मान्तरके शुभकर्मोंके फलस्वरूप अमूल्य मानव तन लेकर इस संसारमें आए हो.

सत वोहोरीने सत गेहेजो, राखजो रूडी प्रकार ।

आणी भोमे रखे भूलतां, पछे सेठ तणो वेहेवार ॥ ३

सत्य वस्तु खरिद कर उसे ही ग्रहण करो तथा उसे भलीभाँति सम्हालकर रखो. इस लोकमें आकर भूल करना नहीं, क्योंकि इसके बाद तो परम श्रेष्ठ परमात्माके साथ व्यवहार करना है, उन (सेठ) का ऋण चुकाना है.

अनेक वार तरफडी मरीने, दुख देखी आव्या छे पार ।

लाख चोरासी भमीने आव्या, आंहीं मध देस वेपार ॥ ४

अनेक बार तड़प-तड़पकर, मरनेके बाद अनेक कष्टोंको पार कर तुम्हें यह



मानव शरीर प्राप्त हुआ है। चौरासीलाख योनियोंमें भटकनेके बाद इस भरत खण्डमें मनुष्य देह धारण कर अखण्ड निधि खरीदने के लिए तुम आए हो.

**हाट पीठ रलियामणां, चोटा चोरासी बजार ।**

**मन चितवी वस्त आहीं मले, पण खरा जोड़ए खरीददार ॥ ५**

इस संसारमें हाटरूपी अनेक पन्थ तथा पीठरूपी अनेक सम्प्रदाय आकर्षक और लुभावने हैं। तदुपरान्त चौरासी लाख योनियोंमें जानेके लिए चौड़े चौरास्ते भी यहीं हैं। तुम्हारी इच्छानुसार वस्तुएँ (उर्ध्वगति एवं अधोगतिके लिए सभी साधन) यहाँ उपलब्ध हैं, परन्तु उनके क्रेता भी सच्चे और पारखी होने चाहिए.

**एणी बजारे कूड कपट, छल छे भेद अपार ।**

**चौद भवननी खरीद आहींनुं, मांहे कोई कोई छे साहूकार ॥ ६**

इस संसाररूपी बाजारमें अनेक प्रकारके छल, कपट, धोखा आदिका धन्धा चलता है। चौदह लोककी क्रय (खरीद) यहींसे होती है। परन्तु इस बाजारमें भजन-भक्ति, सेवा आदिको संग्रह करने वाले कोई-कोई (प्रह्लाद, मीरा, नरसिंह आदि) व्यक्ति ही धनवान बन पाए हैं.

**चौद लोक कमायुं खाए आहींनुं, नथी बीजुं कोय ठाम ।**

**अधखिण वारो आहीं पामिए, ए धन मूल अमान ॥ ७**

चौदह लोकोंके जीव इसी कर्मभूमिकी आय (कमाई) अपने-अपने लोकमें खाते हैं। इसके अतिरिक्त आयका अन्य कोई स्थान नहीं है। इसलिए यदि आधे क्षणके लिए भी यहाँ मनुष्य जीवनका समय प्राप्त हो जाए, तो समझना कि अमूल्य निधि प्राप्त हो गई है.

**खरी वस्त आहीं गोप छे, जो जो चोटा पीठ हाट ।**

**बोहोरजो परखुं करी, आवी कुली बेठो छे पाट ॥ ८**

सत्य वस्तु भी यहीं (संसारमें ही) छिपी हुई पड़ी है। क्या बाजार, क्या चौक, चौराहे, क्या हाट-पीठ, क्या धर्मस्थान, सभी स्थानोंमें सत्य मिल सकता है.

इसलिए वस्तुको परख कर ही क्रय करना क्योंकि कलियुग सिंहासन पर बैठकर राज्य कर रहा है.

**आ भोम अंधेरी माहें आमलां, आंकडियो कोहेडा अनंत ।**

**वस्त खरी माहें अखंड छे, तमे जो जो जवेरी बुधवंत ॥ ९**

अज्ञानके अन्धकारसे भरे हुए इस झूठे संसारमें सत, रज और तम, ये तीन गुण चक्रवातकी भाँति चक्कर लगाते हैं. इसमें असीम समस्याएँ और अवरोध खड़े हैं. तथापि यहाँ पर अखण्ड ज्ञानरूपी सत्य वस्तु छिपी हुई है. हे बुद्धिमान सज्जनो ! तुम जौहरी बनकर उसे परख लो.

**आ भोम विस्मी सत माटे, वस्त आडी छे पाल ।**

**अनेक रखोपा करी वस्तनां, वीट्यां छे जमजाल ॥ १०**

यह संसार अखण्ड ज्ञानरूपी सत्य वस्तुको प्राप्त करनेके लिए अत्यन्त विषम (कठिन) है, क्योंकि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहङ्कार आदि सत्यवस्तुके अवरोधक बनकर खड़े हुए हैं. सत्य वस्तुको कर्मकाण्डादिके यमजालने घेरकर छिपाया है.

**खरो खोजी हसे जाण जवेरी, ते जोसे द्रढ मन धीर ।**

**वस्त अखंडने तेहज लेसे, जे होसे वचिखिण वीर ॥ ११**

इस संसारके हाटमें जो सच्चा बुद्धिशाली अन्वेषक और जानकार जौहरी होगा, वही मनको स्थिर कर धैर्यपूर्वक सत्यवस्तुको देखेगा. वह विचक्षण, वीर अखण्ड वस्तुको ग्रहण कर सकेगा.

**ए धन बोहोरसे ते गोप रेहेसे, तेने करसे सहु जन हास ।**

**वस्त लेई ज्यारे थासे वेगलो, त्यारे सहु कोई केहेसे स्याबास ॥ १२**

इस अखण्ड ज्ञानरूपी सत्य धनको क्रय करने वाला इस जगतमें छिप कर रहेगा. ऐसे भक्तोंको देखकर संसारके लोग उसका उपहास करेंगे. परन्तु जब सत्यको चरितार्थ कर वह संसारसे पृथक् हो जाएगा, तब सभी उसकी प्रशंसा करेंगे.

वेद वैराट बने कोहेडा, फरे छे अवला फेर ।

प्रगट कहे मुख पाधरुं, पण तोहे न जाय अंधेर ॥ १३

वेदोंका कर्मकाण्ड और इस विराट जगतका व्यवहार, ये दोनों ही भ्रान्तिपूर्ण होनेसे कुहिरके समान हैं। उनमें फँसकर लोग जन्म-मरणके चक्रमें घूमते रहते हैं। वेदोंमें स्पष्ट कहा है कि परमात्मा इस संसारमें नहीं है (नेति नेति) तथापि अज्ञानताका अन्धकार दूर नहीं हो सका।

साध कोहेडो एने तोहज कहे छे, जो सवले अवलुं भासे ।

सत वस्त कोई देखे नहीं, असतने सहु प्रकासे ॥ १४

साधु-सन्त इस संसारको पहली अथवा कुहिरके समान उलझनपूर्ण इसलिए कहते हैं कि यहाँ सीधी बात भी उलटी दृष्टिगोचर होती है। सत्य वस्तुको तो कोई देखता भी नहीं, सब असत्यको ही उजागर कर रहे हैं।

कोई सत वोहोरे कोई असत वोहोरे, कोई बंधाय बंध ।

वेपार एणी पेरे करे वेहेवारिया, ए चोटो एणी सनंध ॥ १५

इस संसारमें कई लोग सत्य वस्तुको स्वीकार करते हैं, अन्य कई लोग असत्य वस्तुको सत्य मानकर उसका उपभोग करने लगते हैं। कुछ तो मात्र कर्मके बन्धनोंमें ही बँधकर पड़े रहते हैं। यहाँके क्रेता इस प्रकारसे व्यापार करते हैं। यह चौक-बाजार ही कुछ इस प्रकारका है।

एणे अंधेर कोहेडे अनेक बांध्या, वस्त खरी नव जुए ।

बंध बंधावी बजार माहें, पछे वारो वछूटे घणुं रुए ॥ १६

वैराटके इस अन्धकारमें शास्त्रोंके बाह्य ज्ञानरूपी कुहिरने अनेक लोगोंको कर्मके बन्धनोंसे बाँध दिया है। इसलिए वे लोग सत्य वस्तुको देख नहीं सकते। इस बाजारमें लोग कर्मके बन्धनोंमें बँध जाते हैं एवं समय निकल जाने पर अन्तमें दुःखी होकर रोने लगते हैं।

कोइक करे हजारगणां, केहेने ते मूलगां जाय ।

कोई बंधाई पडे फंद माहें, कोई कोठी धजा केहेवाए ॥ १७

इस संसारके बाजारमें रहकर भी कई भक्तजन भक्ति कर अपने धनको हजार

गुणा बढ़ा लेते हैं, जब कि अनेकोंका मूलधन अर्थात् मनुष्य जीवन ही डूब जाता है. कई लोग झूठे बन्धनोंमें फँस जाते हैं. कोई बिरले ही (प्रह्लाद, ध्रुव, मीरा जैसे) भक्त कहलाते हैं. वे छलसे बचकर आगे निकल जाते हैं तथा सफल व्यापारी, कोठीध्व-श्रेष्ठवणिक (भक्त) कहलाते हैं.

**कोई बोहेरे सत वस्तने, रास जवेर खरचाए ।**

**अखंड धन तेने अनन्त आव्युं, ते चौदे भवन धणी थाय ॥ १८**

कई लोग सद्गुरु द्वारा दिए गए ज्ञान सत्यवस्तुको खरीदते हैं. इसीमें अपनी सम्पत्ति (जीवनके अमूल्य क्षण) व्यय करते हैं. उनके पास ब्रह्म ज्ञानरूपी अखण्ड धन अपरिमित रूपसे बढ़ने लगता है, जिससे वे चौदह लोकोंके स्वामी हो जाते हैं.

**बीजो फेरो ए स्याने करे, थयो ते सेठ सरीख ।**

**टली वाणोतर धणी थयो, ते अखंड सुख लेसे अंग्रीख ॥ १९**

ऐसे भक्त अब पुनः जन्म लेकर संसारमें क्यों आएँगे ? वे तो अमूल्य धन प्राप्त कर भगवानके समान हो गए हैं. वे तो सामान्य व्यापारीसे ऊपर ऊठकर धनवान् बन गए हैं. इसलिए अब वे परलोकमें अखण्ड सुख प्राप्त करेंगे.

**कोण फेरो करे वली, अखंड धन आवे अपार ।**

**साहूकारी तमे करो ने नेहेचल, तो निध पामो निरधार ॥ २०**

ऐसा अपार (अखण्ड) धन प्राप्त हो जाने पर इस संसारके जन्म मरणके चक्रमें कौन फँसेगा ? इसलिए तुम अखण्ड धनका व्यापार करो, तब तुम भी निश्चित ही वह धन प्राप्त कर पाओगे.

**खोटा साटे साचुं जडे छे, एवी मली छे बजार ।**

**लाभ अलेखे आ फेरा तणो, जो राखी सको वेहेवार ॥ २१**

इस संसारमें ऐसी व्यवस्था की गई है कि यहाँ पर नश्वर वस्तुओं (शरीर) के बदलेमें सत्य वस्तु प्राप्त होती है. ऐसा बाजार तुम्हें मिला है. यदि तुम अच्छा व्यवहार रख सको, तो इस जीवनमें तुम्हें अपार लाभ प्राप्त हो सकता है.

आ फेरो छे एणी सनंधनो, जो कोई रूदे विचारो ।

साधो साहुकारो कहुं छुं पुकारी, तमे जीती अखंड कां हारो ॥ २२

यदि कोई हृदयसे विचार करे, तो ज्ञात होगा कि मनुष्य जीवन सत्य ज्ञान प्राप्तिका अमूल्य अवसर है। इसलिए हे साधु महात्माओ ! मैं तुम्हें पुकार कर कहता हूँ कि जीती हुई बाजी (हाथमें आए हुए अखण्ड सुख प्राप्तिके इस सुअवसर) को क्यों व्यर्थ गँवा रहे हो ?

आ भोमनी गत सुणो रे साधो, प्रगट कहुं छुं प्रकासी ।

आंखें देखी आप बंधाए, पछे खाए सहु जम फांसी ॥ २३

हे साधु जन ! इस संसारकी विगतको सुनो, उसे मैं आपके समक्ष प्रकट कर रहा हूँ। यहाँ पर तो अपनी आंखोंसे स्पष्ट देखते हुए भी लोग स्वयं बँध जाते हैं तथा तत्पश्चात् कर्मानुसार यमराजका दण्ड भोगते हैं।

वणजे ते आवे सहु एकला, आणी भोमें आवी करे संग ।

रास खरीद सरवे वीसरी, पछे लागी रहे तेसूं रंग ॥ २४

इस संसारके मायावी बाजारमें व्यापार हेतु सभी अकेले ही आते हैं। इस भूमि पर आनेके पश्चात् ही वे अपना सम्बन्ध जोड़ते हैं। इसलिए अखण्ड सुखोंको क्रय करना भूलकर मायावी सम्बन्धके रङ्गमें रंग जाते हैं।

एणे स्वांगे संसार बांध्यो, कोई कपट कारण रूप ।

बीजा तो आमलां अनेक छे, पण आंकडी आ अदभूत ॥ २५

इस छलरूपी मायाने संसारके सभी जीवोंको बाँध लिया है। इसका स्वरूप ही कपटपूर्ण है। इसके दूसरे भी बन्धन अनेक प्रकारके हैं, किन्तु उनमें यह मोहका बन्धन सबसे अद्भुत है।

आप तणी सुध विसरी, कोई ओलखाय नहीं पर ।

तेमां सगा समंधी थईने बेठां, कहे आ अमारुं घर ॥ २६

संसारकी झूठी मायामें फँसकर मानवको अपनी आत्माकी सुधि तक नहीं रहती, न ही वह परमात्माको पहचान पाता है। वह तो मायाके पदार्थोंका ही सम्बन्धी बन कर बैठ जाता है तथा कहता है कि यही हमारा घर है।

आपोपुं तिहां बांधीने आपे, सरवा अंगे द्रढ मन ।

रात दिवस सेवा करे, एम बंधाणां सहु जन ॥ २७

ऐसे लोग परिवारजनोंके साथ बँधकर, दृढमनसे शरीरके सभी अंगोंके द्वारा रात-दिन उनकी सेवा करते हैं। इस प्रकार सब लोग इन झूठे बन्धनोंमें फँसे रहते हैं।

चीठी आवे चाले ततखिण, जाय ते करता रुदन ।

झाझी सेवा जेहनी करतां, ते दिए छे हाथ अगिन ॥ २८

जब यमराजकी चिठ्ठी आ पहुँचती है, तब वे तत्काल ही मृत्युकी शरणमें पहुँच जाते हैं तथा अपने किए हुए कर्मोंपर रोते-रोते संसार छोड़ जाते हैं। जिनकी उन्होंने सर्वाधिक सेवा की थी, वे ही पुत्र मृत्यु पश्चात् उनकी पार्थिव देहको अपने हाथोंसे अग्नि देते हैं।

माहें तो कोय नव ओलखे, ओलखाणने खोरी बाले ।

ए सगाई आ भोम तणी, ते सनमंध एणी पेरे पाले ॥ २९

इस संसारके लोग आत्माको तो पहचानते ही नहीं, परन्तु जिस शरीरकी उन्हें पहचान है उसे भी चितापर चढ़ाकर उसके सब अंगोंको लकड़ीसे घोंव-घोंपकर जला देते हैं। संसारका सम्बन्ध ही इसी प्रकारका है। इसलिए संसारके लोग ऐसे सम्बन्धका पालन करते हैं।

आणी भोमे तमने भूलव्यां, सुध गई सरीर ।

पड्या ते फंद अंधेर माहें, तेणे चितडुं न आवे धीर ॥ ३०

इस संसारकी झूठी मायाने तुम्हें इतना भुला दिया है कि तुम्हें अपने शरीरकी भी सुधि नहीं रही। तुम मायाके अज्ञान अन्धकार में डूब गए हो, इसलिए तुम्हारे चित्तमें धैर्य नहीं रहता।

साथी हता जे माहेला, तेणे दीठां आप अचेत ।

जेनी जे जतन करतां, तेणे बांध्यां बंध विसेष ॥ ३१

तुम्हारे अन्तरके मित्र उन गुण, अंग, इन्द्रियोंने भी तुम्हें (आत्माको) अचेत पाया। तुम जिनका विशेष ध्यान रखते थे, उन्हीं इन्द्रियोंने तुम्हें विशेषरूपमें बाँध रखा है।

घर मंदिर सहु वीसरयां, वीसरयां सेठ समरथ ।

माल लुसानुं जाय रे मूरखो, तमे कां निगमो ए ग्रथ ॥ ३२

इस मायाके मोहमें फँसकर तुम मूलघर परमधाम एवं शरीररूपी मन्दिर तथा सर्वशक्तिमान सेठ-पूर्णब्रह्म परमात्माको भी भूल गए हो. हे अज्ञानीजन ! श्वासरूपी अमूल्य धन ही लुटाये जा रहे हो, तुम इस अमूल्य निधिको व्यर्थमें क्यों गँवा रहे हो ?

धन पोतानुं नव साचवो, लूसे छे चोर चंडाल ।

अधखिण माटे आप बंधावो, हवणां वही जासे ततकाल ॥ ३३

तुमने श्वासरूपी अमूल्य धनको भी नहीं सम्हाला. चारों ओरसे काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकाररूपी चोर चाण्डाल बनकर तुम्हारे अमूल्य धनको लूट रहे हैं. क्षणिक सुखों के लिए तुम स्वयंको बन्धनमें बाँध रहे हो ? थोड़े ही समयमें तुम्हारा जीवन समाप्त होने वाला है.

बांध्यो संसार एणी पेरे, लागे नहीं कोई लाग ।

जाए बंधाणां सहु जमपुरी, केहने नथी टलवानो माग ॥ ३४

यह सम्पूर्ण संसार इस प्रकार झूठे बन्धनोंमें बाँधा हुआ है, इससे छूटनेका कोई उपाय नहीं है. सभी लोग कर्मके बन्धनोंमें बाँधकर अन्ततः यमपुरी चले जाते हैं. इससे मुक्त होनेका कोई मार्ग उनके पास नहीं है.

लेखुं देसे जमदूत ने, जे कीधुं छे आंहीं वेपार ।

साचुं झूठुं तरत जोसे, ए धरमराज वेहेवार ॥ ३५

इन जीवोंको यमपुरीमें जाकर अपने किए हुए कर्मोंका लेखा-जोखा देना पड़ेगा. उस समय धर्मराज सत्य और असत्यकी जाँच करेंगे, क्योंकि धर्मराजका कार्य ही यही है.

वेपार करतां जे बंध बांध्या, ते लेखुं लेसे सहु तंत ।

एकना सहस्रगणां करतां, मारया अनेक जीव जंत ॥ ३६

जीवनकालमें जो भी कर्म किए गए हैं, उन सभीका एक-एक कर हिसाब धर्मराज करेंगे. जिन्होंने अपने पेटके लिए एकका हजार गुणा आय बढ़ाते

हुए जिन जीव-जन्तुओंको मारा है, यमराज उन सबका एक-एक कर हिसाब लेंगे.

लांचे तो तिहां नव छूटिए, सगा न ओलखाण कोय ।

मार भूंडा छे जमदूतना, दया ते पिंडने न होय ॥ ३७

इस संसारमें जिस प्रकार घूस देकर छूटकारा मिल जाता है, वैसा यमपुरीमें नहीं होता. वहाँ किसी सगे सम्बन्धीका परिचय अथवा अनुशंसा (सिफारिश) भी काम नहीं आती. यमदूतोंकी मार तो असहनीय होती है, उनके हृदयमें लेशमात्र भी दया नहीं होती.

धरम तणां सुख भोगवो, पाप तणां ल्यो दुख ।

अगिन चोरासी लाख भोगवी, अंते आव्या मनुख ॥ ३८

इस जीवनमें धर्म करोगे तो सुख भोगोगे तथा पाप करोगे तो दुःख प्राप्त होगा. चौरासी लाख योनियोंमें दुःखरूपी अग्निमें तपने पर ही तो तुम्हें अन्तमें यह मनुष्य तन प्राप्त हुआ है.

एके वोहोरया भगवानजी, ते जाए नहीं जमपुर ।

संगत कीधी तेणे साधतणी, जई वैकुंठ कीधां घर ॥ ३९

जिसने भगवान विष्णुकी भक्तिका मार्ग ग्रहण किया है, वह कदापि यमपुरी नहीं जाएगा. उसने यदि साधु सन्तोंकी संगत की होगी, तो वह वैकुण्ठमें चला जाएगा.

एणी पेरे वेपार थाय, हाट पीठ बजार ।

आ भोमनी अनेक आंकडी, तेनो केटलो कहुं विस्तार ॥ ४०

इस संसारमें हाट, पीठ तथा बाजार अर्थात् विभिन्न धर्म, सम्प्रदाय, पंथ, पैड़ोंमें इस प्रकार पाप-पुण्यका व्यवहार चलता है. संसारमें ऐसी अनेक उलझनें हैं, उनका विस्तार कहाँ तक बताऊँ ?

झाझुं कहे दुख सहुने लागे, सत वचन ना सेहेवाए ।

सत सहुए उथापियुं, असत ब्रह्मांड न माए ॥ ४१

अधिक कहें तो सबको दुःख लगेगा क्योंकि सत्य वचन सहे नहीं जाते.



इसलिए सभी लोगोंने सत्यको उलटा (उड़ा) दिया है परिणामतः असत्य इतना बढ़ गया कि वह ब्रह्माण्डमें ही समा नहीं पा रहा है।

हवे जे हेत वांछे आपणुं, ते सुणजो सत द्रढ मन ।

वाट लेजो वैकुंठ तणी, तमे रखे जातां पुरी जम ॥ ४२

इसलिए जो अपना कल्याण चाहते हैं, वे मनको दृढ़कर सत्य वचन सुन लें तथा वैकुण्ठका मार्ग ग्रहण करें, यमपुरीका मार्ग ग्रहण नहीं करना।

दुखने साटे अखंड सुख आवे, अधखिण मांहे आज ।

साहुकारो साधो वेहेवारियो, एम सुणो कहे मेहेराज ॥ ४३

इस कलियुगमें आज दुःखके बदलेमें अर्धक्षणमें ही अखण्ड सुख प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए मेहराज कहते हैं, हे सज्जनो ! साधु महात्माओ ! धनिको ! तुम मेरे इन वचनोंको ध्यानपूर्वक सुनो और उनका पालन करो।

प्रकरण १२५ चौपाई १८१६

किरंतन पुराणा ( पौराणिक )

तमे जो जो रे मारा साध संघाती, आ विस्व तणी जे वाट ।

हार कतार चाले केडा बेडी, भवसागरनो घाट ॥ १

तमे जो जो रे मारा साध संघाती ।

हे साधु-महात्माओ ! देखो, संसारका मार्ग ही कुछ ऐसा है। लोग चींटी-कतारकी भाँति एक दूसरेकी देखा-देखी आगे-पीछे चलकर भवसागरके घाट उतर रहे हैं।

स्वाथी मारग चाले संजमपुरी, भार भरी रे अलेखे ।

कुटम परिवार लादा सहु लादे, आगली अजाडी कोई न देखे ॥ २

यमपुरीका मार्ग चलनेमें बहुत ही सरल लगता है। इसलिए लोग अपने संचित कर्मों द्वारा कुटुम्ब परिवारका भार अपने कन्धों पर उठाते हुए उस मार्ग पर चलते हैं किन्तु आगेकी उलझनपूर्ण खाईको कोई नहीं देखता।

दुस्तर दोष न विचारे मद माता, लडसडती चाल चाले ।

उनमद थका अभिमान करे, अने कंठ बांहोडीयो घाले ॥ ३

मोह-मदकी मस्तीमें चूर हुए ऐसे लोगोंको अपने बड़े-बड़े दोष भी दिखाई नहीं देते, इसलिए वे डगमगाते हुए (मनमानी) चलते हैं। मोहसे उन्मत्त होकर वे अभिमान पूर्वक एक दूसरेके गलेमें बाहें डालकर चल रहे हैं।

उत्तम आगल वाट देखाडे, मधम अधम सहु वासे ।

भार करमनुं लेखुं रे अलेखे, मनमां विचारी कोय नव त्रासे ॥ ४

इस संसारमें कर्मकाण्डी ब्राह्मण स्वयंको उत्तम ज्ञानी समझकर दूसरोंको उपदेश देते हैं। सामान्य और मध्य श्रेणीके लोग उनके निर्दिष्ट मार्गका अनुसरण करते हैं। परन्तु कर्मोंका भार अत्यन्त भारी होता है, ऐसा विचार कर किसीके भी मनमें भय नहीं होता।

बलिया बीक न आणे केहनी, सांभले न कांई देखे ।

साचा ए सूर धीर कहिए, जे ए दोषने न लेखे ॥ ५

ऐसे लोग स्वयंको शक्तिशाली मानकर किसीका भी भय नहीं रखते। वे सज्जनोंकी वाणी अथवा उपदेश भी नहीं सुनते तथा उस पर विचारपूर्वक दृष्टिपात भी नहीं करते। क्या ऐसे तथाकथितोंको ही शूरवीर कहा जाए, जिनको अपने दोष ही दिखाई नहीं देते हैं ?

काएर केम चाले एणी वाटे, जेने लागे ते जमनो त्रास ।

रात दिवस रुए कलकले, सूकाए ते लोही ने मांस ॥ ६

जिन्हें यमदूतोंका भय होता है, ऐसे भयभीत लोग यमपुरीके मार्गपर कैसे चल पाएँगे ? वे तो इस संसारके दुःख भोगते हुए रात-दिन व्याकुल होकर भजन-भक्ति करते रहते हैं तथा अपनी कष्ट साध्य साधनामें शरीरके रक्त व मांसको भी सूखा देते हैं।

वैकुंठनी पण विस्मी वाट, ते जेम तेम सहेवाय ।

संजमपुरीनां दुख घणां दोहेलां, ते जिभ्याए न कहेवाय ॥ ७

वैकुण्ठका मार्ग भी अत्यन्त कठिन है। तथापि उसपर जैसे-तैसे चला जा

सकता है. परन्तु यमपुरीके दुःख तो असह्य हैं, उनका वर्णन इस जिह्वा द्वारा नहीं हो सकता.

**आ सुपन तणां सुख सहू को वांछे, ओल्या साख्यात दुख कोई न जाणे ।**

**संजमपुरीनी वाट छे वस्ती, ते माटे सहू कोय ताणे ॥ ८**

सबलोग स्वप्नवत् संसारके झूठे सुखोंको प्राप्त करनेकी इच्छा करते हैं. परन्तु इन सुखोंके बदले चौरासी लाख योनियोंके प्रत्यक्ष दुःखोंको कोई नहीं देखता. यमपुरी जानेके मार्ग पर तो भारी भीड़ लगी हुई है, इसलिए लोग उसी ओर आकृष्ट होते हैं.

**उजड मारग वैकुंठ केरो, ते माटे कोय न चाले ।**

**बेहेतल नहीं माहें चोर मले, दूथामां पग कोई न घाले ॥ ९**

वैकुण्ठका मार्ग तो उजाड़ है, इसलिए इस मार्ग पर कोई नहीं चल पाता. वहाँ बस्ती न होनेके कारण चोर मिलते हैं अर्थात् साधककी भजन, भक्ति, ज्ञान, वैराग्यरूपी सम्पदाको काम, क्रोध, लोभ मोह आदि लुटेरे लूट लेते हैं. इसलिए ऐसे कठिन मार्गको कोई नहीं ग्रहण करता.

**वस्ती विना लिए चोर लूसी, आडा दोष घणां रे दुकाल ।**

**लोही मांस न रहे अंग मांही, आडी खाइयो पर्वत पाल ॥ १०**

उजाड़ मार्ग होनेसे वैकुण्ठके मार्ग पर चलने वालोंको चोर-लुटेरे लूट लेते हैं. इस मार्गपर अनेक दुष्कर दुःख व्यवधानरूप बन जाते हैं. इसलिए इस दुष्कर मार्ग पर चलनेके कारण शरीरके रक्त और माँस भी सूख जाते हैं और आशा, तृष्णा, कामेच्छा रूपी बड़े-बड़े पर्वत तथा गहरी खाइयाँ भी मार्गमें अवरोधक बन जाती हैं.

**ते माटे सहू चाले संजमपुरी, ऊवट कोणे न अगमाय ।**

**संजमपुरीना दोष जाग्या पछी, श्रवणां न संभलाय ॥ ११**

इसलिए प्रायः लोग यमपुरीके सरल दिखाई देने वाले मार्ग पर चलते हैं. वैकुण्ठके विषम (कठिन) मार्ग पर चलना उनको रुचिकर नहीं लगता. परन्तु ज्ञान प्राप्त होनेके बाद यमपुरीके दुःखोंका आभास होने पर उन दुःखोंका

वर्णन भी उनसे सुना नहीं जाता.

**वैकुण्ठ वाटनां दुख जो सहिए, तो आगल सुख अखंड ।**

**वेद पुराण भागवत कहे छे, भाई जिहां लगे छे ब्रह्मांड ॥ १२**

यदि वैकुण्ठ मार्गके कष्ट धैर्यपूर्वक सहन किए जाएँ, तो इससे आगे अनेक अखण्ड सुख प्राप्त होंगे, वेदों, पुराणों और भागवतमें ऐसा वर्णन है. हे सज्जनो ! जब तक यह विश्व टिका रहेगा, तब तक वैकुण्ठके सुख भी टिके रहेंगे.

**पण बंध छूटा विना न चलाय, भाई ए छे करमनी काणी ।**

**मन मांहे जाणे अमे सुख भोगवसुं, पण जाए बंधाणां जमपुरी ताणी ॥ १३**

परन्तु संसारके कर्म बन्धनोंसे मुक्त हुए बिना इस मार्ग पर चला नहीं जा सकता. क्योंकि हे सज्जनो ! यह संसार तो भले-बुरे कर्मोंका जाल है. इसमें फँसनेके बाद मानव सोचता है कि अनेक सुख भोग लेंगे, परन्तु उसे पता नहीं है कि वह बँधा हुआ यमपुरीकी ओर खींचा जा रहा है.

**करम तणां बंध छे रे वज्रमय, वेद पुराण एम बोले ।**

**दया नहीं जीव हिंसा करे, ते करम चंडाल नहीं तोले ॥ १४**

वेदों और पुराणोंके कथनानुसार कर्मके बन्धन वज्रके समान होते हैं. जो लोग निर्दयी बनकर अन्य जीवोंकी हिंसा करते हैं, ऐसे कर्म चाण्डाल अपने बुरे कर्मोंका मूल्य नहीं आँकते.

**वली जो जो रे तमे सास्त्र संभारी, एणी पेरे बोले वाणी ।**

**कुंजर कथुआ मेरु माणस मांही, सरवे एक ज प्राणी ॥ १५**

हे सज्जनो ! तुम शास्त्रोंके वचनोंका स्मरण कर विचार करो. शास्त्रोंमें इस प्रकार बताया गया है कि हाथी जैसा विशालकाय प्राणी हो अथवा अति सूक्ष्म जीव जन्तु हो, मेरु पर्वत तथा मनुष्य इन सबमें एक ही प्राण तत्त्व विद्यमान है.

**अंन उदक वाय कीट पतंगमां, सकल कहे छे ब्रह्म ।**

**देखीतां आंधलां थाए, पछे बांधे अनेक पेरे करम ॥ १६**

अन्न, जल, वायु, जीव-जन्तु तथा कीट-पतङ्गें, इन सबमें परमात्माकी सत्ता

समाहित है। इतना जानने पर भी लोग अन्धे होकर उनकी हत्या करते हैं अर्थात् आँखोंसे देखने पर भी अन्धों जैसा व्यवहार करते हैं, वे अनेक प्रकारके कर्मोंके बन्धनोंमें फँस जाते हैं।

**पांच मलीने काया परठी, ते माहें जीव समाणो ।**

**थावर जंगम सकल व्यापक, एणी पेरे पथराणो ॥ १७**

शास्त्रोंके अनुसार यह शरीर पञ्चमहाभूतोंसे बना हुआ है और उसमें जीव समाया हुआ है। यह जीव स्थिर और चलायमान (स्थावर-जङ्गम) सब प्राणियोंमें व्याप्त होकर समग्र संसारमें फैला हुआ है।

**हवे वरण वेष थया जुजवा, एक उत्तम मधम ।**

**वस्त खरीथी विमुख थया, पछे चलवे ते अधमा अधम ॥ १८**

इस रहस्यको जानते हुए भी इस संसारके लोग भिन्न-भिन्न वर्ण, भाषा तथा वेशोंमें विभाजित हो गए हैं। उन्होंने उत्तम ब्राह्मण और मध्यम क्षत्रिय आदिके भेद खड़े किए हैं। वे वास्तविकतासे विमुख होकर अधोगतिकी ओर जा रहे हैं।

**हं रे गेहेलो एवां वचन तो ज कहं छुं, पण न थाय बीजा कोय गेहेला ।**

**विस्मी वाटे चाली न सके, तेने लागसे वचन घणां दोहेला ॥ १९**

मैं तो प्रेम दीवाना हूँ, इसलिए ऐसी बात कर रहा हूँ कि मेरे जैसा प्रेम दीवाना अन्य कोई न हो जाए। जो सत्यके कठिन मार्ग पर नहीं चल सकेंगे, उनको मेरे ये वचन अत्यन्त कठिन और दुःखदायी लगेंगे।

**एक जीवने आहार देवरावे, तेमां अनेक जीव संघारे ।**

**एणी पेरे दान करे रे दयासुं, ए धरम ते कां नव तारे ॥ २०**

एक जीवको आहार देनेके लिए अनेक जीवोंकी हिंसा की जाती है। ऐसे लोग दयाभाव दिखाकर दान करते हैं। ऐसा धर्म उनको कैसे तारेगा ?

**अनेक संघवी संघज काढे, धन खरचे थाय मोटा ।**

**बांधी करम करावे जात्रा, जाणे करम सुं करसे ए खोटा ॥ २१**

कितने ही संघवी (यात्रा संघ निकालनेवाले) अपना खर्च कर संघ निकालते

हैं तथा ऐसे कार्योंमें अधिक धन खर्च कर स्वयंको महान कहलाते हैं. ऐसे लोग कर्मके बन्धनोंमें बँधकर ही यात्राएँ करते हैं और मानते हैं कि अब हमारे अपकृत्य हमारा क्या बिगाड़ लेंगे ?

**मन माँहे जाणे अमे धरम भोगवसुं, प्रगट पाप न देखे ।**

**सुभ असुभ बने भोगववां, ए धरमराज सर्वे लेखे ॥ २२**

ऐसे लोग मनमें यह मानते हैं कि हमने यह महान धर्मकार्य किया है और अब सुख भोगेंगे. वे अपने प्रत्यक्ष पापकर्म को नहीं देखते. उन्हें ध्यान नहीं है कि शुभ या अशुभ सभी कर्म वास्तवमें भोगने ही पड़ेंगे. उन सबका लेखा तो धर्मराज रखते हैं.

**तीरथ ते जे एक चित कीजे, करम न बांधिए कोए ।**

**अहेनिस प्रीते प्रेमसुं रमिए, तीरथ एणी पेरे होए ॥ २३**

चित्तकी एकाग्रता ही तीर्थ है. इसलिए कोई भी कर्म बन्धनमें स्वयंको न बाँधे तथा दिन-रात प्रियतम परमात्माके प्रेममें रमण करे. वस्तुतः तीर्थ इस प्रकार किया जाता है.

**दान करे सहु देखादेखी, बांधे ते करम अनेक ।**

**मन तणी आंकडी न लाधे, तेणे बंधाए बंध विसेक ॥ २४**

संसारके लोग एक दूसरेकी देखा-देखी दान करते हैं. इसके कारण विभिन्न प्रकारके कर्मोंके बन्धनमें बँध जाते हैं परन्तु मनके (सङ्कल्प-विकल्पका) रहस्यको नहीं समझते हैं, इसलिए वे कर्मके विशेष बन्धनोंमें बँध जाते हैं.

**जीव संघारता मन न विमासे, जाग करे नामनाए ।**

**करम बंधातां कोई नव देखे, पण लेखुं लेसे जमराए ॥ २५**

लोग जीवहिंसा करते हुए लेशमात्र भी विचार नहीं करते तथा प्रसिद्धि प्राप्तिके लिए यज्ञोंमें पशुबलिका आयोजन करते हैं. इस प्रकार कर्म बन्धनोंको ये लोग नहीं देखते किन्तु यमराज उन सभीका हिसाब ले लेने वाले हैं.

**अनेक देरा परवो ने परवा, धन खरचे मोटाई ।**

**प्रसिध प्रगट थाय पाखंडे, जे माँहे भांड भवाई ॥ २६**

कई लोग ऐसे हैं जो मन्दिरोंकी स्थापनामें, पानीके प्याउ बनानेमें तथा

उत्सवोंमें मात्र अपनी प्रतिष्ठाके लिए धन खर्च करते हैं। वे प्रसिद्धिके लिए ही पाखण्ड रच रहे हैं, जैसे भाँड लोग नाच-गाकर प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं।

**दान दया सेवा सर्वा अंगे, कीजे ते सरवे गोप ।**

**पात्र ओलखीने कीजे अरचा, सास्त्र अरथ जोड़िए जोप ॥ २७**

हे सज्जनो ! दान, दया और सेवाको मन, वचन और कर्मसे करते हुए भी गुप्त रखना चाहिए। इसी प्रकार धर्मका उपदेश भी पात्रको पहचान कर ही देना चाहिए। शास्त्रोंके इन गूढ़ अर्थोंकी समझ प्राप्त करना उचित होता है।

**आगे प्रगट कीधुं रे जनके, दाधो पग अगिन ।**

**त्यारे घणी खंडणी कीधी नव जोगी, रखे वृथा जाय साधन ॥ २८**

पूर्वकालमें राजा जनकने अपनी साधनाका प्रभाव दिखानेके लिए अग्निमें पैर डाला, तब तो उनकी परीक्षाके लिए उपस्थित नौ योगियोंने इस प्रकारकी चेष्टाके लिए राजा जनककी खण्डनी की थी। इसलिए प्रदर्शनके द्वारा अपनी साधनाको व्यर्थ नहीं करना चाहिए।

**सत व्रत धारणसुं पालिए, जिहां लगे ऊभी देह ।**

**अनेक विघन पडे जो माथे, तोहे न मूकिए सनेह ॥ २९**

सत्यव्रत धारण करनेका सङ्कल्प किया हो, तो शरीरमें प्राण रहने तक उसे दृढ़ता पूर्वक निभाना चाहिए। अनेक विघ्न-बाधाएँ आने पर भी सत्यके प्रति प्रेम नहीं छोड़ना चाहिए।

**भागवत वचन जो जो रे विचारी, सार अक्षर जे सत ।**

**जीवने जगावो वचन प्रकासी, रदे उघाडो मत ॥ ३०**

हे साधुजन ! श्रीमद्भागवतके साररूप सत्य वचनों पर विचार करो और उन वचनों पर विश्वास कर अपनी आत्माको जागृत कर लो।

**ए माथे लेसे तेने कहुं छुं, बीजा मा करजो दुख ।**

**तमे तमारी माया मांहे, सेहेजे भोगवजो सुख ॥ ३१**

मेरे ये वचन उन लोगोंके लिए ही हैं, जो इनको शिरोधार्य कर जीवनमें

उतारते हैं. अन्य लोगोंको दुःखी होनेकी कोई आवश्यकता नहीं है, भले ही वे लोग इस संसारकी मायामें मग्न रह कर मौज उड़ाते रहें.

कोई एम मा केहेजो जे निंदया करे छे, वचने कहुं छुं देखाडी ।

साध पुरुषनी निद्रा भाजे, आंखडी देउं रे उघाडी ॥ ३२

कोई ऐसा न समझे कि मैं किसीकी निन्दा कर रहा हूँ. मैं तो भागवतका प्रमाण देकर यह कह रहा हूँ, जिससे सज्जनोंकी नींद (अज्ञान) उड़ जाएगी तथा उनके अन्तःचक्षु खुल जाएँगे.

वचन केहेतां कोय दुख मा करसो, सांभलजो सहु कोय ।

सत केहेतां कोई वांकु विचारसे, तो सरज्युं हसे ते होय ॥ ३३

इन सत्य वचनोंको कहते हुए किसीको भी दुःख नहीं मानना चाहिए. आप सभी इन वचनोंको सुनें. सत्य कहने पर भी यदि कोई विपरीत समझ ले, तो यही मानना होगा कि उसके भाग्यमें जो लिखा होगा, वही होगा.

विप्र तणो वेपार भाजे छे, भाई भागवत हाट न चाले ।

तो ज फरी फरी ने मूलगां, सर्व वचन जई झाले ॥ ३४

यदि सत्य कहने लगे तो विप्रजनों (वेद पाठी-कर्मकाण्डी ब्राह्मणों) का व्यवसाय (व्यापार) ही छूट जाएगा. वस्तुतः भाइयो ! भगवानका व्यापार नहीं होता. किन्तु सभी कर्मकाण्डी घूम फिर कर कर्मकाण्डके ही मूलमें पहुँच जाते हैं (उसीको महत्त्व देते हैं).

विप्र कुलीमां थया रे जोरावर, सत वचन उवेखे ।

पाखंडे खाय सरवे पृथ्वी, लोभ विना नव देखे ॥ ३५

सत्य वचनोंका उलंघन करने वाले ब्राह्मणोंकी शक्ति कलियुगमें अति प्रबल दिखाई देती है. समग्र पृथ्वी पर पाखण्डने अपना प्रभाव जमा लिया है. इसलिए उन्हें लोभ और स्वार्थको छोड़कर अन्य कुछ भी दिखाई नहीं देता.

ए रे लोभ घणो दोहेलो लागसे, पण लाग्या स्वादे चित न आवे ।

नीला बंध बांधतां सुख उपजे छे, पण सूक्या पछी रोवरावे ॥ ३६

इन झूठे सुखोंके लोभका परिणाम अत्यन्त दुःखदायी होगा, परन्तु जिन्होंने



झूठे सुखोंका स्वाद चख लिया है, उन्हें इनसे उत्पन्न दुःखोंका ध्यान नहीं रहता। जिस प्रकार घाव पर गीला वस्त्र बाँधने पर शीतलताका अनुभव होता है, परन्तु वही वस्त्र जब सूखकर घावसे चिपक जाएगा तब उखाड़ते समय वह रुला देता है। (इस प्रकार झूठे सुखोंके क्षणिक लाभके बाद अन्ततः भयङ्कर दुःख भोगना पड़ेगा।)

**उनमद उत्तम असार जाग्या रे मांहेथी, साध आपने कहावे ।**

**कुकरम मांहे कहिए ए कुकरम, बंध वज्रमय बंधावे ॥ ३७**

इस असार संसारमें उत्तम मानव जीवन प्राप्त कर स्वयंको साधु कहलाने वाले लोगोंमें यदि अभिमान जागृत हो जाए, तो यह अधमाधम कुकर्म ही कहलाएगा। यही तो सबको वज्रके समान कठोर बन्धनोंमें बाँध देता है।

**दोस विप्रोने कोय मां देजो, ए कलजुगना एंधाण ।**

**आगम भाख्युं मले छे सरवे, वैराट वाणी प्रमाण ॥ ३८**

इसमें ब्राह्मणोंको कोई दोष नहीं देना यह तो कलियुगका चिह्न है। भविष्य वक्ताओंने जिस प्रकार भविष्यवाणी की है, वह सत्य हो रही हैं तथा सभी शास्त्र इसीकी पुष्टि कर रहे हैं।

**असुर थकी सम खाधा भभीषणे, आगल श्री रघुनाथ ।**

**तमसुं कपट करुं तो कुली माहें, ब्राह्मण थाउं आप ॥ ३९**

राक्षसके घर पैदा होने वाले रावणके भाई विभीषणने श्री रामचन्द्रजीसे प्रतिज्ञा पूर्वक कहा था कि यदि मैं आपके समक्ष झूठ बोलकर कपट करूँ, तो कलियुगमें ब्राह्मण हो जाऊँ। [यह प्रसंग कृत्तिवास रामायण (बांगला भाषा) के सुन्दरकाण्डमें उल्लेखित है।]

**त्यारे वारयो श्री रघुपति राए, एवा कठण सम कां खाधा ।**

**तमे छो अमारा हुं नेहेचे जाणुं, मनमां मा धरजो वाधा ॥ ४०**

उस समय श्रीरामचन्द्रजीने विभीषणको प्रतिज्ञा लेनेसे रोका और कहा कि तुम ऐसी कठोर प्रतिज्ञा क्यों ले रहे हो ? मुझे निश्चित रूपसे ज्ञात है कि तुम मेरे भक्त हो। इसलिए अब तुम अपने मनमें किसी भी प्रकारकी शङ्का मत रखो।

ए वचन आगम छे प्रगट, ते तां सहु कोए जाणे ।

उतम करे असुराई ते माटे, ए कुली व्यापक एंधाणे ॥ ४१

ऐसी भविष्यवाणी पहलेसे ही प्रसिद्ध है, इसे सबलोग जानते हैं. उत्तम (ब्राह्मण) कहे जानेवाले लोग भी राक्षसी कार्य करने लगें, तो समझना कि कलियुगके व्यापक चिन्ह प्रकट हो गए हैं.

सुरता जाए सांभलवा ने चाल्या, जाणे आंधलानो संग ।

बाहेरनी फुटी काने बेहेरा, रदे तणां जे अंध ॥ ४२

यह तो वैसा ही है कि कोई बहरा व्यक्ति अन्धेको साथ लेकर कथा सुनने निकल पड़ा. एककी तो आँखोंमें ज्योति नहीं है तथा दूसरा कानसे बहरा है, हृदयसे तो दोनों ही अन्धे हैं. वे क्या सुनेंगे और क्या समझेंगे ?

भटजी कथा करवाने बेसे, केने आंसुपात न आवे ।

भांड तणी पेरे वचन वांका कही, सुरताने हंसावे ॥ ४३

कलियुगके कथाकार (भट्टजी) कथा करने बैठते हैं किन्तु कथा सुनते हुए भाव-विभोर होकर कोई भी अश्रुपात नहीं करता. क्योंकि ऐसे पण्डित तो भाँडकी भाँति इधर-उधरकी बातें कहकर श्रोताओंको हँसानेका काम करते हैं.

हंसी रमी कतोल करीने, सुरता किवता उठे ।

मनमां जाणे अमे ग्यान कथुं छुं, पण बंध मांहेना नव छुटे ॥ ४४

इस प्रकार हास्य-विनोदके साथ मनोरञ्जन कर श्रोता और वक्ता दोनों ही सन्तोषकर जाते हैं. पण्डितजी मनमें यही मानते हैं कि मैं ज्ञान सुना रहा हूँ किन्तु मनके बन्धन (गाँठे) किसीके भी नहीं छूटते.

दुष्टे दुष्ट मले मदमाता, ए कलजुगना रंग ।

सत पंडित कहावे साध मंडली, ए करमोना बंध ॥ ४५

इस कलियुगमें मिथ्याभिमानी श्रोता और वक्ता दोनों एक दूसरेसे मिल जाते हैं क्योंकि यह कलियुगका प्रभाव है. ऐसे लोगोंके समुदायको ही सज्जन साधु और ज्ञानी लोगोंकी मण्डली कहा जाता है. सांसारिक कर्मोंके इस प्रकारके बन्धन सबके साथ लगे हुए हैं.

तेम तेम कामस चढती जाए, जेम जेम जरा बल आवे ।

एम करतां जम कंकर आवे, पछे जीत्युं रतन हरावे ॥ ४६

जैसे-जैसे वृद्धावस्था आ जाती है, वैसे वैसे हृदयमें अनेक प्रकारके विकार भी बढ़ते जाते हैं। ऐसा करते-करते अन्ततः यमराजाके दूत आ पहुँचते हैं, इस प्रकार अनेक जन्मोंके बाद प्राप्त हुआ तथा अमूल्य रत्नके समान यह मनुष्य जीवन व्यर्थ ही गँवा देते हैं।

चरचा कथा ता तेहने कहिए, जे आप रुए रोवरावे ।

दिन दिन त्रास वधतो जाए, ते बंध रदेनां छोडावे ॥ ४७

कथा-वार्ता, चर्चा-उपेदश तो उसे कहा जाता है जब वक्ता दिव्य ज्ञानके स्पर्श द्वारा भावविभोर होकर स्वयं रोता हो एवं श्रोताओंको भी रुलाता हो। तभी दिन प्रतिदिन मृत्यु (यमराज) का भय बढ़ता जाएगा, और हृदयकी ग्रन्थियाँ भी खुलती जाएंगी।

वस्त थई अगोचर माँहें, जीव चाले आणे आचार ।

एणी चाले जो फल लाधे, तो पामसे सहु संसार ॥ ४८

ऐसेमें प्रभु तो अगोचर ही रह जाते हैं एवं मनुष्य बाह्य आचार-विचारमें डूबे रहते हैं। यदि इस प्रकारके आचरणसे ही परमात्मा प्राप्त हो जाते, फिर तो सारा विश्व ही परमात्माको प्राप्त कर लेता।

साध रह्या पंथ जोई जोई, पण केने न लाध्यो सेर ।

अनेक उपाय करी करी थाक्या, पण न टले ते भोमनो फेर ॥ ४९

इस संसारमें साधु-महात्मा भी परमात्माकी प्राप्तिके लिए अनेक पन्थों (मार्गों) को देख देखकर रह गए, परन्तु किसीको भी सत्य मार्ग प्राप्त न हो सका। ऐसे लोग अनेक प्रयत्न करते हुए थक गए फिर भी आवागमनका यह चक्र समाप्त न हुआ।

ए अमल तणो फेर जिहां नव जाय, तिहां फरे छे विकलना जेम ।

ए अटकले वन वन जई वलगे, ते फल पामे केम ॥ ५०

जब तक मायाका यह मद (नशा) नहीं उतरेगा, तब तक यह जीव व्याकुल

होकर संसारके आवागमनके चक्रमें घूमता ही रहेगा. संसारके ये लोग मात्र कल्पनासे ही विभिन्न सम्प्रदाय रूपी अरण्य (वन) में भटक रहे हैं. उन्हें सत्य वस्तु (फल) किस प्रकार प्राप्त होगी ?

**वृक्ष तणी ओलखाण न उपजे, जे ए फलनुं छे आ वन ।**

**केम फल लाधे सोध बिना, जेनुं विकल थयुं छे मन ॥ ५१**

साधकको जब तक सम्प्रदायरूपी वृक्षकी पहचान न हो, तब तक उसे ज्ञात नहीं होगा कि यह वृक्ष कौन-सा फल देगा. जिन लोगोंका मन ही विचलित हो गया है, उन्हें शोध (साधना) किए बिना फल (मुक्ति) किस प्रकार प्राप्त हो सकता है ?

**उनमाने फल जोवा जाय, सामां वीटे करमना जाल ।**

**मनमां जाणे हुं बंध छोडुं छुं, पण बंधाई पडे ततकाल ॥ ५२**

लोग अपने अनुमानित ज्ञानको लेकर मोक्षरूपी फल प्राप्त करने जाते हैं परन्तु सामने बिछे हुए कर्मकाण्डके जालमें फँस जाते हैं. वे मनमें तो सोचते हैं कि हम कर्मके बन्धन छोड़ रहे हैं, परन्तु अज्ञानके कारण तत्काल बन्धनमें पड़ जाते हैं.

**जईने जुए फल जुआ थईने, अनेक कीधी उनमान ।**

**एक मांहेथी चोरासी बुधें बोल्या, पण पाय्या नहीं परा धान ॥ ५३**

जैन सम्प्रदायके प्रवर्तक परम ज्ञानी आदिनाथ-ऋषभदेवजीने कर्मकाण्डसे पृथक् होकर परमात्मा प्राप्तिके लिए प्रयत्न किया था. उनके अतिरिक्त अनेक लोगोंने भी उसके लिए अनुमान किया. एक आदिनाथके बाद उनके अनुगामी चौरासी सिद्धोंने अपनी बुद्धि द्वारा प्रयत्न किया किन्तु परमतत्त्व-परमात्माको प्राप्त किए बिना, वे सिद्ध क्षेत्रकी ही बात करते रह गए.

**इहां अनेक बुधे बल कीधां, अने अनेक फराया मन ।**

**फल थयुं अगाध अगोचर, साध रह्या जोई जोई अनु दिन ॥ ५४**

इस संसारमें अनेक प्रबुद्धजनोंने मुक्तिका मार्ग प्राप्त करनेके लिए अनेक प्रयत्न किए तथा अपने मनको संसारसे हटाकर परम तत्त्वकी ओर मोड़ा.

आज दिन तक साधक लोग खोजते ही रह गए, तथापि उन्हें ब्रह्मरूपी फल दृष्टिगोचर नहीं हुआ।

वली जे साध पुरुष कोय कहावे, ते कामस टालवा जाय ।

सो मण साबु घसी पछाडे, निरमल तोहे न थाय ॥ ५५

पुनः इस संसारमें जो साधक कहलाते हैं, वे सभी अपने मनके कल्मषको धोनेका प्रयत्न करते हैं। भला वे सौ मन साबुन घिस डालें (मात्र शुष्क साधनाओंसे शरीरको कष्ट दें) किन्तु अन्तःकरणसे निर्मल नहीं हो सकते।

सो रे वरसनी जटा बंधाणी, ते केम छोडी जाए ।

अंतकाल सुरझावा बेठा, लेई कांकसी हाथ मांहे ॥ ५६

जिस प्रकार सौ वर्षसे बँधी हुई जटाको अन्तमें कंधी लेकर संवारनेका प्रयत्न करने पर वे केश कैसे सुलझेंगे ? उसी प्रकार जीवन भर कर्मकाण्डमें फँसकर वृद्धावस्थामें अपने कर्मोंके बन्धनोंसे मुक्त होनेके लिए प्रयत्न कर लें, तो भी जन्म-जन्मान्तरके कर्मोंके बन्धन एक क्षणमें कैसे छूट सकते हैं ?

ए करमना बंध जोरावर, ते छूटे नहीं केणी पर ।

बलिया बल करी करी थाक्या, निगमिया अवसर ॥ ५७

कर्मके बन्धन अति प्रबल होते हैं। वे सामान्यतः नहीं छूटते। अनेक महापुरुष (शूर-वीर) भी अपनी सारी शक्तियाँ लगा कर थक गए। उन्होंने भी अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ गँवा दिया।

बंध छोडे जई आकारना, मोटी मत धणी जे कहावे ।

पण बंध बंधाणां जे अरूपी, ते तां द्रष्टे केहनी न आवे ॥ ५८

इस प्रकार महान ज्ञानी कहलाने वालोंने भी शरीरका बन्धन तो छोड़ दिया, किन्तु वे कर्मके सूक्ष्म बन्धनोंमें बँधे रह गए। कर्मके ऐसे सूक्ष्म बन्धन प्रत्येककी दृष्टिमें नहीं आते।

गुरुगम टाली बंध न छूटे, जो कीजे अनेक उपाए ।

जेणी भोमे रे आप बंधाणां, ते भोम न ओलखी जाए ॥ ५९

हे सज्जनो ! अनेक उपाय क्यों न किए जाएँ, किन्तु सद्गुरुके ज्ञानके बिना

कर्मकाण्डके बन्धन छूटते नहीं हैं. जिस भवसागरमें हम स्वयं फँसे हुए हैं, उसे सद्गुरुके दिव्य ज्ञानके बिना समझा नहीं जा सकता.

**आप न ओलखे बंध न सूझे, करम तणी जे जाली ।**

**खोलतां खोलतां जे गुरुगम पाम्यो, तो ते नाखे बंध वाली ॥ ६०**

जब तक आत्म-ज्ञान प्राप्त नहीं होता, तब तक कर्मके बन्धन भी नहीं सूझते, क्योंकि ये बन्धन तो अनेक जन्मोंमें किए गए विभिन्न कर्मोंकी गुथी हुई जाली है. यदि ढूँढ़ते-ढूँढ़ते साधकको जीवनमें सद्गुरु मिल जाएँ, तो वे ही कर्मके बन्धनरूपी जालीको जलाकर भस्म कर सकते हैं.

**केम ओधरिया आगे जीव, जेने हता करमना जाल ।**

**गुरुगम ज्यारे जेहने आवी, ते छूट्या ततकाल ॥ ६१**

पूर्वकालमें भी कर्मके जालमें फँसे हुए जीव कैसे उससे मुक्त हुए, इस पर विचार करने पर ज्ञात होगा कि जिस भाग्यवानको जब सद्गुरुका ज्ञान प्राप्त हुआ, वह उसी क्षण कर्मके बन्धनों से मुक्त हो गया.

**आणे वचने खरे बपोरे, बोध तमारे पास ।**

**भरत खंड माँहे जनम मानषे, कां न करो प्रकास ॥ ६२**

मध्याह्नके सूर्यके प्रकाशके समान सद्गुरुके दिव्य ज्ञानकी समझ तुम्हारे पास है. इतना ही नहीं पवित्र भरत खण्डमें अलभ्य मनुष्य योनिमें तुम्हारा जन्म हुआ है, तथापि अपने हृदयको क्यों प्रकाशित नहीं करते ?

**आ जोगवाई सघली सनंधे, कां न करो वस्त हाथ ।**

**आ वेला वली वली नहीं आवे, जीती कां जाओ रे निरास ॥ ६३**

यह मानव तन परमात्मा प्राप्तिके लिए सम्पूर्ण सुविधा सम्पन्न है, फिर तुम सत्य वस्तु (पूर्णब्रह्म परमात्मा)को क्यों प्राप्त नहीं करते ? ऐसा अमूल्य अवसर वारंवार प्राप्त नहीं होगा. देव दुर्लभ मनुष्य जीवन प्राप्त होने पर भी तुम क्यों निराश होकर इसे व्यर्थ गँवा रहे हो ?

तमे जैन महेसरी सहुए सुणजो, आदे धरम छे एक ।

रिषभ देव चाल्या पछी, मारग वेहेचाणां विवेक ॥ ६४

हे जैन, तथा माहेश्वरियो ! तुम सब मेरी बात सुनो. आदि धर्म तो एक ही है. ऋषभदेवके परलोक गमनके बाद उनके अनुयायी अनेक पन्थोंमें बँट गए हैं.

मुझवण विध करो छे धरमनी, मांहो माहे अगाध ।

वस्त खोल्यां विना विमुख थाओ छे, लई जाए गुण कहावो छे साध ॥ ६५

ज्ञानी होने पर भी अपनी-अपनी समझके अनुसार धर्ममें भ्रान्तियाँ उत्पन्न कर क्यों उलझ रहे हो ? अखण्ड वस्तुका परिचय प्राप्त किए बिना ही तुम उससे विमुख हो रहे हो. तमो गुण ही तुम्हें खींचकर ले जा रहा है, तथापि तुम स्वयंको साधु-महात्मा कहलाते हो.

जीव चंडाल कठण एवो कोरडुं, कां रे करो छे हत्यारो ।

वृथा जनम करो कां साधो, आवो रे आकार कां मारो ॥ ६६

यह जीव जन्म-जन्मान्तरोंसे कभी भी द्रवित न होने वाला (कोरडू) कठोर और चाण्डाल बन गया है. तुम ऐसे सुन्दर मानव जीवनको प्राप्त कर भवसागरसे पार जानेका प्रयत्न किए बिना क्यों आत्मघाती हो रहे हो ? (शास्त्रोंके कथनानुसार मनुष्य जीवन प्राप्त करने पर भी जो भवसागर पार नहीं कर सकता वह आत्मघाती कहलाता है). इसलिए हे सज्जनो ! इस अमूल्य मनुष्य जीवनको क्यों व्यर्थ गँवा रहे हो, ऐसा समर्थ मनुष्य तन प्राप्त करके भी उसे क्यों नष्ट कर रहे हो ?

लाख चोरासी हत्या बेससे, एवो आ जनम तमारो ।

बीजी हत्यानो पार नथी, जो ते तमे नहीं संभारो ॥ ६७

तुम्हें ऐसा अमूल्य मनुष्य जीवन प्राप्त हुआ है, उसे व्यर्थ गँवा देने पर चौरासी लाख योनियोंमें भटकनेकी हत्याका पाप लगेगा. यदि इस जन्मको भली प्रकार नहीं सम्भालोगे तो दूसरी अन्य हत्याओंका पाप लगेगा जिनका कोई अन्त नहीं है.

**आगल तिमर घोर अंधारुं, बूडसे जीव जल मांहे ।**

**लेहेरो मारे अवला पछाडे, मछ गलागल तांहे ॥ ६८**

सद्गुरुका दिव्य ज्ञान प्राप्त करने पर भी जिसने अपनी आत्माको नहीं पहचाना, उसके लिए तो सर्वत्र घोर अन्धकार है। ऐसे जीव इस भवसागरके गहरे पानीमें डूब जाएँगे। भवसागरमें जन्म-मरण रूपी लहरें उनको पछाड़ेंगी तथा जैसे छोटी मछलीको बड़ी मछली निगल जाती है, उसी प्रकार जीवकी दशा होगी।

**बुध विना जीव बेसुध थासे, माथे पडसे मार ।**

**बांधेल बंध ताणसे बलिया, विसमसे नहीं खिण वार ॥ ६९**

विवेक बुद्धिके बिना चौरासी लाख योनियोंमें यह जीव बेसुध होकर पड़ा रहेगा। इतना ही नहीं, उस पर अनेक प्रकारकी मार भी पड़ेगी। उसके किए हुए कर्म बन्धन उसे बलपूर्वक घसीट ले जाएँगे, तब उसको क्षण भरके लिए भी विश्रान्ति (शान्ति) नहीं मिलेगी।

**ए दुस्तरनो क्यांहे छेह नहीं आवे, कलकलसो करसो पुकार ।**

**त्रास पामीने जीव कां न जगवो, आ विसमुं घणुं संसार ॥ ७०**

तब इस दुस्तर (विकट) भवसागरका कोई किनारा हाथ नहीं लगेगा और तुम रो-रोकर विलखते हुए पुकार करने लगोगे। इसलिए तुम इन कर्म बन्धनोंसे त्रस्त होकर अपने जीवको जागृत क्यों नहीं करते ? यह संसार तो अत्यन्त विषम है।

**दिस एके नहीं सुझे सागर मांहे, भवसागर जम जाल ।**

**अनेक वार तडफडसो मरसो, तोहे नहीं मूके काल ॥ ७१**

यह भवसागर ऐसा यमजाल है कि इसमें आगे पीछेकी दिशाका कुछ पता ही नहीं चलता। तुम यहाँ पर बार-बार तड़पते रहोगे, फिर भी काल तुम्हें नहीं छोड़ेगा।

**त्यारे तेवा मांहे सुं सोध थासे, आज आव्यो अवसर ।**

**साध पुरुष तमे जोजो संभारी, बीजी नथी छूटवा पर ॥ ७२**

तब वैसी स्थितिमें परमात्माकी खोज कैसे हो पाएगी ? अभी तो तुम्हें मनुष्य



जीवनका अति सुन्दर अवसर मिला हुआ है. इसलिए हे साधु सज्जनो ! तुम मायाके विषयमें भली प्रकार विचार करो. मनुष्य जीवनके बिना कर्मके बन्धनोंसे छूटनेका अन्य कोई उपाय नहीं है.

**गुरुगम टाली ए गाँठ न छूटे, केमे न थाय रे नरम ।**

**माँहेली कामस केमे न जाए, जो कीजे अनेक सरम ॥ ७३**

हे सज्जनो ! सद्गुरुके ज्ञानके बिना कर्मकी यह प्रबल गाँठ नहीं छूट सकती और न ही किसी भी प्रकारसे शिथिल (नरम) हो पाएगी. अनेक परिश्रम करने पर भी तुम्हारे हृदयसे काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहङ्कार जैसे विकार (कल्मष) नहीं छूटेंगे.

**बाहेर थकी गाँठ एक छोडीए, तिहां बीजी बंधाए अपार ।**

**ए विसमा बंधनो नथी रे उपाए, बीजो आणे संसार ॥ ७४**

कदाचित् अन्य उपायों (कठिन साधनाओं)के द्वारा कर्मकी एक गाँठ बाहरसे छूट भी जाए तो वहाँपर दूसरी अनेक गाँठें तुरन्त ही बँध जाएँगी. इस प्रकार इन विषम बन्धनोंसे मुक्त होनेके लिए गुरु ज्ञानके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं है.

**आ आकार माँहे जीव बंधाणो, ते पण नव ओलखाए ।**

**तो पारब्रह्म जे पार थयो, ते केणी पेरे खोलाए ॥ ७५**

इस मनुष्य शरीरमें यह जीव बँधा हुआ है. यदि हम अपने ही शरीरमें स्थित जीवको भी पहचान नहीं सकते, तो इस संसारसे परे पूर्णब्रह्म परमात्माको कैसे ढूँढ़ पाएँगे तथा उनकी पहचान कैसे हो पाएगी ?

**जीव थयो माँहे निराकार, ते केणी पेरे बांध्यो बंध ।**

**रूप रंग वाए तेज नहीं, तमे साधो जुओ रे सनंध ॥ ७६**

यह जीव तो वस्तुतः आकार रहित है वह इस शरीरमें कैसे बँध गया है ? उसका न कोई रूप है, न रङ्ग, उस पर वायु और प्रकाशका भी प्रभाव नहीं होता. हे साधुजनो ! आप इसपर विचार तो करें, यह सब कैसे हुआ ?

जीव बंधाणो अगनाने, ते अगनान निद्रा जोर ।

जेहेर चढ्युं घेन भोम तणुं, ते पड्यो तिमर मांहे घोर ॥ ७७

वस्तुतः जीव अज्ञानके द्वारा बँधा हुआ है। यह अज्ञानरूपी निद्रा अति प्रबल है। इस संसारके काम, क्रोध, अहङ्कार आदि मायाका नशा उस पर चढ़ा हुआ है। इसलिए जीव अज्ञानके अन्धकारमें डूबा रहता है।

आणे आकारे जो नव छूटो, तो छूटसो केही पर ।

साधो साधनी संगत करजो, खिण खिण जाए अवसर ॥ ७८

हे साधुजन ! यदि मनुष्यतन प्राप्त करने पर भी कर्मके बन्धनोंसे मुक्त नहीं हो पाओगे, तो फिर जन्म-मृत्युके बन्धनोंसे कैसे मुक्त हो सकोगे ? इसलिए साधु-महात्माओंके सङ्गमें रहकर उनका उपदेश ग्रहण करो, यह अमूल्य अवसर क्षण-क्षणमें बीता जा रहा है।

साध संगते आ जेहेर उतरसे, रुदे ते करसे प्रकास ।

घेन निद्रा सरव उड़ीने जासे, अंधकारनो नास ॥ ७९

सच्चे साधु-महात्माओंका सङ्ग करने पर मायाका यह विष स्वतः उतर जाएगा तथा हृदयमें ज्ञानका प्रकाश फैलेगा। तब जीवको बेसुध बना देने वाली अज्ञान निद्रा समाप्त हो जाएगी तथा अज्ञानरूपी अन्धकार दूर हो जाएगा।

त्यारे जीव जई आप ओलखसे, ओलखसे आ ठाम ।

घर पोताना द्रस्टे आवसे, त्यारे पामसे विसराम ॥ ८०

तब जीवको स्वयंकी पहचान होगी तथा वह इस झूठे संसारको भी पहचानेगा। जब अपना घर (परमधाम) उसकी दृष्टिमें आएगा, तभी वह विश्रान्ति (शान्ति) प्राप्त कर पाएगा।

ज्यारे जीवनी मोरछा भागी, त्यारे उडी गयुं अगनान ।

करमनी कामस केम रहे, ज्यारे भलियो श्री भगवान ॥ ८१

जब जीवकी मूर्च्छा दूर हो जाएगी, तब अज्ञान भी मिट जाएगा। जब उसे परमात्मा ही मिल जाएँगे, तब उसमें कर्मके कल्मष (विकार) कैसे रह पाएँगे ?

भ्रांत भरम सरवे भागी जासे, उडी जासे आसंक ।

अगम अगोचर सहु सोध थासे, रमसे मांहे वसंत ॥ ८२

जब उसकी सभी भ्रान्तियाँ दूर हो जाएँगी तथा सभी संशय भी मिट जाएँगे, तब इन्द्रियोंके द्वारा अगोचर अगम्य परमात्माकी भी शोध हो जाएगी तथा वह उन्हींके साथ नित्य रमण करने लगेगा।

दोष मा दीजे रे वैराट वाणीने, मुखथी बोले सहु सत ।

बोल्या उपर चाली न सके, त्यारे फरी जाए छे मत ॥ ८३

संसारके शास्त्र वचनों तथा साधु-सन्तोंकी वाणीको कोई भी दोष मत देना, क्योंकि उन सभीने सत्य ही कहा है। जब वाणीके अनुसार जीवनमें आचरण नहीं हो सकता, तब बुद्धि भी फिर जाती है।

मोटो अवतार श्रीपरसरामजी, तेना हजी लगे बंध न छूटे ।

कष्ट करे छे आज दिन लगे, पण तोहे ते ताणां न त्रुटे ॥ ८४

श्री परशुरामजी भगवान विष्णुके अवतार माने जाते हैं परन्तु अभी तक उनके बन्धन नहीं छूटे हैं। वे आज तक तप करते हुए अनेक कष्ट सहन कर रहे हैं, तथापि कर्म बन्धनकी सूक्ष्म तन्तुएँ नहीं टूटतीं।

अनेक देह दमे पंच अगनी, तोहे न बले करम ।

अनाद कालना जे बंध बांध्या, ते थाए नहीं जीव नरम ॥ ८५

अनेक साधु-महात्मा पञ्चाग्नि तप आदि विभिन्न तपश्चर्या कर देहका दमन करते हैं। तथापि उनके कर्मके बन्धन जलकर नष्ट नहीं होते। क्योंकि अनादि कालसे बँधे हुए कर्म बन्धन जीवके लिए एका-एक शिथिल नहीं हो सकते।

प्रगट बेठा बंध छोडवा, ते आपण माटे थाय ।

अवतार ते पण करमे बंधाणां, रखे कोई देखी बंधाय ॥ ८६

परशुराम जैसे अवतारी पुरुष भी कर्म बन्धनोंसे मुक्त होनेके लिए तप कर शरीरको कष्ट दे रहे हैं। वे अपने लिए नहीं अपितु भविष्यमें आने वाले जीवोंके लिए उदाहरण बन कर शिक्षा दे रहे हैं। वे अवतारी पुरुष होने पर भी कर्मके बन्धनमें इस लिए बँधे हैं कि उनको देखकर अन्य कोई भी कर्म बन्धनमें न बँध जाए।

आ ब्रह्मांड विषे कोई एम मा केहेसो, जे अमने सुं करे बंध ।

ब्रह्मांड धणी पोते आप बंधावी, देखाडे छे सनंध ॥ ८७

इस संसारमें जन्म लेने वाले किसीको भी ऐसा नहीं कहना चाहिए कि ये कर्म बन्धन हम पर क्या प्रभाव डाल सकेंगे ? क्योंकि संसारके स्वामी (अवतार) स्वयं कर्म बन्धनमें बँधकर हमें यह शिक्षा दे रहे हैं।

तेज आकास वाय जल पृथ्वी, रवि ससि चौदे भवन ।

ए फरे सरव करमनां बांध्या, बीजा तो एहेनी उतपन ॥ ८८

आकाश, वायु, तेज, जल और पृथ्वी (ये पञ्चमहाभूत) तथा सूर्य, चन्द्र एवं चौदह लोकोंके सभी प्राणी कर्मके बन्धनोंमें बँधकर चक्कर काट रहे हैं। जब ये सभी कर्मके अधीन रहकर घूम रहे हैं तो अन्य जीव तो इन्हींसे उत्पन्न हुए हैं (वे कर्म बन्धनोंसे रहित कैसे हो सकते हैं ?)।

प्रगट वैराट थयो जे दाडे, एना बंध पेहेलानां बंधाणां ।

बाल्या बले नहीं ते माटे, सहुए ते जाय तणाणां ॥ ८९

इस ब्रह्माण्डका सर्जन होनेसे पहले ही इसके कर्म बन्धनोंका सर्जन हो चुका था। इसलिए वे कर्म बन्धन जलानेसे नहीं जलते। इस प्रकार समस्त ब्रह्माण्ड कर्मके बन्धनोंमें बँधकर खींचा जा रहा है।

मानषो जनम पाय्यो बंध छोडवा, वली रे वसेखे भरत खंड ।

कुली मांहे उत्तम आकार पामी, सामां बांधे छे अधका बंध ॥ ९०

यह मनुष्य जन्म कर्मके इन जटिल बन्धनोंसे मुक्ति पानेके लिए ही प्राप्त हुआ है। उसमें भी श्रेष्ठ भरतखण्डमें और उत्तम कलियुगमें यह जीवन प्राप्त हुआ है तथापि मनुष्य मुक्ति प्राप्त करनेके बदले और बँधे जा रहे हैं।

मांहे अंधारुं मांहे अजवालुं, रुदे ते कोय न संभारे ।

परवस बांध्यो करम करे, अवतार अमोलक हारे ॥ ९१

अपने अन्तःकरणमें ही अज्ञानका अन्धकार और ज्ञानका प्रकाश दोनों हैं। तथापि हृदय पूर्वक कोई विचार नहीं करता। इस प्रकार सब लोग विवश

होकर कर्मके बन्धनोंमें फँसते जा रहे हैं और अमूल्य मानव जीवनको व्यर्थ गँवा रहे हैं.

**कोई वेद विचार ना करे, भाई सहु को स्वादे लाग्युं ।**

**अनल एणी पेरे चाले ते माटे, साचुं ते सरवे भाग्युं ॥ १२**

इस संसारमें कोई भी व्यक्ति वेद वाणीकी सत्य बातको समझकर उसपर विचार नहीं करता. क्योंकि सब मायावी सुखोंके आनन्दमें मग्न हैं. यहाँ पर भ्रमकी ऐसी आग लगी हुई है कि सभी लोग सत्यसे भाग रहे हैं.

**साचुं बोल्युं गमे नहीं केहने, सहुने ते लागसे दुख ।**

**वेद तणा वचन विचारो, जे कहे छे पोते मुख ॥ १३**

इस संसारमें सत्य वचन किसीको नहीं भाते. सत्य कथनसे सबको दुःख होता है. वेद वचनों पर विचार तो करो, वेद स्वयं क्या कह रहे हैं ?

**वेद कहे मारा मूल आकासे, साखा छे पाताल ।**

**तोहे न समझे मूढ मती, अने फरी फरी पडे मांहे जाल ॥ १४**

वेदोंमें स्पष्ट रूपसे वर्णन किया गया है कि “उर्ध्वमूलम् अधः शाखा” अर्थात् संसारका मूल आकाशमें और शाखाएँ पातालमें हैं. तथापि मूर्ख लोग समझते नहीं हैं और वारंवार संसारके मोह जालमें फँसते हैं.

**वेद तणुं तां ब्रक्ष नथी, भाई ए छे प्रगट वाणी ।**

**अवली के सवली विचारो, ए आंकडी न कलाणी ॥ १५**

हे सज्जनो ! विचार करो कि वेद कोई वृक्ष नहीं हैं. वेद तो ज्ञानको फैलाने वाली पवित्र वाणी है. उसको उलटे या सीधे ढङ्गसे विचार करोगे, तो भी उसका गूढ़ रहस्य समझमें नहीं आएगा.

**सत वाणी छे वेद तणी, जो ते कोय जुए विचारी ।**

**ए कोहेडो रचियो रामतनो, सघला ते मांहे अंधारी ॥ १६**

यदि कोई हृदयपूर्वक गहराईसे विचार करे तो ज्ञात होगा कि यह वेद वाणी सत्य है मायाका यह खेल ही उलझन भरा है, इसलिए सबकी बुद्धि अन्धकार (भ्रम) में डूबी रहती है.

कोई दोस मा देजो रे वेदने, ए तो बोले छे सत ।

विस्व पडी भोम अगनान मांहे, ए भोम फेरवे छे मत ॥ ९७

हे सज्जनो ! वेद वाणीको दोष मत दो. वहाँ तो सत्य कहा गया है परन्तु विश्वके लोग अज्ञान अन्धकारमें पड़े हुए हैं. यह भूमि (माया) ही उनकी बुद्धि बदल देती है.

अरथ जुए सहु उपली वाटनो, मांहेलो ते मांहे नव संभारे ।

वैराट पूर वहे वेहेवटे, दुख सुख कोय न विचारे ॥ ९८

सब लोग वेदोंका बाह्य अर्थ देखते हैं. उनके गूढ़ार्थपर कोई विचार नहीं करता. इस संसारमें अज्ञानका प्रवाह तीव्र गतिसे बह रहा है. उसमें निमग्न लोग सुख और दुःखका विचार भी नहीं करते.

वेद विचार करी करी वलिया, पारब्रह्म नव लाध्या ।

वली वलिया उलट्या त्यारे पाछा, वंध विस्वनां बांध्या ॥ ९९

वेदोंने पूर्णब्रह्म परमात्माकी खोज करनेके लिए अनेक प्रयत्न किए. परन्तु उन्हें परब्रह्म प्राप्त नहीं हुए. जब इतना समर्थ ज्ञान भी वैसे ही पीछे लौट गया, तब उसने समग्र संसारको कर्मकाण्डके बन्धनोंमें जकड़ दिया.

आ तां व्यासजीनुं कह्युं कहुं छुं, तमे मानजो साधो संत ।

न मानो ते जई सुकजीने पूछो, आ बैठा छे मांहे भागवत ॥ १००

हे साधु सन्तों ! यह तो वेदव्यासजीके कथनानुसार मैं कह रहा हूँ, इसलिए तुम मान लेना. यदि विश्वास न हो तो जाकर शुकदेवजीसे पूछ लो, वे श्रीमद्भागवतमें विराजमान हैं.

वेद पुराण भारत सहु बांध्या, त्यारे दाझ रुदेमां समाणी ।

ततखिण आव्या गुरुजी पासे, बोल्या नारदजी वाणी ॥ १०१

(श्रीमद्भागवतके प्रथम स्कन्धके चौथे एवं पाँचवें अध्यायमें बताया गया है कि) वेद व्यासजीने वेद पुराण और महाभारत आदि ग्रन्थोंका संकलन कार्य पूर्ण किया तथापि उनको शान्ति नहीं मिली. उसी समय उनके गुरु देवर्षि नारद वहाँ आ पहुँचे और अपनी बातें कही.

घणी खंडणी कीधी व्यासजीनी, पूरी वचनोने श्रवणां न दीधी ।

वाणी सरवे नाखी उडाडी, अवतारनी लाज न कीधी ॥ १०२

उस समय नारदजीने व्यासजीकी अति भर्त्सना की. उन्होंने उनकी पूरी बात भी नहीं सुनी और कर्म बन्धनकी ओर प्रवृत्त करने वाली सभी वाणीको उड़ा दिया (महत्त्वहीन कर दिया), उन्होंने अवतारी पुरुष व्यासजीकी मर्यादा भी नहीं रखी.

सवला रोष भराणां रिषीजी, जोई व्यास वचन ।

सास्त्र सरवे बांधीने, तें बोल्या बूडतां जन ॥ १०३

वेद व्यास रचित ग्रन्थोंको देखकर नारदमुनि अति क्रोधित हुए और कहने लगे, हे व्यासजी ! तुमने इन शास्त्रोंकी रचना कर भवसागरमें डूबते हुए लोगोंको और अधिक डुबानेका प्रयत्न किया है.

वेराट धणी ज्यारे नव लाध्यो, त्यारे कां न रह्यो तूं गोप ।

विस्व विगोई सा माटे, तें उलटा वचन कही फोक ॥ १०४

नारदजीने व्यासजीसे कहा, जब तक तुम्हें सृष्टिके अधिपति परमात्माका ज्ञान नहीं मिला, तब तक तुम चुप (छिपकर) क्यों नहीं रहे ? इस प्रकारके कर्मकाण्डका विपरीत ज्ञान देकर समग्र संसारको सत्यसे विचलित क्यों किया ?

विसमां वचन देखी व्यासजीना, पूरी ते द्रष्ट चढावी ।

श्री कृष्णजी विना बीजुं सरवे मिथ्या, एम कह्युं समझावी ॥ १०५

वेदव्यासजी रचित शास्त्रोंके विषम वचनोंको देखकर नारदजीने अपनी भौहें चढ़ाई. फिर समझाकर कहा कि श्रीकृष्णजीको छोड़कर सब कुछ मिथ्या है अर्थात् श्री कृष्णजीका गुणगान किए बिना ये सभी रचनाएँ निरर्थक हैं.

वचन तणो अहंमेव व्यासजीनो, नाख्यो ते सरव उडाडी ।

दया करीने खंडणी कीधी, दीधी आंखडी उघाडी ॥ १०६

वेदव्यासको शास्त्रोंकी रचना करनेका जो गर्व था, उसे नारदजीने चूर कर दिया. फिर दया पूर्वक भर्त्सना करते हुए समझाया और उनकी अन्तर्दृष्टि खोल दी.

तेणे समे कह्युं नारदजीए, न वले जिभ्या मारी एम ।

कठण वचन कह्यां व्यासजीने, में केम केहेवाय आ तेम ॥ १०७

उस समय नारदजीने व्यासजीको जिस प्रकार कठोर वचन कहकर समझाया अर्थात् उनकी भर्त्सना की, उस प्रकारके वचन मुझसे कहे नहीं जाते।

आटलुं पण हुं तो ज कहुं छुं, रखे केने अजाण्युं जाय ।

आ दुनियां भेला साध तणाए, त्यारे सुं करुं में न रेहेवाय ॥ १०८

इतना भी मैं इसलिए कह रहा हूँ कि कोई व्यक्ति इन रहस्योंसे अपरिचित न रहे. संसारके लोगोंके साथ साधुजन भी मायाके प्रवाहमें बह जाते हैं. तब क्या करूँ ? कहे बिना मुझसे रहा नहीं जाता।

हाकली गुरुगम दीधी नारदजीए, ते लई व्यास घेर आव्या ।

सार वचन लई ग्रन्थ सघलाना, रदे ते मांहे समाव्या ॥ १०९

नारदमुनिने अपने गुरुजन- सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार आदि ऋषि-मुनियोंसे प्राप्त ज्ञानका उपदेश व्यासजीको दिया. उसे सुनकर व्यासजी अपने आश्रममें लौटे और इस उपदेशके आधार पर सभी ग्रन्थोंका सार हृदयस्थ कर लिया।

सार तणो विचार करीने, बांध्या द्वादस स्कंध ।

त्यारे ठरयो रदे एणे वचने, मन पाम्युं आनन्द ॥ ११०

फिर वेद व्यासजीने सभी ग्रन्थोंका सार विचार कर बारह स्कन्धोंमें श्रीमद्भागवतकी रचना की, तब इन वचनोंसे व्यासजीका हृदय शान्त हुआ तथा वे आनन्द-विभोर हो गए।

उदर सुकजी उपना, अने आंहीं उपनुं भागवत ।

व्यासे वचन कही प्रीछव्यां, ग्रही प्रीसव्यां संत ॥ १११

एक ओर शुकदेवजी व्यासजीके पुत्रके रूपमें उत्पन्न हुए तो दूसरी ओर श्रीमद्भागवतकी रचना हुई. व्यासजीने शुकदेवजीको भागवतके वचन समझाए. पश्चात् शुकदेवजीने उन्हीं वचनोंको ऋषियोंमें वितरित कर दिया।



सारनुं सार थयुं भागवत, वचन थयां ववेक ।

वली अमृत सींच्युं सुकदेवे, तेणे थयुं रे वसेक ॥ ११२

इस प्रकार श्रीमद्भागवत वेदव्यासजी द्वारा रचित सम्पूर्ण शास्त्र-पुराणोंके विवेकपूर्ण सार वचन स्वरूप है, जिसमें शुकदेवजीने भक्ति (प्रेम) रसका अमृत सींचा. इसके कारण यह ग्रन्थ विशेष महत्त्वपूर्ण बन गया.

सकल सारनुं सार निपनुं, सहु को ते मुखथी भाखे ।

पण वचन भारे विचार न थाय, त्यारे विप्र वाणी पेहेलानी दाखे ॥ ११३

श्रीमद्भागवतको देखकर सभी विद्वानोंने कहा कि इसमें सभी ग्रन्थोंका सार है, किन्तु वे इन गहन वचनों पर विचार नहीं कर सके. इसलिए ब्राह्मण लोग पहले कहे हुए कर्मकाण्डका ही विशेष प्रचार करते हैं.

सुकजी केरां वचन समझी, जो कोई रदे विचारो ।

सात दिवस माहें परीखत वैकुंठ, वचने पार उतार्यो ॥ ११४

शुकदेवजीके वचनों (श्रीमद्भागवत) पर हृदयपूर्वक विचार करना चाहिए. शुकदेवजीने इन्हीं वचनोंको सुनाकर राजा परीक्षितको सात दिनोंमें ही वैकुण्ठ पहुँचा दिया था.

ते ज वचन वांचता सांभलता, जाए जम वारो बांध्यो ।

अरथ तणी ओलखाण न आवे, प्रेम वचन नव लाध्यो ॥ ११५

श्रीमद्भागवतके उन्हीं वचनोंका प्रवचन तथा श्रवण करते हुए भी लोग यम पाशमें बँध जाते हैं, क्योंकि श्रीमद्भागवतके वचनोंका गूढ़ार्थ न समझनेके कारण उन्हें प्रेम लक्षणाभक्ति प्राप्त नहीं होती.

अहेनिस अरथ करे समझावे, केहनो रंग न पलटो थाए ।

बेहेराने कालो संभलावे, बांध्या ते माटे जाए ॥ ११६

कथाकार जन दिनरात श्रीमद्भागवतकी कथा तो करते रहते हैं, परन्तु उनके उपदेशोंद्वारा श्रोताओंके हृदयमें कोई परिवर्तन नहीं होता. बहरेको गूँगा समझा रहा हो, वही स्थिति यहाँ भी होती है. इसलिए श्रीमद्भागवत सुनकर भी लोग कर्मके बन्धनोंमें बँधे हुए ही चले जाते हैं.

आंकडी कोय न जुए रे उखेडी, वचन तणां जे ववेक ।

गुरुगम टाली खबर न पडे, ए अरथ भारे छे वसेक ॥ ११७

श्रीमद्भागवतके गूढ़ रहस्य पर कोई भी विवेक पूर्वक विचार नहीं करता। सद्गुरुके बिना इन गूढ़ रहस्योंकी समझ प्राप्त नहीं होती, क्योंकि इन वचनोंमें गूढ़ रहस्य छिपे हुए हैं।

ए रे अरथ मांहे छे अजवालुं, जो कोय जोसे रे विचारी ।

रुदया मांहे थासे प्रकास, ज्यारे जागसे जीव संभारी ॥ ११८

श्रीमद्भागवतके इन गूढ़ रहस्योंमें ही अखण्ड दिव्य ज्ञानका प्रकाश समाहित है। यदि कोई इन वचनों पर हृदयपूर्वक विचार करे, तो उसके हृदयमें ज्ञानका प्रकाश फैल जाएगा जिससे वह सचेत होकर अपने जीवको भी जागृत करेगा।

जीव जाग्यो त्यारे नथी वस्त वेगली, आतम पर आतम जोड ।

त्यारे वासो दर्ईने विस्वने, सनमुख रेहेसे कर जोड ॥ ११९

आत्मा जागृत होने पर अखण्ड वस्तु उससे दूर नहीं होगी। वह अपनी आत्माका सम्बन्ध पर आत्मासे जोड़ देगा तथा इस संसारसे मुख मोड़कर प्रियतम धनीके समक्ष हाथ जोड़कर खड़ा हो जाएगा।

विध सघली समझी वैराटनी, माया करसे सत ।

स्वामी सेवक थासे संजोग, त्यारे उडी जासे असत ॥ १२०

आत्मा जागृत होते ही तत्क्षण उसे विराट ब्रह्माण्डकी सुधि हो जाएगी एवं इस नश्वर मायामें भी सत्यकी प्राप्ति हो जाएगी। तब उसको अपने प्रियतम धनी (परमात्मा) और आत्माका शाश्वत् सम्बन्ध ज्ञात हो जाएगा तथा उसका झूठा अज्ञान स्वतः हट जाएगा।

थासे संजोग त्यारे बंध छूट्या, करम नहीं लवलेस ।

निहकरम तणां निसानज वाग्यां, अखंड सुख पामसे वसेक ॥ १२१

इस प्रकार आत्मा और परमात्माका सम्बन्ध ज्ञात होते ही सभी बन्धन छूट जाएंगे, कर्मके बन्धन लेश मात्र भी नहीं रहेंगे। तब निष्कर्म (निष्काम कर्म)

के भाव जागृत होंगे तथा विशेष रूपसे अखण्ड सुखोंकी प्राप्ति होगी.

**बीजा केहेने दोस न दीजे रे भाईजी, ए माया विकराल ।**

**करोलिया जेम गूंथी गूथें, मुझाई मरे मांहे जाल ॥ १२२**

हे सज्जनो ! दूसरोंको दोष मत देना, यह माया स्वयं ही विकराल है. जिस प्रकार मकड़ी स्वयं जाल बनाकर उसमें ही फँस जाती है और अन्ततोगत्वा उसीमें मर जाती है, उसी प्रकार संसारके प्राणी भी स्वयं कुल कुटुम्ब परिवारका जाल रचते हैं तथा स्वयं उसी जालमें फँसकर मृत्युके मुखमें चले जाते हैं.

**जे जीव होय जल तणों, ते न रहे विना जल ।**

**अनेक विधनां सुख देखाडो, पण मूके नहीं पाणीवल ॥ १२३**

पानीमें रहनेवाले जीव, बिना पानीके जी नहीं सकते. उन्हें पानीसे बाहर निकालकर विविध प्रकारके सुख भी दिए जाएँ, तथापि वे एक क्षणके लिए भी पानीको नहीं छोड़ सकते.

**तेम जीव होय सागर तणों, ते मूके नहीं भवसागर ।**

**अखंड सुख जो अनेक देखाडो, पण मूके नहीं पोते घर ॥ १२४**

इसी प्रकार इस झूठे भवसागरके लोग भी इसे नहीं छोड़ते. उन्हें अनेक प्रकारसे अखण्ड सुख दिखाए जाएँ, तथापि वे इस संसाररूपी घरको छोड़ नहीं सकते.

**खरो हसे जे खरी भोमतणों, आ वचन विचारसे जेह ।**

**अग्नि ज्वाला देखीने छाडसे, अखंड सुख लेसे तेह ॥ १२५**

जो अखण्ड भूमिका (परमधाम) की आत्मा होगी, मात्र वही इन सत्य वचनोंपर विचार करेगी. वह इस संसारको अग्निकी ज्वालाके समान दुःखदायी मानेगी एवं उसे त्याग देगी. ऐसी आत्माएँ ही अखण्ड सुख प्राप्त करेंगी.

**मन करमने ठेलसे, जेथी प्रगट थाय सरवा अंग ।**

**साथी बोध संघाती बोले, जीव मन एकै रंग ॥ १२६**

जिस मनसे सब गुण, अङ्ग, इन्द्रियाँ सञ्चालित होती हैं, ऐसी जागृत

आत्माका मन इन्द्रियोंके कर्मबन्धनोंको धक्के मारकर त्याग देगा. तब अंग-अंगमें परमात्माका प्रेम प्रकट हो जाएगा. मनुष्यमें सन्निहित गुण, अंग, और इन्द्रियाँ मनके साक्षी बनकर इस सत्य वस्तुकी साक्षी देंगी, तभी जीव और मन दोनों एक ही परमात्माके रंगमें रंग जाएँगे.

**हवे गोप वचन केहेवासे गुरुगम, ते केम प्रगट होय ।**

**विस्नु संग्राम करीने लेसे, साध हसे जे कोय ॥ १२७**

अब ये गूढ़ वचन सद्गुरुके ज्ञानके द्वारा ही कहे जाएँगे, किन्तु जिज्ञासुके बिना ये कैसे प्रकट होंगे ? यदि कोई सच्चा साधु होगा, तो वही सत्सङ्गके द्वारा इन वचनोंको प्राप्त कर लेगा.

**आ तां अनुमाने बाण नाख्यां उडाडी, बीजा भारी उडाड्या न जाय ।**

**सनमुख मले नहीं जिहां सुरो, ते हथूका विना न चोडाय ॥ १२८**

इस प्रकार संसारमें प्रचलित अनुमानित ज्ञानके वचनों (बाण) को सारहीन समझकर उड़ा दिया गया. परन्तु सद्गुरुके वचन तो गहन होनेसे उड़ाए नहीं जाएँगे. जब तक दृढ़ निश्चयी (शूर) जिज्ञासु नहीं मिलता, तब तक सद्गुरुका ज्ञानरूपी हथौड़ा नहीं मारा जाएगा.

**साध ओलखासे वचने, अने करसे समागम ।**

**साध वाणी साध एम ओचरे, संगत छे साध रतन ॥ १२९**

सच्चे साधुकी पहचान उसके वचनोंसे ही होती है एवं पहचान होने पर ही सच्चे साधुकी सङ्गत की जाती है. महापुरुषोंने अपनी वाणीमें इस प्रकार कहा है कि ऐसे साधुजनका सत्सङ्ग ही अमूल्य रत्न है.

**प्रकरण १२६ चौपाई १९४५**

**पर न आवे तोले एकने, मुख श्रीकृष्ण कहंत ।**

**प्रसिध प्रगट पाधरी, किवता किव करंत ॥ १**

महामति कहते हैं, अपने मुखसे एक बार भी श्रीकृष्ण नामका उच्चारण करनेसे अथवा उनके यशोगान करनेसे जो लाभ प्राप्त होता है, उसकी तुलना

अन्य किसी भी साधना, साधन एवं अमूल्य पदार्थोंसे नहीं की जा सकती।  
अनेक कवियोंने तथा सन्त-मनीषियोंने भी इस सत्यताका प्रमाण दिया है।

**कोट करो नरमेध, अश्वमेध अनंत ।  
अनेक धरम धरा विषे, तीरथ वास वसंत ॥ २**

यद्यपि करोड़ों नरमेध यज्ञ अथवा अनन्त अश्वमेध यज्ञ किए जाएँ, इस संसारमें प्रचलित अनेक धर्मोंका अनुपालन भी किया जाए तथा तीर्थ धामोंमें जाकर कल्पवास भी किया जाए तथापि श्रीकृष्ण नामके उच्चारणके साथ इनकी तुलना नहीं की जा सकती।

**सिध करो साधना, विप्र मुख वेद वदंत ।  
सकल क्रियासुं धरम पालतां, दया करो जीव जंत ॥ ३**

चाहे जितनी साधना करके सिद्धियाँ प्राप्त की जाएँ, कुलीन ब्राह्मण बनकर वेदोंको कण्ठस्थ करके उनका पाठ किया जाए, सब प्रकारकी उपासना करके सर्वधर्म पालन किया जाए, प्राणी मात्र पर दया भाव रखा जाए परन्तु श्रीकृष्ण नाम स्मरणकी तुलनामें ये सब टिक नहीं सकते।

**व्रत करो विध विधानां, सती थाओ सीलवंत ।  
वेष धरो साध संतना, गनानी गनान कथंत ॥ ४**

चाहे अनेक प्रकारके व्रत करो या पतिव्रता धर्मका पालन कर शीलवती सती बनो, साधु, महात्मा बनकर अनेक प्रकारके वेश धारण करो, पण्डित, वैरागी अथवा ज्ञानी बनकर विभिन्न प्रकारसे ज्ञान चर्चा करो, तथापि यह सब श्रीकृष्णनामके उच्चारणके समान नहीं हो सकता।

**तपसी बहुविध देह दमो, सरवा अंग दुख सहंत ।  
पर तोले न आवे एकने, मुख श्रीकृष्ण कहंत ॥ ५**

चाहे तपस्वी बनकर विविध प्रकारकी साधनाओं द्वारा शरीर (इन्द्रियों) का दमन करो, शरीरके सभी अङ्गोंके द्वारा अनेक प्रकारके दुःख सहन करो, तो भी ये सब उपक्रम श्रीकृष्ण नामस्मरणके समान नहीं हैं।

मेहेराज कहे मुख ए धन, जो वली रुदे रमंत ।

चौदे भवन ते जीतियो, धन धन ए कुलवंत ॥ ६

मेहेराज (महामति) कहते हैं, जो लोग मुखसे श्रीकृष्ण नामका उच्चारण करते हैं, वे तो भाग्यवान हैं ही किन्तु जिनके हृदयमें श्रीकृष्णजी सदैव रमण करते हों, ऐसे भक्तोंने तो चौदह लोकों पर विजय प्राप्त कर ली है और उनका सारा कुल (वंश) ही धन्य-धन्य हो गया है.

प्रकरण १२७ चौपाई १९५१

हां रे मारा साध कुलीनां सांभलो

माया कोहेडो अंधेर केहेवाय, माहें साध बंधाणा जाए ।

तमने हजी लगे सोध न थाय, काल ताकी ऊभो माथे खाए ॥ १ मारा..

हे मेरे कलियुगके सन्तो ! ध्यानपूर्वक सुनो. यह माया कुहिरके समान अन्धकारपूर्ण कहलाती है तथापि साधुजन इसीके बन्धनमें बंधे हुए जा रहे हैं. तुम्हें अभी तक सुधि नहीं हो रही है कि यह काल तुम्हें खानेके लिए तुम्हारी ही ताकमें बैठा हुआ है.

साध वाणी तमे सांभली रे, कां न विचारो मन ।

आणे अजवाले मानषे, तमे कां रे भूलो साध जन ॥ २

तुमने तो सन्त महापुरुषोंकी (आप्त) वाणी सुनी हुई है. अभी भी क्यों मनसे विचार नहीं करते, ज्ञानका प्रकाश प्राप्त होने पर भी तुम भूलकर इस अमूल्य जीवनको क्यों व्यर्थ गँवा रहे हो ?

खिण मांहे अरथ ज लीजे रे, जे वचन कहां वेद व्यासे ।

दीपक वामा खमे नहीं, हवणां धबक अंधारुं थासे ॥ ३

इस क्षणभङ्गुर जीवनमें वेदव्यासजी द्वारा (श्रीमद्भागवतमें) कथित वचनोंके गूढ़ रहस्य समझ लो. मायाकी इस आँधीमें यह जीवनरूपी दीपक अधिक देर तक नहीं रह पाएगा. इसके बुझते ही सर्वत्र अन्धकार छा जाएगा.

कथतां सांभलतां ए गिनान रे, जमवारो आवसे रे ।

अधवचे सरव मुकावी, तरत बांधीने जासे रे ॥ ४

संसारके ज्ञानको कहते सुनते हुए अन्ततः मृत्युकी घड़ी आ पहुँचेगी तथा

जीवनके मध्यमें ही सब कुछ छुड़ाकर यमदूत जीवको बाँधकर ले जाएँगे.

साचुं कहे दुख लागसे रे, साचुं ते केहने न सुहाय ।

प्रगट कहिए मोहो ऊपर, त्यारे दोहेला ते सहने थाय ॥ ५

सत्य वचन कहने पर सबको दुःख लगता है, क्योंकि किसीको भी सत्य वचन भाते नहीं हैं. यदि सत्य बात सम्मुख कही जाए, तो सबको दुःख होता है.

अवलुं देखी हुं न सकुं, त्यारे सुं करुं में न रेहेवाय ।

वेष धरी लजवो साधने, एम ते माटे केहेवाय ॥ ६

अनर्थ होता हुआ मुझसे देखा नहीं जाता तब मैं क्या करूँ ? इसलिए मैं सत्य कहे बिना चुप नहीं रह सकता. तुम तो साधु वेश धारण कर सत्यसे विचलित होते हुए साधुओंको भी लज्जित कर रहे हो. इसलिए सत्य कहना पड़ता है.

दुष्ट थई अवगुण करे, ते जै जमपुरी रोए ।

पण साध थई कुकरम करे, तेनुं ठाम न देखुं कोए ॥ ७

जो लोग दुष्ट बनकर अवगुण करते हैं, वे रोते हुए यमपुरीमें दण्ड भोगते हैं. परन्तु जो साधु बनकर कुकर्म करते हैं, उनके लिए मुझे कहीं भी ठिकाना दिखाई नहीं देता.

क्रोध अहंमेव समे नहीं, अने वेष धरो छे साध ।

लोभ लज्या नमे नहीं, मांहे मोटी ते ए ब्राध ॥ ८

क्रोध और अहङ्कार तुम्हारे अन्दर समा नहीं रहे हैं तथा तुम साधु वेश धारण किए बैठे हो. लोभ और मान-मर्यादा (लोक-लज्जा) के कारण विनम्रता नहीं आती. तुम्हारे अन्दर यही तो महा-रोग है.

उतम कहावो आपने, अने नाम धरावो साध ।

साध मल्यो नव ओलखो, मांहे अवगुण ए अगाध ॥ ९

स्वयंको श्रेष्ठ कहलानेके लिए ही तुमने साधुवेश धारण किया है. किन्तु यदि कोई सच्चा साधु मिल जाए, तो उसे नहीं पहचानते हो. यही तो तुम्हारे अन्दर बड़ा अवगुण (दोष) है.

न करो संगत साधनी, मन ना धरो विस्वास ।

संजमपुरीना दुख सांभलो, पण तोहे ना उपजे त्रास ॥ १०

स्वयं तो साधुकी सङ्गत नहीं करते तथा उनके उपेदशों पर विश्वास भी नहीं करते हो. यमपुरीकी यातनाओंका वर्णन सुनकर भी तुम्हें पापका डर नहीं लगता.

छेतरवा हीडो छे जगदीसने, ते छेतर्या केम करी जाए ।

पास बीजाने मांडिए, जई आपोपुं बंधाए ॥ ११

मात्र आडम्बरी वेश धारण कर जगदीश्वरको ठगना चाहते हो, किन्तु वह ठगा कैसे जा सकता है ? जो दूसरोंको फँसानेके लिए जाल रचते हैं, वे स्वयं उसमें फँस जाते हैं अर्थात् दूसरोंके लिए खड्डा खोदनेवाला स्वयं उसमें गिर जाता है.

अस्नान करी छापा तिलक देओ, कंठ आरोपो तुलसी माल ।

गिनानी कहावे साध मंडली, पण चालो छे केही चाल ॥ १२

स्नान करनेके पश्चात् मस्तक पर तिलक तथा शरीर पर चन्दनका लेप लगाते हो तथा गलेमें तुलसीकी माला धारण कर साधु मण्डलीमें ज्ञानी कहलाते हो, परन्तु यह विचार नहीं करते कि स्वयं अपना आचरण किस प्रकारका है ?

वेष उत्तम तमे धरो, पण माहेलो ते मेल न धुओ ।

पंथ करो छे केही भोमनो, रिदे आंख उघाडी नव जुओ ॥ १३

आडम्बर दिखानेके लिए तुम साधुका उत्तम वेश धारण करते हो, परन्तु अपने अन्दर (मनमें) भरे हुए विकारोंके मैलको नहीं धोते हो. इस प्रकार तुम किस लोकके मार्ग पर चल रहे हो ? अपने हृदयकी आँख (अन्तःचक्षु) खोल कर तो देखो.

मन मेलां धुओ नहीं, अने उजला करो आकार ।

आकार तिहां चाले नहीं, चाले निरमल निराकार ॥ १४

मनकी मलीनताको तो धोते ही नहीं केवल शरीरको ही स्वच्छ बनानेका



प्रयत्न करते हो. यह शरीर तो प्रभुके धाममें जा नहीं सकता, वहाँ तो केवल निर्मल, निर्विकारी जीव (आत्मा) ही जा सकता है.

**वैकुण्ठ ऊंचुं सिखर पर, ऊवट चढतां उंचाण ।**

**मोहजल लेहेरो मारे सामियो, इहां वाय ते वा उंधाण ॥ १५**

वैकुण्ठ धाम तो चौदह लोकोंके शिखर पर स्थित है. उस पर चढ़नेका मार्ग टेढ़ा-मेढ़ा और विषम (उबड़-खाबड़) है. उस मार्ग पर चलते समय मोह जलकी लहरोंके थपेड़े जीवको पीछे धकेल देते हैं और काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहङ्काररूपी वायु उलटा गिरा देती है. (ऐसे कठिन मार्ग पर चलकर शिखर तक पहुँचना दुष्कर है).

**चढवुं ऊंचुं चीरक थई, वाटे दुख दिए घणा दुष्ट ।**

**प्रवाह उतरतां सोहेलुं, पण दोहेलुं ते चढतां पुष्ट ॥ १६**

उच्चधामके मार्ग पर जानेके लिए त्यागी-बैरागी बनने पर भी नम्रता, निस्वार्थ भावना आदि गुण भी आवश्यक होते हैं. ऊँचे, दुर्गम मार्ग पर चढ़ते समय काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि शत्रु बनकर अवरोध पैदा करते हैं. प्रवाहमें बहकर नीचे उतरना सरल है, परन्तु प्रवाहकी विरुद्ध दिशामें चल पाना बड़ा कठिन होता है.

**सोहेलुं देखी कां उतरो रे, आगल दुख अनेक ।**

**चढतां घणुंए दोहेलुं, पण वैकुण्ठ सुख वसेक ॥ १७**

नीचे उतरनेके मार्गको सरल मानकर क्यों उतर रहे हो ? आगे जाने पर चौरासी लाख योनियोंमें अनेक प्रकारके कष्ट सहन करने पड़ेंगे. वैकुण्ठके ऊँचे मार्ग पर चढ़ना कठिन अवश्य है, परन्तु वहाँ पहुँचने पर विशेष सुख प्राप्त होंगे.

**सुपनतणां सुख कारणे, केम खोईए अखंड सुख ।**

**सुख सुपने देखी करी, केम लीजे साख्यात दुख ॥ १८**

इस स्वप्नवत् संसारके झूठे सुखोंके लिए अखण्ड सुखको क्यों गँवा रहे हो ? स्वप्नवत् संसारके विषय सुखोंको क्षणिक जानते हुए भी, चौरासी लाख

योनियोंके अनन्त दुःखोंको क्यों मोल ले रहे हो ?

चीरक थई तमे ना सको रे, मायामां थयां मोटा ।

वाणी विचारी नव जुओ, पछे सास्त्र करो कां खोटा ॥ १९

तुम कैसे वैरागी हो पाओगे ? तुम तो मायामें बड़े बने हुए हो. शास्त्र वचनोंको विवेकपूर्वक विचार नहीं करते हो तथा उन्हें झूठे सिद्ध करना चाहते हो.

दुखडां खमी तमे ना सको, माया सुखे रह्यां मांणो ।

चढाय नहीं एणी उवटे, पाछां चढतां ने कां तांणो ॥ २०

तुम तनिक भी दुःख सहन नहीं कर सकते, क्योंकि तुम मायाके सुख भोग रहे हो. तुमसे तो स्वयं कठिन मार्ग (त्याग और वैराग्यका मार्ग) पर चला नहीं जा सकता, परन्तु उस मार्ग पर चलनेवालोंको क्यों पीछे खींच रहे हो ?

ताण्युं तमारुं सुं करे, जेने लाग्यो छे चोलनो रंग ।

साध कहावी असाध थाओ छे, करो छे भजनमां भंग ॥ २१

जो वैराग्यके रङ्गमें रंग चुका है, उसे तुम्हारा आकर्षण क्या कर पाएगा ? किन्तु खेदकी बात है कि तुम साधु कहलाकर असाधु जैसे कार्य कर रहे हो तथा दूसरोंके भजनमें विघ्न डाल रहे हो.

पगलां पोतानां जुओ नहीं, अने बीजाने देओ छे दोस ।

सास्त्र अरथ समझा नथी, तां जातो नथी रिदे रोस ॥ २२

अपने आचरण देखे बिना दूसरोंको दोष देते हो. तुम धर्म शास्त्रोंके अर्थोंको नहीं समझते, इसीलिए तुम्हारे हृदयसे ईर्ष्या, क्रोध आदि दुर्गुण नहीं हटते हैं.

सास्त्रे मारग बे कहा, त्रीजो न कहा कोय ।

एक वाट वैकुंठ तणी, बीजी स्वर्ग जमपुरी जोय ॥ २३

शास्त्रोंमें दो मार्गोंका वर्णन मिलता है. इनको छोड़कर तीसरा मार्ग किसीने नहीं बताया. उन दोमें-से एक मार्ग वैकुण्ठका है तथा दूसरा मार्ग यमपुरीका है.

वली एक वाट कही करी, ते ततखिण कीधो लोप ।

तिहांना हता ते चालिया, पण रही ते मायामां गोप ॥ २४

इन दो मार्गोंके अतिरिक्त एक और (बेहद) मार्गका सङ्केत कर उसे तत्क्षण छिपा दिया गया. शास्त्रोंने उसे स्पष्ट रूपसे नहीं कहा. जो वहाँके थे, वे इस मार्ग पर चल पड़े. शेष लोगोंके लिए अभी तक वह मार्ग मायामें छिपा रहा.

तमे रे जुओ पोते आप संभारी, केही रे लीधी छे वाट ।

केही रे भोमना बंध बांधो छे, उतरसो कीहे रे घाट ॥ २५

हे सज्जनो ! अब तुम स्वयं भली-भाँति विचार करो कि तुमने किस मार्गको ग्रहण किया है ? किस लोकमें जानेका सम्बन्ध बना रहे हो तथा ऐसे आचरणसे किस घाट पर उतरोगे ?

गुण पचवीसे बांधिया रे, बांध्या ते नवे अंग ।

इंद्री पखे गुणे बांधिया, काँई द्रढ करी माया संग ॥ २६

तुम्हारा शरीर पच्चीस प्रकृति (आठ प्रकृति, सोलह विकार एवं एक चेतन), नव द्वार एवं गुण, अङ्ग, इन्द्रियोंके द्वारा रचा गया है. इन सभीने मिलकर मायाके साथ तुम्हारा सम्बन्ध दृढ़तासे बाँध दिया है.

बंध प्रभुसुं न बांधिया रे, त्यारे केणी पेरे आवे तेह ।

रदे विचारी जोड़ए जो, बांध्यो छे केसुं नेह ॥ २७

जिसने अपना सम्बन्ध प्रभुसे बाँधा ही नहीं वह कैसे प्रभुके पास पहुँचेगा ? जरा हृदयसे विचार करके तो देखो तुमने किसके साथ सम्बन्ध बाँधा हुआ है ?

जे रे गामनी वाट ज लीजे, आवे तेह ज गाम ।

जाणीने जमपुरी जाओ छे, त्यारे न आवे अखंड विसराम ॥ २८

हे सज्जनो ! जिस गाँवका मार्ग ले रहे हो, वही गाँव तो सामने आएगा. तुम लोग तो जानबूझकर भी उसी यमपुरीके मार्ग पर चल रहे हो, उस पर चलते हुए अखण्ड विश्राम (अखण्ड मुक्ति) का स्थान नहीं आएगा.

सूथी वाट जाणी संजमपुरी, कां सहए उजाणां जाओ ।

वेद पुराण तमे सांभली, एम रुदे फूटा कां थाओ ॥ २९

यमपुरीका मार्ग सरल देखकर दौड़े हुए उधर ही क्यों जा रहे हो ? तुमने वेद पुराण आदि शास्त्रोंके ज्ञानको सुना है. तथापि भग्न हृदय (दिलके अन्धे) क्यों बन रहे हो ?

देखादेखी पंथ करो छो, रदे नथी विचार ।

सास्त्र वाणी जो सत करो, तो भूलो केम आ वार ॥ ३०

तुमने देखा-देखी (ऊँट कतार) का मार्ग अपनाया है. अपने हृदयसे सार-असारका विचार ही नहीं करते. यदि तुम शास्त्रोंकी वाणीको समझकर उस पर विश्वास करते, तो मनुष्य जीवनका यह सुअवसर व्यर्थमें गँवानेकी भूल क्यों करते ?

ढोलतां ढोलाने सोहेलुं, पण आगल ऊंडी खाड ।

लोही मांस सरवे सूकसे, पछे घरट दलासे हाड ॥ ३१

प्रवाहमें बहकर नीचेकी ओर जाना सरल होता है, किन्तु आगे (नरककी) गहरी खाई है. नरकाग्निमें तपने पर जब शरीरके रक्त और मांस सूख जाएँगे तब यमराजकी चक्रीमें हड्डियाँ भी पिसी जाएँगी.

केस त्वचा जासे चरमाई, नसो ब्रूटसे निरवाण ।

विधविधनां दुख देखसो, पण तोहे नहीं छोडे प्राण ॥ ३२

नरककी अग्निमें तुम्हारे केश और त्वचा झुलस जाएगी निश्चित ही तुम्हारी नसें भी टूट जाएँगी. इस प्रकार तुम नरकके विभिन्न दुःख भोगेगे, तथापि तुम्हारे प्राण उस यातना देह (सूक्ष्म शरीर) से नहीं छूटेंगे.

जमपुरीनां दुख दारुण, ते सुं नथी तमे मांण्या ।

पुराण ते माटे कहे पुकारी, केणे जाए रखे अजाण्या ॥ ३३

यमपुरीके असह्य दुःख क्या तुमने पहले कभी नहीं भोगे हैं ? कोई इस बातसे अनभिज्ञ न रहे इसलिए शास्त्र-पुराणादि पुकार-पुकार कर कह रहे हैं. ?

कुंड अठावीस कहाँ सुकदेवे, एक बीजाथी चढता जाए ।

त्यारे पड्यो परीखत दुख सुणी, स्वामी बीजा तो ना संभलाए ॥ ३४

शुकदेव मुनिने नरकके अठ्ठाईस कुण्डोंका वर्णन किया, जो एकसे एक (उत्तरोत्तर) बढ़कर हैं. तब राजा परीक्षित इन दारुण दुःखोंका वर्णन सुनकर व्याकुल हो गए तथा कहने लगे, हे स्वामी ! अब अन्य कुण्डोंके दुःख मुझसे सुने नहीं जा सकते.

छप्पन रह्यां विन सांभल्यां, तेतां सुणी न सक्यो राए ।

कलकली कंपमान थयो, ते तां कहाँ न सुण्यां जाए ॥ ३५

इस प्रकार राजा परीक्षित शेष छप्पन कुण्डोंके दुःखोंका वर्णन सुन न सके. मात्र अठ्ठाईस कुण्डोंके दुःखोंका वर्णन सुनकर ही वे व्याकुल हो उठे. इसलिए काँपते हुए कहने लगे, हे मुनिजी ! अब वे असह्य दुःख मुझसे सुने नहीं जाएँगे.

दैव ते दोस लिए नहीं, ते माटे कीधां पुराण ।

देखी पडो कां खाडमां, आ तां सहुने करे छे जाण ॥ ३६

विधाता किसी भी प्रकारके दोष अपने सिर पर नहीं लेता. इसलिए तो पुराणोंकी रचना की गई है. उनमें इस प्रकारका ज्ञान देखकर भी तुम सब दुःखके इस गड्ढेमें क्यों गिरना चाहते हो ?

स्वादे लाग्यां सुख भोगवो, पण पछे थासे पछताप ।

व्यास वचन जोतां नथी, पछे घससो घणुं बने हाथ ॥ ३७

तुम इन्द्रियोंके स्वादमें पड़कर विषयोंके सुख भोग रहे हो, किन्तु बादमें बड़ा पश्चात्ताप होगा. व्यासजीके इन वचनोंको देखते नहीं हो, पश्चात् हाथ मलते रह जाओगे.

भटजी चोखुं तमने केम कहे, जेणे मांड्युं ए ऊपर हाट ।

सूथी देखाडे संजमपुरी, तमे अपगरो एणी वाट ॥ ३८

कथाकार तुम्हें क्यों सत्य कहेंगे, उन्होंने तो कथाको ही व्यवसाय बना रखा है. वे तो तुम्हें यमपुरीका सरल मार्ग बताते हैं तथा तुम भी उसी मार्ग पर चल रहे हो.

बुध तमारी किहां गई, पछे आवसे कीहे काम ।

वचन जुओ सुकदेवनां, तेमां प्रगट पराधाण ॥ ३९

तुम्हारी बुद्धि कहाँ चली गई है ? बादमें यह बुद्धि किस काम आएगी ? शुक्रदेवजी द्वारा वर्णित भागवतके वचनों पर विचार करो. उसमें परम तत्त्वका स्पष्टीकरण है.

अर्थ लई सास्त्र तणो, तमे ओलखजो आ ठाम ।

बीहो छे छाया थकी, जुओ करे छे कोण संग्राम ॥ ४०

शास्त्रोंके गूढ़ रहस्योंको समझकर इस संसारकी असारताको पहचानो. मायाकी छायासे ही तुम डर रहे हो. परन्तु हृदयसे विचार करो कि तुम्हारे साथ कौन युद्ध कर रहा है ?

कोण तमसुं जुध करे, बीजो ऊभो सामो कीहो चोर ।

आप बंधाणां आपसुं, मांहेली गमा तिमर घोर ॥ ४१

तुम्हारे साथ कौन युद्ध कर रहा है, तुम्हारे सामने दूसरा कौन-सा चोर खड़ा है ? तुम स्वयं अपने स्वार्थके लिए कर्मके बन्धनोंमें फँसे हुए हो. तुम्हारे हृदयमें भ्रमका घोर अन्धकार छाया हुआ है.

संसार सूतो घारण करी, ते तां केणी पेरे जागे रे ।

पण साध कहावो निद्रा करो, मुने दुख ते तेनुं लागे रे ॥ ४२

संसारके सभी लोग अज्ञान तथा भ्रमकी प्रगाढ़ निद्रामें सो रहे हैं, वे किस प्रकार जाग पाएँगे ? परन्तु तुम तो स्वयं साधु कहलाते हो, तथापि अज्ञानकी चिर निद्रामें सो रहे हो. तुम्हारी इस दशाको देखकर मुझे पीड़ा होती है.

निद्रा परी नाखी देओ, उठीने ऊभा थाओ ।

बीजी ते वात मूकी करी, तमे ग्रहो प्रभुनां पाओ ॥ ४३

हे सज्जनो ! तुम भ्रमकी निद्राको त्याग दो तथा जागृत होकर ऊठ जाओ. अन्य सभी सांसारिक बातोंको छोड़कर, परमात्माके चरणकमलोंको ग्रहण करो.

पतिव्रतापणे सेविए, नव थाए वेस्या जेम ।

एक मेलीने अनेक कीजे, तेणी थाए धणीवट केम ॥ ४४

परा प्रेमलक्षणा भक्ति द्वारा पतिव्रता स्त्रीकी भाँति अनन्यभावसे प्रियतम धनीकी सेवा करो. वेश्याकी भाँति व्यवहार नहीं करना. क्योंकि यदि तुम एक परमात्मा (पति) को छोड़कर अनेक देवोंको पति बनाओगे, तो तुम्हारी रक्षा कैसे होगी ?

गेहेन घारण तमे पर हरो, टालो ते तिमर घोर ।

उठीने अजवाले जुओ, त्यारे देखसो माहेला चोर ॥ ४५

इसलिए गहरी निद्राको छोड़ कर घोर अन्धकारको मिटा दो. जब जागृत होकर ज्ञानके प्रकाशमें देखोगे, तो तुम्हारे अन्दरके गुण, अङ्ग, इन्द्रियाँ आदि चोरोंको देखने लगोगे.

ज्यारे अर्थ लेसो वाणी तणो, त्यारे अर्थमां छे अजवास ।

अजवाले जीव जागसे, त्यारे थासे टली चोर दास ॥ ४६

जब शास्त्रों तथा साधु-महात्माओंकी वाणीके गूढ़ अर्थोंको ग्रहण करोगे, तब उसी वाणीमें दिव्य प्रकाश देख सकोगे. उस प्रकाशसे ही तुम्हारी आत्मा जागृत हो जाएगी, तब गुण, अङ्ग, इन्द्रियाँ आदि चोर भी दास बनकर तुम्हारी अधीनता स्वीकार करेंगे.

वेरी टली वोलावा थासे, जो ए करसो जतन ।

एणी पेरे ए पामसो, अमोलक ए रतन ॥ ४७

यदि तुम ऐसा प्रयत्न करोगे, तो तुम्हारे ये शत्रु शत्रुता छोड़कर तुम्हारे सहायक बनेंगे. इस प्रकार तुम परब्रह्म परमात्मारूपी अमूल्य रत्नोंको प्राप्त कर सकोगे.

जनम मानषो खंड भरतनो, श्रेष्ठ कुली सिरदार ।

ए वृथा कां निगमो, तमे पामी उत्तम आकार ॥ ४८

चौरासी लाख योनियोंमें श्रेष्ठ मानव जीवन, संसारमें उत्तम भारतभूमि, युगोंमें श्रेष्ठ कलियुग तथा श्रेष्ठ सद्गुरुको पाकर भी तुम ऐसे उत्तम अवसरको क्यों व्यर्थ गँवा रहे हो ?

चार पदारथ पामिया रे, एथी लीजिए धन अखंड ।

अवसर आ केम भूलिए, जेथी धणी थाए ब्रह्मांड ॥ ४९

हे साधुजन ! ये चारों अमूल्य पदार्थ तुम्हें प्राप्त हुए हैं। इनके द्वारा अखण्ड धन (दिव्य ज्ञान) को प्राप्त करो। ऐसे अमूल्य अवसरको क्यों भूल रहे हो ? इसका सदुपयोग करने पर तुम सम्पूर्ण ब्रह्माण्डके स्वामी बन सकोगे।

चौदे भवन जेने इछे, कोई विरलाने प्राप्त होए ।

ए पामी केम खोइए, तुं तां रतन अमोलक जोए ॥ ५०

चौदह लोकोंके जीव जिसे प्राप्त करनेके लिए उत्सुक (अभिलाषी) रहते हैं, ऐसा अमूल्य मनुष्य जीवन तो किसी बिरलेको ही प्राप्त होता है। अमूल्य रत्नके समान ऐसे अमूल्य अवसरको प्राप्त कर इसे क्यों व्यर्थ गँवा रहे हो ?

रतन ते आने केम कहिए, पण आ भोम उपमा एह ।

कै कोट रतन जो मेलिए, आणे तोले न आवे तेह ॥ ५१

इस मानव देहको रत्नकी उपमा भी कैसे दी जा सकती है ? परन्तु नश्वर संसारमें उपमाके लिए ऐसे ही शब्द हैं। ऐसे करोड़ों रत्नोंको एकत्र करने पर भी वे इस मानव जीवन (शरीर) की तुलनामें नहीं आ सकते।

हवे सुधरसो संगत थकी, जो मलसे एहवो साध ।

सास्त्र अरथ समझावसे, त्यारे टलसे सघली ब्राध ॥ ५२

यदि अब तुम्हें ऐसे साधु (सद्गुरु) मिल जाएँ, तो तुम उनके सत्सङ्गसे सुधर जाओगे। वे साधु तुम्हें शास्त्रोंके गूढ़ार्थ समझाएँगे, जिससे तुम्हारा जन्म-मरणरूपी महारोग मिट जाएगा।

संगत करसो साधनी, ए रुदे करसे प्रकास ।

त्यारे ते सरवे सूझसे, थासे अंधकारनो नास ॥ ५३

तुम ऐसे साधु (सद्गुरु) का सत्सङ्ग करोगे तो वे तुम्हारे हृदयको ज्ञानसे प्रकाशित कर देंगे। तब तुम्हें सत्य और असत्यकी परख हो जाएगी तथा अज्ञान अन्धकारका नाश हो जाएगा।



ज्यारे अंध अगनान उडी गयुं, त्यारे प्रगट थयां पारब्रह्म ।

रंग लाग्यो ए रसतणो, ते छूटे बलतो केम ॥ ५४

जब हृदयसे अज्ञान अन्धकार मिट जाएगा, तब पूर्णब्रह्म परमात्मा स्वयं प्रकट हो जाएंगे। जिसको परमात्माके रसका दिव्य रङ्ग लग गया है अब वह कैसे छूट सकेगा ?

वस्त खरीनो जे रंग लाग्यो, ते थाय नहीं केमे भंग ।

भलियो जे भगवानसुं, तेनो दीसे एकज रंग ॥ ५५

यदि सत्य वस्तु (परमात्मा) के प्रेमका रङ्ग लग जाए, तो वह (इतना अधिक पक्का होता है कि) किसी भी प्रकारसे छूटता नहीं है। जो आत्माएँ परमात्मामें लीन हो जाती हैं, उन्हें तो प्रियतमके प्रेमका मात्र एक रङ्ग ही दिखाई देता है।

सुख अखंड एणी पेरे, तमे लेजो संगत साध ।

अधखिण विलम न कीजिए, आ आकार खोटो साज ॥ ५६

इस प्रकार सच्चे साधु (सद्गुरु) का सङ्ग कर पूर्णब्रह्म परमात्माके अखण्ड सुख प्राप्त करो। इसके लिए आधे-क्षणका भी विलम्ब मत करो, क्योंकि यह मनुष्य शरीर नाशवान है।

खोटाथी खरो लीजिए, अवसर एवो आज ।

आ वेला अमृत घडी, परमोध कहे मेहेराज ॥ ५७

इस नश्वर देह द्वारा सत्य वस्तु को प्राप्त कर लो। अभी ऐसा सुन्दर अवसर प्राप्त हुआ है। मेहेराजजी समझाते हुए कह रहे हैं कि यह (मनुष्य जीवन) अमृतमय घड़ी है।

साध जो जो तमे सांभली रे, वचन मा करजो लोप ।

प्रगट कह्युं आ पाधरुं, बीजी गुरुगम थासे गोप ॥ ५८

हे सज्जनवृन्द ! ध्यानपूर्वक सुनकर उस पर विचार करो। सत्य वचनोंको मत छिपाओ। मैंने तुम्हारे समक्ष शास्त्रोंकी बात स्पष्ट कह दी है। सद्गुरु प्रदत्त अक्षरातीतका गुह्य ज्ञान तो अभी भी गुप्त रखा है।

बीजां वचन भारी केम कहिए, तेतां अरथी विना न अपाय ।  
केसरी दूध कनकनां रे, पात्र विना न समाय ॥ ५९

मारा साध कुलीना सांभलो रे

हे मेरे कलियुगके साधुजन ! तुम ध्यान पूर्वक सुनो. उपरोक्त ज्ञानके वचनोंके अतिरिक्त अक्षरातीतका रहस्यमय ज्ञान योग्य पात्र (ब्रह्मसृष्टि) के बिना दूसरेको कैसे कहा जाए ? जैसे सिंहनीका दूध सुवर्ण पात्रमें ही टिक सकता है, उसी प्रकार योग्य शिष्य ही सद्गुरुका दिव्य ज्ञान पचा सकता है.

प्रकरण १२८ चौपाई २०१०

हां रे मारा साध कुलीना जो जो रे ॥ टेक ॥  
कोहेडा अंधेर मोह मांहे, मलवो छे साधो संत ।  
जेने रदेमां वस्या वालोजी, मारा जनम संघाती ते मित्र ॥ १

हे मेरे कलियुगके साधुजन ! अन्तर्दृष्टि द्वारा देखो. इस मायावी संसारके अज्ञान अन्धकारमें मुझे उन साधु महात्माओंसे मिलना है, जिनके हृदयकमलमें प्रियतम श्री कृष्ण विराजमान हैं. वे ही मेरे जन्म-जन्मान्तरके साथी और आत्मीय मित्र हैं.

आ कोहेडा मांहे साध सुं करे, जेणे बांध्यो चरणसुं चित ।

रात दिवस रमे रदे मां, तेने सुं करे प्रपंच ॥ २

कुहिरके समान इस अज्ञान अन्धकारमें वे साधुजन क्या करते हैं, जिन्होंने श्रीकृष्णजीके चरणकमलोंमें अपना चित्त लगाया है. रात-दिन उनके हृदयमें तो श्रीकृष्णजी रमण करते हैं यह मायावी प्रपञ्च ऐसे सन्तोंका क्या कर पाएगा ?

गोप रहेसे साध एणे समे, ते प्रगट केणी पेरे थाय ।

वेष वधार्या बहुविध तणां, ते खोल्या केम करी जाय ॥ ३

इस कलियुगमें सच्चे साधु छिपे रहते हैं, वे कैसे प्रकट होंगे ? यहाँ पर कई असाधुओंने विभिन्न वेश-भूषा बनाई है, ऐसी विषम परिस्थितिमें सच्चे साधुओंको कैसे खोजा जाए ?

सरखा सरखी सर्वे पृथ्वी, मांहे विध विधना वहे नारायण ।

नहीं आकार फरे साधतणो, प्रगट नहीं एधाण ॥ ४

इस पृथ्वीमें रहनेवाले लोग प्रायः समान व्यवहार वाले ही दिखाई देते हैं, इनमें विभिन्न साधुओंके रूपमें भगवान नारायणकी आत्मा विचरण कर रही है. इसलिए साधुओंके शरीरमें कोई अन्तर नहीं है. उनका कोई पृथक् चिह्न प्रकट रूपमें नहीं है.

आ भोम अंधेरी माहें आमलां, जीव वेध्यो सघली ब्राध ।

जेने ते जईने पूछिए, ते मुखथी कहे अमे साध ॥ ५

यह संसार अन्धकारमय है, इसमें कई प्रकार (सत, रज, तम) की भँवरियाँ चलती हैं. यहाँ पर जीव काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि भयङ्कर रोगोंसे ग्रस्त है. जिस किसीसे भी पूछा जाए, यहाँपर तो सभी स्वयंको साधु कहते हैं.

खोजो खरा थई ते माटे, आ रचियो मायानो फंद ।

दुनी मुझाणी फेरा दिए, मांहे पड्या रदेना अंध ॥ ६

इसलिए पारखी होकर सच्चे साधुको ढूँढ़ो. क्योंकि यह संसार ही मायाका फन्दा है, यहाँके जीव चौरासी लाख योनियोंमें चक्कर लगाकर अभी तक उलझ रहे हैं तथा उनके हृदयमें अज्ञानका अन्धकार छाया हुआ है.

आप न ओलखे दुनिया पोते, सूझे नहीं भोम गत ।

ए फेर भोम अंधेर तणो, तेणे रदे न आवे मत ॥ ७

इस संसारके लोगोंको स्वयं अपनी पहचान नहीं है. इसलिए संसारकी गतिविधि भी उन्हें नहीं सूझती. इस संसारका मायावी चक्र ही ऐसा अन्धकारमय है, जिसके कारण हृदयमें सद्बुद्धि उत्पन्न नहीं हो सकती.

देखादेखी पंथ करे, अने चालतां सहू कोय जाय ।

जाणी साधन करे संजमपुरीनां, मनमां चिंता न थाय ॥ ८

संसारके लोग देखा-देखी दूसरोंका अनुकरण करते हुए विभिन्न पन्थोंका मत स्वीकार करते हैं. वे जानते हैं कि ये कर्म यमपुरीकी ओर ले जाने वाले हैं, तथापि वे मनमें विचार नहीं करते.

सूने रदे दीसे सहु कोय, सुध बुध नहीं विचार ।

देखी कही रे दोष जमदूतना, ए कोहेडा तणां अंधार ॥ ९

यहाँ पर सभीके हृदय शून्य दिखाई देते हैं। उनमें किसी प्रकारकी सुधि-बुद्धि एवं सद्विचार नहीं हैं। यमदूतोंका दारुण दण्ड देखते और सुनते हुए भी कोई विचार नहीं करता क्योंकि यह संसार ही अज्ञान अन्धकारका धुन्ध है।

कोई कोने पूछे नहीं, छे कोई बीजो सेर ।

साध पुकारे पाधरा, पण आ अजाणयो अंधेर ॥ १०

कोई एक दूसरेसे पूछता भी नहीं कि इस (यमपुरीके) मार्गके अतिरिक्त अन्य कोई सन्मार्ग भी है ? सद्गुरु उन्हें सरल सत्यमार्ग दिखाते हैं, परन्तु ऐसे लोग तो अज्ञानतावश अन्धकारमें फँसे रहते हैं।

कोट उपाय करे जो कोई, तोहे सूझे नहीं सनंध ।

कोहेडा तणी आंकडी न लाधे, तो छूटे नहीं बंध ॥ ११

करोड़ों उपाय करने पर भी संसारके जीवोंको योग्य मार्ग नहीं सूझता। वे इस संसारके मायावी प्रपञ्चोंका रहस्य नहीं जानते। इसलिए मायावी बन्धनोंसे छूट नहीं सकते।

एणे समे आप झलावीने, अने साध थया मांहे संत ।

संगत कीजे तेह तणी, जेणे चोकस कीधुं छे चित ॥ १२

ऐसे समयमें अनेक नामधारी सन्तोंमें-से स्वयंको सम्भाल कर यदि तुम सच्चे सन्त बने हो, तो ऐसे सच्चे सद्गुरुका सङ्ग करो, जिन्होंने विवेकपूर्ण ज्ञानद्वारा चित्तको एकाग्र किया है।

सत जोऊं संतो तणुं, अने साध तणी सिध्याई ।

बाहेर चेहेन करे कै साधना, मांहे ते भांड भवाई ॥ १३

मैंने संसारके सन्तोंके वैराग्यको और साधुओंकी साधुताको देखा, उनमें अनेक लोग मात्र बाह्य आडम्बरपूर्ण भक्तिका ढोंग रचा रहे हैं। भीतरसे तो उनकी स्थिति भाँड़ोंकी भाँति मात्र स्वाँग रचाना ही है।

चोकस चित केणी पेरे लाधे, बाहेर देखाडे अनंत ।

ते माटे आ कोहेडो अंधेर, मारे जाइने संगत संत ॥ १४

ऐसे सन्तोंके हृदयमें एकाग्रता (दृढ़ता) कैसे आएगी, जो मात्र बाह्य आडम्बर ही अधिक दिखाते हैं। इस लिए यह संसार कुहिरके समान अज्ञानरूपी अन्धकारसे भरा हुआ है, जिससे सच्चे सन्तोंका सत्सङ्ग ही मारा (छूट) गया।

साध सनंध केम जाणिए, जेणे जीती छे जोगवाई ।

प्रगट चेहेन करे नहीं पाधरा, ते मांहे रहे समाई ॥ १५

ऐसी स्थितिमें सच्चे साधुकी पहचान कैसे होगी ? वास्वतवमें जिन्होंने अपने गुण, अङ्ग, इन्द्रियोंको वशीभूत किया है एवं बाह्य दिखावा (आडम्बर) नहीं रचा है तथा जो परम तत्त्वको अपने हृदयमें समाहित कर आनन्दमें रहते हैं, वे ही सच्चे साधु हैं।

मुखथी बोलावी ज्यारे जोड़ए, तो गलित चित विस्वास ।

फेर नहीं अंधेरतणो, तेनां रदे मांहे प्रकास ॥ १६

ऐसे साधु महात्माओंको मुखसे बोलते हुए जब देखोगे, तो उनका स्निग्ध (प्रेममय) हृदय एवं अटूट विश्वास झलकने लगेगा। उनके हृदयमें अज्ञानका अन्धकार लेशमात्र भी नहीं होगा, अपितु उनका हृदय ब्रह्मज्ञानके प्रकाशसे आलोकित होगा।

साध तणी गत दीसे निरमल, रात दिवस ए रंग ।

मोहजल लेहेरां मांहे मारे पछाडे, पण केमे न थाय भंग ॥ १७

सत्य मार्ग पर चलने वाले साधुओंका रहन-सहन अत्यन्त निर्मल होता है। वे दिन-रात प्रेमके रङ्गमें रङ्गे रहते हैं। मोहजलकी प्रबल लहरों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर आदि) का प्रहार होने पर भी वे सत्य मार्गसे विचलित नहीं होते।

साध तणी सनंध प्रगट, लेहेरां लागे आकार ।

भेदे नहीं ते भीतर रंग ने, ए साध तणां प्रकार ॥ १८

सच्चे साधुजनका परिचय ही यही है कि उनके शरीरमें काम, क्रोध, लोभ,

मोह आदिके लहरोंका प्रहार मात्र बाह्य रूपसे असर करेगा किन्तु उनके हृदयके रङ्गको स्पर्श तक नहीं कर पाएगा. यही तो साधुओंकी श्रेणी है.

**आ तिमर घोर अंधेर मांहे, वेष धरे बहु जन ।**

**एणे सहु ने सत भास्यो, ए साधने थयो सुपन ॥ १९**

अज्ञानके अन्धकारसे भरे हुए इस विश्वमें अनेक लोग साधुका वेश धारण करते हैं. उन्हें तो यह संसार ही सत्य प्रतीत होने लगता है, जबकि सच्चे साधुओंके लिए यह संसार स्वप्नवत् प्रतीत होता है.

**तो वैकुंठ नथी काई वेगलुं, जो द्रढाविए मन ।**

**सत चरण भास्यो रदे मांहे, त्यारे असत थयुं सुपन ॥ २०**

यदि मनको दृढ़ कर लिया जाए, तो वैकुण्ठ भी अधिक दूर नहीं है. जब परमात्माके चरणकमलोंसे हृदय आलोकित होगा, तब यह संसार स्वप्नवत् प्रतीत होने लगेगा.

**अखंड सुख कोई रखे मूकतां, जेणे द्रढ कीधुं छे घर ।**

**अधखिणना सुपनातर माटे, रखे निगमतां ए अवसर ॥ २१**

जिन्होंने अपना घर (धाम) निश्चित कर लिया है वे अखण्ड सुखोंको कैसे छोड़ेंगे ? इस स्वप्नवत् संसारके क्षणिक सुखोंके लिए यह अमूल्य अवसर नहीं गँवाना चाहिए.

**सास्त्रे संसार कह्युं सुपना, तो ते करी बेठां सहु सत ।**

**साध वाणी रे जोतां नथी, तो लेई जाय छे असत ॥ २२**

शास्त्रोंने संसारको स्वप्नवत् कहा है, तथापि सब लोग उसे सत्य मानकर बैठे हैं. वे सत्यमार्गको दर्शाने वाले साधु-महात्माओंकी वाणीका विचार ही नहीं करते, तभी यह असत्य उनको अपनी ओर खींच कर ले जा रहा है.

**एणे कोहेडो ते अवला फेरा, सहु फरे छे एणी भांत ।**

**सुध बुध सर्वे विसरी, ए रच्यो माया द्रष्टांत ॥ २३**

इसलिए धुँधके समान इस अन्धकारपूर्ण संसारमें मायाकी उलटी भँवरियाँ चलती हैं, जिसमें अपनी सुधि-बुद्धिको खोकर लोग सत्यमार्गसे विमुख

होकर उलटी चाल चल रहे हैं। यह संसार तो मायावी रचनाका एक उदाहरण मात्र है।

आ रे वेला एवी नहीं आवे, साध ना सके पुकारी ।

वचन ते अवला विचारसे, केहेसे निंद्या करे छे अमारी ॥ २४

हे सज्जनो ! मनुष्य जीवनका यह उत्तम अवसर तुम्हें प्राप्त हुआ है। ऐसा अवसर पुनः प्राप्त नहीं होगा। दिव्य ज्ञान देने वाले सन्त भी बार-बार पुकार नहीं करेंगे। संसारके लोग तो उनके उपदेशका भी उलटा अर्थ करते हुए कहेंगे कि वह साधु तो हमारी निन्दा करता है।

साध हसे ते विचारसे, सवला रुदे वचन ।

ए वाणी प्रकासुं ते माटे, मारे मलवा ते साधु जन ॥ २५

जो सच्चा साधु होगा वही इन सत्य वचनों पर हृदयपूर्वक विचार करेगा। यह वाणी मैं इसलिए प्रकट कर रहा हूँ कि मुझे ऐसे सच्चे साधुओंसे मिलना है।

प्रगट प्रकास न कीजे, आपण देखी बाज ।

गोप रही ना सकुं ते माटे, सनमंधी मलवा साध ॥ २६

हमने तो इस संसारके खेल (बाजी) को स्वप्नके समान देखा (माना) है, इसलिए इसमें अखण्ड ज्ञानको प्रकट करना नहीं चाहिए। किन्तु मैं इसलिए इसे गुप्त नहीं रख सकता कि मुझे सच्चे साधुओंसे मिलना है।

जेणे दरसने नेत्र ठरे, अने वचन कहे ठरे अंग ।

अनेक विघन जो उपजे, पण मूकिए नहीं साध संग ॥ २७

जिनके दर्शनमात्रसे नेत्रोंको परम शीतलता प्राप्त होती है तथा जिनके उपदेश वचन सुननेसे अङ्ग, प्रत्यङ्ग शीतल हो जाते हैं, ऐसे सच्चे साधुओंका सङ्ग नहीं छोड़ना चाहिए, चाहे अनेकों विघ्न क्यों न आ जाएँ ?

साध संतो मली सांभलो, वली विलम न करो लगार ।

अधखिण मेलो संत तणो, जेथी जीतिए अखंड अपार ॥ २८

हे साधु-सन्तो ! तुम सब मिलकर मेरी बात ध्यानपूर्वक सुनो। अब थोड़ा

भी बिलम्ब मत करो. यदि आधेक्षणके लिए भी ऐसे सच्चे साधु-महात्माओंका सङ्ग मिल जाए, तो उसके प्रभावसे अखण्ड सुख प्राप्त हो सकते हैं.

**अखंड पार सुख अति घणुं, जेने सबद न लागे कोय ।**

**ए जाणी सुख केम मूकिए, ए साध संगते सुख होय ॥ २९**

बेहदके पारके अखण्ड सुख अति आनन्द देनेवाले हैं, जिनका वर्णन शब्दोंसे नहीं होता. इस सत्यको जानकर ऐसे अखण्ड सुखोंको क्यों छोड़ें ? ये सुख तो सच्चे साधु (सद्गुरु) के सङ्ग द्वारा ही प्राप्त हो सकते हैं.

**ए सुख केम प्रकासुं प्रगट, बेहद सुख केहेवाए ।**

**ए ब्रह्मांड सर्वे रामत, उपनी छे एनी इछाए ॥ ३०**

ये अखण्ड सुख तो बेहदके कहलाते हैं, इन्हें इस संसारमें कैसे प्रकट किया जाए, यह ब्रह्माण्ड तो क्षणिक नाटक मात्र है तथा परमात्माकी इच्छा मात्रसे उत्पन्न हुआ है.

**ए रे वल्लभसुं वालपणे, करी दिए साध संग ।**

**ए रे संगत केम मूकिए, मारा मूल तणो ए सनमंध ॥ ३१**

सच्चे साधुओंका सङ्ग तो ऐसे परमात्माके साथ अनन्य प्रेम उत्पन्न कर देता है. इसलिए ऐसा सङ्ग कैसे छोड़ा जाए, जिसके साथ मेरा मूल सम्बन्ध है.

**सारनो सार ते संगत, जो ते साध मेलो थाए ।**

**बेहद तणी निध लेइने आपे, मूकिए ते केम पाए ॥ ३२**

इस संसारमें सारसे भी सार वस्तु सत्सङ्ग है, जो सच्चे साधुजनोंके मिलनेसे ही सम्भव होता है. वे इस नश्वर संसारमें भी बेहदकी सम्पदा (पारका ज्ञान) लाकर देते हैं. इसलिए ऐसे साधुजनके चरणकमल कैसे छोड़े जा सकते हैं ?

**सनमंधी साचो ज्यारे मल्यो, त्यारे जीवने थयो करार ।**

**मेहेराज कहे धन धन ए घडी, धन धन कोहेडो अंधार ॥ ३३**

जब सच्चे सम्बन्धीसे मिलन होता है, तब जीवको शान्तिका अनुभव होता



है. मेहेराज कहते हैं, यह घड़ी (मानव जीवन) धन्य है तथा अन्धकारसे भरा हुआ यह संसार भी धन्य है (जहाँ पर ऐसे सद्गुरुका मिलन हो सका).

### प्रकरण १२९ चौपाई २०४३

[बैलगाड़ी द्वारा यात्रा करते समय इस प्रकरणका अवतरण हुआ है. जब बैलगाड़ी नदीकी रेती अथवा दल-दलमें फँस गई, उस समय गाड़ीको पार करानेके लिए गाड़ी चालकने बैलोंके साथ क्रूर व्यवहार किया. जब तक गाड़ी निश्चित स्थान पर नहीं पहुँचती, तब तक बैलोंको छुटकारा नहीं मिल सकता. इस प्रसङ्गको स्वामीजीने अपने ऊपर घटाया और जीवको कहा कि जब तक उद्देश्य पूर्ण नहीं होता, तब तक दायित्वका वहन निष्ठापूर्वक कर लो.]

#### राग धन्यासरी

धोरीडा मा मूके तारी धूसरी ,  
वाटडी विस्मी गाडी भार भरी, धोरीडा मा मूके तारी धूसरी ॥ टेक ॥  
धोरीडा आरें मारे रे, हां रे तूने गोधे घणे ।  
तू तां नाके नथाणो रे, तू तां बंध बंधाणो, गुण आपणे रे ॥ १  
हे बैल (धोरिडा) ! तेरे कन्धेके जुआको मत छोड़. मार्ग विषम (ऊँचा-नीचा) है एवं गाड़ी भारसे भरी हुई है. इसलिए तू तेरे जुएको मत छोड़. हे बैल ! तुझे चालक आरा (लकड़ीकी बारीक नोक) चुभाते हुए वारंवार डण्डे मारता है. तेरी नाकमें नकेल डाल रखी है. तू अपने ही गुणोंके कारण बँध गया है. (हे जीव ! तू अपने कर्तव्यको मत छोड़. धर्मका मार्ग बड़ा विषम होता है. सद्गुरुके शब्द हृदयको बींध देते हैं, उनके वचनोंकी मार वारंवार पड़ती रहेगी. तू सद्गुरुके चरणोंमें बँध गया है. तूने स्वयं ही वचन देकर यह कार्य किया है.)

धोरीडा अवाचक थयो रे, मुखथी न बोलाए ।  
कल ने वेलुं रे धोरीडा, उवट ऊंचाणे स्वास मा खाए ॥ २  
हे बैल ! तू मूक है तू अपने मुखसे कुछ भी बोल नहीं सकता. तेरे मार्गमें

कीचड़ और रेती भरी हुई है. अतः इस मार्गको पार करते हुए तू श्वाँस भी मत ले अर्थात् विलम्ब मत कर. (हे जीव ! तू दायित्वके वहनके लिए वचनबद्ध है. अब तुझसे कुछ बोला नहीं जाएगा. इस धर्म मार्गमें बहुतेरे अवरोधक हैं, किन्तु विलम्ब किए बिना ही तुझे अपना कार्य करना है.)

**धोरीडा घणुं दोहेलुं छे रे, कीधां भोगवे रे ।**

**तारे कांधे चांदी रे, दुखडां सहे रे ॥ ३**

हे बैल ! यह कार्य अति कठिन है. अपने किए हुए कर्मोंको ही भोग रहे हो. बोझ ढोते-ढोते तेरे कंधे पर चाँदे (घाव) पड़ गए हैं. तुझे यह पीड़ा सहन करनी ही पड़ेगी. (हे जीव ! धर्मका कार्य कठिन होता है किन्तु दायित्व स्वीकार कर लिया है तो अब वहन करना ही पड़ेगा. लोगोंकी निन्दा-स्तुति सुनते हुए तेरा हृदय आहत होते-होते दृढ़ हो गया है. इसलिए अब तू सभी दुःखोंको सह पाएगा).

**धोरीडा जाय रे उजाणी, द्रोडाद्रोड तूं आवे ।**

**दया रे विना रे, बेठा मारडी पडावे ॥ ४**

हे बैल ! मार्गको पार करना है, इसलिए तू दौड़ते हुए आगे बढ़. निर्दयी चालक तुझे पीट रहा है. (हे जीव ! अब तो करनेसे ही छुटकारा मिलेगा, इसलिए शीघ्रता कर. लोगोंका निर्दयी हृदय तुझे प्रहार करता रहेगा. तू अब निर्भय होकर चल).

**धोरीडा वही ने छूटे रे, करम आपणां रे ।**

**मेहेराज कहे एम, कीधां छे घणां रे ॥ ५**

**धोरीडा मा मूके तारी धूसरी ।**

हे बैल ! गन्तव्य स्थल पर पहुँचने पर ही तुझे छुटकारा मिलेगा. ये कर्म तेरे अपने किए हुए हैं. मेहेराज कहते हैं, तूने ऐसे बहुत-से कर्म किए हैं, इसलिए अब तू अपने कंधेसे जुएको मत हटा. (सुन्दरसाथको जागृत कर संसारके जीवोंको मुक्ति देनेका दायित्व तुझे दिया गया है, उसे पूर्ण करना

ही पड़ेगा. पहलेसे ही निश्चित था कि यह कार्य तेरा है. ऐसे तो अनेक कार्य हैं जिनको तुझे पूर्ण करना है. इसलिए अपने दायित्वका वहन कर.)

प्रकरण १३० चौपाई २०४८

राग बेराडी

आवो अवसर केम भूलिए, कारण एक कोलिया अन ।

एटला माटे आप मुझाई, केटला करो छे कै कोट विघन ॥ १

चौरासी लाख योनियोंमें घूमनेके पश्चात् प्राप्त मनुष्य जीवनके इस अमूल्य अवसरको (उदर पूर्ति हेतु) मात्र एक घास (कौर) अन्नके लिए क्यों व्यर्थ गँवा रहे हो ? केवल आहारके लिए ही मायाके बन्धनोंमें फँसकर तुम असंख्य विघ्न क्यों उत्पन्न कर रहे हो ?

प्रगट वचन सुणो उत्तम मानषो, तमे वोहोरवा आव्या छे सुख ।

पण आंणी भोमे मुझवण घणुं विसमी, सुखने आडे अनेक छे दुख ॥ २

उत्तम मनुष्य जीवन प्राप्त करनेवाले हे मेरे सज्जनो ! तुम मेरे स्पष्ट वचन सुनो, तुम सब अखण्ड घरके सुख क्रय करने (प्राप्त करने) के लिए इस संसारमें आए हो. इस मायावी संसारमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहङ्कार आदि विभिन्न उलझनें इसके लिए अवरोध स्वरूप हैं. अखण्ड सुख प्राप्त करनेके मार्गमें अनेक दुःख रुकावट बनकर खड़े हुए हैं.

सुखने रखोपे दुख वीट्यां छे, लेवाए नहीं केने काचे जन ।

सूरधीर हसे खरो खोजी, ते लेसे द्रढ करी मन ॥ ३

अखण्ड सुखोंके रक्षण हेतु चारों ओर दुःखोंका जाल बिछा हुआ है. इसलिए आत्म-बलहीन, अविश्वासी लोग उन सुखोंको प्राप्त नहीं कर सकते. मात्र दृढ़ विश्वासी, धैर्यवान, सत्य वस्तुके खोजी ही मनको एकाग्र कर अखण्ड सुख प्राप्त कर सकेंगे.

एकीगमां सुख वैकुंठ गरजे, बीजीए दुख गरजे जमपुर ।

ए बने मांहेथी एक लेई वलसो, रखे भूलतां तमे आ अवसर ॥ ४

एक ओर वैकुण्ठका सुख लोगोंको बुला रहा है, तो दूसरी ओर यमपुरीके

पाप कर्म (दुःख) भी अपनी ओर खींच रहे हैं। इन दोनोंमें-से किसी एकको ही स्वीकार करते हुए तुम यहाँ (संसार) से प्रयाण करोगे, इसलिए इस अमूल्य अवसरको मत गँवाओ।

**चौदे लोक इछे आ वेला, जोगवाई तमे पाम्यां छे जेह ।**

**अहेनिस कष्ट करे कै देवता, तोहे न आवे अवसर एह ॥ ५**

चौदह लोकोंके जीव जिस अवसरकी चाहना रखते हैं, ऐसा अमूल्य मानव जीवन तुमने प्राप्त किया है। कई देवता भी इसके लिए कठोर साधना द्वारा दिन-रात कष्ट सहन करते हैं, तथापि मनुष्य तन प्राप्त करनेका सुयोग उन्हें प्राप्त नहीं होता।

**घणी रे दोहेली छे जम जाचना, तमे मूको रे परा छल छद्रम ।**

**वार वार वारुं छुं तमने, विस्मी रे जमपुरी विषम ॥ ६**

यमपुरीमें यमदूतोंकी यातनाएँ बहुत ही कठोर होती हैं। इसलिए यमपुरीके मार्ग पर जानेके साधन-छल, कपट, मोह आदिको छोड़ दो। मैं तुम्हें वारंवार सावधान करता हूँ कि यमपुरी तो भयङ्कर दुःखोंका घर है।

**आंणे आकारे कां नथी देखतां, जेवडो लाभ तेवडो जोखम ।**

**आंणे रे समे अखंड सुख भूल्यां, बलसो रे लाख चोरासी अगिन ॥ ७**

तुम इस मनुष्य जीवनको क्यों नहीं पहचानते ? इससे जितना बड़ा लाभ प्राप्त होगा, उतना ही यह भयावह भी है। इस अमूल्य अवसर पर अखण्ड सुखोंको भूल जाओगे तो अन्ततः चौरासी लाख योनियोंकी आगमें जलते रहोगे।

**अखंड सुख लीधानी आ वेला, कां न करो सवलां साधन ।**

**परमेस्वर ने परा करी रे, मा करो रे एवां करम अधम ॥ ८**

अखण्ड सुखोंको प्राप्त करनेके लिए यह अमूल्य अवसर तुम्हें मिला है। अतः इसके लिए अनुरूप कार्य (उद्यम) क्यों नहीं करते ? परमात्माको छोड़कर ऐसे अधम (निन्दनीय) कार्य मत करो।

मंदिर मालिया अनेक निपाओ, पण भरवुं एक तेह ज दो भरी ।

अनेक उपाय करो कै बीजा, ए साधन सरवे जमपुरी ॥ ९

तुम महल, मन्दिर आदि बड़े-बड़े भवन बना लो, परन्तु जीनेके लिए तो दो समयका भोजन (अन्न और जलकी दो थैलीका भरना) ही पर्याप्त है. परमात्माको पानेके अतिरिक्त अन्य जितने भी प्रयत्न कर रहे हो, वे सब यमपुरीके साधन हैं.

कुटुम सगां कीधां कै समंधी, अने घोलीकाने करी बेठां घर ।

आपोपुं तिहां बांधीने आपे, वृथा निगम्यां आ अवसर ॥ १०

इस संसारमें आकर तुमने कुटुम्ब परिवारके झूठे सम्बन्धको ही सच्चा सम्बन्ध मान लिया तथा छोटे-छोटे घरोंदे (खेलते हुए बालकों द्वारा बनाए गए मिट्टीके घर) को ही तुम अपना घर मानकर बैठ गए. स्वयं इन सबमें बँधकर तुमने इस अमूल्य मानव जीवन (अवसर) को व्यर्थमें खो दिया.

ए घर जाणो छो अखंड अमारुं, उपर ऊभो न देखो रे काल ।

तमारी द्रष्टे कै रे जाय छे, तो तमे रेहेसो केटलीक ताल ॥ ११

इस संसारके झूठे घरको ही तुम अखण्ड समझते हो, अपने सिरके ऊपर मंडराते हुए कालको नहीं देखते. तुम्हारे देखते-देखते कई लोग चले गए और कई चले जाएँगे, तुम भी यहाँपर कितने समय तक रहोगे ?

ऊंचा वस्तर पेहेरी आकासे, अंत्रीख राखे छे आकार ।

भोम उपर पग भरतां नथी, एणी पेरे बांध्यो ए संसार ॥ १२

मूल्यवान वस्त्र धारण करने पर संसारके लोगोंका सिर गर्वके कारण आकाशको छूने लगता है. वे हवामें ही उड़ते रहते हैं. उनके पाँव धरती पर नहीं टिकते. इस प्रकार समग्र संसार मोह, अहङ्कार और अज्ञानके बन्धनोंमें बँधा हुआ है.

आप पछाडी ल्याओ छो धन, ऊंचा थावा रबदे करो छो दान ।

नहीं रे आवे ते अरथ जीवने, लेई जाय छे वचे अभिमान ॥ १३

शरीरको कष्ट देकर तुम धन एकत्रित करते हो और समाजमें प्रतिष्ठा पानेके

लिए दान-पुण्य करते हो. ऐसा दान-पुण्य जीवके काम नहीं आता. क्योंकि अभिमान उन पुण्योंको तो बीचमें ही छीन कर ले जाएगा.

**असुभ करम जेम लिए निंदा, सुभकरम नामना लेई जाय ।**

**गोप साधन कीजे ते माटे, जेम सुख जीवने पोहोंतुं थाय ॥ १४**

जिस प्रकार निन्दा अशुभ कर्मोंके पापका क्षय करती है, उसी प्रकार प्रशंसा भी शुभ कर्मोंके पुण्यको ले जाती है. इसलिए साधना छिपकर करनी चाहिए, जिससे जीवात्माको सुख प्राप्त हो.

**एके बंध एणी पेरे बांध्यां, बीजानी ते केटली कहुं रे सनंध ।**

**साध वाणी सांभलीने सहु को, देखीतां बंधाणां रे अंध ॥ १५**

यहाँ एक प्रशंसारूपी बन्धनने ही जीवको बाँध रखा है, अन्य बन्धनोंकी तो बात ही क्या करें ? साधु-सन्तोंकी वाणी सुनते हुए भी सभी जानबूझकर अन्धेकी भाँति बन्धनमें पड़ जाते हैं.

**बंध चोवीस बीजा एनी जोडे, वली पंच इन्द्री ने नव अंग ।**

**त्रणे पख त्रणे गुण करी रे, ए बंध बांधी दुख लीधां रे अभंग ॥ १६**

इसके साथ-साथ जीवके पास अन्य चौबीस (प्रकृतिके) बन्धन लगे हुए हैं. फिर पञ्च इन्द्रियाँ, नौ द्वार, तीन पक्ष और तीन गुण, इन बन्धनोंमें बँधकर जीव सदैव दुःख भोग रहा है.

**एणी पेरे बंध बांध्या वज्रमय, चसकावी न सके पाय ।**

**होंस करे सुख वैकुण्ठ केरी, एणी सिखरे एम केम चढाए ॥ १७**

इस प्रकार जीवने अनेक बज्रलेपी बन्धनों द्वारा स्वयंको जकड़ लिया है. वह तनिक भी पाँव हिला नहीं सकता. इस प्रकार बँधा हुआ जीव वैकुण्ठके सुखकी अभिलाषा रखता है किन्तु ऐसे उच्च स्थान पर इस प्रकार कैसे चढ़ा जा सकता है ?

**जे बंध बांध्या जोड़ए रे चरणसुं, ते बंध बांध्या लेई पंपाल ।**

**अखंड सुख आवे केम तेने, जे रे पडे जई जमनी जाल ॥ १८**

जिन गुण, अङ्ग, इन्द्रियोंको परमात्माके चरण कमलसे बँधना चाहिए, उन्हींके

द्वारा यह जीव मायाके प्रपञ्चोंमें बँध गया. अब उसे अखण्ड सुख कैसे प्राप्त होगा ? उन इन्द्रियोंके द्वारा तो यह यमजालमें पड़ गया है.

**जाणीने पडिया जम जाले, आ देखो छो मायानो फंद ।**

**जे कारण तमे आप बंधावो, तेसुं नथी रे तमारो सनमंध ॥ १९**

मायाका ऐसा फन्दा है यह देखते हुए भी तुम जानबूझकर यमराजके जालमें फँस रहे हो. जिनके कारण तुम स्वयं माया मोहमें फँस (बँध) रहे हो, उन (गुण, अंग, इन्द्रियों) के साथ तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं है.

**उत्तम जनम एवो पामी रे मानषो, कां रे पडो पसुना जेम पास ।**

**बीजा पसु सहुए बंधावे, पण केसरी केम बंधावे रे आप ॥ २०**

हे मानव ! ऐसा उत्तम जन्म प्राप्त करने पर भी तुम पशुओंकी भाँति बन्धन (पाश) में क्यों बँध रहे हो ? अन्य सब पशु तो बन्धनमें फँस जाते हैं, परन्तु केशरी सिंह स्वयं कैसे बँध सकता है ?

**सुं रे बल केसरीनुं तम आगल, तम समान नथी बलवंत ।**

**छल करी छेते छे तमने, रखे रे लेवाओ आणे प्रपंच ॥ २१**

हे सुन्दरसाथजी ! विचार तो करो, तुम्हारी शक्तिकी तुलनामें केशरी सिंहके पास क्या शक्ति है ? तुम्हारे समान बलवान तो कोई नहीं है. परन्तु तुम्हें यह माया छल-कपट द्वारा प्रलोभन देकर धोखा दे रही है, इसलिए तुम मायाकी प्रपञ्चमयी जालोंमें मत उलझो.

**आ देखीती बाजी मायानी, प्रगट पोकार कहे छे साध ।**

**मांहे रही आप अलगां थाजो, जेमने छूटो ए बंध अगाध ॥ २२**

इस संसारके झूठे खेलको देखकर साधु, सन्त तुम्हें पुकारते हुए सावधान करते हैं. इसलिए संसारमें रहते हुए भी तुम जलकमलवत् (मायासे अलिप्त) रहो, जिससे चौरासी लाख योनिरूपी अगाध बन्धनसे मुक्त हो सको.

**वली वली आ वेला नहीं आवे, वली वली न सांभलो पुकार ।**

**बोध संगते जागी परियाणी, तमे लेजो रे सघलानो सार ॥ २३**

मानव देहको प्राप्त करनेका यह अवसर वारंवार नहीं मिलेगा तथा ऐसे सच्चे

साधुकी पुकार सुननेका अवसर भी प्राप्त नहीं होगा. इसलिए सन्तोंके सत्सङ्गसे बोध प्राप्त कर अपनी आत्माको जागृत कर लो तथा इन सब बातोंका सार ग्रहण करो.

**सारना सारसुं बंध बांधजो, करजो रे नित नवलो रंग ।**

**नहाजो माया मांहे कोरा रेहेजो, छूटां आयस जेम न आवे रे अंग ॥ २४**

सभी सार वस्तुओंका भी सार तत्त्व श्रीकृष्णजीके चरणकमलोंसे अपना सम्बन्ध बाँध लो और सर्वदा प्रियतम धनीके नूतन प्रेमरङ्गमें रंग जाओ. इस संसार सागरमें रहते हुए भी निर्लिप्त (जलकमलवत्) रहो, जिससे इस (माया) को छोड़नेमें तुम्हें किसी भी प्रकारकी कठिनाई न रहे.

**दुख दावानल दुरगत मेलो, रदे मांहे चरण करो प्रकास ।**

**अखंड सुख एणी पेरे आवे, मेहेराज कहे जीव जाणो विस्वास ॥ २५**

**भाई रे आवो अवसर केम भूलिए ॥**

ऐसे दावानलके समान दुःखदायी तथा दुर्गति कराने वाली मायाको छोड़ दो तथा परमात्माके चरण कमलोंसे हृदयको प्रकाशित कर लो. इस प्रकार तुम्हें अखण्ड सुखोंकी प्राप्ति होगी. हे जीव ! मेहेराजके इन वचनों पर विश्वास कर. सज्जनो ! ऐसे अमूल्य अवसरको प्राप्त कर इसे व्यर्थ मत गँवाओ.

**प्रकरण १३१ चौपाई २०७३**

**अंदर नाही निरमल, फेर फेर नहावे बाहेर ।**

**कर देखाई कोट बेर, तोहे ना मिलो करतार ॥ १**

हे आत्मा ! तुम्हारा हृदय तो निर्मल नहीं है, मात्र शरीरको बाहरसे करोड़ों बार स्नान करने पर तुझे परमात्माकी प्राप्ति नहीं हो सकती.

**कोट करो बंदगी, बाहेर हो निरमल ।**

**तोलों ना पीउ पाइए, जोलों ना साधे दिल ॥ २**

बाहरसे निर्मल होकर भले ही करोड़ों बार प्रार्थना की जाए, परन्तु जब तक हृदयको पवित्र बनाकर धनीके साथ प्रेम न किया जाए, तब तक प्रियतम धनीकी प्राप्ति नहीं हो सकेगी.



अहेनिस तूं भेली रहे, अपने पीउके संग ।  
पीठ दे तिन पीउ को, करे ऊपर के रंग ॥ ३

हे आत्मा ! जिस प्रियतमके साथ रात-दिन रहनेका अवसर तुझे मिला था, अब उन्हींको पीठ देकर बाह्य रूपसे आडम्बर रच रही हो ?

जैसा बाहेर होत है, जो होए ऐसा दिल ।  
तो अधखिन पीउ न्यारा नहीं, माहें रहे हिलमिल ॥ ४

हे आत्मा ! जैसे तुम्हारा शरीर बाहरसे स्वच्छ होता है, वैसे ही यदि हृदय भी पवित्र रहे; तो आधे क्षणके लिए भी परमात्मा तुमसे दूर नहीं रहेंगे तथा तुम अपने हृदयमें ही उनसे रमण करने लगोगी।

तूं आपे न्यारी होत है, पीउ नहीं तुझ से दूर ।  
परदा तूही करत है, अंतर न आडे नूर ॥ ५

हे आत्मा ! इस संसारकी मायामें फँसकर झूठे सुख प्राप्त करनेकी लालसामें तू स्वयं ही धामधनीसे पृथक् होती है। वास्तविकता तो यह है कि प्रियतम धनी तो तुझसे दूर नहीं हैं। तू ही अज्ञानतामें फँसकर आवरण खड़ा कर रही है। वास्तवमें तेरे और प्रियतम धनीके तेजके बीच कोई परदा ही नहीं है।

प्रकरण १३२ चौपाई २०७८

हुकाको प्रकरण सिंधी भाषामें

विसराई गिन्यो बंजे, सूंजी संघारयो बंजे ।  
रिणायर रेल्यो बंजे, मालम कर मोहाड, छाला पुंजे बंदरपार ॥ १

विसराई-विस्मृति, गिन्यो वंजे-ले जा रही है, सूंजी-अज्ञानताकी नींद, संघारयो वंजे-संहार कर ले जा रहा है, रिणायर-समुद्र; मोहसागर, रेल्यो वंजे-प्रवाह बहा कर ले जा रहा है। मालम-मल्लाह, कर-कर, मोहाड-सम्भाल, छाला-परमात्माकी कृपा, पुंजे-पहुँचेगा, बन्दर पार-अक्षरसे पार (अक्षरातीत धाम)।

[सामुद्रिक यात्रा करते समय जहाज, मल्लाह और तात्कालिक वातारणको दृष्टिमें रखते हुए भवसागरमें पड़े हुए अपने जीवको उद्दिष्ट कर महामति कह रहे हैं]

हे नाविक जीव ! तुझे परमात्माकी विस्मृति अधोगतिकी ओर ले जा रही है. अज्ञानताकी नींद तुम्हारा संहार कर रही है. काम, क्रोध, लोभ आदि मोह सागरकी लहरें तुझे बहा कर ले जा रही है. हे मल्लाह (जीव) ! तू स्वयंको सम्भाल. परब्रह्मकी कृपासे ही तू भवसागरके बन्दरगाह (अक्षर) के उस पार अपने गन्तव्य स्थान (परमधाम) में पहुँचेगा.

**हुकोनी तोहिजे हथ में, तू नीचा उनूडे निहार ।**

**चुके म चमक दुअजी, से तू पांण संभार ॥ २**

हुकोनी-दिशा सूचक यन्त्र, तोहिजे-तेरे, हथमें-हाथमें है, तू-तुम, नीचा-नीचे, उनूडे-झुककर, निहार-देखो, चुके म-चूको मत, चमक दुअजी-ध्रुवताराकी चमक, से तू-सो तुम, पांण-स्वयंको, संभार-संभाल.

हे जीव ! तेरे हाथमें तारतम ज्ञानरूपी दिशा सूचक यन्त्र है, तू इसके माध्यमसे विनम्रपूर्वक अपने लक्ष्य (परमधाम) की ओर देख. अपने लक्ष्यकी ओर अग्रसर होनेमें तू मत चूक. इस कार्यके लिए तू स्वयंको सम्भाल ले.

**हे सफर जे सई थेई, से बेडी न चढ्या बीआर ।**

**हिन जोखे में लाभ अलेखे, तू अंखडी मंझ उधार ॥ ३**

हे सफर-यह यात्रा, जे सई थेई-यदि सफल हुई, से बेडी-वह जहाजमें, न चढ्या-नहीं चढ़ेगा, बिआर-दूसरी बार, हिन-इस, जोखेमें-जोखममें, लाभ अलेखे-लाभ अनेक हैं, तू-तू, अंखडी-आँखें, मंझ-बीच (हृदयके), उधार-खोल.

यह मनुष्य जीवनरूपी यात्रा यदि अनन्य प्रेमलक्षणा भक्तिके माध्यमसे सफल हो जाए (परमधाम प्राप्त हो जाए), तो पुनः इस संसारमें जन्म लेना नहीं पड़ेगा. इस क्षण भङ्गुर (जोखिम भरे) मनुष्य जीवनमें अनन्त लाभ भी हैं, इसलिए तू अन्तःचक्षुओंको खोल कर देख तथा विचार कर.

जा तू रिणायर विचमें, त अंख ढंकिए की ।

हिन रिणायर ज्यूं रामायणूं, किन कंने न सुणयो कडीं ॥ ४

जा-जबतक, तू-तुम, रिणायर-समुद्र, विचमें-बीचमें हो, त-तो, अंख-आँख, ढंकिए की-बन्द कैसे कर सकता है ?, हिन-इस, रिणायर-समुद्र, ज्यों रामायणूं-जो कहानी है, किन-किसीने, कंने-कानोंसे, न सुणियो-नहीं सुना, कडीं-कभी भी.

हे जीव ! जब तक तू इस भवसागर (संसार) के बीचमें है तब तक विवेक विचाररूपी आँखें कैसे बन्द कर सकता है ? इस मोह सागरकी अनन्त गाथाएँ किसीने भी कभी हृदयके कानोंसे नहीं सुनी हैं.

जिनी जाणी बंजे साएरें, से कीं निद्र कंन ।

हिन सूजी घणां संघारियां, तू मालम धिरिए न मंन ॥ ५

जिनी-जिसने, जाणी-जान लिया, बंजे-जाना, साएरें-समुद्र (यात्रा), से-वह, कीं-कैसे, निद्र-नींद, कंन-करेगा, हिन-इस, सूजी-नींदने, घणां-बहुतोंको, संघारियां-संहार किया है, तू-तू, मालम-मल्लाह (जीव), धिरिए-विश्वास, न-नहीं, मंन-मनसे.

जो जीव शरीररूपी जहाजमें बैठकर भवसागरकी यात्रा कर रहा है वह अज्ञानताकी नींदमें कैसे सोएगा. क्योंकि इसी नींद (माया) ने बड़े बड़े ऋषि-महर्षि तथा तपस्वियोंका संहार कर उन्हें सत्य मार्गसे डगा दिया है. इसलिए हे मल्लाह (जीव) ! तू मनसे इसका विश्वास मत कर.

बेडी पुराणी बखर भारी, लगे वा डुबां ।

सार सुखाणी गोस के, तू उथिए न निद्र मंझां ॥ ६

बेडी-जहाज, पुराणी-पुरानी, बखर-माल, भारी-बोझल, लगे-लगा, वा-हवा; पवनसे, डूबां-डूबने, सार-सम्भालकर, सुखाणी-मल्लाह (जीव), गोसके-पतवारको, तू-तू, उथिए-उठता नहीं, निद्रामंझां-नींदके बीचमेंसे, (नींदसे).

हे जीव ! तेरा शरीररूपी जहाज पुराना हो गया है अर्थात् वह वृद्धावस्थाको प्राप्त हो गया है. तूने पारिवारिक (व्यवहारिक) भार अपने सिर पर लाद रखा

है. तृष्णा (इच्छा) रूपी पवन चलने पर डूबनेका भय है. हे मल्लाह ! तू अपने विवेक बुद्धिरूपी पतवारको भलीभाँति सम्हालकर जहाजको सही दिशा पर चला. तू अभी तक अज्ञानताकी नींदसे क्यों नहीं उठ रहा है ?

वा लगी जा विचमें, सभे थेई ऊंधाई ।  
मालम डिस मोहाडियूं, रह्यो मुझाई ॥ ७

वा-पवन; हवा, लगी-लग गई, जा विचमें-जो बीचमें, सभे-सब, थेई-होगी, ऊंधाई-(नाव) उलटी, मालम-मल्लाह, डिस-देख, मोहाडियो-मुखके सामने (सन्मुख), रह्यो-रहा, मुझाई-उलझकर.

यदि तेरे शरीररूपी जहाजको तृष्णा, इच्छारूपी पवनके झोंके लगें, तो तेरा यह जहाज मोहरूपी सागरमें डूब जाएगा अर्थात् तू परमात्मासे विमुख हो जाएगा. हे मल्लाह (जीव) ! तू अपने शरीररूपी जहाजको सीधी दिशाकी ओर लगा. तू तो अभी तक पारिवारिक (व्यवहारिक) उलझनोंमें ही उलझ रहा है.

पिंजर मथें पिंजरी, रिणें कारी रात ।  
हिन पवने घणां पछाडियां, तूं तरसी करिए न तात ॥ ८

पिंजर-जहाजका ऊपरी भाग जहाँ एक आदमी बैठकर मार्ग दर्शन करता है, मथें-ऊपर, पिंजरी-पिंजरमें बैठने वाला, रिणें-समुद्रमें, कारी-काली, रात-रात्रि, हिन-इस, पवने-पवनने, घणां-बहुतोंको, पछाडियां-गिरा दिया, तूं-तू, तरसी-डर, करिए न-करता नहीं है, तात-भाई (भाई).

इस शरीररूपी जहाजके उपरी भाग (मस्तिष्क) में तेरी बुद्धि है. इस भवसागरमें अज्ञानरूपी काली रातका अन्धेरा छाया हुआ है, तृष्णारूपी पवनने बड़े-बड़ोंको पछाड़ दिया है. परन्तु हे जीव ! तुझे कोई भय नहीं है ?

हाजानी करिए हेठडा, सिड पुराणी पांध ।  
हिन आंधिए घणां उंधा विधां, तूं मालम भाए म रांद ॥ ९

हाजानी-रस्सी-डोरी, करिए-करो, हेठडा-नीचे, सिड-(सिढ़ुं) जहाजके

बीचका खम्भा जिसके साथ कपड़ेकी डोरी बँधी है अर्थात् बादबान-  
(जीवनडोरी) पुराणी-पुराना है, पांथ-कपड़ा, हिन आंधिए-इस आँधीने,  
घणां-बहुतोंको, ऊंधाविधां-उलटा दिया है, तू मालम-तू मल्लाह, भाए-जान,  
म-मत, रांद-खेल.

तुम सन्तोष एवं धैर्यरूपी रस्सीको नीचे बाँध कर अनन्य प्रेमलक्षणा भक्तिको  
धारण कर, क्योंकि जीवनरूपी पालका कपड़ा पुराना हो चुका है. संसारके  
विषय-वासनारूपी आँधीने बड़े-बड़े महारथियोंको पछाड़ डाला है. इसिलए  
हे मल्लाह (जीव) ! इसको तू साधारण (बच्चोंका खेल) मत समझ.

**मथां अंबर हेठ जर, नखत्र न डिसे कोए ।**

**रिणें रूप घटाइयूं, मालम सुध न पोए ॥ १०**

मथां-ऊपर, अंबर-आकाश, हेठ-नीचे, जर-जल, नखत्र-तारे, न-नहीं,  
डिसे-दिखाई देते, कोए-कोई, रिणे-रात्रि, रूप-रूप, घटाइयूं-घोर  
अन्धकार, मालम-मल्लाह, सुध-सुधि, न पोए-नहीं पड़ती है.

ऊपर आकाश है (स्वर्ग वैकुण्ठ आदि लोक हैं) तथा नीचे जल (नरक आदि  
लोक) हैं. इसके बीच खड़ा मानव अक्षर, अक्षरातीतके ज्ञानको कैसे जान  
सकेगा ? क्योंकि ज्ञानरूपी नखत्र (अक्षरातीतका ज्ञान देने वाला सच्चा गुरु)  
कहीं नहीं दिखाई देता. अज्ञानरूपी रात्रि घोर अन्धकारके साथ छाई हुई है.  
हे जीव ! तुझे ऐसी स्थितिकी कुछ भी सुधि नहीं हो रही है ?

**बडर बंजे वीटीयो, डिस न डिसे कांए ।**

**मालम मतू मूझियुं, झूडे मीह मथांए ॥ ११**

बडर-बादल, बंजे-जाते हैं, वीटीयो-घेरे हुए, डिस-दिशा, न डिसे-नहीं  
दिखाई देती, कांए-कहीं भी, मालम-मल्लाह, मतू-बुद्धि, मूझियुं-उलझ गई,  
झूडे-बरसती है, मीह-वर्षा, मथांए-ऊपरसे.

पारिवारिक झूठे बन्धनरूपी बादलोंने इस प्रकार घेर लिया है कि सच्ची  
दिशा (परमधाम) दिखाई नहीं देती. हे मल्लाह (जीव) ! तेरी बुद्धि विषय  
भोगोंमें लगनेसे उसीमें उलझ गई है. उसमें भी परिवारके स्वार्थ भरे प्रेमकी  
वर्षा हो रही है.

लेहेरूं डूंगर जेडियूं, हियडे डिन धकां ।

हांणें हथें नीहणण नाखवा, बंजे गाल हथां ॥ १२

लेहेरूं-जलकी लहरें, डूंगर-पहाड, जेडियूं-जैसे, हियडे-हृदयमें, डिन-देता है, धकां-धक्का (चोट), हांणें-अब, हथें-हाथसे, नीहणण-लोह लंगर, नाखवा-डाल दो, बंजे-जाती है, गाल-बात (बाजी), हथां-हाथसे,

इस भवसागरमें काम, क्रोध आदि भयङ्कर पर्वततुल्य लेहेरें उठ रही हैं, जिससे हृदयको चोट पहुँच रही है. अब तू विवेक विचार, सन्तोषरूपी लोह लङ्गरका प्रयोग कर. अपने शरीररूपी जहाजको स्थिर कर. श्रद्धा एवं विश्वाससे पराप्रेमलक्षणा भक्तिको हृदयमें धारण कर, अन्यथा अमूल्य मानव जीवन (बाजी) व्यर्थमें ही चला जाएगा.

बेडी बंध ढीरा थेया, त्रूटन संधो संध ।

अजां अंख न उपटिए, पाणीनी पूरो मंझ ॥ १३

बेडी-जहाज, बन्ध-बन्धन, जोड़; ढीरा थेया-ढीले पड़ गए हैं, त्रूटन-टूट रहे हैं, संधो संध-जोड़ जोड़, अजां-अभी तक, अंख-आँख, न-नहीं, उपटिए-खोलते हो, पाणीनी-पानीकी, पूरो मंज-लेहेरें अन्दर प्रवेश कर रही हैं.

शरीररूपी जहाजके संध (जोड़) ढीले पड़ गए हैं. अङ्ग-प्रत्यङ्गकी नसें टूटने लगी हैं. हे जीव ! ऐसी अवस्था होने पर भी तू अपनी आँखें नहीं खोल रहा (सावधान नहीं हो रहा) है ? तेरा शरीररूपी जहाज लेहेरोंके बीचसे गुजर रहा है (तू मृत्युको प्राप्त होने जा रहा है) फिर भी तू असावधान है !

हिलोडे नीर लेखूं कियां, अने कुओ पछाडूं खाए ।

पोए तूं कडे उथीने पापी, पाणी फिरंदे मथांए ॥ १४

हिलोडे-तरङ्गें, नीर-पानी, लेखूं-हिसाब (लेखाजोखा), कियां-क्या है, अने-और, कुओ-जहाजके मध्य भाग जिसमें बल्ली खड़ी है, पछाडूं खाए-पछाड़ खा रहा है अर्थात् जहाज डगमगा रहा है, पोए-पीछे, तूं-तू, कडे-कब,

उथीने-उठेगा, पापी-हे पापी जीव !, पाणी-पानी, फिरन्दे-गुजर जाएगा, मथांए-सिरके ऊपरसे.

मानव जीवनमें मनके सङ्कल्प-विकल्पकी लेहेरोंका लेखाजोखा कैसे किया जाए ? सुरता रूपी बल्ली लहेरोंसे पछाड़ खा रही है. हे जीव ! फिर तू इस भवसागरसे कब जागृत होगा ? जब कि मृत्युरूपी पानी तेरे सिरसे गुजर रहा है.

**विसराई बंजी ओतड ओलवे, चुआं पुकारे सच ।**

**कपर कंदिए कुटका, गच न मिडंदे गच ॥ १५**

विसराई-विस्मृति, बंजी-ले जाएगी, ओतड-अवघट किनारा, ओलवे-भटकाएगी (डूब जाएगी) चुआं-कहता हूं, पुकारे-पुकार, सच-सत्य, कपर-किनारा, कंदिए-किनारा, कुटका-टुकड़ा टुकड़ा (हो जाएगा), गच-टुकड़ा (जहाजका टुकड़ा), न मिडंदे-नहीं मिलेगा, गच- टुकड़ा.

यह तेरी मोहरूपी विस्मृति तुझे विषम (अवघट) घाट पर ले जाकर खड़ा करेगी (तुझे चौरासी लाख योनियोंमें भटकना पड़ेगा.) मैं पुकार-पुकार कर तूझे सत्य कह रहा हूं. ये सांसारिक स्वाद तेरे जीवनरूपी जहाजको ऐसे टकरा कर तोड़ देंगे, जिससे तेरे जहाजके टुकड़े टुकड़े भी नहीं मिलेंगे कोई एक टुकड़ा भी दूसरे टुकड़ेके साथ नहीं मिल सकेगा अर्थात् चूर-चूर होकर समाप्त हो जाएगा.

**विसराईनी कपर ओडडी, तूं सुम म सुखांणी ।**

**ही ककी कंधीयजी, तूं पसे न पांणी ॥ १६**

विसराईनी-विस्मृतिका, कपर-किनारा, ओडडी-पास है, तूं-तू, सुम-सोना (नींद लेना), म-मत, सुखांणी-जीव, ही-यह, ककी-कीचड़, कंधीयजी-किनारा पर, तूं-तू, पसे न-देखता नहीं, पाणी-पानी (जल).

सांसारिक सुख रूपी विस्मृतिका किनारा पासमें दिखाई देता है. सुखको चाहनेवाले हे जीव ! तू सो मत. यह वास्तविक किनारा न होकर मैलापन ही किनारे जैसा दिखाई दे रहा है. सांसारिक सुख मैले किनारेके समान हैं जो छल (धोखा) का स्वरूप है. तू मोहरूपी सागरकी अथाह गहराईको नहीं

देख रहा है.

करे कडाका कपरी, गजे गोकांणी ।

तीखोनी ताणिए तेहडा, तूं सारिए न सुखांणी ॥ १७

करे कडाका-गरजना कर रहा है, कपरी-आकाश, गजे-गरजना, गोकांणी-समुद्र, तीखोनी-तीक्ष्ण, ताणिए-प्रवाह, तेहडा-उसका, तूं-तू, सारिए न-सम्भाल नहीं कर रहा, सुखांणी-मल्लाह (जीव) !

वेद, पुराण, शास्त्र आदि दान तथा पुण्य कर्म करनेके लिए आकाशकी गर्जनाके समान गर्जना कर रहे हैं. यदि इनका पालन नहीं करेगा तो नरकमें जानेकी भी गर्जना हो रही है. समुद्रकी तीक्ष्ण लेहेरोंके समान दान-पुण्यसे स्वर्गीय सुखकी अभिलाषा ही जीवको संसारकी ओर खींच कर अक्षरातीत परब्रह्मके सुखोंसे वञ्चित कर रही है. हे मल्लाह (जीव) ! तू ऐसेमें स्वयंको नहीं सम्भाल रहा ?

कंधी पसी म कोडजा सेहेर बजारी हट ।

नेई घर कां बंजे, विकण दमडी वट ॥ १८

कंधी-मैला किनारा, पसी-देखकर, म-मत, कोडजा-हर्ष, खुशी हो, सेहेर-शहर, बजारी-बाजार, हट-हाटपीठ, नेई-लेकर, घर कां-घरमें, बंजे-ले जाएँगे, विकण-बेचेंगे, दमडी वट-एक पैसेके लिए.

तू सांसारिक सुखोंको देखकर प्रसन्न मत हो. क्योंकि यह तो हाटपीठ-बाजारके अन्दर आध्यात्मिक धन लूटने वालोंकी धोखाधड़ीकी दुकानें खुल रही हैं. परिवारके ये स्वार्थी-जन दुकानदारोंकी भाँति मीठे-मीठे प्यार भरे शब्द बोलकर तुम्हारे अनमोल जीवनरूपी धनको लूट रहे हैं. तू उनके मोह पाशमें फँस गया है. तेरी आयुरूपी अमूल्य निधिको वे कौड़ीके भावमें बेच देंगे.

साहि डीनी चाइन पाणके, बोलीन मोह मिठां ।

जीरे मुआ न छुटो मंझां, जे इनी डिठां ॥ १९

साहि डिनी-धनिक, चाइन-कहलवाते, पाणके-अपने आपको, बोलीन-



बोलते हैं, मोंह-मुख, मिठां-मीठे वचन, जीरे-जीनेसे, मुआ-मरणपर्यन्त, न छूटो-नहीं छूट सकोगे, मंझा-इनके बीच, जे-जो, इनी-इनको, डिठां-देखा.

इस संसारमें तेरे सगे-सम्बन्धी परिवारके लोग अपने आपको धनिक कहलाते हैं. मीठे-मीठे वचन बोलकर तुझे मोहित कर लेते हैं. वास्तवमें तो तेरे साथ धोखा हो रहा है. जिन लोगोंको तू अपना मान कर प्यारसे देखता है उनके मोहपाशसे मृत्यु पर्यन्त छुटकारा नहीं पा सकेगा.

जे तूं सजण भाइए, से डुझण संजो डेह ।

मिठडो गालाए मारीन, हथडा विंजन कलेजें ॥ २०

जे-जिनको, तूं-तुम, सजण-स्वजन, भाइए-जानते हो, से-वे, डुझण-दुश्मन, संजो-समझो, डेह-देश (देह), मिठडो-मीठी, गालाए-बातें, मारीन-मारते हैं, हथडा-हाथ, विंजन-डालकर, कलेजें-कलेजेमें.

जिन सगे-सम्बन्धियोंको तू अपने हितैषी समझता था वे ही तुम्हारे जीवके दुश्मन हैं. मीठी-मीठी बातें कर तुझे अपने मोहके बन्धनमें बाँध देते हैं. बाह्यप्रेमसे तुझे अपने वशमें रखकर तेरे हृदयसे प्रेम, भक्ति, भजन आदि खींचकर तुझे सांसारिक दुःखोंमें डाल देते हैं.

हे कूडी कंधी उचक सिंधी, तूं हेडा हंड म न्हार ।

रात डीह जागी जफासे, तूं पांहिजो पांण संभार ॥ २१

हे-यह, कूडी-झूठी, कंधी-किनारा, उचक-अलंघ, सिंधी-सिन्धकी इन्द्रावती, तूं-तू, हेडा-यह, हंड-ठिकाना, स्थान, म-मत, न्हार-देख, रात डीह-रात-दिन, जागी-जागकर, जफासे-परिश्रमसे, तूं-तू, पांहिजो-अपने, पांण-आपको, संभार-सम्भाल.

हे इन्द्रावती ! तू संसारके झूठे किनारेकी ओर मत देख. इसे लांघकर पार हो जा. अपनी आत्माके कल्याण हेतु रात-दिन परिश्रम कर. परब्रह्म परमात्माकी भक्तिमें लीन हो जा. तू स्वयंको सम्भाल अर्थात् गुण, अङ्ग,

इन्द्रियोंको वशीभूत कर जीवन यात्राको सफल बना ले.

ही तागा पाणी पसे तरे, तूं मुडदम हथां छंड ।

हित घणो जागी खेडा जफासे, तांही कोईक निग्यो मंड ॥ २२

ही-यह, इस, तागा-नाप, अथाह, पाणी-पानी, पसे तरे-नीचे देख, तूं मुडदम-तू पानीके यन्त्रको, हथां-हाथसे, छंड-छोड़ दे, हित-यहाँ, घणो-बहुतोंने, जागी-जागकर, खेडा-खेया, चलाया, जफासे-परिश्रमसे, तांही-तब, कोईक-कोई एक, विरला, निग्यो-निकल सका, मंड-बीचसे.

इस अथाह मोहसागरको नापनेके लिए तू अपने हाथसे विवेक विचार रूपी यन्त्रको इसमें डालकर इसकी गहराई (सारी स्थितियों) का अवलोकन कर. कोई-कोई भक्तजन ही अपनी भक्ति, प्रेम एवं परिश्रमके द्वारा इस भवसागरसे पार हो सके हैं.

पिरी पुकारी पंजसे, मिडदां लख हजार ।

डुख मंझाए न चोंदा मूहजी, ई कडई कोए पुकार ॥ २३

पिरी-प्रियतमको, पुकारी-पुकार करते हैं, पंजसे-पाँच स्वरूपसे, मिडदां-मिला कर, लख-लाखों, हजार-हजारों (साक्षियाँ वेद, शास्त्रों) डुख-दुःख, मंझा-बीचमें, न चोंदा-नहीं कहेंगे, मूहजी-मेरे जैसी. ई-इस प्रकार, कडई-कभी, कोई-भी, पुकार-पुकार (करेगा).

पाँचों शक्तियों सहित प्रियतम धनी सद्गुरु इस भवसागरसे पार उतारनेके लिए विभिन्न धर्मग्रन्थोंकी हजारों, लाखों साक्षियाँ दे-देकर पुकार करते हुए कह रहे हैं कि इस दुःखरूपी संसारके बीचमें बैठकर इस प्रकार मेरे जैसा (सत्यज्ञानकी) पुकार करनेवाला कोई नहीं मिलेगा.

काया बेडी समझ समर, साएर लख संसार ।

मालम जीव जगाए साथी, मेहेराज पुंनो पार ॥ २४

काया-शरीर, बेडी-जहाज, समझ-समझकर, समर-सम्राट, साएर-समुद्र, लख-देख, संसार-संसार, मालम जीव-मल्लाह रूपी जीव, जगाए-जागृत

किया, साथी-अपने साथी ब्रह्मात्माएँ, मेहेराज-प्राणनाथ, पुंनो-पहुँचे, पार-अक्षरसे पार.

हे मल्लाह (जीव) ! इस शरीररूपी जहाजको भली प्रकार समझ. यह संसार ही सागर है. परब्रह्म स्वरूप सद्गुरुकी कृपासे मेहेराज अपनी ब्रह्मात्माओंको जागृत कर अक्षरके पार अक्षरातीत धाममें पहुँच गए हैं.

प्रकरण १३३ चौपाई २१०२

श्री किरन्तन सम्पूर्ण

पहले बीज उदय हुआ, पुरी जहाँ नीतन ।

सब पुरियों में उत्तम, हुई धन धन ॥

ए मधे जे पुरी कहावे, नीतन जेहनु नाम ।

उत्तम चौदे भवनमां, जिहां वालानो विश्राम ॥

- महामति श्री प्राणनाथ



श्री ५ नवतनपुरीधाम, जामनगर